॥ श्री जिनाय नमः ॥



॥ जैन प्राचीनस्तवनादि संग्रह ॥

प्रकाशक.

खंभात "जैन श्राविकाशाळा."

किंमत ०—६—०

॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ जैन प्राचीनस्तवनादि संग्रह ॥

प्राचीन महापुरुषोना बनावेला उपयोगी

स्तवनो, चैत्यवन्दनो, सज्झायो, स्तुतिओ.

विगेरेनो संग्रह.

तपगच्छना पुज्यपाद गुरुणीजी श्री श्री १०८ वीजकोरश्रीजी

महाराजश्रीना शिष्या गुरुणीजीश्री देव

श्रीजी तेमना शिष्या गुरुणीजी

श्री सौभाग्यश्रीजी महाराजना सदुपदेशथी

मळेल द्रव्य सहायवडे (साधु साध्वीने भेट.)

आवृति १ ली. वीर सं. २४४२ सने १९१६ प्रत २०००

छपावनार तथा प्रसिद्ध करनार

खंभात "जैन श्राविका शाळा."

तरफथी शेठ. उजमशीभाई ठाकरशीभाई.

श्री सत्यप्रकाश प्रींटींग प्रेसमां डाह्याभाइ शकराभाइ

गांधीए छाप्युं. खाडीया—अमदावाद.

किंमत ०-६-०

प्रस्तावना.

सुज्ञ जैन बन्धुओ अने व्हेनो ?

आपने सुविदितज छे के आवा स्तवनादिसंग्रह जेवा नाना पुस्तकनी प्रस्तावनानी अति आवश्यक्ता होइ शके नहि, छतां आ पुस्तक शा हेतुथी वहार पाडवामां आव्युं, तेम कोना सदुपदेशथी विगेरे सहज हकीकत बहार मुकवी उचित धारी छे.

घणा आनन्दनी वात छे के हिंदुस्ताનना घणा शहेरो अने गामोमां ज्यां ज्यां आपणा पवित्र पूज्यपाद उत्तमचारित्र रत्नथी विभूषित गुरुणीजी महाराजाओ विचरी रह्या छे त्यां त्यां आधुनिक समयमां जैन स्त्री वर्गमां तेम बालिकाओमां खास परमपवित्र वीतराग परमात्माना अविच्छिन्न प्रभावशाली धर्मक्रियामां तेम ते परमात्माना अलौकिक गुणगान करवाना उद्यम माटे पूरतो उत्साह दाखल करेलो दृष्टिगोचर थाय छे दरेक स्त्रियो अने बालिकाओ पोतानुं दुर्लभ्य मानुष्यजीवन जो वीतराग परमात्माना धर्मसेवनथी तेमज तेमना गुणगान करवाथी पावन करेतो ते शिवाय आ निःसार दुनीयामां आत्मकल्याणनो बादशाही मार्ग बीजो कयो छे ? मतलब के तेज छे, आं उत्साहने पूरो पाडवा माटे जो के जैनोमां स्तवन सज्झायाना पुस्तको घणां छपायेलां छे, छतां पण प्राचीन महापुरुषोना अपूर्व भाववाळा घणां स्तवनो अद्यापि नहि छपायेला लिखित पानाओमां रहेला छे, ते स्तवनो चैत्यवन्दनो, सज्झायो, स्तुतिओ विगेरेनो संग्रह परमउपगारी साध्वीजी श्रीदेवश्रीजी गुरुणीजी महाराजना शिष्या साध्वीजी महाराज सौभाग्यश्रीजी

के जेओ हिंदुस्तानना घणा भागमां विचरी घणी श्राविकाओ तेम बालिकाओ उपर उत्तम उपगार करी पोताना दीव्य चारित्रमय जीवनने शोभावी रह्या छे, तेमने अमारी श्राविकाशालाने आ "स्तवनादि संग्रह" छपाववा उपदेश कर्यो, तेमज द्रव्यनी सहाय माटे तेओश्रीअे तेम तेमना वृद्ध दादी गुरुणीजी श्री विजकोरश्रीजी विगेरे ज्यारे लगभग चार वर्ष उपर सुरत बंदरे चतुर्मास बीराजता हता, त्यारे "साधुदिन कृत्य" नामनो ग्रंथ के जेमां साधु साध्वीनी आवश्यक क्रिया बाबत सारो विस्तार छे ते ग्रन्थनुं भाषान्तर करावी छपाववा माटे त्यांनी धर्मिष्ट श्राविका बेनोमां टीप करवा उपदेश करेलो जेथी नीचे लखेल रु १४६) अंके अेकसो छेतालीनी टीप थयेली परन्तु ते कार्य अद्यापि केटलाक संयोगो वच्चे तैयार न थइ शकवाथी छपाववुं न बनी शकयुं जेथी ते रकमथी आ "प्राचीन स्तवनादिसंग्रह" छपावी जैन प्रजामां उपकार थाय ते हेतुथी अमने छपाववा भलामण करी कारणके ? लहीयाओ पांसे पानामां हाथथी लखावी श्राविकाओ अने साध्वीजीओ वांचे भणे छे पण तेमां अडचणो घणी थइ पडी छे केमके लहीयाना हस्तलिखित पाना जोके मोंघा छतां घणाज अशुद्ध होवाथी परिणामे कंटाळो अने लाभनी हानि थाय छे, तेथी आ ग्रन्थने अमे बहार मुकवा भाग्यशाली थया छीये, आ पुस्तक पूज्यश्री साधु साध्वीजीने भेट आपवा मुकरर करेलुं छे, अने श्रावक श्राविकाओने जेमने आ चोपडीनी जरुर होय तेमणे नीचेना सीरनामेथी मंगाव्याथी योग्य किम्मते मोकलवामां आवशे,

आ पुस्तकमां पहेलां संस्कृत तेम गुजराती मनोरंजक चैत्यवन्दनो

तेम स्तवनो अने स्तुतिओ दाखल करी छे तेम पाछळना भागमां पूज्यपाद् श्री सोभनमुनिजीकृत संस्कृत स्तुतिओ चैत्यवंदनो दाखल करी समाप्त करेल छे.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां सुरत–अमदावाद–मुंबइ–खंभात बालापुर विगेरे गामोनी श्राविका ब्हेनोए मदद करी छे, तेमना मुबारक नाम अहीं नीचे सविस्तर जोडवा साथे तेमनो खरा अन्तः-करणथी आभार मानवामां आवे छे.

अमारी श्राविकाशाळाने कृपादृष्टिथी आ "स्तवनादि संग्रह" छपाववानो उपदेश करनार पूज्यपाद साध्वीजी महाराजश्री देवश्री-जीना शिष्या साध्वीजी श्री श्री श्री १००८ सौभाग्यश्रीजी महारा-जनो पण अन्तःकरणथी उपकार मानी अत्र विरमीये छीये.

वली आ पूस्तकमां आवेला चैत्यवंदनो स्तवनादिक बधा हस्तलिखित हता ते सुधारी छपाववानुं काम खंभात निवासी पण हालमां अमदा-वादमां वस्ता शेठ मनसुखभाइ भगुभाइनी जैन स्कुलमांना धर्म शिक्षक मास्तर उमेदचंद रायचंद पोतानो अमूल्य वखत रोकी तनमनथी बनती महेनत लइ आ:काम परीपूर्ण करी आपेल छे ते खाते तेमनो पण अन्तःकरणथी उपकार मानवामां आवे छे.

आ प्रसिद्ध करेला पुस्तकमां दृष्टिदोषथी या यंत्रदोषथी शास्त्र विरुद्ध या अशुद्ध छपायुं होय ते बावते सुज्ञ भाइयो बहेनोनी क्षमा चाहीये छीये अने सुधारी वांचवा भलामण करीये छीये.

संवत १९७२ ना असाड सुद १५ प्रसिद्धकर्त्ता.

जैनश्राविकाशाळाना. सेक्रेटरी. शेठ उजमशीभाई ठा.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां जे ग्रहस्थो तथा व्हेनो तरफथी मदद मळेली छे तेनां मुबारक नामो नीचे मुजब छे.

१०० शा. लालचंद खुशालचंदनी दीकरी
बाइ नरभीबेन मु. बालापुर

मु. सुरत.

२५–०–० शा. अभेचंद मुलचंदनी विधवा बाइ खेमकोर
२५–०–० शा. रुपचंद लल्लुभाइनी वहु बेन रुक्ष्मणी.
२५–०–० शा. नगीनचंद कपुरचंदनी विधवा बाइ परसन.
१०–०–० शा. प्रेमचंद कल्याणचंदनी वहु बेन रतन.
१०–०–० शा. मोतीचंद गुलाबचंदनी मातुश्री बाइ उमीयाकोर
१०–०–० शा. कस्तुरचंद कल्याणचंदनी वहु बेन दयाकोर
१०–०–० भाइ अमीचंद नगीनदासना दीकरा भाइ माधुभाइ
५–०–० शा. नेमुभाइ हीराभाइनी वहु तरफथी
५–०–० शा. मगनभाइनी वहु बेन रुक्ष्मणी मु. सीनोरना.
५–०–० शा. नगीनभाइ कपुरचंदना छोकरानी वहु बेन नेमकोर
१६–०–० परचुरण टीपना मु. सुरतना

मु. अमदावाद.

५–०–० प्रेमचंद केवलदासनी वहु बाइ चंपा
५–०–० चुनीलाल दीपचंदनी विधवा बाइ चंचल
५–०–० पोपटलाल सामळदासनी वहु बेन मंगु
५–०–० चंचळबाइ अमदावाद

५--०--० शाह खाते अमदावाद
५--०--० छगनलाल हेमचंदनी विधवा बाइ नवी
१०--०--० वीरचंद पानाचंदनी विधवा बाइ जीवी
५--०--० डाह्याभाइ रवचंदनी वहु सो. बाइ चंचल
१५--०--० शीवाभाइ हरीलाळनी वहु सोभाग्यवती बाइ मणी
५--०--० हठीसंग कालचंदनी दीकरी बाइ चंचळ
२०--०--० वाडीलाळ मगनलालनी वहु सोभाग्यवंती बाइ चंचळ
५--०--० जेचंद भुवानी विधवा बाइ मेना
५--०--० मोहनलाल ललुभाइनी विधवा बाइ चंचल
५--०--० शकराभाइ ललुभाइनी वहु बाइ वीजी
५--०--० डाह्याभाइ हीराभाइनी दीकरी बाइ मेना
५--०--० बेन धीरज
५--०--० दोळासानी वहु सोभाग्यवंती बाइ समरत

मु. अमदावाद.

१०--०--० रवचंदभाइ छगनलाल वैद्यनी वहु सो. बेन प्रधानबाइ
१३--०--० सकराभाइ चुनीलालनी वहु सोभाग्यवंती बेन पुंजीबाइ
१२--०--० भगुभाइ चुनीलालनी वहु सोभाग्यवंती बेन चंचल
१०--०--० भगुभाइ छगनलालनी वहु सो. बेन समरथ तथा केवळ
१० -०--० चुनीलाल ललुभाइनी वहु सोभागवंती बेन सीता
१०--०--० हठीसंग मगनलाळनी वहु बाइ इच्छा
१--०--० मनसुखभाइ अमथानी दीकरी बाइ चंचळ

५--०--० ताराचंद लखमीचंदनी विधवा बाइ झकल

२५--०--० शा. हरखचंद कपुरचदनी वहु सो.
बाइ झवेर मुं. मुंबई.

मु. माणसा.

१०--०--० चीमनलाल डुंगरशीनी वहु सोभाग्यवंती बाइ माणेक

५--०--० मुनीयाबाइ मु. एवला

५--०--० केशवजी बेचरनी विधवा बाइ केसर मु. बावला

७--०--० बाइ सुरज वडोदरावाला

१५--०--० डाह्याभाइ छगनलालनी विधवा बाइ जडाव मु. सीपोर

५--०--० धरमशी डोसानी दीकरी बाइ मोंघी मु. मुंबइ

५--०--० बाइ मोंघी गोधावीवाला

५--०--० रायचंद जवेरचंद खंभातवाला

५--०--० प्रेमचंद कपुरचंदनी विधवा बाइ दीवाली मु. बोटाद

५--०--० वाडीलाल वीरचंदनी विधवा बाइ जेकोर गोधावीवाला

५--०--० भोगीलाल छगनलाल मु. अमदावाद.



अथ अनुक्रमणिका प्रारंभ.

विषय. पृष्ट.

सज्झायो.

॥ समाप्तः ॥

ॐ श्री जिनाय नमः

चोवीश जिनेश्वरना छंद.

॥ दुहा ॥

आर्या ब्रह्मसुता गिर्वाणी । सुमति विमल आपो ब्रह्माणी । कमल कमंडल पुस्तक पाणी । हुं प्रणमुं जोडी जुग पाणी ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर तणा । छंद रचूं चोसाल । जणतां शिवसुख संपजे । सुणतां मंगल माल ॥ २ ॥

॥ छंद जाति सवैया ॥

आदि जिणंद नमे नरइंद सपुनमचंद समान मुखं ॥ समामृत कंद टाले जवफंद मरूदेवीनंद करत सुखं ॥ लगे जस पाय सुरिंद निकाय जला गुण गाय जविक जनं ॥ कंचन काय नहि जस माय नमे सुख थाय श्री आदिजिनं ॥ १ ॥ अजितजिणंद

दयाल मयाल विसाल नयन कृपाल जुगं । अनुपम गाल महामृग चाल सुभाल सुजानग बाहु जुगं ॥ मनुष्य मेलोह मुनिसरसींह अबीह नरोह गये मुगती। कहे नय चित्त धरी बहु भक्ति नमे जिननाथ भली जुगती ॥ १ ॥ कहे संभवनाथ अनाथको नाथ मुगतिको साथ मिल्यो प्रभु मेरो । भवोदधिपाज गरिब निवाज सबे शिरताज निवारत फेरो ॥ जितारीको जात सुसेना मात नमे नर जात मिलो बहु घेरो । कहे नय शुद्ध धरि बहु बुद्ध जिनावन नाथकुं सेवक तेरो ॥३॥ अभिनंदन स्वाम लिये जश नाम सरे सवि काम भविक तणो ॥ वनिता जस गाम निवासको ठाम करे गुण ग्राम नरिंद घणो ॥ मुनीश्वर रूप अनुपम भूप अकल स्वरूप जिनंद तणो । कहे नय खेम धरी बहु प्रेम नमे नर पावत सुख घणो ॥ मेघ नरिंद मलार विराजित सोवनवांन समान तनु । चंद सुचंद वदन सुहावत रूपविगर्जित कामतनु । कर्मको कोम सबे दुख ठोम नमे करजोम करि भक्ति । वंश इक्ष्वाकु

विभूषण साहिब सुमति जीनंद गए मुक्ति ॥ ५ ॥
हंसपाद तुख्य रंग रति अर्ध रागरंग अढिसे धनुष चंग
देहको प्रमाण हे । भगतो दिणंद रंग लालकेसु फुल
रंग रूप हे अनंग भंग अंग केरोवान हे ॥ गंगको
तरंग रंग देवनाथहि अभंग ज्ञानको विसाल रंग शुद्ध
जाको ध्यान हे । निवारीए क्लेश संग पद्मप्रभुस्वामि
धींग दिजिए सुमति संग पद्मकेरो जाण हे ॥ ६ ॥
जिणंद सुपास तणा गुण रास गावे भवि भास आणंद
घणे । गमे भविपास महिमा निवास पूरे सवि आस
कुमति हणे ॥ चीहु दिसे वास सुगंध सुखास भमास
नीःसास जिनेंद तणो । कहे नय खास मुनींद सुपास
तणो जस वास सदैव भणो ॥ ७ ॥ चंद चंद्रिका स-
मान रूप सेलसे समांन दोढसो धनुषमान देहको
प्रमाण हे । चंद्रप्रभु स्वामी नाम लीजीये प्रभात जाम
पामीये सुख गाम ठाम गामज समान हे ॥ महासेन
अंगजात लक्ष्मणाभिधान मात जगमा सुवासवात
चिहुं दिसे थात हे कहे नय जोरी तात ध्याइये जो

दिनरात तो सुख सात दुखको मोजात हे ॥८॥ ढोलो दुधफेन पींम उजलो कपुरखंभ अमृत सरस कुंभ शुद्ध जाको तुंभ हे। सुधावो जिनंद संत कीजीये कर्म अंत शुभ्र भक्ति जासदंत श्वेत जाको वान हे ॥ कहे नय सुणो संत पूजीये जो पुष्पदंत पामीये तो सुख संत सुद्ध जाको ध्यान हे ॥९॥ शितल शितल वाणी घनाघन चाहेत हे भविकोक किशोरा। काक जिणंद प्रजासु नरींद वलो जिम चाहत चंद चकोरा ॥ विध गयंद सुचि सुरिंद सति निज कंत सुमेघ मयूरा ॥ कहे नेह धरी गुण गेह तथा हु धावत साहेब मेरा ॥ १० ॥ विष्णु भूपको मल्हार जग जंतु सुखकार वंशको शृंगारहार रूपको अंगार हे। छोडि सवि चित्त-कार मान मोहको विकार काम क्रोधको संचार सर्व वेरी वार हे ॥ आदर्यो संजमभार पंच महाव्रत सार उतारे संसारपार ज्ञानको भंभार हे। इग्यारमो जिणं-द सार खभगो जिव चित्तधार कहे नय वारोवार मोक्षको दातार हे ॥ ११ ॥ लाल केसु फुल लाल रति

अर्घ रंग लाल जगतो दिणंद लाल लालचोल रंग है। केसरीकी जीह लाल केसरको घोल लाल चूनमीको रंग लाल लाल पान रंग है ॥ लाल कीर चंचू लाल हींगलो प्रवाल कोकिलाकी दृष्टि लाल लाल धर्म रंग हे । कहे नय तेम लाल बारमो जिणंद लाल जया-देवि मात लाल लाल जाको अंग हे ॥ १२ ॥ कृतवर्म नरिंद तणो एह नंद नृमंत सुरेंद्र प्रमोद धरी । गमे दुख दंद दीये सुखवृंद जाको पद सोहत्त चित्त धरी॥ विमल जिनंद प्रसन्न वदन जाके शुन्न मन्न सुगंग परिणमे एक मन्न कहे नव धन्य नमो जिनराज दिणंद सुप्रीत धरी ॥ १३ ॥ अनंत जिणंद देव देवमां देवाधिदेव पूजो नवो नितमेव धरो बहु नावना। सुर नर सार सेव सुख कीज स्वामी हेव तुज पोखे उर देव न करुं हुं सेवना ॥ सिंहसेन अंग जात सुजसा-निधान मात जगमां सुजस ख्यात चीहुं दिशे व्या-पतो ॥ कहे नय तास वात कीजीए जो सुप्रनात निज होइ सुख सात किर्ति कोम आपतो ॥ १४ ॥

जाके प्रताप पराजित निर्बल जूतल थइ जमे जानु आकासे ॥ सौम्य वदन विनिर्जित अंतर श्याम वासीवेन होत प्रकासे । जानु महिपति वंसे कुसय बोध न दीपत जानुप्रकासे ॥ नमे नय नेह नितुसाहिब एह धर्म जिणंद त्रिजग प्रकासे ॥ १५ ॥ सोलमा जिणंद नामे सांति होय गामो गामे सिद्धि होइ सर्व कामे नाम के प्रभावथे ॥ कंचन समान वान चालीस धनुष मान चक्र प्रतिको निघान दीपतो ते सूरथे ॥ चौद रयण समान दीपता नवय निधान करत सुरेंद गान पुण्यके प्रजावथे ॥ कहे नय जोडो हाथ अबहु थयो सनाथ पाइज सूमती साथ सांतिनाथके दिदारथे ॥ ॥ १६ ॥ कहे कुंथु जिणंद दयाल मयाल निधि सेवकनी अरदास सूणो । जव जीम महार्णव पूर अगाह अथाग उपाधि सुनीर घणो । बहु जन्म जरा मरणादि विजाव निमिस घणादि कलेस घणो ॥ अवतार कतार क्रिपा परसाहिब सेवक जाणोएडे अपणो ॥ १७ ॥ अरदेव सुदेव करे नर सेव सवे डुख दोहग

दुर करे ॥ उपदेश घनाघन नीर भरे भवि मान स-
मानस भूरीतरे ॥ सुदर्शन नाम नरेसर अंगज भव्य
मने प्रभु जास वसे ॥ तस संकट शोक वियोग योग
दरिद्र कुसंगति न आवत पासे ॥ १८ ॥ नील कीर
वंरवी नील मांगवलि पत्र नील तरुवर राजि नील
नील नील द्राख हे ॥ काचको सुगोल नील इंद्र नील
रत्ननील पत्रनील चास हे ॥ जमुना प्रवाह नील
भृंगराज पंखो नील जेहवो अशोक वृक्ष नील नील
रंग हे॥ कहे नय तम नील रागथे अतिव नील मल्ली-
नाथ देव नील जाको अंग नील हे ॥ १९ ॥ सुमित्र
नरींद तणो वरनंद सुचंद्र वदन सोहावत हे । मंदर
धीर सवेन रहीर सुसाम शरीर बिराजित हे ॥ कज्ज-
लवांन सुक उपयान करे गुणगान नरिंद घणां ॥ मुनि
सुव्रत स्वामी तणो अभिधान लहे नय मांन आनंद
घणो ॥ २० ॥ अरीहंत सरूप अनुपम रूपके सेवक
दुःखने दुर करे ॥ निज वाणी सु ारस मेघ जले
भवीमान समान सभूरी रे ॥ नमो नाथको दर्शन

सार लही कुंण विष्णु महेश धरे जो परे ॥ अब मा-
मुढ लहि कुंण सकर गेम्के कंकर हाथ धरे ॥ २१ ॥
जादव वंस विभूषण साहिब नेमि जिणंद महानंद-
कारी ॥ समुद्र विजय नरिंद तणो सुतउज्वल संख
सुलक्षण धारी ॥ राजुल नार मुकी निरधार गये गि-
रनार कलेस निवारी॥ कज्जल काय शिवा देवी माय
नमे नय पाय महा व्रतधारी ॥२२॥ पार्श्वनाथ अना-
थको नाथ सनाथ भयो प्रभु देखत थोसवि रोग वि-
जोग कुजोग महा दुःख दुर गए प्रभु धावतथे ॥
अश्वसेन नरेश सपुत विराजित घनाघनवान समान
तनु॥ नय सेवक वंछीत पूरण साहिब अभिनव कांम
करि रमनु ॥ २३ ॥ कुकमठ कुलंठ जलंठ हठी हठ
भंजन जास प्रताप विराजे । चंदन वाणी सूत्रामा
नंदन पुरुसादाणी बिरुद जस गाजे जस नामके ध्यान
थको सवि दोहग दारिद्र दुःख महा सवि भांजे ॥
नय सेवक वंछित पूरण साहिब अष्टमहा सिद्धि नित्य
नीवाजे ॥ २४ ॥ सिद्धारथ भूप तणा प्रतिरूप नमे

नर ऩूप आनंद धरी ॥ अचिंत्य स्वरूप अनुपम रूपके लंछन सोहत जास हरी ॥ त्रिसला नंदन समुद्रम कंदन लघुपणे कंपित मेरु गिरि ॥ नमे नय चंद वदन विराजित वीर जिणंद सुप्रीत धरी ॥ १५ ॥ चोवीस जिनंद तणां इह छंद ज्ञणे ज्ञविवृंद जे ज्ञाव धरी ॥ तस रोग वियोगकु जोग ज्ञोग सवि दुरक दोहग डुर टरे॥ तस अंगण बार न लाज्ञे पार सुमति तोखार हेखार करे कहे नय सार सुमंगल चार घते तस संपद ज्ञूरी ज्ञरे ॥ १६ ॥ संवेगो साधु विज्ञूषण वंस विराजित श्री नय विमल जनानंदकारो॥ तस सेवक संजमधार सुधारके धोर विमल गणी जयकारी ॥ तासदां बुज ज्ञृंग समान श्रीनयविमल महाव्रत धारी, कहे ए छंद सुणो ज्ञविवृंदके ज्ञाव धरीने ज्ञणो नरनारी॥१७॥ संपूर्ण ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ ॐ ॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीनी ढालो लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥

जालम जोगीडारे ॥ ए देशि ॥ श्री वासूपुज्य जीनेसर वयणथी रें ॥ रूप कुंन्न कंचन कुंन्न मुनि- दोय ॥ रोहिणी मंदीर सुंदीर आवीयारे ॥ नमी न्नव पुछे दंपति सोय ॥ १ ॥ चन्ननाणि वयणेरे दंपति मो- हीयां रे ॥ ए आंकणि ॥ राजा राणि निज सुत आठ- नोरे ॥ तप फल निज न्नव धारी संबंध विनय करी पुछे महाराजनेरे ॥ चार सुताना न्नव प्रबंध ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ रूपवंति शियलवंति ने गुणवंतिरे ॥ सरस्वती ज्ञानकला न्नंडार ॥ जन्मथी रोग शोक दिठो नथिरे ॥ कुण पुन्ये लीधो एह अवतार ॥ च० ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

वालाजी वागे छे वांसलिर ॥ ए देशी ॥ गुरु कहे वैताढ्य गिरिवरूरे ॥ पुत्री विद्याधरी च्यार ॥ निज

आयु ज्ञानीने पुछीयोरे ॥ करवा सफल अवतार॥१॥ अवधारो अम वीनतिर ॥ ए आंकणी ॥ गुरु कहे ज्ञान उपयोगथी रे ॥ एक दिवसनुं आयु ॥ एहवां वचन श्रवणे सूणयारे ॥ मनमां वीमासण थाए॥अ० ॥ २ ॥ थोडामां कारज धर्मनारे॥ कीम करीए मुनि-राज ॥ गुरु कहे जोग असंख्य छेरे ॥ ज्ञानपंचमी तुमकाज ॥अ०॥३॥ कृण आराधे सवी अघ टलेरे ॥ सूत्र परिणामे साध्य॥कल्याणक नव जिन तणां रे ॥ पंचमी दीवसे आराध ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

जईने केजो ॥ ए देशि ॥ चैत्र वदी पंचमी दीने ॥ सूणो प्राणिरे ॥ चवीया चंद्रप्रभु स्वामी॥लहे सुख ठाम ॥ सूण प्राणिजी रे ॥ १ ॥ ए आंकणि ॥ अजित संभव अनंतजो ॥ सू० ॥ पंचमी सुदी शिव धाम ॥ शुभ परिणाम ॥ सू० ॥ १ ॥ वैशाख शुदि पंचमो दीने ॥ सू० ॥ संजम लिउ कुन्थुनाथ ॥ बहु नर साथ ॥ सू० ॥ जष्ठ शुदि पंचमी वासरे ॥सू०॥

सुगति पाम्या धर्मनाथ ॥ शीवपुरी साथ ॥ सू० ॥२॥
श्रावण शुदि पंचमी दीने ॥सू०॥ जनम्या नेम सुरंग ॥
अति उछरंग ॥ सू०॥ मागशर वद पंचमी दीने ॥सू०॥
सुविधि जन्म शुभ संग ॥ पुन्य अभंग ॥ सू०॥ ३ ॥
कार्तिक वद पंचमी तिथी ॥सू०॥ सर्वज्ञ केवल ज्ञान॥
करो बहु मान ॥ सू०॥ दश क्षेत्रे नेऊ जीना ॥ सू० ॥
पंचमी दिननां कल्याण ॥ सुखनां निधान ॥सू०॥४॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥

हांरे मारे जोबनिया ॥ ए देशी ॥ हांरे मारे ज्ञानी गुरूनां ॥ वयण सुणि हीतकारजो ॥ च्यार विद्या धरी पंचमी विधिशुं आदरेरे लोल ॥ १ ॥ ए आंकणि ॥ हांरे मारे शासन देवता पंचम ज्ञान मनोहारजो ॥ टालीरे आशातना देव वंदन सदारे लोल ॥ २ ॥ हांरे मारे तप पूरणथी ॥ उजमणानो भावजो ॥ एहवे विद्युत योगे ॥ सुरपदवी वर्यारे लोल ॥ ३ ॥ हांरे मारे धर्म मनोरथ आलस तजतां होयजो

॥ धन्य ते आजत अवीलंबी कारज कर्यां रे लोल ॥४॥ हांरे मारे देव थकि तुम कुखे लियो अवतार जो ॥ सांन्नल रोहिणी ज्ञान आराधन फल घणां रे लोल ॥५॥ हांरे मारे च्यारे चतुरा विनय विवेक विचारजो ॥ गुण कहेतां न्नलखाइ तुम पुत्री तणां रे लोल ॥ ६ ॥



॥ ढाल ॥ ४ थी ॥

आसणनारे जोगी ॥ ए देशि ॥ ज्ञानी रे वयणथी च्यारे बेहनि ॥ जातिस्मरण पाम्यारे ॥ ज्ञानी गुणवंता ॥ त्रीजा न्नवमां धारण कीधी ॥ सिध्यां मननां कांमो रे ॥ ज्ञानी गुणवंता ॥ १ ॥ ए आंकणि ॥ श्री जिनमंदिर पंच मनोहार॥ पंचवरण जिन पम्मिारे ॥ ज्ञा० ॥ जिनवर आगमन अनुसारे ॥ करोए न्नजमणां महीमारे ॥ज्ञा०॥२॥ पंचमी आराधन तिथी पंचमी ॥ केवलनाण ते थाएरे ॥ज्ञा०॥ श्री विजयलक्ष्मीसूरि अनुन्नव नाणें ॥ संघ सयल सुखदायारे ॥ ज्ञानी०॥३॥ इति पंचमी तप स्तवन ढालो संपुर्ण ॥



॥ अथश्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

जीरे मारे, श्री सिद्धाचलतीर्थ, शास्वतुं प्रायें जाणीए ॥ जिरेजो ॥ जिरे मारे नाभो नरेसरनंद ऋषभजिणंद वखांणिए ॥ जिरेज्जी ॥ जिरे मारे पूर्व नवांणुवार, गिरो दरिसणने आवियां ॥ जीरेजो ॥ जीरे मारे, आद्य आगमथी जांणय, फागुण शुदी मन भावीया ॥ जी० १ ॥ जीरेमारे, रायणऋषभनोहार, ते चरण पावन करी ॥ जि ॥ जीरमारे वंदु त्रिण काल, भाव घणो मनमां धरी ॥ जि ॥ जि ॥ भरतेसर नीजनंद, पूछे प्रभु बहु मानथी ॥ जो ॥ जी ॥ तुम सरिखा जगनाथ, पूज्यकह्या कंणकामथी ॥जी२॥ जी॥कृपावंत भगवंत, तीर्थमहिमा अतिदाखीउ ॥जो जि ॥ आठ उपर सो नांम रसस्वाद करो चाखियो जि॥ सांभलो जिनवर वाण, ऋषभसेन प्रमुख वली जि॥ जि ॥ चोरासी गणधार, तिरथ थापे मनरुलि जि ॥ जि ॥ ऋषभसेन पुंडरिक पुछे प्रभु चरणे नमी जो ॥ जी ॥ कीहां होसे मुझे सिद्ध, भाष्यो पूज्य

केवलगमी ॥ जी॥जो॥ कहे केवलि जिनराज, नांण निर्वाण साधशो जि ॥ जो ॥ ए तीर्थे महाभाग्य गुण अतिशय वाधस्यो ॥ जी ४ ॥ जि ॥ पांचकोडि अणगार फागुण शुदि पूनम भली ॥ जि॥जि॥ करि संलेखण सार, चैत्र शुदि पुनम वली ॥ जि ॥ जो ॥ पांमी केवल नांण, अजरांमर सुख पांमीया ॥ जि ॥ जि॥ सादिअनंत निवास, जनमजरा दुख वांमीआ जि ॥५ जी॥ द्रावीडने वारिषेण, दशकोडी मुनि प-रिवारस्युं ॥ जि ॥ जी ॥ कार्त्तिकपुनम दिनसार वंदु भले भावशुंजी विद्याधर मुनो दोय नेमोविनेमी व-खांणिए ॥ जि ॥ जो ॥ बेकोडी मुनि संजुत्त, अव्या-बाध सुख पांमिया ॥ जी ६ ॥ जि ॥ सागरचंद मुनि-राय, त्रण कोड परिवारशुं ॥ जि ॥ जि ॥ सोमजय अणगार, तेर कोड भले भावस्युं ॥ जि ॥ जि दमी-तारिनो सह्ल, चउदसहसस सिद्ध थया ॥ जि ॥ जि बाहुबलो बलवंत, एक सहस आठसु शिवगया, जो॥ प्रति पांडव पांच कुमार, विश कोड परिवारसु जि॥

जी ॥ इत्यादि अनेक, कांकरेकांकरे सीद्ध थया ॥ जि जी ॥ ए तीरथने आधार, कर्म खपावो मोक्ष गया ॥ जि ॥ जि ॥ जिन उत्तम महाराज. पाप पद्मतसे- नांमीए ॥ जी ॥ जी रूपविजय कविराय शिवसुख लक्ष्मी पांमीए ॥ जी ॥ ए ॥

॥ इतिश्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अतित चोवीसी गीत ॥ राग प्रजाति ॥

अतीत चोवीसी वंदीए, आतम शुद्ध जावे, अरिहंत नामना जापथी, मंगलमाला पावे ॥१॥ अतीत चोवीसी वंदीए ॥ केवल- ज्ञानी[1] पहेला नमुं, निर्वाणी[2] सागर[3], महाजस[4] विमल[5] ते पां- चमा, सर्वानुजूतीश्वर[6] ॥ अ० २ ॥ श्रीधर दत्त[8] दामोदर[9] नमो, सुतेज[10] श्रीस्वामी,[11] मुनिसुव्रत[12] जिन बारमा, सुमति[13] शिव गति[14] नाम ॥ अ० ३ ॥ अस्ताग्र[15] नमीश्वर[16] सोळमा, अ- निल[17] यशोधर[18] देव, कृतार्थ[19] जिनेश्वर[20] शुद्धमति,[21] शि- वंकर[22] करो सेवा ॥ अ० ४ ॥ स्यंदन[23] संमति[24] चोवीसमा, सह उठी गाउ, ऋद्धि कीर्त्ति प्रज्जु ध्यानथी, अमृत पद पाउ. अ५

अथ मौन एकादशीनुं चैत्यवंदन.

विश्वनायक मुक्तिदायक नमि नेमि निरंजनं, हर्षधरी हरी पूछे प्रभुने भाखो अति महितकरं ॥ कुण दिवस एवो वरसमांहे अल्प सुकृत बहुफले, कहे नेउ जिननां हुआं कल्याणक मौन अग्यारसी सुखकरं ॥ १ ॥ केवलि महाजस सर्वानुभूति श्रीधरनाथए, नमि मल्ली श्री अरनाथ स्वामी साचो शिवपुर साथए ॥ श्री स्वयंप्रभ देवश्रुत अरहंत उदयनाथ जिनेश्वरं, कहे नेउ जिननां हुआ कल्याणक मौन अग्यारसी सुखकरं ॥ २ ॥ अकलंक कर्म कलंक टाले, शुभकरं समरु सदा; सप्तनाथ ब्रह्मेंद्र जिनवर श्रीगुणनाथ नमु मुदा ॥ गांगिकनाथ श्री सांप्रति मुनिनाथ विशिष्ठ अतिवरं ॥ कहे० ॥ ३ ॥ श्रीमृदु जिनजी जगतवेत्ता व्यक्त अरिहा वंदीए, श्री कलाशत आरण ध्याता सहज कर्म निकंदीए ॥ जोग अजोगश्री परमप्रभुजी सुद्धार्त्तिनी केसरं ॥ कहे० ॥ ४ ॥ श्री सर्वार्थ सकल ज्ञायक हरिभद्र अरिहंतए, मगधाधिप जिनेंद्र वंदो श्रीप्रयच्छ गुणवंतए ॥ अक्षोभ मल्लसिंहनाथ दिनरुक् धनंद पोषद जयकरं ॥ कहे० ॥ ५ ॥ श्रीपलंब चारित्रनिधि जिन प्रशमराजित ध्याइए, स्वामीश्री विपरीतदेव अहोनीश प्रसाद प्रेमे गाइए ॥ अघटितज्ञानी ब्रह्मेंद्र प्रभु ऋषभचंद्रजी अघहरं ॥ कहे० ॥ ६ ॥ दयांत दाता जगत केरो अभिनंदन रत्नेशए, सामकोष्ट मरुदेव नायक अतिपार्श्व विशेषए ॥ नमो नंदिषेण व्रतधर श्रीनिर्वाणी दुःखहरं ॥ कहे० ॥ ७ ॥ सौंदर्यज्ञानी त्रिविक्रम जिन नारसिंह नमो तुमे, खेमंत संतोषित अरीहा कामनाथथी दुःख

समे ॥ मुनिनाथने श्रीचंद्रदाहए दिलादिन उदयकरं ॥ कहे० ॥ ८ ॥ श्रीअष्टाहिक वाणिग वंदो उदयज्ञान आराधिये, तमोकंदने साय-काक्ष स्वामीखेमंत शिवसुख साधिये ॥ निर्वाणीने रविराज साहिब प्रथम नाथ परमेश्वरं ॥ कहे० ॥ ९ ॥ श्री परुरवास अवबोध जगगुरु विक्रमेंद्र वखाणीये, श्रीस्वसांति हरिनंदिकेशने महामृगेंद्र मन आ-णीए ॥ अशोकचित चित्तमां वसे अहनीश धर्मेंद्र जगजस करं ॥ कहे० ॥ १० ॥ अश्ववृंद कुटिलक वर्द्धमान नंदिकेशना गुणघणा श्रीधर्मचंद्र विवेक जगपति कलापक सोहामणा ॥ विसोम सौम्या-कृति जेनी आरणअंगि सुखकरं ॥ कहे० ॥ ११ ॥ त्रीस चोवीसी दश खेत्रे कालत्रिक जिन लीजीए, पंचकल्याणक त्रीस जिननां इम दोढसो गुणीजीए ॥ जिनभक्ति करतां ध्यान धरतां कोटि तप फल होइनरं ॥ कहे० ॥ १२ ॥ पोषधने उपवास करीने आराधे एकादशी नरभव तेहनो सफल थये परमानंद पद देहसी ॥ गुरु रूपकीर्त्ति हृदय धरीने माणेक मुनि शिव सुखकरं ॥ कहे० ॥ १३ ॥ इति मौन एकादशी चैत्यवंदन सपूर्णम् ॥

अथ दोढसो कल्याणकनुं चैत्यवंदन.

शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान जगईश ॥ आतम हितने कारणे, प्रणमु परम मुनीश ॥ १ ॥ खट परवि जेणे वर्णवी, तेहमां अधिकी जेह ॥ एकादशी सम को नहीं, आराधो गुण गेह ॥ २ ॥ मागसर शुदी एकादशी, आराधो शिववास ॥ कल्याणक नेउ जिन तणा, एकसोने पचास ॥ ३ ॥ महायश सर्वानुभुति श्रीधर, नमिमल्लि

अरनाथ ॥ स्वयंप्रभ देवश्रुत उदय, मलिया शिवपुर साथ ॥ ४ ॥ अकलंक शुभंकर सप्त नाथ, ब्रह्मेद्र गुण गांगीक ॥ सांप्रति मुनि विशिष्ट जिन, पाम्या पुन्यनीरेक ॥ ५ ॥ सुमृदु व्यक्त कलासत, अरण योग अयोग ॥ परम सुधारति निकसतेम, पाम्या शिव संयोग ॥ ६ ॥ सर्वार्थ हरिभद्र मगधाधिप, प्रयच्छ अक्षोभमलयसिंह ॥ दिनरुक् धनद पौषध तथा, जपतां, सफलि जिह ॥ ७ ॥ प्रलंब चारित्र निधि प्रशम राजित, स्वामी विपरित प्रसाद ॥ अघाटित भ्रमणेंद्र ऋषभचंद्र, समया शिव अस्वाद ॥ ८ ॥ दयांत अभिनंदन रत्नेश ते, सामकोष्ट मरुदेव अतिपार्श्व ॥ नंदिषेण व्रतधर निर्वाण तथा, थाये शिव सुख आस ॥ ९ ॥ सौंदर्य त्रिविक्रम नरसिंह, क्षेमंत संतोषित कामनाथ ॥ मुनि नांथचंद्र दाहदिलादित्य, मळीयो शिवपुर साथ ॥ १० ॥ अष्टादिक वणिक उदयज्ञान, तमोकंद सायकांक्ष खेमंत ॥ निर्वाणिक रवि राज प्रथम नमतां दुःखनो अंत ॥ ११ ॥ पुरुरवास अवबोध विक्रमेंद्र, सुशांति हरदेव नंदिकेश ॥ महामृगेंद्र अशोचित धर्मेंद्र, संभारो नाम निवेश ॥ १२ ॥ अश्ववृंद कुटलिक वर्द्धमान नंदिकेश धर्मचंद्र विवेक ॥ कलापक विसोम अरणनाथ, समर्या गुण अनेक ॥ १३ ॥ त्रण पदे त्रण चोवीशीयो, पदे पदे कोढ जाण ॥ चोथा पदमां भावना, आराधो गुण खाण ॥ १४ ॥ दोढसो कल्याणक तणो, गुणणो ए मनोहार ॥ चित्त आणीने आदरो, जिम पामो भवपार ॥ १५ ॥ जिनवर गुणमाला, पुन्यनी ए प्रनाळा ॥ जे शिव सुख रसाळा, पामीये सुविशाला ॥ जिम उत्तम थुणीजे, पाद तेहना

नमीजे ॥ जिनरूप समरीजे शिव लक्ष्मी वरीजे ॥ १६ ॥ इति दोढसो कल्याणकनुं चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

नेमनाथनुं चैत्यवंदन.

नेमी जिनेसर गुण नीलो, ब्रह्मचारी सिरदार ॥ सहस पुरुषशुं आदरी, दीक्षा जिनवर सार ॥ १ ॥ पंचावनमें दिन लह्या निरुपम केवलनाण ॥ भविक जीव पडिबोधवा, विचरे महियल जाण ॥ २ ॥ विहार करंता आवियाए, बावीसमा जिनराय ॥ द्वारिका नयरी समोसर्या, समवसरण तिहां थाय ॥ ३ ॥ बार परखदा तिहां मली, भाखे जिनवर धर्म ॥ सर्व पर्व तिथि साचवो, जिम पामो शिव शर्म ॥ ४ ॥ तव पूछे हरि नेमने, लखो दिन मुज एक ॥ थोडो धर्म कर्या थकी, शुभ फल पामो अनेक ॥ ५ ॥ नेम कहे केशव सुणो, वरस दिवसमां जोय ॥ मागशर सुदी एकादशी, ए समो अवर न कोय ॥ ६ ॥ इणदिन कल्याणक थयां, नेउ जिनना सार ॥ ए तिथि विधि आराधतां सुव्रत थया भवपार ॥ ७ ॥ ते माटे मोटी तिथि, आराधो मन शुद्ध ॥ अहो रत्तो पोसह करो, मन धरी आतम बुद्ध ॥ ८ ॥ दोढसो कल्याणक तणुं ए, गणणुं गणो मनरंग ॥ मौन धरी आराधीये, जिम पामो सुखसंग ॥ १० ॥ उजमणुं पण कीजीए, चित्त धरी उल्लास ॥ पूठांने वींटांगणें इत्यादिक करो खास ॥ एम एकादशी भावशुं, आराधो नर राय ॥ क्षायिक समकितनो धणी, जिन वंदी करो शुभकाज ॥ ११ ॥ एकादशी भवियण धरो, उज्वल गुण जिम थाय ॥ क्षमाविजय जस ध्यानथी, शुभ सुरपति गुण गाय ॥ १२ ॥

आठमनुं चैत्यवंदन.

चैत्र वदि आठम दिने, मरुदेवी जायो ॥ आठ जाति दिग कुमरीये आठ दिश गायो ॥ १ ॥ आठ इंद्राणी नाथशुं, सुरपति ल्यावे ॥ सुरगिरि उपर सुरवरा, सर्वे मली आवे ॥ २ ॥ आठजाति कलशा करी, चोसठ हजार ॥ दोयसेने पचास मान, अभिषेक उदार ॥ ३ ॥ एक क्रोडने साठ लाख, उंचा तीस कोश ॥ पहुल पणे अडचाल कोश, कलशा जल कोस ॥ ४ ॥ चार वृषभ अडशंग रंग आठ जल धारे ॥ नवरावे जिनराजने, सुर पाप पखाले ॥ ५ ॥ क्षुधादिक अडदोष शोष, करि अडगुण पोखे ॥ टालि आठ प्रमाद आठ, मंगल आलेखे ॥ ६ ॥ कोड आठ चोगुणी, कंचन वरसावे ॥ प्रभु सोंपी निज मातने, नंदीश्वर जावे ॥ ७ ॥ अट्ठाइ महोच्छव करीए, ठवण जिन उद्देश ॥ आठ प्रकारे पूजिए, आठम दिन सुवेस ॥ ८ ॥ ऋषभ अजित सुमति नमी, मुनिसुव्रत जन्म ॥ अभिनंदन नेम पास पाम्या शिव शर्म ॥ ९ ॥ संभव देव सुपास दो, सुरभवथी चविया ॥ सेना पुरवी मात गइ, उयरे अवतरीया ॥ १० ॥ वरस वरस इम घोषणाए, ऋषभ लीये चारित्र ॥ आठम दिन इग्यारसे इम कल्याणक सुपवित्र ॥ ११ ॥ दंसण नाण चारित्रना, आठे आचार ॥ पाले गाले पापने, आठे अतिचार ॥ १२ ॥ अणिमादिक अड ऋद्धि सिद्धि, क्षणमांहे पामे ॥ आठे करम हणी थया ॥ अडगुण अभिराम ॥ १३ ॥ आठम दिन उज्वल मनेए, समरो दश अरिहंत ॥ क्षमाविजय जिम नामथी, प्रगट ज्ञान अनंत ॥ १४ ॥ बीजी चैत्यवंदना मंत्रादिक अड अष्ट बोध, पामी अडबुध ॥ खेदादिक अड दोष छेद

पडिकमणे शुद्ध ॥ १५ ॥ अद्वेषादिक आठ गुण धरे, अड मद तजिए ॥ यम नियमादिक आठ जोग; गुण संपद भजीए ॥ १६ ॥ आठम दिन आराधिये, धातकी पुष्कर अर्द्ध ॥ क्षमाविजय जिन विचरता, पातिहार्य समृद्ध ॥ १ ७ ॥ इति आठमनुं चैत्यवंदन ॥

सिद्ध भगवाननुं चैत्यवंदन.

जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकं ॥ ध्यान रूप अनुपम उपम, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ गगन मंडल मुक्ति पद्मं, सर्व उर्ध्व निवासनं ॥ ज्ञान ज्योति अनंत राजे, ॥ नमो० ॥ ॥ २ ॥ अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह मेराउखं ॥ नाम-गोत्र निरंतराय, ॥ नमो० ॥ ३ ॥ विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जनं ॥ राग द्वेष विमनोत अंकुर, ॥ नमो० ॥ ४ ॥ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल समोरितं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं, ॥नमो०॥५॥ योगमुद्रा सम समुद्रा, करी पल्यंकासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं,॥नमो०॥६॥जगत जनके दास दासी, तास आश निरासनं ॥ योगीनामिति गम्यरूपं ॥ नमो०॥७॥ समय समकित दृष्टि जनकी, सोय योगी अयोगिकं ॥ देखिता मिलिन होवे, ॥ नमो०॥ ८ ॥ सिद्ध तीर्थ अतीर्थ सिद्धा, भेद पंच दशादिकं ॥ सर्व कर्म विमुक्ति चेतन, ॥ नमो० ॥ ९ ॥ चंद्र सूर्य दीप मणीकी, ज्योति तेने ओलंगीकनं॥ तज्यो तिथी कोई अपर ज्योति, ॥ नमो० ॥ १० ॥ एक मांहे अनेक राजे, नेक मांहि एककं ॥ एक नेककी नहि संख्या, नमो०॥ ११ ॥ अजर अमर अलख अंनत, निराकार निरंजनं ॥ ब्रह्म ज्ञान अनंत

दर्शन, ॥ नमो० ॥ १२ ॥ अचल सुखकी लहेरमां, प्रभु लीन रहे निरंतरं ॥ धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन, ॥ नमो० ॥ १३ ॥ ध्याने धूप मने पुष्पर्श पंच इंद्र हुताशनं ॥ क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं ॥ १४ ॥ नमो सिद्ध निरंजन ॥ इति ॥

आवती चोवीसीनुं चैत्यवंदन.

श्री पद्मनाभ पहेला जिणंद, श्रेणीक नृपजीव ॥ सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक जीव ॥ १ ॥ श्री सुपार्श्व त्रीजावशी, जीवकोणिक उदायी ॥ स्वयं प्रभु चोथा जिणंद पोटिल मनभावि ॥ २ ॥ सर्वानुभूति जिन पंचमाए, दृढायु श्रावक जाण ॥ देवसुत छठ्ठा जिणंद, श्रीकार्तिक शेठवखाण ॥ ३ ॥ श्रीउदय जिन सातमाए, शंखश्रावक जीव ॥ श्रीपेढाल जिन आठमा, अनंत मुनि जीव ॥४॥ पोटिल नवमा वंदिएए, जीव जे सुनंद ॥ सतकीरति दशमा जिणंद, सतक श्रावक आणंद । ५ ॥ सुव्रत जिन अगियारमाए, देवकी राणी जीण ॥ श्रीअममजिन बारमा, श्रीकेशवगुण खाण ॥ ६ ॥ निष्कषाय जिन तेरमाए, सतकी विद्याधार ॥ निष्पुलायक जिन चौदमां बलभद्र सुहंकर ॥ ७ ॥ निर्मल जिन पंदरमाए, जीवसुलसा भावी चित्रगुप्त जिन सोलमा, श्रीरोहिणी मनभावि ॥ ८ ॥ समाधि जिन सत्तरमा, रेवती श्राविका जाण ॥ श्रीसंवर जिन अढारमा, जीव सत्तानी वखाण ॥ ९ ॥ श्री यशोधर ओगणीसमा, जीव किशन द्वीपायण, विजयनाम जिन वीसमा, जीवकरण साहेण ॥ १० ॥ एकवीसमा श्रीमल्लनाम जीव नारदनो कहिये ॥ अंबड श्रावक जाव

देव वावीसमा लहीए ॥ ११ ॥ अनंतवीर्य तेवीसमा, जीव अमरनो एह ॥ भद्रकृत जिनचोवीसमा, सतिबुद्धि गुणगेह ॥१२॥ ए चोवीसे जिन होशे, आवंते काले ॥ भाव सहित जे वांदशे, थई उजमाले ॥१३॥ लंछन वर्ण प्रमाण आउस, चढतां सवि निरखो ॥ सांप्रत जिन चोवीसए, अंतर सवि परखो ॥१४॥ पंचकल्याणक तेहना, होशे एहज दीस ॥ धीरविमल पंडिततणो, ज्ञानविमल सूरीश ॥ १५ ॥

श्री सिद्धचक्रजीनुं चैत्यवंदन.

जैनेंद्रमिंद्रमहितं गतसर्वदोषं, ज्ञानाद्यनंत गुणरत्नविशाल-कोषं ॥ कर्मक्षयं शिवमयं परिनिष्ठितार्थं, सिद्धं च बुद्धमविरुद्ध महं च वंदे ॥१॥ गच्छाधिपं गुणगणं गणिनं सुसौम्यं॥ वंदामि वाचक-वरं श्रुतदानदक्षं ॥ क्षांत्यादिधर्मकलितं मुनिमालिकां च, निर्वाण साधनपरं नरलोकमध्यं ॥ २ ॥ सद्दर्शनं शममयं श्री जिनोक्तसत्यं तत्त्वप्रकाशकुशलं सुखदं सुबोधं ॥ छिन्नाश्रवं सुमतिगुप्तिमयं चरित्रं, कर्माष्टकाष्टदहनं सुतपं श्रयामि ॥ ३ ॥ पापौघनाशनकरं वरमंगलं च, त्रैलोक्यसारमुपकारपरं गुरुं च ॥ भावातिशुद्धिवरकारणमुत्तमानां, श्रीमोक्षसौख्यकरणं हरणं भवानां ॥ ४ ॥ भव्याब्जबोधतरणिं भव सिंधुनावं, चिंतामणेः सुरतरोरधिकं सुभावं ॥ तत्त्वात्रिपादनवकं नवकाररूपं, श्रीसिद्धचक्रसुखदं प्रणमामि नित्यं ॥ ५ ॥

श्री पार्श्वनाथनुं चैत्य वंदन.

स्तुवे पार्श्वं जिनाधीशं–पार्श्वक्षोभसुसेवितं ॥ प्रणतानल्प संकल्प, दानकल्पद्रुमोपमं ॥ १ ॥ पुजीत्वजनः पूज्य स्थानं, सर्वे

जगतामपि ॥ ह्लिीतत्वांतु नैवेति, दुःखोच्छेदः कदाचन* ॥२॥ नाथी-कृत्य त्वया देव, भवारिजीयतेक्षणा॥हर्षाध्विक्षति तुभ्यं च,स्पृहयेनमुक्ति कामिनी ॥३॥ न तत् पुरुषादोषो, रोषादायांति दूरतः ॥ सम्यक्ध्यात तवस्वामिन्,सिध्यन्ति च मनोरथाः॥४॥स्तुतत्वैन रेनाथ,विलसंत्याखिलाः कलाः ॥ उपमानोपमेयत्वं, चिरं जियाजू जिनेश्वरं ॥५॥ युष्मद् पदानि पद गौरवसुप्रयोगैः, स्तुत्वेति पार्श्वजिन सद्गुणभाजनत्वात् ॥ एकं प्रभुं त्रिभुवनेऽपि भवे भवे हं, याचे शिवं प्रतिभवं ननु बोधिलाभं ॥ ६ ॥

(संपुर्णम्)

ॐ घंटाकर्णो महावीर । सर्वव्याधि विनाशक ॥
विस्फोटक भयप्राप्त । रक्ष रक्ष महाबल ॥ १ ॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव । लिखितोक्षरपंक्तिभिः ॥
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति । वातपित्तकफोद्भवाः ॥ २ ॥
तत्र राजभयं नास्ति । यांति कर्णोज पाक्षयं ।
शाकिनीभूतवैताल । राक्षसा प्रभवंति न ॥ ३ ॥
नाकाले मरणं तस्य । न च सर्पेण दश्यते ॥
अग्निचोरभयं नास्ति ॥ ॐ ह्रीँ घंटाकर्णो नमोऽस्तु ते
ठः ठः ठः । स्वाहाः ॥ ४ ॥

---

* आ श्लोक अशुद्ध जणाय छे ग्रन्थमां जेम छे तेम छाप्युं छे.

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम, जिह्वाग्रे वासं कुरु कुरु स्वाहाः ॥

॥ दीन २९ ॥ वार १०८ जपवो एटले विद्या आवडे.

श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन.

॥ वीर जीनेश्वर साहेब मोरा ॥ ए देशी ॥

सकल कुशल कमलानुं मंदिर, सुंदर महीमारे जास ॥ नवपदमां नव निधिना दाता, सिद्ध अनेकमां वासरे ॥ भविका सिद्ध चक्र सुखकारी ॥ तुमे आराधो नरनारीरे भविका० ॥ प्रथम पदे अरिहंत आराधो, स्फटीक रत्न सम वान ॥ पद्म एक माणिनी परे राता, बीजे सिद्धनुं ध्यानरे ॥ भविका० ॥ २ ॥ त्रीजे आचारज अनुसरीए, कंचन कांति अनोप ॥ पद चोथे उवझायने प्रणमो, इंद्र नियळ सर वानरे ॥ भविका० ॥ ३ ॥ सर्व साधु पद पंचमे प्रणमो, श्याम वरण सुखकार ॥ छठे दरिसण ज्ञान सातमे, आठमे चारित्र साररे ॥ भविक० ॥ ४ ॥ तपनुं आराधन पद ववमे, चारए उज्वल वरणा ॥ इह लोगोतमे एहीज मंगल, करवा एहनुं शरणरे ॥ भविका० ॥ ५ ॥ आसो चैत्री अठाइमांहि, नव आंबिल नव ओळी ॥ सिद्धचक्रजीनी पूजा करतां ॥ दुःख सवि नाखो ढोळीरे ॥भविक०॥

॥ ६ ॥ सिद्धचक्र पूजाथी सघळी, संपदा निज घेर आवे ॥ दुष्ट कुष्ट प्रमुख जे रोगा, ते पण दुरे जायरे ॥ भविका० ॥ ७ ॥ पृथ्वी निरुपम नयरी उज्जेण, दोय पुत्री तस सारी ॥ सुरसुंदरी मिथ्यात्विने पेखी, मयणा जिन मत धारीरे ॥ भविक० ॥ ८ ॥ सुरसुंदरी कहे सवि सुख अमने, छे निज तात पसाय ॥ मयणा कहे ए फोगट कुसुमत, सुख दुःख कर्म पसायरे ॥ भविका० ॥ ९ ॥ तव वचन नृप कोप्यो एह, आव्यो उंबर इण समे ॥ सातसें कोढिनो ते अधिपति, तेणे मागी कन्यायरे ॥ भविका० ॥ १० ॥ नृप कहे मेणा तुम कर्मे, आण्यो ए वर रसाल ॥ तव मयणा मन धीरज धरीने कंठे ठावे वरमालरे ॥ भविक० ॥ ११ ॥ शुभवेळा परणी दोय पहोच्यां, श्रीजिनवर प्रासाद ॥ ऋषभदेव पूजा गुरूपासे, आव्या धरि उल्लासरे ॥ भविका० ॥ १२ ॥ प्रणमी मयणा कहे गुरुने, हवे भांखो कोई उपाय ॥ जेहथी तुम श्रावकनी काया, सर्वनीरोगी थायरे ॥ भविका० ॥ १३ ॥ गुरु कहे अमने मंत्र जंत्रादिक, कहेवा नहि आचार ॥ योग्य पणुं जाणी अमे कहेशुं, करवाने उपगाररे ॥ ॥ भविका० ॥ १४ ॥ नव दीन नव अंबिल तप करीने, सिद्ध चक्र नित्य पूजो ॥ न्हवण तणु जल छांटो अंगे, रोग सकल तीहां ध्रुजे रे ॥ भविका० ॥ १५ ॥ गुरु वचन आंबिल तप करीने सिद्धचक्र आराध्यो ॥ उंबर कोढ गयो तस दूरे रूप अनुपम वाध्योरे ॥ भवि-

का० ॥ १६ ॥ श्री श्रीपाल नरेंद्र थयो जे, परण्यो बहु कन्याय ॥ प्रजापाल पण थयो श्रावक, श्री जिनधर्म पसायरे ॥ भविका०॥१७॥ अनुक्रमे चंपा राज्य लइने, पाले अखंडित आण ॥ जगमांहे जसवाद थयो बहु, नित्य नित्य रंग मंडाणरे ॥ भविका० ॥ १८ ॥ महामंत्र परमेष्ठी तणोए भवदुख नासे सविलंत ॥ सकल सिद्धि वश करवाने, एह अनोपम यंत्ररे ॥ भविका० ॥ १९॥ एहनो महिमा केवली जाणे किम छद्मस्थ प्रकाशे ॥ ते माटे ए सकल धर्मथी, सारो भासे जिन धर्मरे ॥ भविका० ॥ २० ॥ ते माटे भवियण तुमे भावो, सिद्धचक्र करो सेवा ॥ आ भव परभव बहु सुख संपदा, जिम लहिये शिव मेवा ॥ भविका० ॥ २१ ॥ सुरत बंदर रही चोमासुं, स्तवन रच्युं एवारी ॥ सतरसें बासठ वरसें, संघ सकल हित कारीरे ॥ भविका० ॥ २२ ॥ सिद्धचक्रनो महिमा सुणतां, होवे सुख विस्तार ॥ श्री विजयसेनसूरिश्वर विनवे, दान विजय जय कारीरे ॥ ॥ भविका० ॥ २३ ॥

श्री अष्टापदजीनुं स्तवन.

॥ नींदरडी वेरण हुई रही ॥ ए देशी. ॥

श्री अष्टापद उपरे, जाणी अवसर हो आव्या आदिनाथके ॥ भावे चोसठ इंद्रशुं, समवसरण हो मल्या मोटा साथके ॥श्री०॥१॥ विनीतापुरथी आवियो, बहु साथे हो वली, भरत भूपाल के ॥ वांदी हीयडा हेजसुं, तात सुरतीहो निके नयणे निहालके ॥ श्री० ॥ २ ॥

लई लाखीणा भामणी, कहे वयणा हो मोरा नयणा धन्नके ॥ विण सांकल विण दोरडे, बांधी लीधुं हो वाहाला तें मन्नके ॥ श्री० ॥३॥ लघु भाईए लाडका, ते तो तातजी हो राख्या हीयडा हजुरके ॥ देशना सुणी वांदी वदे, धन्य जीवडाहो जे तर्या भवपुरके ॥श्री०॥४॥ पूछे प्रेमे पुरीयो, आ भरते हो आगल जगदीशके ॥ तीर्थंकर केता होशे, भणे ऋषभजी हो अम पछी त्रेवीसके ॥ श्री० ॥ ५ ॥ माघनी सांभळी तेरस, प्रभु पाम्या हो पद परमानंदके ॥ जाणी भरतेश्वर भणी, ससनेहा हो नाभिरायाना नंदके ॥ श्री० ॥ ६ ॥ मनमोहन दीन एटला, मुज साथ हो रुषणा नविलीधके ॥ हेज हियरो पर हरी आज उंडी हो अबोलडा लीधके ॥ श्री० ॥ ७ ॥ विण वांके कांइ विरासिया, ते तोड्या हो प्रभु प्रेमना त्रागके ॥ इन्द्र भरतने बुझ-व्या, दोस म दीयो हो ए जिन वीतरागके ॥ श्री०॥८॥ शोक मुकी भरतेसरु वाराधिकने हो वली दीध आदेशके ॥ थुभ करो जिण जिण थानके, संसकार्याहो तातजी रीसहेसके ॥ श्री० ॥ ९ ॥ वली बंधव बीजा साधुना, तीहां कीधाहो त्रण थुभ अनुपके ॥ उंचो स्फटिकनो फुटडा, देखी डुंगरहो हरख्या भणे भूपके ॥ श्री०॥१०॥ रतन कनक थुभ ढुंकडो, करो कंचन हो प्रसाद उत्तंगके ॥श्री०॥ ॥ चोवारो चूंपे करी, एक जोयण हो मान मनरंगके ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सिंह निषिद्या नामनो, चोरासी हो मंडप प्रसादके ॥ त्रण कोश उंचो कनकमें ध्वज कलशे हो करे मेरुसुं वादके ॥ श्री० ॥ १२ ॥ वान प्रमाणे लंछने, जिन सरखीहो तीहां प्रतिमा कीधके ॥ दोयचार आठ

दस भणी, ऋषभादिक हो पूखे परसिद्धके ॥श्री० ॥१३॥कंचन मणी कमले ठवि, प्रतिमानी हो आणी नासिका जोडके ॥ देव वंदे रंग मंडपे, नीलां तोरण हो करी कोरणी कोडके ॥ श्री० ॥ १४ ॥ बंधव बेन माता तणी, मोटी मुरतीहो मणी रतने भरायके ॥ मरुदेवा मयगल चढी, सेवा करतीहो निज मुरतीनी पायके ॥ श्री० ॥ १५ ॥ पाडिहारज छत्र चामरा, जक्षादिक हो कीधा अनिमेषके ॥ गोमुख चतुर चक्केसरी, गढवाडीहो कुंड वाव्य विशेष के ॥ श्री० ॥ १६ ॥ प्रतिष्ठा प्रतिमा तणी, करावेहो राजा मुनिवर हाथके ॥ पूजा स्नात्र प्रभावना, संग भक्ति हो खरची खरी हाथके ॥ श्री० ॥ १७ ॥ पडते आरे पापीया, मत पाडोहो कोई वीरुई वाटके ॥ एक एक जोयण आंतरे, इम चिंतवीहो करे पावडियां आठके ॥ श्री० ॥१८॥ देव प्रभावे ए देहरां, रहेशे अविचलहो छट्ठा आरा सीमके ॥ वांदे आप लब्धिने तरे नर तेणे भवहो, भवसागर भीमके ॥ श्री०॥ १९॥ कैलासगिरिना राजीआ दीओ दरीसण हो कांइ म करो ढीलके ॥ अरथी होये उतावला, मतराखोहो अमशुं अडखीलके ॥श्री०॥२०॥ मन मान्याने मेलवे,(आवा मइहो तेन मले मित्तके॥)आवा स्थाने हो कोइ न मले मित्र के, अंतरजामी मील्या पछी. किम चालेहो रंग लाग्यो मजीठ ॥ श्री०॥२१॥ऋषभजी सिद्धि वधु वर्या,चांदलिया हो ते देउल देखाडके॥ भले भावे वांदि करी, मागुं मुक्तिना हो मुज बार उघाडके॥श्री०॥२२॥ अष्टापदनी जातरा, फल पामेहो भावे भणे भासके ॥ श्रीभावविजय उवज्झायनो, भाण भाखेहो फले सघली आशके ॥ श्री० ॥ २३ ॥

दस पच्चख्खाणनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमुं, महावीर भगवंत ॥ त्रिगडे बेठा जिनवरु, परखदाबार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिणे समे, पुछे श्री जिनराय ॥ दसपचखाण कीसां कर्यां, कीहां कवण फल थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥१॥ सीमंधरकर ॥ श्री जिनवर इम उपदीशे, सांभल गौतम स्वाम ॥ दश पचखाण कीधां थकां, लहीये अविचल ठाम ॥ १ ॥ श्री नवकारशी[1] बीजी पोरिसी[2] साढ पोरिसी[3], पुरिमढ्ढ[4] ॥ एकासण[5] निवि[6] कही, एकलठाण[7] दिवढ्ढ[8] ॥ २ ॥ दत्ति आंबेल[9] उपवास[10] सहि, एहज दश पचखाण ॥ एहना फल सूण गौतमा, जुजुआं करुं वखाण ॥ ३ ॥ रत्नप्रभा शर्करापभा, वालुक त्रीजीय जाण ॥ पंकप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा, तमतमा ठाम ॥ ४ ॥ नरक साते रहिसही करम कठन कर जोर ॥ जीव करम वश करे जूदा, उपजे तिणहीज ठोर ॥५॥ छेदन भेदन ताडना, भुख तृषा वळी त्रास ॥ रोम रोम पीडा करे, परमाधामीने त्रास ॥ ६ ॥ रात दिवस क्षेत्र वेदना, तिल भर नहीं तिहां सुख ॥ किधां करम तिहां भोगवे, पामे जीव बहु दुख ॥ ७ ॥ एक दिननी नवकारसी, जे करे भाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूरी करे ज्ञानी बुद्ध ॥ ८ ॥ नित्य करे नवकारसी, ते नर नरक नही जाय ॥ न रहे पाप वळी पाछला, निर्मळ होवेजी काय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ विमलासर निलो ॥ ए देशी ॥

सुण गौतम पोरिसी कियां, महामोटो फल होय ॥ भावशुं जे पोरिसी करे, दुर्गति छेदे सोय ॥ सु० ॥ १ ॥ नरक मांहे जीव नारकी, वरसां एक हजार ॥ करम खपावे नरकमां, करतां बहुत पुकार ॥ २ दुर्गति मांहे नारकी, दशहजार परिमाण ॥ नरकनो आउ खिण एकमें, साढ पोरसी करेहाण ॥ ३ ॥ पुरिमढ करतां जीवडां, नरके ते नहीं जाय ॥ लाख वरस करमना कटे, पुरमढ करत खपाय ॥ ४ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामे दुःख अनंत ॥ इतरां करम एकासणे, दुरि करे मनखंत ॥ ५ ॥ एक कोडि वरसां लगे, करम खपावे जीव ॥ निवि करतां भावशुं, दुर्गति हणे सदीव ॥ ६ ॥ दस कोडी जीव नरकमें, जीतरो करे कर्म दूर ॥ तितरो एकल ठाणाहि, करे सही चकचुर ॥ ७ ॥ दत्ति करंतां प्राणीया, सो कोडे परिमाण ॥ इतरा वरस दुर्गति तणां, छेदे चतुर सुजाण ॥ ८ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोडी दस हजार ॥ करम खपावे इण परे, भावे आंबिल कर ॥ ९ ॥ कोडी हजार दस वरस सही, दुख सहे नरक मझार ॥ उपवास करे एक भावसुं, पामे मुक्ति दुवार ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ केइक वर मागे सिता भणी ॥ ए देशी ॥

लाख कोडी वरसां लगे, नरके करता बहु रीवरे ॥ सुणी गौतम गणधर छठ तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीवरे ॥ १ ॥ नरक विषे कोडी लाखही, जीव लहे तिहां अति दुखरे ॥ सुण० ॥

ते दुख अठम तप हुंती, दूरकरे पामे सुखरे ॥ सु० ॥ २ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोडा कोडी वरसाइरे ॥ सु० ॥ दुर्गति कर्मने परहरे दशमें एटलो फल होइरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नित्य फासु जल पीवतां कोडा कोडी वरसनां पापरे ॥ सु० ॥ दूर करे खीण एकमां, जीव निश्चये निरधाररे ॥ सु० ॥ ४ ॥ एतो वली अविशेषे फल कह्यो, पांच करंतां उपवासरे ॥ सु० ॥ तेतो पामे ज्ञान पांच भलां, करता त्रिभुवन उज्जासरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ चौदश तप विधिशुं करे, चौद पूरव होय धाररे ॥ सु० ॥ अगीयारस एकादशी, करतां लहीये शिवसाररे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अठ्ठम तप आराधतां, जीव न फरे इण संसाररे ॥ सु० ॥ इम अनेक फल तप तणा, कहेतां वली नावे पाररे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मन वचन काया करी, तप करे जे नर नारीरे ॥ सु० ॥ अनंत भवना पापथी, जीवडा निरधाररे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तप हुंति पापी तर्या, निस तपिया अरजुन मालीरे ॥ सु० ॥ तप हुंति दिन एकमां, शीव पाम्या गजसुकमालरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ तपना फल सूत्रे कह्यां, पचखाण तणा दश भेदरे ॥ सु० ॥ अवर भेद पण छे घणा, करतां छेदे तीन वेदरे ॥ सु० ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ पचखाण दस विध फल प्ररुप्यां, महावीर जिन देवए ॥ जे करे भवियण तप अखंडित, तासु सुरपद सेवेए ॥ संवत विधु गुण अश्वशशि, वळी पोश शुद दशमी दीने ॥ पद्मरंग वाचक शिष्य गणि, रामचंद तप विधि भणे ॥ इति श्री पच्चख्खाण स्तवन.

॥ श्रीअठ्ठावीश लब्धिनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिणेसरु, शुद्ध मने सुखकार ॥ लब्धि अठ्ठावीस जिण कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणे प्रगट, भगवती सूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवश्यके, वारु लब्धि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तपे करी उपजे, लबधि अठ्ठावीश ॥ ए हवे प्रगट अर्थशुं, सांभळज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ सफल संसारनी ए देशी ॥

अनुक्रमे हवे अधिकार गाथा तणो, लबधि नामा परिणाम सरिखा भणो ॥ रोग सहुं जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लबधि छे नाम अमोसही ॥ १ ॥ जासु मल मूत्र औषध समा जाणीये, बीय वप्पोसही लबधि वखाणीये ॥ श्लेष्म औषध सारिखो जेहनो, त्रीजी खेलोसही नाम छे तेहनो ॥ २ ॥ देहना मेलथी कोढ दूरे हवे, चोथी जल्लो सही नाम तेहनो ठवे ॥ केश नख रोम सहु अंग फरस्ये सही, रहे नाहि रोग सव्वो सही ते कही ॥ ३ ॥ एकं इंद्रिये करी इंद्रिय तणु. भेद जाणे तिका नाम संभिन्न भणुं ॥ वस्तु रूपी सहु जाणिये जिण करी, सातमी लबधि ते अवधि ज्ञाने घणी ॥ ४ ॥

॥ ढाळ ॥ २ ॥ शारद बुध दाई ॥ ए देशी ॥

आव्यो तिहां नरहर एजाति ए देशी ॥ हवे अंगुल अढीये उणो मानुष खित्त, संज्ञी पंचेंद्रि तिहां जेवसे विचित्त ॥ तसु मनना चित्त

ते जाणे थुल प्रकार, ए ऋजुमति नाम अठम लबधि विचार ॥१॥ संपूर्ण मानुष खेत्रे संज्ञावंत, पंचेंद्रि जे वैमनवातां तसुतंत ॥ सूक्ष्म पर्याये जाणे सहु परिणाम, ए नवमी कहीए विपुल मति शुभ नाम ॥ २ ॥ जिण लबधि प्रमाणे उडी जाये आकाश, ते संघा विद्या चारण लबधि प्रकाश ॥ जसु वचन श्रापे खिणमां खेरु थाय, ए लबधि अगीयारमी आसीवि कहेवाय ॥ ३ ॥ सहु सूक्ष्म बादर देखे लोक अलोक, ते केवली लबधि बारमीये सहु थोक ॥ गणधर पद लहीए तेरमी लबधि प्रमाण, चौदमी लबधि करी चौद पुरवजाण ॥ ॥ ४ ॥ तीर्थंकर पदवी पामे पंदरमी लबधि, सोलमी सुखदाई चक्रवर्त्ति पद ऋद्धि ॥ बलदेव तणा पद लहीये सतरमी सार, अढारमी आखी वासुदेव विस्तार ॥ ५ ॥ मिश्री घृत खीरे मेल्यां जेह सवाद एहवी लहे वाणी ओगणीसमे प्रासाद ॥ भणियो नावे भूल सूत्र अर्थ सुविचार, ते कुट्ठगबुद्धि विसम लबद्धि विचार ॥ ६ ॥ एके पदे भणीए आवेपदलखेकोडि, एकवीसमीलबधि पायाणुंसारिणि जोडि ॥ एकेअर्थेकरी उपजे अर्थअनेक, बावीसमी कहीए बीज बुद्धि सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपुर होये अति उजलुरे ॥ ए देशी ॥

सोलह देश तणी सहीरे, दाहक शक्ति वखाण ॥ तह लबधि तेवीसमीरे, तेजो लेश्या जाण ॥ १ ॥ चतुर नर सुणज्यो ए विचार ॥ वारु लबधि विचार ॥ चतुरनर० ॥ चौद पूरवधर मुनिवरुरे, उपजता संदेह ॥ रुप नवो रंची मोकलेरे, लबधि आहारक एह ॥ च-

तुरनर० ॥ २ ॥ तेजो लेश्या अग्निनेरे, उपसमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमीरे, शीतो लेश्या सार ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ जिण शक्तिशुं विकुरवेरे, विविध प्रकारे रुप ॥ सदगुरु कहे छवीसमीरे, वैक्रिय लबधि अनुप ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ एकण पात्रे आदमीरे, जिमावे केई लाख ॥ जेह अखीण महानसीरे, सत्तावीसमी भाख ॥ चतुर० ॥ ५ ॥ चूरे सेन चक्रीशनीरे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधि कहीरे, अट्ठावीसमी नाम ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ तेज शीत लेश्या वि एहरे, तिग पूलाक विचार ॥ भगवती सूत्रमें भाखीयारे, ए तिहुनो अधिकार ॥ ७ ॥ चक्रवर्त्ती बलदेवनीरे, वासुदेव त्रण एह ॥ आवश्यक सूत्र अछेरे, नहीं इहां संदेह ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ पन्नवणा आहारगीरे, कल्पसूत्र गणधार ॥ तिन तिन एक एक मलीरे, बारु आठ विचार ॥ चतुर० ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरण ए कहीरे, बाकी लबधि वीश ॥ सांभलतां सुख उपजेरे, दोलहुय निस दिस ॥चतुर०॥१०॥

॥ कलस ॥ संवत सतरसें छवीसे, मेर तेरस दिन भले ॥ श्रीनगर सुखकर, लुणक्रणसर आदि जिन सुपसाउले ॥ १ ॥ वाचनाचारिज सुगुरु सानिधि विजय हरख विलासए ॥ कहे धर्मवरधन स्तवन भणतां, प्रगट ज्ञान प्रकाशए ॥ २ ॥ इतिश्री लबधि अट्ठावीस स्तवन सम्पूर्ण ॥

बीजनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ सरस वचन रस वरसति, सरसति कला भंडार॥ बीज तणो महिमा कहुं, जिम कह्यो शास्त्रमोझार ॥ जंबुद्विपना भर-

तमां, राजगृही नगरी उद्यान ॥ वीर जिणंद समोसर्या, वांदवा आव्या राजन ॥ २ ॥ श्रेणीक नामे भूपति, बेठा बेसण ठाय ॥ पुछे श्री जिनरायने, द्यो उपदेश महाराय ॥ ३ ॥ त्रिगडे बेठा त्रिभुवनपति, देसना दिये जीनराय ॥ कमल सकोमल पांखडी, इम जिनवर हृदय सोहाय ॥ ४ ॥ शशि प्रगट जिम ते दिने, धन ते दिन सुविहाण ॥ एक मने आरधतां, पामे पद निर्वाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥१॥ कल्याणक जीननां कहुं सुण प्राणीजीरे, अभिनंदन अरिहंत ॥ ए भगवंत भविप्राणीजीरे ॥ महाशुद बीजने दीने ॥सु०॥ पाम्या शीव सुखसार ॥ हरख अपार ॥भवि०॥१॥ वासुपूज्य जिन बारमा ॥ सु०॥ एहज तिथे नाण ॥ सफल विहाण ॥ भवी०॥ अष्ट करम चुरणकरी ॥ सुणो० ॥ अवगाहन एकवार ॥ मुगति मोझार ॥ भ० ॥ अरनाथ जीनजी नमुं ॥ सुणो० ॥ अष्टादशमो अरिहंत ॥ ए भगवंत ॥भवि०॥ उज्वल तिथि फागुणनी भली ॥सुणो०॥ वरीया शीव वधु सार ॥ सुंदर नार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ दशमा शीतल जिनेसरु ॥ सुणो० ॥ परम पदनी वेल ॥ गुणनी गेल ॥ ॥ भवि० ॥ वैशाख वदी बीजने दिने ॥ सु० ॥ मुक्यो सरव ए साथ ॥ सुरनरनाथ ॥भवि०४॥ श्रावण सुदनी बीज भली ॥सुणो०॥ सुमतिनाथ जिनदेव ॥ सारेसेव॥ भवि० ॥ इण तिथिए जिनभला ॥सु०॥ कल्याणक पंचसार ॥ भवनोपार ॥ भवि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ जगपति जिन चोवीसमोरे लाल, ए भाख्यो अधिकाररे ॥ भविकजन ॥ श्रेणिक आदे सहुं मल्यांरे लाल ॥ शक्ति

तणे अनुसाररे भविकजन, भाव धरीने सांभळोरे लाल ॥ आराधो धरी खंतरे ॥ भविक० ॥ १ ॥ दोयवरस दोयमासनीरे लाल, आराधो धरी हेतरे ॥ भ०॥ उजमणुं विधिशुं करोरे लाल, बीज ते मुगति महंतरे ॥भ०॥भा०॥२॥ मारग मिथ्या दुरे तजोरे लाल, आराधो गुण नाथरे ॥ भ० ॥ वीरनी वाणी सांभलीरे लाल, उछरंग थयो बहु लोकरे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ इणि बीजे केई तर्यारे लाल, वळी तरशे केई शेषरे ॥ भ० ॥ शशिनिधि अनुमानथीरे लाल, सइला नागधर एकरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ असाड शुदी दशमी दीनेरे लाल ए गायो स्तवन रसालरे ॥भवि० ॥ नवल विजय सुपसायथीरे लाल, चतुरने मंगल मालरे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ५ ॥

॥ कलश ॥ इय वीर जिनवर, सयल सुखकर, गायोअति उलट भरे ॥ असाड उज्वल दशमी दिवसे, संवत अढार अट्ठोत्तरे बीज महिमा एम वरणव्यो, रही सिद्धपुर चोमासुए ॥ जेह भविक भावे भणे गुणे, तस घर लील विलासए ॥ १ ॥

अथ पंचमी स्तवन.

॥ इडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥

॥ढाल॥१॥ श्री गुरु चरण नमी करीरे, प्रणमी सरस्वती माय ॥ पंचमी तप विधशुं करोरे, निर्मल ज्ञान उपाय ॥ भविक जन कीजे ए तपसार ॥ १ ॥ जनम सफल निरधार ॥ भविक० ॥ लहीए सुखश्रीकार ॥ ॥ भविक०कीजे० ॥ ए आंगळी ॥ समवसरण देवे रच्युंरे, बेठा नेम

जिणंद ॥ बारे परखदा आगलेरे, भाखेश्री जिनचंद ॥भ०॥२॥ ज्ञान वडो संसारमांरे, शिवपुरनो दातार ॥ ज्ञानरूपी दीवो कह्योरे, प्रगट्यो तेज अपार ॥ भविक० ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन जब निरखीयेरे, तव देखे लोक अलोक ॥ पशुअ परे ते मानवीरे, ज्ञान विना सवि फोक ॥ ॥ भविक० ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमांरे, करम करे जे नास ॥ नारकीना ते जीवनेरे, कोडि वरससु विलास ॥ भविक० ॥ ५ ॥ आराधक अधिको कह्योरे, भगवती सूत्र मझार ॥ कीरीआ वंतने आ गलेरे, ज्ञान सकल शिरदार ॥ भविक० ॥ ६ ॥ कष्ट क्रिया तो सहु करेरे, तेहथी नहि कोई सिद्ध ॥ ज्ञान क्रिया जब दो मिलेरे, तब पामो बहुली ऋद्ध ॥ भाविकजन० ॥ ७ ॥ कुणे आराधी एहवीरे, कोईने फली ततकाल ॥ तेह उपर तुमे सांभलोरे, एहनी कथा रसाल ॥ भविक० ॥ ८ ॥ जंबुद्विप सोहामणोरे, भरतक्षेत्र अभिराम ॥ पद्मपुर नगर शोभतोरे, अजितसेन राय नाम ॥ भविक० ॥ ९ ॥ शील सोभाग्य आगलेरे, यशोमति राणीनार ॥ वरदत्त बेटो तेहनोरे, मूरखमां शिरदार ॥ भविक० ॥ १० ॥ मात पिता मन रंगशुंरे, मुके अध्यापक पास ॥ पणं तेहने नवी आवडेरे, विद्या विनय विलास ॥ भविक० ॥ ११ ॥ जिम जिम यौवन जागतोरे, तिम तिम तनु बहु रोग ॥ कोढ थयो वळी तेहनेरे, विसमा करमना भोग ॥ भविक० ॥ १२ ॥ आदरीए आदर करीरे, सौभाग्य पंचमी सार ॥ सुख सघलां सेहेजे मिलेरे, पामे ज्ञान अपार ॥ भविक० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥ तिलकपुर शेठ वसे तिहां, सिंहदास गुणवंत ॥ जैनधरम करतालहे, कंचनकोडिअनंत ॥ १ ॥ कपुरतिलका

सुंदरी, चाले कुल आचार ॥ तेहनी कुखे अवतरी, गुणमंजरी वर-
नार ॥२॥ मुगी थई ते बालिका, वचन वदे नहीं एक ॥ जिम जिम
अति औषध करे, तिम तिम तनुं बहु रोग ॥ ३ ॥ सोलवरस तेहने
थयां, परणे नहिं कुमार ॥ एहने कोई वंछे नहीं, स्वजनादिक परि-
वार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ बन्योरे कुंवरजीनो सेहेरो ॥ ए देशी ॥

एहवे आवी समोसर्या, श्री विजयसेन सुरिंदरे ॥ सुंदर ॥
ज्ञानी गुरुने वांदवा, पुत्र सहित भूप वृंदरे ॥ सुं० ॥ १ ॥ सदगुरु
दीए देशनारे, सांभलो चतुरसुजाणरे ॥ सुंदर ॥ ज्ञान भणो भवि
भावसुं, जिम लहो कोडी कल्याणरे ॥ सुं ॥ सुं० ॥ २ ॥ सिंहदास
सुत आपणो, आवीनम्यो करजोडीरे ॥ सुं० ॥ विधिशुं वांदी देशना
सांभलवाना कोडरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञान आशातना जे करे,
ते लहे दुख अनेकरे ॥ सुं० ॥ वाचा पण नवि उपजे, बालपरे विवे-
करे ॥ सुं० ॥स०॥४॥ इह भव परभव दुख लहे, दुष्ट कुष्टादिक रोगरे
॥ सु० ॥ परभव पुत्र न संपजे, कलत्रादिक वियोगरे ॥सुं०॥ स०॥
॥ ५ ॥ सिंहदास पुछे हवे, निज बेटीनी वातरे ॥ सुं० ॥ शे करमे
रोग उपनो, ते कहो सकल अवदातरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ६ ॥ गुरु
कहे शेठजी सांभलो,पुरवभव विरतंतरे ॥सुं०॥ धातकी खंड मध्य भ-
रतमां, खेटक नगर निरखंतरे ॥ सुं०॥ स० ॥ ७ ॥ जिनदेव वणिक
वसे तिहां, सुंदरी नामे नाररे ॥ सुं० ॥ पांच बेटा गुण आगला
चार सुता मनोहाररे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ८ ॥ एक दिन भणवा मु-

कीया, हूंशधरी मन मांहीरे ॥ सुं० ॥ चपलाई करे चोगुणी, न भणे हरखे उच्छाहिरे ॥ सुं० स० ॥ ९ ॥ शीखामण पंड्यो दीए, आवी रुए माता पासरे, ॥ सुं०॥ कोप करी वलतु कहे, बेठा रहो घरवासरे ॥ सु० स० ॥१०॥ चुलामांहि नाखियां, पुस्तकपाटी सोयरे ॥सुं०॥ रीसे धमधमती कहे, आखर मरशे सहुं कोयरे ॥ सुं० ॥ स० ॥११॥ कंथ कहे नारि प्रत्ये, कोण दीए कन्यादानरे ॥ सुं० ॥ मुरख गुण ग्रहेनहि, न लहे आदर मानरे ॥ सुं० स० ॥ १२ ॥ बिहु जण माहि बोलतां, क्रोध वसे विकरालरे ॥ सुं० ॥ जिनदेवे मार्युं मूशलुं, मरण पामी ततकालरे ॥ सुं०॥ स० ॥ १३ ॥ तेह मरी गुणमंजरी, अवतरी तोर गेहरे ॥ सुं० ॥ जाति समरण उपनुं, प्रगटी पुन्यनी गेहरे ॥ ॥ सुं० ॥ स० ॥ १४ ॥ साचुं साचुं सहुं कहे, ज्ञान भणो गुण खाणरे ॥ सुं० ॥ तपनो जो उद्यम करो, तो लहो केवल नाणरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ पांसठ महिना कीजीए, मास मास उपवास ॥ पोथी थापो आगले, स्वस्तिक पुरो खास ॥ १ ॥ पांच पांच फल मुकीए, पांच जातिनां धान ॥ पांच वाटी दीवो करो, पांच ढोउपकवान ॥ २ ॥ कुसुम भलां आणी करी, धूप पुजा करी सार ॥ नमो नाणस्स गूणणुं गणो, उत्तर दिशि दोय हजार ॥ ३ ॥ भक्तिकरे साहम्मी तणी, शक्ति तणे अनुसार ॥ जीनवर जुगते पुजतां, पामे मोक्षदुवार ॥ ४ ॥ बार उपवास न करीशके, वरस मांहि दीन एक॥ जीव जीव आराहिये, आणो परम विवेक ॥ ५ ॥

॥ ढाळ॥३॥ चुडले योवन झल रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ राजन ॥ मुनीवर दीए धर्मदेशना, सुणीये देई कान ॥रा०॥ आलस मुकी आदरो, अजुआलो जिनज्ञान ॥ रा० ॥ १ ॥ रायपूछे हरखेकरी, सांभलो गुरु गुणवंत ॥ राजन ॥ वरदत्ते कर्म कीश्यां कर्यां, कोढे अंग गलंत ॥ रा० ॥ भविक जीव हित कारणे, गुरुकहे मधुरी वाणी ॥ रा० ॥ पूरवभवनी वारता, सांभलो चतुर सुजाणि ॥ राजन ॥मु० ॥ ३ ॥ जंबुद्वीप भरतक्षेत्रमां, श्रीपुरनगर विलास ॥ ॥ रा० ॥ वसु शेठना सुत बे भला, वसुसार वसुदेव निहाल ॥रा०॥ ॥ ४ ॥ वनरमतां गुरुवांदिया, श्री मुनि सुंदरसुरि ॥ रा० ॥ सांभलतां संजम लीये, तप करे आनंदपुर ॥ रा० ॥५॥ सकल कलागुण आगलो, लघुभाई अतिसार ॥रा०॥ वसुदेवने कीधो पाटवी, पंचसयां सिरदार ॥ रा० ॥ ६ ॥ पग पग पुछे तेहने, सूत्र अरथ निरधार ॥ रा० ॥ पलक एक उंघे नहीं, तव चिंते अणगार ॥ रा० ॥ ७ ॥ पाप लाग्युं मुज कीहांथकी, एवडो शो कंठ शोष ॥ रा० ॥ मूढ मूरख संसारमां, काया करे निज पोष ॥ रा० ॥ ८ ॥ बार दिवस मौने रह्यो, प्रगट थयो तव पाप ॥ रा० ॥ जेवां करम जे को करे,ते लहे सघलां आप ॥ रा० ॥ ९ ॥ तुज कुले आवी अवतर्यो, दीपाव्यो तुज वंश ॥ रा० ॥ वृद्धभाई मरी उपन्यो, मान सरोवर हंस ॥ रा० ॥ १० ॥ सयल कथा सुणतां लह्यो, जाति समरण बाल रा० ॥ धन धन ज्ञानी गुरु मिल्या, रोग थया आलमाल ॥ रा० ॥ ॥ ११ ॥ विधिसाथे पंचमी करे, राजादिक परिवार ॥ रा० रोगगया

सवि तेहना, जिम जाये तडके ठार॥ रा० ॥ १२ स्वयंवर मंडप मांडीयो, परणी एक हजार ॥ रा० ॥ हरख्यो वरदत्त इम कहे, जैनधरम जग सार ॥ रा० ॥ १३ ॥ राज थापी निज पुत्रने, साधे शिवपुर साथ ॥ रा० ॥ अजितसेन चारित्र लीयो, साचा श्री गुरु हाथ ॥ रा० ॥१४॥ सुख विलसे संसारनां, वरतावे निज आण ॥रा०॥ पुत्र जनमए हवे थयो, उग्यो अभिनव भाण ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ गुणमंजरी सुंदर भई, परणी सा जिनचंद ॥ चारित्र साधी नीरमलुं, पामे वैजयंतसुरिंद ॥ वरदत्त मनमां चिंतवी आपे सुतने राज ॥ हवे हुं संजम आदरु, साधु आतम काज ॥२॥ अशुभ ध्यान दुरे करे, धरती जीनवर ध्यान ॥ काल धरम पामी उपन्यो, पुष्कलावती विजयप्रधान ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सहीयां हे पीउ चालीयो ॥ ए देशी ॥

॥ सौभाग्य पंचमी आदरो, जिम पामो हो सुख सघलां वडवीरतो ॥ चोथ भत्ते शुदी पंचमी, व्रत धरवुं हो भोंये सूवुं धीरतो ॥ सौ० ॥ १ ॥ त्रण काल देव वांदीए, कीजे दीजे हो गुरुने बहु मानतो ॥ पडिक्कमणां दोय वारना, जिम वाधे हो उत्तम गुण ग्यानतो ॥ सौ० ॥ २ ॥ नयरी पुंडरीगीणी सोहती, विराजे हो अमरसेन भुपालतो ॥ तस धरणी शीले सतीगुणवती, कुखेहो अवतरीयो बालतो ॥ सौ० ॥ ३ ॥ सज्जन संतोषी सामटां, नाम थापेहो सुरसेन अभिरामतो ॥ चंदकला जेम वाधती, तेम वाधेहो साधे निज नामतो ॥ सौ० ॥ ४ ॥ यौवनवय जाणि पिता, सो कन्या हो परणावी सार-

तो ॥ राज देई निज पुत्रने, अमरसेन पहोतोहो पर लोक मोजारतो ॥ सौ० ॥ ५ ॥ श्री सिमंधर आव्यां सांभली, वांदवानेहे आवे तीहां भूपतो ॥ ज्ञान आराधन देशना, देखाडेहे वरदत्त स्वरुपतो ॥ सौ० ॥ ६ ॥ सूरसेन हवे विनवे, प्रभु प्रकाशो हो ते कुण वरदत्त तो ॥ सकल वात मांडी कही, तप मांडयो हे कीजे रंग रत्ततो ॥सौ०॥ ॥ ७ ॥ जिनवर वांदी आवीआ, संवेगे हे मुके घर भारतो ॥ सिंह-तणी परे आदरी, जिणे लहीए हे भवजलनो पारतो ॥ सौ० ॥ ८ ॥ पंच महाव्रत आदरो, सहस वरस हे पामे केवलज्ञान तो ॥ अविचल सुख एणे लह्यां, इम निसुणि हे ॥ आराधे ज्ञान तो ॥ सौ० ॥ ९ ॥ जंबुद्वीप माहे वली, विजय रमणी हो नगरी चोसाल तो ॥ अमरसेन अमरावती, पुण्य प्रगट्यो हो, आव्यो ए बालतो ॥ सौ० ॥ १० ॥ गुणमंजरी जीव उपनो, राजाने हे हुओ उछरंगतो ॥ राजकरे निज तातनुं, प्रेमे परणे हो कन्या सुख संगतो ॥ सौ० ॥ ११ ॥ एक दीन मनमां चिंतवें, हुंतो साधु हे निज आतम काजतो ॥ चार सहस्स बेटा थया, पाट आपे हो निजसुत शिरताजतो ॥ सौ०॥ १२ ॥ सिंह-तणी परे नीकले, लाख पूरवहे संयम शीरताजतो ॥ तप तपे अति आकरा, केवल पामीहो लहे शिवराजतो ॥ सौ० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ राग धन्याश्री ॥ खजानानी ॥

तप उजवणुं एणी परे सुणीए, वित सारु धन खरचोजी ॥ पांचम दिन पामी कीजीए, ज्ञानादिकने आचरोजी ॥ पांच प्रती सिद्धांतनी सारी, पानां पांच रुमालजी ॥ खडीयो लेखण पाढी

पोथी, ठवणी कवली द्यो लालजी ॥ १ ॥ स्नात्र महोत्सव वि-धिसुं कीजे, रातीजगे गीत गायोजी ॥ चैत्यादिक पूजा करतां, जीनवरना गुणगाओजी ॥ गुणमंजरी वरदत्त तणीपरे, कीजे त्रिकरण शुद्धजी ॥ ए विध करतां थोडे काले, लहीए सघळी सिद्धजी ॥२॥ वासक्षेपी वली आपो, झरमर पांच मंगावोजी ॥ गुरु वांदी पुस्तकने पुजी, सामी सामीणो नोतरावोजी ॥ गुरुने तेडी वे करजोडी, आद-रसुं वोहेरावोजी ॥ पारणुं कीजे लाहो लीजे, पांचम तप उजवा-वोजी ॥ ३ ॥ नेमि जिणेसर अति अलवेसर, केशर वर सम काया-जी ॥ ए उपदेश सुणीने समज्या, ज्ञान लोचन देखायाजी ॥ वरदत्त गणधर आगे कहीए, लहीओ भविजन प्राणीजी ॥ सौभाग्य पंचमी तप आराहो, निसुणो जीनवर वाणीजी ॥ ४ ॥ देह निरोग सोभागी थाओ, पाओ रंगरसालजी ॥ मुरखपणुं दूरे छांडो, मांडो ज्ञान विशा-लाजी ॥ सौभाग्य पंचमी जे नर करशे, ते वरशे मंगल मालजी ॥ गजरथ छोडो सुंदर मंदिर, मणिमय झाक झमालजी ॥ ५ ॥ संवत सत्तर अट्ठावन मांहि, सिद्धपुर रही चोमासजी ॥ कार्त्तिक शुदी पांचम दीने गायो, सफल फली मुज आसजी ॥ तपगच्छ नायक दिनकर सरीखा श्रीविजयप्रभ सुरिंदाजी ॥ श्रीविजयरत्न सुरीश्वर राजे, प्रणमे परमानंदाजी ॥६॥ क०॥ इम नेमि जिनवर सयल सुखकर, उपदिश भवि हित करो ॥ तपगच्छ नायक सुखदायक लायक मांही पुरंदरो ॥ श्री लालकुशल विबुध सुखकर, वीर कुशल पंडित वरो ॥ सौभाग्य कुशल सुगुरु सेवक, केशर कुशल जयकरो ॥ इतिश्री सौभाग्यपंचमी स्तवन संपूर्णम् ॥

आठमनुं स्तवन.

दोहा ॥ पंच तीरथ प्रणमुं सदा, समरी शारद माय ॥
अष्टमी स्तवन हरखे रचुं, सुगुरु चरण पसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥१॥ हांरे लाला जंबुद्वीपना भरतमां, मगध देश महंत रे ॥ ला० ॥ राजगृही नगरी मनोहरु, श्रेणीक बहु बलवंतरे ॥ला०॥ ॥ १ ॥ अष्टमी तीथी मनोहरु ॥ हां चेलणा राणी सुंदरी, शियल वती सीरदाररे ॥ ला० ॥ श्रेणीक सुत बुध छाजता, नामे अभय कुमाररे ॥ ला० ॥ अ० ॥ २ ॥ हां० वर्गणा आठ मीटे, एहथी अष्ट साधे सुख निधानरे ॥ लाला ॥ अष्ट मद भाजे वज्र छे, प्रगटे समकित निधानरे ॥ला०॥अ०॥ ३ ॥हां० अष्ट भय नासे एहथी, अष्ट बुद्धि तणो भंडाररे ॥ लाला अष्ट प्रवचन ए संपजे, चारित्र तणो अणाररे ॥ला०॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ हां० अष्टमी आराधन थकी, अष्ट करम करे चकचूररे ॥ लाला० ॥ नवनिधि प्रगटे तस घरे, संपुरण सुख भरपुररे, ॥ ला० ॥ अ० ॥ ५ ॥ हां० अडदृष्टि उपजे एहथी, शीव साधे गुण अंकुररे ॥ लाला सिद्धना आठगुण संपजे, शीव कमला रुपस-रुपरे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥२॥ जीहो राजगृही रळीयामणी, जीहां वीचरे वीर जीणंद ॥ जीहो समवसरण इंद्रे रच्युं, जीहों सुरासुरनी वृंद ॥ १ ॥ जगत सहुं वंदे वीर जीणंद ॥ ए आंकणी ॥ जीहो देवरचीत सिंहा-सणे ॥ जीहो बेठा वीर जीणंद ॥ जीहां अष्ट प्रतिहारज शोभता ॥ जीहो भामंडल झळकंत ॥ जगत० ॥ २ ॥ जीहो अनंत गुणीहो जी-नराजजी जीहो परउपगारी प्रधान ॥ जीहो करुणा सिंधु मनोहरु,

जीहो त्रिलोके जगभाण ॥जगत०॥३॥ जीहो चोत्रीस अतिशय विराजता जीहो वाणी गुण पांत्रीस ॥ जीहो बारे परखदा भावशुं, जीहो भगते नमावे शीस ॥ जगत० ॥ ४ ॥ जीहो मधुरी ध्वनी दीये देशना, जीहो जीमरे असाढोरे मेघ ॥ जीहो अष्टमी महिमा वरणवे, जीहो जगत बंधु कहे तेम ॥ जगत० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ रुडीने रडियालीरे वाला तारी देशनारे, तेतो जोजन लगे संभळाय ॥ त्रिगडे विराजेरे जिन दीये देशनारे, श्रेणीक वंदे प्रभुना पाय ॥ अष्टमी महिमा कहो कृपा करीरे, पुछे गोयम अणगार ॥ अष्टमी आराधन फल सिधनुंरे ॥ १ ॥ वीर कहे तीथी महिमा एहनोरे, ऋषभनुं जनमकल्याण ॥ ऋषभ चारित्र होय नीरमलुंरे, अजितनुं जनम कल्याण ॥ अ० ॥ २ ॥ संभव च्यवन त्रीजा जिनेसरुरे, अभिनंदन निरवाण ॥ सुमति जनम सुपार्श्व च्यवन छेरे, सुविधि नेमि जनम कल्याण ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत जनम अतिगुण निधिरे, नमुं शीवपद लीयुं सार ॥ पार्श्वनाथ निर्वाण मनोहरुरे, ए तिथि परम आधार ॥ अ० ॥ ४ ॥ गौतम गणधर महिमा सांभलीरे, अष्टमी तिथि परिमाण ॥ मंगल आठतणी मालिकारे, तसघेर शीव कमला परधान ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ढाल॥४॥ आवश्यक निर्युक्तिए भासे, महानिशिथी सूत्रेरे ॥ ऋषभ वंश धूर वीरजी आराधो, शीवसुख पामे पतीतरे ॥ श्री जिनराज जगत उपगारी ॥ ए आंकणी ॥ ए तिथी महिमा वीरजी प्रकाशे, भविक जीवन भासेरे, शासन तारुं अविचल राजे, दिनदिन दोलत वाधेरे ॥श्री०॥२॥ त्रिसलारे नंदन दोष निकंदन, कर्म शत्रुने

जित्यारे ॥ तीर्थंकर माहंत मनोहर, दोष अढारने वरज्यारे ॥श्री०॥३॥ मन मधुकर जिनपद पंकज लीनो, हरखी नीरखी प्रभुध्यायरे ॥ शिवकमला सुख दीयो प्रभुजी, करुणानंद पद पावुंरे ॥ श्री०॥४॥ वृक्ष अशोक सुर कुसुमनी वृष्टि, चमर छत्र विराजेरे ॥ आसन भा मंडल जिनदीपे, दुंदुभी अंबर गाजेरे ॥ श्री ॥ ५ ॥ खंभात बंदर अतिय मनोहर, जीनप्रसाद घणा सोहिएरे ॥ बिंब संख्यानो पारन लेवुं, दर्शन करी मन मोहिएरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत अढार ओगण चालिस वर्षे, आश्विन मासे उदारोरे, शुक्लपक्ष पंचमी गुरुवासरे, स्तवन रच्युं छे त्यारेरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पंडित देव सोभागी बुद्धि लावण्य, रतन सोभागी तणे नामरे ॥ बुद्धि लावण्य लीयो सुख संपुरण, श्री संघने कोड कल्याणरे ॥ श्री० ॥ ८ ॥

अथ अष्टमी स्तवन.

॥ दुहा ॥ जय हंसासणी शारदा, वरदाता गुणवंत ॥ माता मुज करुणा करी, महियल करो महंत ॥ १ ॥ सोल कला पूरण शशि, निर्जित एणे मुखेण ॥ गजगति चाले चालती, धारती गुणवर श्रेण ॥ २ ॥ कवि घटना नवनवीकरे, केवल आणी खंत ॥ माता तुज सुपसाउले, प्रगटे गुण बहुभ्रांत ॥ ३ ॥ माता करुं तुज सान्निधि अष्टमी स्तवन उदार ॥ शत मुखे जीभे को स्तवे, तुज गुण नावे पार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥१ ॥ नमवा नेमि जिणंदने ॥ ए देशी ॥

अष्टमी तिथि भावे आचरो, स्थिरकरी मन वच कायारे ॥ ध्यान धरम ध्याइए, टाळीए दुष्ट अपायरे ॥ आं० ॥ १ ॥ पोसहपण

धरीयें सही, समता गुण आदरीयेरे ॥ राज्यकथादिक वरजीए, गुणी-जन गुण आचरीएरे ॥ अ० ॥ २ ॥ षटलेश्यामांहे करी, आद्य त्रिहुं अप्रशस्तरे ॥ वरजो सज्जन दूर ए, धरो त्रिहुं अंत प्रशस्तरे ॥अ०॥३॥ शल्य त्रिहुं दुरे तजो, वरजो कुमति कुनारीरे ॥ सद्गति केरी निवारीका, दुर्गति केरी ए बारीरे ॥ अं० ॥ ४ ॥ रमीए सुमति नारीसुं, करीए दान सहायरे ॥ मैत्री प्रमोद करुणादिक, धरीए दिल सुखदायरे ॥ अ० ॥ ५ ॥ वाचना पृच्छना तिम वली, अनुप्रेक्षा धर्म संगरे ॥ परावर्त्तना पंच भेद ए, करीए धरी मनरंगरे ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ ज्ञानावरणीय दर्शना, वरणी वेदनीय तेमरे ॥मोह आयु नाम गोत्रए, आठमुं अंतरायरे ॥ अ० ॥ ७ ॥ ए अष्ट कर्म विनाशिनी, अष्टमी तिथि जिन भाखीरे ॥ आराधनादिक ए क्रिया, मानव गति एक साखीरे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥२॥ मुनिवर आर्यसुहस्तीरे ॥ ए देशी ॥

बासठ मार्गणा द्वाररे प्रभुजीए कह्यां, सुंदर सुललित वयण थीए ॥ तेहमां दश द्वाररे मोक्ष जिनेश्वरे कहिया, अवरमां नवि लह्यां ए ॥ १ ॥ तिण कारण दिव्य मोक्षरे, कारण सुख तणा, पामे मानव भवथकी ए दुलहो दश दृष्टांतरे, लहिय मनुज भव, हारो मद विषय थकी ए ॥ २ ॥ पंच भरत मजाररे, पंच ऐरव्रत, पंच महाविदेहमां ए ॥ पंनर कर्मभूमि रे, नाणी जिनवरे, धर्म कह्यां नहि अन्यमांहे ॥ ३ ॥ क्रोध मानने मायारे, लोभ तिम वली, ए

चारे दुखदायीया ए ॥ अप्रत्याख्यानादिकरे, करतां भेद ए सोल होए तजो भाइआ ए ॥ ४ ॥ थोडापण ए कषायरे, कीधां दुख दीए मिश्रानंद तणी परे ए ॥ ते माटे तजो दूररे, हृदयथकी वली, जेम अनुक्रमे शिव सुख वरोए ॥ ५ ॥ अष्टमी तिथि आराधेरे, अष्ट प्रवचन, माता आराधक कहु ए ॥ अनुक्रमे लहे निर्वाणरे, ए तिथि आराधे, मुक्ति रमणी सन्मुख जुवे ए ॥ ६ ॥ अभय दान सुपात्ररे, अष्टमी पर्वणी, दिजे अढलक चित्तशुं ए ॥ पामे वहूली ऋद्धिरे, परम प्रमादशुं लीजे लाहो वित्तशुं ए ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ श्री पार्श्वजिन पसाय इणिपरे, संवत सतर अढार ए ॥ वैशाख सुदी वर अष्टमी दिन, कुमति दिनपति वार ए ॥ श्री शुभविजय उवज्झाय जयकर, शिष्य गंगविजय तणो ॥ नय शिष्य पभणे भक्ति रागे, लह्यो आनंद अति घणो ॥ १ ॥ ॥ इति श्री अष्टमी स्तवनम् ॥

॥ मौन एकादशी स्तवनम् ॥ ढाल. १॥

॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

प्रणमी पुछे वीरनेरे, श्री गोयम गणराय ।
मृगशिर सुदि एकादशीरे, तपथी शूं फल थायरे ॥
जिनवर उपदिशे, तिहां सांभले सहु समुदायरे ॥जिन०॥ १ ॥

वीर कहे गोयम सुणोरे, हरि आगल कह्यो नेम,
तेम तुम आगल हुं कहुंरे, सांभलो मनधरी प्रेमरे ॥जि० ॥२॥
द्वारिका नयरी समोसर्यारे, एकादिन नेमि जिणंद ॥
कृष्ण आव्यां तिहां वांदवारे, पुछे प्रश्न नरिंदरे ॥ जि० ३ ॥
वर्ष दिवसनां दिन मिलीरे, तिनसो साठ कहंत ॥
तेहमां दिन कुण एहवोरे, तपथी बहु फल हुंतरे ॥ जि० ४ ॥
मृगशिर शुदि एकादशीरे, वर्णवी श्री जगनाथ ॥
दोढसो कल्याणक थयांरे, जिननां एकण साथरे ॥ जि० ५ ॥
श्री अरजिन दीक्षा ग्रहीरे, "नमि" ने केवल नाण,
जन्मदीक्षा केवल लह्यारे, श्रीमल्लि जगभाणरे ॥ जि० ६ ॥
वर्तमान चोविशीनारे, भरते पंच कल्याण ॥
ए पांच भरते थइरे, पंचाधिक वीश जाणरे ॥ जि० ७ ॥
पांचे ऐरव्रते मिलीरे, कल्याणक पंच पंच ॥
दश क्षेत्र सहु ए मिलीरे, पचास कल्याणक संचरे ॥ जि० ८॥
अतीत अनागत काळनांरे, वर्त्तमानना वली जेह ॥
दोढसो कल्याणक कह्यारे, उत्तम इणदिन एहरे ॥ जि० ९ ॥
जे एकादशी तप करेरे, विधि पूर्वक गुणं गेह ॥
दोढसो उपवासो तणोरे, फल लहे भवियण तेहरे ॥जि० १०॥

॥घोडी तो आवी तारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥ ढाल ॥२॥

हवे एकादशी तप तणो माधवजी, विधि कहूं निर्मल
बुद्धि हो गुणरागी नरेश्वर सांभलो जादवजी
देव जुहारो देहरे ॥ मा० ॥ गुरुवंदो भाव विशुद्धि हो ॥गु०॥१॥
अहरत्तो पोसह करी ॥ मा०॥ गुरु मुखे करो पच्चक्खाणहो ॥ गु०॥
देव वंदो त्रण टंकना ॥ मा० ॥ सांभलो सदगुरु वाणी हो ॥ २ ॥
दोढसो कल्याणक तणो ॥मा०॥ गुणणो गुणो एक मने हो ॥गु०॥
भणण गुणण किरीया विना ॥मा०॥ नविबोले अन्य वचन हो॥गु३॥
मौन ग्रहो निशीदिवसनो ॥मा०॥ राखो शुभ परिणाम हो ॥गु०॥
मौन एकादशी ते भणी ॥ मा० ॥ निरुपम एवुं नाम हो ॥गु० ४॥
प्रथम दिने एकासणुं ॥ मा० ॥ पारणे एहिज रीत हो ॥ गु० ॥
बारवर्ष तप इम करे ॥ मा०॥ शुद्ध धर्मशुं प्रीत हो ॥ गु० ॥ ५ ॥
अंग अग्यारे ते भणे ॥ मा० ॥ पाडिमा तप इग्यार हो ॥ गु० ॥
प्रतिमासे उपवासनो ॥ मा० ॥ तप करे निरुपम वार हो ॥गु०६॥
सुव्रतशेठ तणी परे ॥मा०॥ मन राखे स्थिरता जोग हो ॥ गु० ॥
तो एकादशी दशमे भवे ॥मा०॥ लहे शिववधू संजोग हो ॥गु०७॥

॥ देशी ललनानी ॥ ढाल. ॥ ३ ॥

हवे उजमणुं तप तणुं, एकादशी दिनसार ललना,
दिन इग्यारे देहरे, स्नात्र पूजा अधिकार ललना ॥
भगवंत भाषे हरिभणी ॥ १ ॥

ढोणुं ढोवियें देहरे, धान्य इग्यार प्रकार ॥ ल० ॥
श्रीफल फोफल सुखडी, नव नवी भात इग्यार लं० ॥भ० ॥२॥
केसर सुखड धोतीयां, कांचन कलश शृंगार ल० ॥
धूप धाणाने वाटकी, अंगलूहणा घन सार ॥ ल० भ० ॥ ३ ॥
अंग इग्यारे लिखावीथे, पुठाने रूमाल ॥ ल० ॥
झाबी दोरा दाबडी, लेखण कांबी निहाल ॥ ल० भ० ॥ ४ ॥
झीलमल चन्द्रुआ भला, ठवणी स्थापना काज ॥ ल० ॥
पाटी जपमाला भली, वासना वटुआ साज ॥ ल० ॥ भ० ॥५॥
मीजणाने वली पूजणा, कवली कोथली ताम ॥ ल० ॥
रेशमनी पाटी रुयडी, मुहपत्ती जयणा काम ॥ ल० भ० ॥ ६ ॥
ज्ञानना उपगरण भला, इग्यार इग्यार मान ॥ ल० ॥
साधर्मिक इग्यारने, पोषीजे पकवान ॥ ॥ ल० ॥ भ० ॥ ७ ॥
ते सांभली हरि हरखीया, आदरे व्रत पच्चरकाण ॥ ल० ॥
तिथि एकादशी तप करे, बार वर्ष गुण खाण ॥ ल० भ० ॥८॥
तीर्थंकर पद तिण थकी, गोत्र निकाचित कीध ।, ल० ॥
अमम नामे जिन बारमा, होसी तप फल सीध ॥ ल० ॥ भ०॥९॥

इण विधि श्रीवीरे कह्यो, ए अधिकार अशेष ॥ ल० ॥
तेह भणी तप तुमे आदरो, लेशो सुख सुविशेष ॥ल०॥भ०॥१०॥

॥कलश॥ श्रीवीरजिनवर सयल सुखकर वरणवी एकादशी, ते सुणीय वाणी भविक प्राणी तप करण मन उल्लसी ॥ जशवंत सागर सुगुण आगर शिष्य जिनेन्द्रसागरे, एकादशी यह स्तवन कीधो सुणीय भवियण आदरे ॥ १ ॥

अथ एकादशीनुं स्तवन.

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परखदा बेठी रुडी, मागसर सुदी अगीयारस वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथनां तीन कल्याण, जन्म दीक्षाने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रुडी ॥ मागसर सुदी अगीआरस वडी ॥ २ ॥ नमीने उपन्यु केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति प्रधान ॥ ए तिथिनी महिमा वडी, ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरव्रत इमहीज, पांच कल्याणक हुवे तिमहीज ॥ पचासनी संख्या परगडी, ॥मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसो कल्याणक थाय तेम ॥ कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी ॥मा०॥५॥ अनंत चोविशी इण परे गणो, लाभ अनंत उपवास तणो, ए तिथि सहुशीर ए खडी, ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौन पणे रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परे व्रत इम

वडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ आठ पोहोरी पोसो लीजीये, चौविहार विधिशुं कीजीए ॥ पण प्रमाद न कीजे घडी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वर्ष इग्यार कीजे उपवास, जावजीव पण अधिक उल्लास ॥ ए तिथि मोक्षतणी पावडी, ॥ मा० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पडी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहेरे स्नात्र कीजे वली, पोथी पूजो जे मन रळी ॥ मुक्ति पुरी कीजे ढूंकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन अगीआरस मोटूं पर्व, आराध्यां सुख लहीए सर्व ॥ व्रत पचरवाण करो आखडी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सहु मनगमे ॥ समय सुंदर कहे दाहाडी ॥ मा० ॥ १३ ॥

श्री वीश स्थानकनुं स्तवन.

॥ हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मागुं वचन विलासजो, वीशरे तप स्थानक महिमा गाईशूंरे लोल ॥ हांरे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चोवीसजो, बीजेरे सिद्ध स्थानक पन्नर भावशुंरे लोल ॥१॥ हां० त्रीजे पवयणसुं गणशो लोगस्स सातजो, चउथेरे आयरियाणं छत्रीसनो सहीरे लोल ॥हां०॥ थेराणं पद पंचमे दस उदारजो, छठ्ठेरे उवज्झायाणं पचवीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हां० सातमे नमोलोए सव्वसाहु सत्तावीसजो, आठमे नमो नाणस्स पंचे भावशुंरे लोल ॥ हां० नवमे दरिसण सडसठ मनने उदारजो, दशमे नमो विणयस्स दस वखाणीएरे ॥ ३ ॥ हां० अगीआरमे नमो चारित्तस्स लोगस्स

सत्तरजो, बारमे नमो बंभस्स नवगुणे सहीरे लो० ॥ हां० ॥ कीरियाणं पदतेरमे वली पचवीसजो, चउदमे नमो तवस्स बार गुणे सहीरे लो० ॥ ४ ॥ हां० पंदरमें नमो गोयमस्स अठावीसजो नमो जिणाय चउवीस गणशुं सोलमेरे लो० ॥ सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशुं एकावन अढारमेरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ओगणीसमे नमो सुअस्स वीस पीस्तालीसजो, वीसमे नमो तित्थस्स वीस भावसुंरे लो० ॥ हां० तपनो महिमा चारसें उपर वीसजो, षटमासे एक ओली पूरी कीजीएरे लो० ॥ ६ ॥ हां० तप करतां वळी गणीये दोयहजार जो, नवकारवाली वीसे स्थानक भावसुंरे लो० ॥ हां० प्रभावना संघ स्वामी वच्छल सारजो, उजमणां विधि कीजीए विनय लीजीएरे लो० ॥ ७ ॥ तपनो महिमां कहो श्री वीर जिनरायजो, विस्तारे इम संबंध गोयम स्वामिनेरे लो० ॥ हां० तप करतां वली तीर्थंकर पद होयजो, देवगुरु इम कांति स्तवन सोहामणोरे लो० ८ ॥ इतिश्री वीस स्थानक स्तवन संपूर्ण ॥

श्री अढीद्वीप वीसजिनस्तवन.

॥ ढाल ॥ १ ॥ धातकी खंडना भरतमां ॥ ए देशी ॥

वंदु मनशुद्ध विहरमान जीणेसर वीस, द्वीप अढीमे विचरे जयवंता जगदीश ॥ केवल ज्ञानने धारे तारे करी उपगार, किण किण कामे कुण कुण जिण कहीशुं सुविचार ॥ १ ॥ पेतालीस लख जोयण मानुष क्षेत्र प्रमाण, वलीयाकारे अर्धपुष्कर सीमा जाण ॥

दोय समुद्रे सोहे दीप अढाइसार, तीणमें पंनरे कर्मभूमिनो कहुं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबुद्वीप समे विच थाल आकार, लांबो पहोलो एक लख जोयणने विस्तार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदर्शन नामे मेर, तिणथी दिशि विदिशानी गीणती चारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिशि एह भरत शुभक्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र ॥ उत्तर खंडमां एहवो ऐरवत क्षेत्र कहाय, इण बिहु कर्म भूमि आरा छये फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रिस सहस छसय चोरासी जोयण जाण, च्यार कलाए महाविदेह विष्कंभ वखाण ॥ भरतथी बमणो एक एक विजय तणो परिमाण, एहवी विजय बत्रीस, विराजे जेहनो ठाण ॥ ५ ॥ मेरु विचे करे पूरव पश्चिम दोय विभाग, सोले सोले विजय तिहां विचरे वितराग ॥ शास्वते चोथे आरे तारे श्री अरिहंत, ए हवे महाविदेह कर्म भूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूर्वविदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठाम, पुंडरीकणी नगरी तीहां सीमंधर स्वामि ॥ वप्र विजय पचीसमी विजयपुरनो नाम पश्चिम विदेह बीजा युगमंधर कीजे प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहीज नवमी वच्छविजय वळी पूर्वविदेह ॥ नयर सुसीमा तीजो बाहु नमुं धरी नेह ॥ वली नावर्त्त चोवीसमा पश्चिमविदेह वखाण, वीतशोका नगरी तीहां, चोथो सुबाहु सुजाण ॥ ८ ॥ ए च्यारेही जिनवर जंबुद्वीप मझार, महाविदेह सुदर्शन मेरु तणे प्रकार ॥ एवो जंबुद्वीप महागढ जेम गिरींद, खाइरूपे दोइ लख जोयण लवणसमुद्र ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दीपे बीजो द्वीप ए धन्य धन्य धातकी खंड, पहोलो चिहुं लखजोयणे मंडलरुपे मंड ॥ १० ॥ पूर्वे पश्चिम

घातकी, खंड गणीजे दोय ॥ विजयमेरु पूर्व दिशे, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ दी० ॥११॥ दोय भरत दोय ऐरवत दोयवली महाविदेह ॥ कर्मभूमि छे षट जिहां, उणहीज नामे एह ॥ दी० ॥ १२ ॥ एक एक मेरुने आशरे, कर्म भूमि तिन तिन ॥ निज निज मेरुथी मांडीने लखो चिहुं दिश लीन ॥ दी० ॥ १३ ॥ श्री सुजात जिन पांचमा, छट्ठा स्वयंप्रभ ईश ॥ ऋषभानन जिन सातमा, समरीजे नीश दिश ॥ दी० ॥ १४ ॥ अनंतवीर्य जिन आठमा, ए च्यारे जिन राय ॥ पूर्व धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहेला चिहु जिननीपरे, बीयगनर दिस ठाण ॥ तीणहीज नामे अनुक्रमे, विजय मेरु अहीं नाण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमा सुरप्रभु नमु, दशमा देव विशाल ॥ इम वज्रधर अगीयारमा, त्रिकरण प्रणमुं त्रिकाल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमा चंद्रानन जिन, पश्चिम धातकी-मांहि ॥ विचरे च्यारे जिनवरा, अचल मेरु उच्छाह ॥ दी० ॥१८॥ एहवो धातकी खंड ए, प्रदक्षिणा प्रकार ॥ अठलख जोयण वींटीयो, समुद्र कालोदधि सार ॥ दी० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कालोदधिने पेले पारे, वींट्यो चुडी जेम विचारे ॥ सोले लख जोयण विस्तारे, द्वीप पुष्करवर अति सुखकारे ॥ सुखकारे पुष्कर द्वीप तीजो, तेहने आगेवगे ॥ द्वीप पड्यो पर्वत मानुष्योत्तर मनुष्यक्षेत्र तिहांलगे ॥ तिण आध करी अठलाख जोयण अर्ध पुष्कर एमए ॥ तीहां कर्मभूमि छए कहीजे, धातकीखंड जेम ए ॥ २० ॥ आधे पुष्करने पूर्व दिशे, मंदिर नामे मेरु तिहां

वसे ॥ पंचम विज्जुमाली मेरुए इहां कीणठामे इतरो फेर ए ॥ फेरए इतरो इहां नामे अवरठामे को नहीं, एक एक मेरे तीन तीने कर्म भूमि तिहां कही ॥ तिम भरत ऐरव्रत विदेहे नाम सिरखेहे तप तीणहीज नामे विजय सगली शाश्वता धर्मक्षेत्रए ॥ २१ ॥ धातकी खंडे तिम पुष्कर सही इण क्षेत्रनो नाम कह्यो नहीं ॥ दुगण दुगणी अति विस्तार ए, शास्त्र थकी लेजो सुविचार ए ॥ सुविचार दाखी तेह सघलो नगर तिमहीज मन गमे, पूर्व पश्चिम जेह जिणदिश तेह तिमहीज अनुक्रमे ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग इसर नेम चार तीर्थंकरा पूर्व पुष्कर अर्धमांहे सर्व जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ वैरसेन वंदु जिन सत्तरमा, श्री महाभद्र अढारमा नित नमो ॥ देवजसा ओगणीसमा देवए, जसोऋद्धि वीसम जिन सेव ए ॥ जिन सेव च्यारे अर्ध पुष्कर मांहे पश्चिम भागए ॥ तिहां मेरु विज्जुमाली चिहुदिस विचरता वीतराग ए ॥ चोराशी पूर्व लाख वरसां आउ एक एक जिनतणो पांचसे धनुष शरीर सोहे, सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ काल जघन्ये इम जिन वीसए, हवे उत्कृष्ट भेद कहीस ए ॥ एकसो सित्तेर जिहां जिनवर रहे, पांचे भरते जिण पांच लहे ॥ जिण लहे पांचे तेम पांच ऐरव्रत मली दस हुआ ॥ एक एक विदेह बत्तीस विजया, जीहांपण जिण जुजुआ ॥ एकसो सित्तेर एम जिनवर, कोडी नव वली केवली ॥ नव सहस कोडी अवर मुनिवर वंदीए नित ते वली ॥२४॥ इहां भरते ऐरव्रते आज ए, पंचम आरे नहीं जिनराज ए, धन्यधन्य पांचे महाविदेह ए, वीचरे वीसे जिन गुणगेह ए, गुणगेह दोष अढार

जीन्या अतिशया चोतीस ए ॥ चोसठ इन्द्र नरिंद सेवत नमु ते नीस दीसए ॥ तीहां आज विचरे तरणतारण केवली दोये कोडए, दुअ सहस कोडीसु साधु बीजा, नमुं बेकर जोडए ॥ २५ ॥

॥ कलस ॥ एम अढी द्वीप पनरमा कर्म भूमिक्षेत्र प्रमाणए, सिद्धांत प्रकरण साख भाख्या वीस विहरमाण ए ॥ श्री नगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसे समे, सुखविजय हरख जिणंद सानिधे, नेह धरि धर्मसिंह नमे ॥२६॥ इति श्रीअढीद्वीप जिन स्तवन संपूर्ण.

श्री कल्याणकनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ प्रणमी जिन चोवीसने, कहुं कल्याणक तास ॥ मास अमावस्य तणी, रीति धरी सुविलास ॥ १ ॥ जेहना नाम स्मरण थकी, नासे भव भव पाप ॥ तिणे कल्याणकने दिने, कीजे प्रभुनो जाप ॥ २ ॥ च्यवन परमेष्ठिने नमः, जनम अर्हते नाम ॥ नाथाय नमः दिक्षा पदे, गणीए निजगुण काम ॥ सर्वज्ञाय नमः केवली, मोक्ष पारंगताय ॥ आंविल पौषधने वळी, एकासणे पण थाय ॥ ४ ॥

॥ ढाळ ॥ १ प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुजवात ॥ ए देशी ॥

आसो सुद पूनम दिनेजी, च्यविया नमि जिनराय ॥ वदी पांचम दिन केवलीजी, संभव जिनवर थाय ॥ १ ॥ भवि भाव धरीने गावो जिन कल्याणक ॥ १॥ ए आंकणी ॥ बे कल्याणक बारशे जी,

नेमजी च्यवन प्रमाण ॥ पद्मप्रभु जिन जनमीयाजी, तेरसे दिक्षा मंडाण ॥ भवि० ॥ २ ॥ वीर अमावासे शिव गयाजी, हवे कार्त्तिक सुद जाण ॥ त्रीजे सुविधि केवलीजी, बारसे अर जिननाण॥भवि०॥ ॥ ३ ॥ कार्तिकवदी पांचम दिनेजी, सुविधि जन्म एम होय ॥ छट्ठे व्रत सुविधि लीएजी, दसमे वीर व्रत जोय ॥ भवि० ॥ ४ ॥ अगीआरस दिने शिव लह्याजी, जिन उत्तम महाराज ॥ पद्मप्रभुने प्रणमतांजी, लहीये अविचल राज ॥ भवि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ प्रथम गोवाला तणे भवेजी॥ ए देशी ॥

मागसर शुद दशमी दिनेजी, कल्याणक छेरे दोय ॥ अर-जिन जन्मने शिव लह्याजी, ते प्रणमो सहु कोयरे ॥ भविका ॥ प्रणमो श्री जिनचंद ॥ जस प्रणमे वासव वृंदरे ॥ भविका० ॥ १॥ ए आंकणी ॥ अगीआरस दिन मोटकोजी, जे दिन पांच कल्याण॥ मल्लि जन्मव्रत केवलीजी, अर व्रत नमी जिन नाणरे ॥ भविका०२॥ जन्म्या संभव चौदशेजी, पुनमे वली व्रत लीध ॥ वदी दशमीथी चौदश लगेजी, लागट छे प्रसिद्धरे ॥ भविका० ॥ ३ ॥ पार्श्व जन्म वली व्रत लीयोजी, चन्द्रजन्म व्रत सार ॥ शीतल केवल पामीयाजी, हवे पोस सुदी अवधाररे ॥ भविका० ॥ विमल केवली छट्ठे दिनेजी नवमी ए शांतिने नांण ॥ अजित नाण अगीआरसेजी, लोकालोक सुजाणरे ॥ भविका० ॥ ५ ॥ चौदसे केवल उपनोजी, अभिनंदन जिण भाण ॥ धर्म केवली पुनिमेजी, हवे वदीनुं मंडाणरे ॥ भवि० ॥

॥ ६ ॥ छठे पद्म च्यवन भलुंजी, बारसने दिन दोय होय ॥ शितल जन्म मुनि थयाजी, तेरसे ऋषभ शिव होयरे ॥ भविका० ॥ ७ ॥ अमावास्या दिन पामीयाजी, श्रेयांस केवलनाण ॥ जिन उत्तम पद पद्मनेजी, प्रणमो भविक सुजाणरे ॥ भविका० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ सुंदर महासुदीमां हवे जाणीये, बे कल्याणक बीजे हो ॥ सुंदर अभिनंदन प्रभु जनमीया, केवली वासुपूज्य हो ॥ सुंदर कल्याणक दिने गाइए ॥ १ ॥ सुंदर त्रीज दीने पण दोइ कह्या, जन्म विमलने धर्महो ॥ सुंदर चोथे विमल जिन व्रत लीये, आठमे अजितनो जन्महो ॥ सु० ॥ २ ॥ सुंदर नोमे अजित दिक्षा लीये, बारसे व्रत अभिनंद हो ॥ सुंदर तेरसे धर्म चारित्रिया, वदी मां सुणी सुखकंद हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ सुंदर छठे सुपासजी केवली, सातमे दोय कल्याण हो ॥ सुंदर शिव पहोत्या सुपासजी, चंद्रप्रभु लहे नाण हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ सुंदर नोम दिने सुविधि च्यवीया, एकादशी आदि नाण हो ॥ सुंदर बारसे दोय श्रेयांस जणा, मुनिसुव्रत नाण जाणी हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुंदर तेरस श्रेयांस व्रत लीये, जाया चौदसे वासुपूज्य हो ॥ सुंदर अमावस्या वासुपूज्य व्रत, फागण सुदी हवे बीजहो ॥ सुंदर० ॥ ६ ॥ सुंदर अर च्यवीया चोथे मल्लि च्यव्या, संभव आठम च्यवन हो ॥ सुंदर बारसे दोय सुव्रत व्रती, मल्ली मोक्ष करो मनन हो ॥ सुंदर० ॥ ७ ॥ सुंदर वदी चोथे दोय जाणीए, पार्श्व च्यवन नाण हो ॥ सुंदर पांचम चंद्र च्यव्या-वळी, आठम दोय कल्याणक हो ॥ सुंदर० ॥ ८ ॥ सुंदर ऋषभजी

जनमने व्रत लीये, च्यार मुष्टी करी लोच हो ॥ सुंदर तपपद पद्म नम्या थकी, नवि आवे भवि शोच हो । सुंदर० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ माली केरा बागमां ॥ ए देशी ॥

त्रीजे सूणो जिननाणरे लो० अहो कुंथु जिन नाणरे लो०॥ त्रण पांचमें अनंत अजीतजी, संभव निर्वाणरे लो० ॥अहो संभव० ॥ ॥ १ ॥ नोमे सुमति जिन शिव वर्या, अगीआरसे लह्या नाणरे लो॥ अहो अ० तेरसे वीरजी जनमीया, छट्ठा पद्म विनाणरे लो ॥ ॥ अहोरा० ॥ २॥ वदी पडवे कुंथुं शिव लह्या, बीजे शितळ सिध्यारे लोल ॥ अहो० ॥ कुंथु दिक्षा लीइ पांचमे, निज कार्य सिध्यां रे लोल ॥ अहो० ॥ ३ ॥ शितल छट्ठे दिने, नमि शिव पद दशमेरे लो ॥ अहो० अनंत जन्म वली तेरसे, त्रण छे चौदमेरे लो ॥अ०॥ ॥ ४ ॥ दिक्षा केवल इण दीने, पाम्या श्रीअनंत रे लो ॥ अहो०॥ तिम कुंथु जिन जन्मीया, प्रणमो भवि संतरे लो ॥ अहो० ॥ ५ ॥ वैशाख सुदी चोथने दीने, अभिनंदन चवियारे लो० ॥ अहो० ॥ च्यविया धर्मने सातमे, आठमे दोय च्यवियारे लो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ अभिनंदन शिव पामीया, सुमति जिन जायारे लो ॥ अहो० ॥ नोमे सुमति व्रत वीरजी, दशमें नाण पायारे लो ॥ अहो० ॥ ७ ॥ बारसे विमल च्यवन थया, हवे तेरसे इहारे लो ॥ अहो० ॥ अजित च्यव्या वदी सांभलो, च्यव्या श्रेयांस छट्ठेरे लो ॥ अहो० ॥ ८ ॥ आठमे सुव्रत जनमीया, नेमि मोक्ष पधार्यारे लो ॥ अहो० ॥ तेरसे शांति

जन्मीया, नेम सिद्धि सिधायारे लो ॥ अहो० ॥ ९ ॥ शांति व्रत लीये चौदशे, तजी सर्व उपाधिरे लो ॥ अहो० ॥ १० ॥

॥ ढाल॥५॥ वाडी फूली अति भली ॥ मनभमरारे ॥ ए देशी ॥

जेठ सुदी पांचम दिने, जिन नमीयेरे ॥ मोक्ष गया धर्मनाथ भविक जिन नमीयेरे ॥ चविया वासुपूज्य नवमीये जिन नमीयेरे ॥ जे तारे ग्रही हाथ, भविक जिन नमियेरे ॥ १ ॥ बारसे सुपासजी, जन्म्या जि० ॥ तेरसे दीक्षा लीध ॥ भ० ॥ वदी चोथे चव्या ऋषभजी ॥ जि० ॥ सातमे विमलने मोक्ष ॥ भ० ॥ २ ॥ नमि जिन दीक्षा नवमीये ॥ जि० ॥ असाड शुदी छठ दीने ॥ भ० ॥ वीर च्यवन छे आठमे ॥ जिन० ॥ मोक्ष अरिष्ट नेमि जिन ॥ भ० ॥३॥ वासुपूज्य शिव चौदशे ॥ भ० ॥ वदी त्रीजे अवधार ॥ भ० ॥ सिद्धिश्री श्रेयांसने ॥ जि० ॥ पाम्या भवोदधि पार ॥ भ० ॥४॥ अनंतनाथ च्यव्या सातमे ॥ जि० ॥ आठमे नेमि जिन जन्म ॥भ०॥ कुंथु च्यव्या नोमे तेहना ॥ जि० ॥ प्रणमो पाद पद्म ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ सुण मोरी सजनी रजनी जायरे ॥ ए देशी ॥

सुमति च्यव्या श्रावण सुद बीजनेरे ॥ नेमि जन्म पांचम दिन लिजेरे ॥ छठ दिन दीक्षा नेमजीए लीधीरे ॥ पार्श्व आठम दिन वरीया सिद्धिरे ॥ १ ॥ पुनमे मुनिसुव्रत प्रभु च्यवियारे ॥ वदी सातमे दोय कल्याणक जाणोरे ॥ शान्ति च्यवन चन्द्र निर्वाणरे ॥ ॥ २ ॥ भादरवा सुदी नवमी सुविधि निर्वाणरे ॥ पद्मविजय कहे भव फल पायारे ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ गिरूआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

कल्याणक दिन गाइए, भाव हर्षे धरी बहु मानोरे ॥
प्रभु गुण स्मरण नित्य करी, तप करीये थइ सावधानोरे ॥क०१॥
ते कल्याणकनुं गणो, वली गणणुं दोय हजाररे ॥
वर्त्तमान चोवीशीए, कल्याणक दिन अति सारोरे ॥ क० ॥ २ ॥
इम अनन्त चोवीशी धारीए, तो अनन्त कल्याणक थायरे ॥
उजमणुं तप कीजीये, धरी भक्ति शक्ति निरमायरे ॥ क० ॥ ३ ॥
संवत अढार छत्रीशना, माहावदी बीजने शनिवाररे ॥
शोभन जोगे शोभन थयुं, प्रभु गायो हर्ष अपाररे ॥ क० ॥ ४ ॥
पाटण चोमासुं रही, लही जिन उत्तम सुपसायरे ॥
पद्मविजय पुण्ये करी, इम थुणीया श्री जिनरायरे ॥ क० ॥ ५ ॥

अथ श्री छ आवश्यकनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ चोवीसे जिनवर नमुं, चतुर चेतना काज ॥ आवश्यक जिण उपदिश्या, ते थुणश्युं जिनराज ॥ १ ॥ आवश्यक आराधीये, दीवस प्रत्ये दोयवार ॥ दुरित दोष दूरे टले, ए आत्म-उपकार ॥ २ ॥ सामायिक चउविसथ्थो, वंदण पडिकमणेण ॥ काउ-सग्ग पच्चखाणकर, आतम निर्मल एण ॥ ३ ॥ झेर जाय जिम जां-गुली, मंत्र तणो महिमाय ॥ तेम आवश्यक आदरे, पातक दुर पलाय

॥ ४ ॥ भार तजी जिम भार नहीं, हेलु हळवा थाय ॥ अतिचार आलोयतां, जन्म दोष तिम जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपुर होय अति उजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ पेहेलूं सामायिक करोरे, आणी समता भाव ॥ राग द्वेष दूरे करोरे, आतम एह स्वभावरे ॥ प्राणी समता छे गुण गेह ॥ एतो अभिनव अमृत मेहरे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ आपे आप विचारीएरे, रमीए आप स्वरूपे ॥ ममता जे परभावनीरे, विषमा ते विष कुपरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ भव भव मेळवी मुकीयांरे, धन कुटुंब संजोग ॥ वार अनंती अनुभव्यारे, सवि संजोग विजोगरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र जगको नहींरे, सुख दुःख माया जाल ॥ जो जागे चित्त चेतनारे, तो सवि दुख विसरालरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ सावद्य जोग परिहरोरे, ए सामायिक रूप ॥ हुआ ए परिणामथीरे, सिद्ध अनंत अरूपरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ साहेलडीनी ॥ ए देशी ॥

॥ आदीश्वर आराहीये साहेलडीरे, अजित भजो भगवंत तो ॥ संभवनाथ सोहामणा ॥ सा० ॥ अभिनंदन अरिहंततो ॥ १ ॥ सुमति पद्मप्रभ पुजीए ॥ सा० ॥ समरुं स्वामी सुपार्श्वतो ॥ चंद्रप्रभ चित्त धारीए ॥ सा० ॥ सुविधि सुविधि ऋद्धि वासतो ॥ २ ॥ शीतळ भूतळ दिनमणि ॥ सा० ॥ श्री पुरण श्रेयांसतो ॥ वासुपूज्य

सुर पूजीआ ॥ सा० ॥ विमळ विमल जस होतती ॥ ३ ॥ करुं अनंत उपासना ॥ सा० ॥ धर्म धर्म धुर धार तो ॥ शांति कुंथु अर मल्लि नमु ॥ सा० ॥ मुनिसुव्रत वडवीर तो ॥ ४ ॥ चरण नमुं नमीनाथना ॥ सा० ॥ नेमिश्वर करुं ध्यान तो ॥ पार्श्वनाथ प्रभु पूजीए साहेलडीरे, वंदु श्रीवर्द्धमान तो ॥ ५ ॥ ए चोवीसे जिनवरा ॥सा०॥ त्रिभुवन करण उद्योतती ॥ मुक्ति पंथ जेणे दाखव्यो ॥ सा० ॥ निर्मल केवल ज्योति तो ॥ ६ ॥ समकित शुद्ध एहथी होय, ॥ सा०॥ लीजे भवनो पार तो ॥ बीजुं आवश्यक इश्युं ॥ सा०॥ चउवीसथ्थो सार तो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ गीरिमां गोरो गीरुओए ॥ ए देशी ॥

॥ बे कर जोडी गुरु चरणे देउ वांदणांरे ॥ आवश्यक पचवीश धारोरे धारोरे धारोरे दोष बत्रीश निवारीएरे ॥ १ ॥ चार वार गुरु चरणे, मस्तक नामीएरे ॥ बार करी आवर्त्त खामोरे खामोरे खामोरे वली तेत्रीस आशातनारे ॥ २ ॥ गीतार्थ गुणी गिरुआ गुरुने वंदतांरे, गोत्र क्षय जाय, थायेरे थायेरे उंच गोत्रनी अरजनारे ॥ ३ ॥ आण ओलंगे कोई न जगमां तेहनीरे, परभव लहे सौभाग्य, भाग्यरे भाग्यरे दीपे जगमां तेहतुंरे ॥ ४ ॥ कृष्णराय मुनिवरने दीधां वांदणांरे, क्षायिक समकित सार पाम्यारे पाम्यारे तीर्थंकर पद पामशेरे, ॥ ५ ॥ शीतल आचार्य जिम भाणेजने रे द्रव्य वांदणां दीध, भावेरे भावेरे देतां वली केवल लह्युंरे ॥ ६ ॥ ए आवश्यक त्रीजुं एणीपेरे

जाणजोरे, गुरुवंदण अधिकार ॥ करजोरे करजोरे विनय भक्ति गुणवंतनी रे ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ चेतन चेतोरे चेतना ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानादिक जिनवर कह्यांरे, जे पांचे आचार तो ॥ दोयवार ते दिन प्रतिरे, पडिक्कमीए अतिचार ॥ जयो जिन वीरजीरे ॥ १ ॥ आलोइने पडिक्कमीरे, मिच्छामि दुक्कडं देय ॥ मन वच काया शुद्ध करीरे, चारित्र चोखुं करेय ॥ जयो०॥ २ ॥ अतिचार शल्य गोपवेरे, न करे दोष प्रकाश ॥ माछी मल्ल तणी परेरे, ते पामे परिहास ॥ जयो० ॥ शल्य प्रकाशे गुरु मुखेरे, होय तस भाव विशुद्ध ॥ ते हसी हारे नहींरे, करे कर्मशुं युद्ध ॥ जयो० ॥ ३ ॥ अतिचार इम पडिक्कमीरे, धर्म करो निःशल्य ॥ जितपताका तिम वरोरे, जिम जग फल्लही मल्ल ॥ जयो० ॥ ५ ॥ वंदित्तु विधिशुं कहोरे, तिम पडिकमणा सूत्र ॥ चोथुं आवश्यक इस्युरे, पडिक्कमणा सूत्र पवित्र ॥ जयो० ॥६॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ॥ ए देशी ॥

॥ वैद्य विचक्षण जेम हरे ए, पहेलां सोल विकारतो ॥ दोष शेष पछी रुझवाए, करे औषध उपचार तो ॥ १ ॥ अतिचार व्रण रुझवाए, कउस्सग्ग तिम होय तो ॥ नवपल्लव संयम हुवे ए, दूषण नव रहे कोय तो ॥२॥ कायानी स्थिरता करी ए, चपल चित्त करो ठामतो ॥ वचन जोग सवि परिहरिए, रमीए आतमराम तो ॥ ३ ॥ श्वास उश्वासादिक कह्योए, जे सोले आगार तो ॥ तेह विना सवि

परिहरो ए, देहतणा व्यापार तो ॥४॥ आवश्यक ए पांचमुं ए, पंचम गति दातार तो ॥ मनशुद्धे आराधीये ए लहीए भवनो पार तो ॥५॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ वालम वहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुण पच्चख्खाण आराधजो, एह छे मुक्तिनुं हेतरे॥ आहारनी लालच परिहरो, चतुर चित्त तुं चेतरे ॥सु०॥१॥ शल्य काढ्युं व्रण रुजव्युं, गई वेदना दूररे॥ पछी भला पथ्य भोजन थकी, वधे देह जेम नूररे ॥ सु० ॥ २ ॥ तिम पडिक्कमण काउरसग्गथी, गयो दोष सवी दुष्टरे ॥ पछी पचखाण गुण धारणे, होय धर्म तनु पुष्टरे ॥सु०॥ ॥ ३ ॥ एहथी कर्म कादव टले, एह छे संवर रूपरे ॥ अविरति कूपथी उद्धरे, तप अकलंक स्वरूपरे ॥ ४ ॥ पूर्व जन्म तप आचर्यो, विशल्या थई नार रे ॥ जेहना नवणना नीरथी, शमे सकल विकाररे ॥ सु० ॥ ५ ॥ रावणे शक्ति शस्त्रे हण्यो, पड्यो लक्ष्मण सेजरे ॥ हाथ अडतां सचेतन थयो, विशल्या तप तेजरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ छठ्ठु आवश्यक कह्युं, एहनुं ते पचखाण रे ॥ छए आवश्यक जेणे कह्यां नमुं ते जग भाणरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ तपगच्छनायक मुक्तिदायक श्रीविजयदेव सूरीश्वरो. ॥ तस पद दीपक मोह झीपक श्रीविजयप्रभ सूरि गणधरो ॥ श्रीकीर्तिविजय उवझाय सेवक, विनयविजय वाचक कहे ॥ छ आवश्यक जे आराधे, तेह शिव संपद लहे ॥ १ ॥ इति षडावश्यक स्तवनं ॥

अथ षट्पर्वी महात्म्य स्तवन.

॥ ढाल ॥ १ ॥ ली ॥ पुन्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥

श्रीगुरुपद पंकज नमीरे, भाखुं पर्व विचार ॥ आगम चरित्रने प्रकरणे रे, भाख्यो जेम प्रकारो रे ॥ भवियण सांभलो ॥ १ ॥ निद्रा विकथा टालीरे, मुकी आमळो ॥ ए आंकणी ॥ चरम जिणंद चोवीशमारे, राजग्रही उद्यान ॥ गौतम उद्देशी कहेरे, जिनपति श्री वर्द्धमानरे ॥ भवि० ॥ २ ॥ पक्षमां षट तिथि पाळीएरे, आरंभादिक त्याग ॥ मासमां षट पर्वी तिथि रे, पोसह केरा लाग रे॥भवि०॥ ॥ ३ ॥ दुविध धर्म आराधवारे, बीज ते अति मनोहार ॥ पंचमी नाण आराधवा रे, अष्टमी कर्म क्षयकारारे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ इग्यारस चौदशी तिथिरे, अंग पूर्वने काज॥ आराधी शुभ धर्मनेरे, पामो अविचल राजरे ॥ भवि०॥ ५ ॥ धनेश्वर प्रमुखे यथा रे, पर्व आराध्यां रे एह ॥ पाम्या अव्याबाधनेरे, निजगुण ऋद्धि वरेहरे॥ भवि०॥ ॥ ६ ॥ गौतम पूछे वीरनेरे, कहो तेनो अधिकार ॥ सांभळी पर्व आराधवारे, आदर होय अपाररे ॥ भवि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ एकवीसानी ॥ ए देशी ॥

॥ धनपुरमां रे, शेठ धनेश्वर शुभमति ॥ शुद्ध श्रावकरे, पर्व तिथे पोसह व्रती ॥ धनश्री तसरे, पत्नी नाम सोहामणो ॥ धनसार सूत रे, तेहनो जन्मनो कामणो ॥ १ त्रोटक ॥ कामणो निजहित का-

रणमाटे, शेठजी आठम दिने ॥ लई पोसह शून्य घरमां, रह्या काउस्सग स्थिरमने ॥ ईण अवसरे सोहम इंदो, बेठो निजसुर पर्षदा ॥ करे प्रशंसा शेठनी इम, सांभले सहु सुर तदा ॥ २ ॥ जो चळावे रे सुरपति जईने आप हि, पण शेठजीरे पोसहमांहि चळे नहिं ॥ इम निसुणी रे मिथ्यात्वी एक चिंतवे ॥ हुं चळावुं रे जईने हरकोई कौतुके ॥ ३ ॥ त्रोटक ॥ शेठना मित्रनुं रूप करीने, कोटी सुवर्णनो ढग करी कहे ल्यो ए शेठ तो पण, नवि चळ्या जेम सुरगिरि ॥ पछी पत्नीनुं रूप करीने, आलिंगनादिक बहु करे ॥ अनुकूल उपसर्गे तो ही शेठजी, ध्यान अधिकेरु धरे ॥४॥ करे विहामणुंरे ताप प्रमुख देखाडतो ॥ नारीने सुत रे आवी इणिपरे, भाखतो ॥ पारो पोसह हवे अवसर तुमचो बहु थयो ॥ तब शेठजीरे चिंतवे काल केतो थयो ॥५॥ त्रोटक ॥ सज्झायने अनुसार करीने, जाण्युं छे हजी रात ए ॥ पोसह हमणां पारीये किम नवी थयो प्रभात ए ॥ तब पिशाचनुं रूप करीने, चामडि उताडतो ॥ घात उछालन शिला स्फालन, सायरमांहि नांखतो ॥६॥ इम प्रतिकूल रे, उपसर्गे पण नवि चळ्या ॥ प्राणांतरे अष्टवी व्रतथी नवी चळ्या ॥ तब ते सुर रे माग माग मुख इमकहे ॥ पण ध्यानमांरे ते वात पिण नवीलहे ॥ ७ ॥ त्रोटक ॥ तव तेणे रत्न अनेक कोटि, वृष्टि कीधी जाणीए ॥ बहु जणा पर्व आराधवाने, सादरा गुणखाणए ॥ राजा पण ते देखी महिमा, शेठने माने घणुं ॥ कहे धन्य धन्य शेठजी तुम, सफल जीवित हु गणुं ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ साहेलडी ॥ ए देशी ॥

॥ तेह नगरमांह वसे॥साहेलडीरे॥ त्रण पुरुष गुणवंत तो ॥ घांची

हालि एक धोबी साहेलडीरे, षटपर्वी पालंत तो ॥१॥ साधर्मिक जाणी करी ॥ सा० ॥ शेठ करे बहु मानतो ॥ पारणे अशन वसन तथा ॥ सा० ॥ द्रव्यतणुं बहु दान तो ॥ २ ॥ साधर्मिक सगपण वडु ॥ सा०॥ ए सम अवर न कोई तो ॥ शेठ संगे ते त्रण जणा॥सा०॥ समकित दृष्टि होय तो ॥ ३ ॥ एक दिन चौंदस दिने साहेलडीरे राय धोबीने गेहतो ॥ चिवर राय राणी तणां ॥ सा० ॥ मोकलियां वरनेह तो ॥४॥ आज ज धोइ आपज्यो ॥ सा० ॥ महोच्छव कौमुदी काल तो ॥ रजक कहे सुणो माहरे ॥ सा० ॥ कुटुंब सहित व्रत पाल तो ॥ ५ ॥ धोवुं नहि चौदस दिने ॥ सा० ॥ तव नृप बोले जाणतो ॥ नृप आणाये नियम शो ॥ सा० ॥ जेहथी जाये प्राण तो ॥ ६ ॥ सज्जन शेठ पण इम कहे ॥सा० ॥ एहमां हठ नवि ताणतो॥ राजकोप अपभ्राजना ॥ सा० ॥ धर्म तणी पण हाणतो ॥ ७ ॥ षळी रायाभियोगेणं ॥ सा० ॥ छे आगार पचखाण तो ॥ तव धोबी चित्त चिंतवे ॥ सा० ॥ दृढता विण धर्म हाणतो ॥ ८ ॥ धोवुं नवि मान्युं तिणे ॥ सा० ॥ राये सुणी ते वात तो ॥ कुटुंब सहित निग्रह करुं ॥ सा० ॥ काले जो हुं नृप साच तो ॥९॥ दैव योगे ते रातमां ॥ सा० ॥ शूल व्यथा नृप थाय तो ॥ हाहाकार नगर थयो ॥ सा०॥ इम दिन त्रण वही जाय तो ॥ १० ॥ पडवे दिन धोइ करी ॥सा०॥ आप्या वस्त्र ते राय तो ॥ व्रत निर्वाह सुखे थयो ॥ सा० ॥ धर्मतणे सुपसाय तो ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ भरत नृप भावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति चौदसने दिनेए, घाणी वाहन आदेश ॥ करे तेली

मतेए, रजकपरे ते अशेष ॥ व्रत नियम पालिये ए ॥ १ ॥ आंकणी॥ भूपति कोपे कलकल्योए, इण अवसर परचक्र ॥ आव्युं देश भांजवाए, महादुदोन्त ते चक्र ॥ २ ॥ व्रत नि० ॥ नृप पण सन्मुख नीकल्योए, युद्ध करणने काज ॥ विकल चित्तथी थयो ए, इम रही तेलिनी लाज ॥ व्रत० ॥ ३ ॥ हालिने आठम दिने ए, दीधुं मुहूर्त तत्काल ॥ तीणे पण इम कह्युं ए, खेडीश हल हुं काल ॥ व्रत० ॥ ४॥ कोपे भराणो भूपति ए, इण अवसर तिहां मेह ॥ वरसण लाग्यो घणुं ए, खेडी न थावे हेव ॥ व्रत० ॥ ५ ॥ त्रणे अखंड व्रत पालतां ए, पुण्य अतोलथी तेह ॥ मरण पामी स्वर्गे गया ए, छठे देव लोके जेह ॥ व्रत०॥६॥ चउद सागरने आउखे ए, उपना ते ततखेव ॥ हवे शेठ उपना ए, बारमे देवलोके देव ॥ व्रत० ॥ ७ ॥ मैत्री थई ते च्यारने ए, श्रेष्ठी सुरने ताम ॥ कहे त्रण देवता ए, प्रति बोधजो अम स्वाम ॥ व्र० ॥ ८॥ ते पण अंगिकरे तदा ए, अनुक्रमे चविआ तेह ॥ उपन्या भिन्न देशमां ए, नरपति कुलमां तेह ॥ व्रत० ॥ ९ ॥ धीर वीर हीर नामथी ए, देश धणि वडराय ॥ थया व्रत दृढ थकी ए, बहु नृप प्रणमे पाय ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ सुरति मासनी ॥ ए देशी ॥

॥ धीरपुरे एक शेठने पर्वदिने व्यवहार ॥ करतां लाभ घणो होवे, लोकने अचारिजकार ॥ अन्य दिने हानी पण, होये पुन्य प्रमाण ॥ एक दीन पुछे ज्ञानीने, पूर्वभव मंडाण ॥ १ ॥ ज्ञानी कहे

सुण परभव, निर्धन पण व्रत राग ॥ आराधीने पर्वतिथे, आरंभनो त्याग ॥अन्यदिने तुमे कीधो, सहेजे पण व्रतभंग॥ तीणे ए कर्म बंधाणां, सांभलो ए कंत ॥ २ ॥ सांभली ते सह कुटुंबशुं, पाले व्रत नीरमाय ॥ बीज प्रमुख आराधे, सविशेषे सुखदाय ॥ ग्राहक पण बहु आवे, अर्थे, थावे लाभ अपार ॥ विश्वासी बहुं लोकथी, थयो कोटी सरदार ॥ ३ ॥ निजकुल शोषक वाणीआ, जाणो आ जगत प्रसिद्ध ॥ तिणे जई रायने वाणीए ॥ इणी परे चुगली कीध ॥ इणे कोटी निधान लाधो, ते स्वामीने होय लोय ॥ नरपति पुछे शेठने, वात कहो सहु कोय ॥ ४ ॥ शेठ कहे सुणो नरपति, महारे छे पच्चखाण ॥ स्थूल मृषावादने वली, स्थूल अदत्तादान ॥ गुरुपांसे व्रत आदर्युं, ते पालुं नीरमाय ॥ पिशुन वणीक कहे स्वामीए, धर्म धुतारो थाय ॥ ५ ॥ तस वचने करी तेहना, द्रव्य तणो अपहार ॥ करीने भूपति राखे, पुत्र सहित निजद्वार ॥ राजद्वारे रह्यो चिंतवे, आज लह्यो में कष्ट ॥ पण आज पंचमी तिथि तिणे, लाभ होय कोइ लष्ट ॥ ६ ॥ प्रातःसमे नृप देखे, खाली निज भंडार ॥ शेठ घरे मणि रत्न सुवर्ण, भर्या श्री श्रीकार ॥ आवी वधामणी रायने, ते विहुनी समकाळ ॥ शेठ तेडी कहे नरपति, वात सुणो इण ताल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ हरणी जव चरे ललना ॥ ए देशी ॥

॥ भूपति चमक्यो चित्तमां ललना, लालहो, देखी ए अवदात व्रत इम पालीये ललना ॥ खेद लही खामे घणुं ललना, लालहो प्रश्न पुछे सुख शात ॥ व्रत इम पालीये ललना ॥ १ ॥ कहो शेठ

ए केम नीपन्युं ललना, लालहो, तुज घर धन किम होय ॥व्र०॥ शेठ कहे जाणुं नहीं ललना, लालहो किणी परे ए मुज थाय ॥व्र०॥२॥ पण मुज पर्वने दिहाडले ललना, लालहो लाभ अण चिंत्यो थाय ॥व्र०॥ पर्वदिने व्रत पालीयुं ललना, लालहो ते पुन्यनो महिमाय ॥व्र०॥३॥ पर्व महिमा इम सांभली ललना, लालहो भूपतिने ततकाल ॥ व्र० ॥ जाति स्मरण उपन्युं ललना, लालहो निजभव दिठो रसाल ॥व्र०॥ ॥ ४ ॥ धोबीनो भव सांभर्यो ललना, लालहो पाल्युं जे व्रत सार ॥ व्र० ॥ जाव जीव नृप आदरे ललना, लालहो षट पर्वी व्रत धार ॥ व्रत० ॥ ५ ॥ आवी वधामणी तेणे समे ललना, लालहो स्वामी भराणा भंडार ॥ व्रत० ॥ विस्मित राय थयो तदा ललना, लालहो हियडे हर्ष अपार ॥ व्रत० ॥ ६ ॥

॥ढाल॥७॥ साहेबजी श्री विमलाचल भेटिये हो लाल ॥ए देशी॥

॥ साहेबजी शेठ अमर प्रगट थयो हो लाल, भाखे रायने एम ॥ सा० ॥ तुं नवि मुजने ओळखे हो लाल, हुं आव्यो तुज प्रेम ॥ १ ॥ साहेबजी पर्व तिथि इम पाळीए हो लाल, साहेबजी श्रेष्ठी सुरहुं जाणजो हो लाल ॥ तुज प्रतिबोधन आज ॥ सा० ॥ शेठ सांनिध्य करवा वली हो लाल, कीधुं में सवी काज ॥ सा० ॥ ॥ पर्व० ॥ २ ॥ साहेबजी धर्म उद्यम करे जे सदा हो लाल, जावुं छुं सुणी वात ॥ सा० ॥ तेलिक हालिक रायने हो लाल, प्रति बोधन अवदात ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ तिहां जई पूर्वभव तणा हो लाल, रूप देखावे तास ॥ सा० ॥ देखीने ते पामीया हो लाल,

जाति स्मरण खास ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ ते बेउ श्रावक थया हो लाल, पाले नित षट पर्व ॥ सा० ॥ त्रणे ते नर रायने हो लाल, सहाय करे ते सुपर्व ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ५ ॥ निज निज देशेनी वारता हो लाल, मारी व्यसन सवि जेह ॥ सा० ॥ चैत्य करावे तेहवां हो लाल, प्रतिमा भरावे तेह ॥ सा० ॥ पर्व०॥६॥ ॥ संघ चलावे सामटा हो लाल, स्वामीवच्छल भली भाते ॥ सा० ॥ पर्वदिन नित्य नगरमां हो लाल, पडहअमारी विख्यात ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ पर्व तिथि सहु पालता हो लाल, राजा प्रजा बहु धर्म ॥ सा० ॥ इति उपद्रव सहु टळे हो लाल, नहि निज परचक्र भर्म ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ धर्मथी सुर सांनिध्य करे हो लाल, धर्म पाली पाले राज ॥ कोई सद्गुरु संजोगथी हो लाल, थया त्रणे ऋषि राज साहेबजी ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥८॥ टुंक अने टोडा विचरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ त्रणे नरपति आदर्योरे चोखो चारित्र भार ॥ संजम रंग लाग्योरे ॥ तप तपता अति आकरारे, पाले निरातिचार ॥संयम०॥१॥ ध्यानबले खेरु कर्यारे, घनघाति जे च्यार ॥ संयम० ॥ केवल ज्ञान लहि कर्यारे, विचरे महीयल सार ॥ सं० ॥ २ ॥ श्रेष्ठी सुर महिमा करेरे, ठाम ठाम मनोहार ॥ संजम० ॥ देशना देता केवलीरे, भाखे निज अधिकार ॥ सं० ॥ ३ ॥ पर्व तिथी आराधीयेरे, भवियण भाव उल्लास ॥ सं० ॥ इम महिमा विस्तारीनेरे पाम्या शिवपुर वास ॥ सं० ॥ ४ ॥ बारमा देवलोकथी चवीरे, श्रेष्ठी सुर थया राय

॥ सं० ॥ महिमा पर्वनो सांभलीरे, जाति स्मरण थाय ॥ सं० ॥५॥ संजम ग्रही केवल लहीरे, पाम्या अविचल ठाण ॥ सं० ॥ अव्याबाध सुखी थयारे, केवल चिद् आराम ॥ सं० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥ गीरुआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥उजमणां ए तप तणां करो, तिथि परिमाण उपगरणांरे ॥ रत्न त्रय साधन तणा भवि भवसायर निस्तरणांरे ॥ १ ॥ उजमणा० ॥ जो पण सहुं दिन साधवा, तो पण तेनी अणशक्तेरे ॥ पर्व तिथि आराधीने, तुमे उजवजो बहु भक्तिरे ॥ उ० ॥ २ ॥ श्राद्धविधि वर ग्रंथमां, भलो भाख्यो ए अवदातोरे ॥ भगवतीने महानिशीथमां कह्यो, तिथि अधिकार विख्यातो रे ॥ उ० ॥ ३ ॥ तपगच्छ गगनांगण रवि, श्री विजयसिंह गणधारोरे ॥ अंतेवासी तेहना, श्री सत्यविजय सुखकारोरे, ॥ उ० ॥ ४ ॥ कर्पूरविजय वर तेहना, वर क्षमाविजय पन्यासरे, जिन विजय जगमां जयो, शिष्य उत्तमविजय ते खासरे ॥ उ० ॥ ५ ॥ तसपद चरण भ्रमर समा, रहि साणंद चोमासुरे ॥ अढार त्रीस संवत्सर, सुद तेरस फागण मासोरे ॥ उ० ॥ ६ ॥ पद्मविजय भक्ते करी, श्री विजय धर्म सूरि राजेरे ॥ वर्द्धमान जिन गाइआ, श्री अमीझरा प्रभु पासेरे ॥ उ० ॥७॥

॥ कलश ॥ पर्व तिथि आराधो, सुव्रत साधो, लाध्यो भव सफलो करो ॥ संवेग संगी तत्त्वरंगी, उत्तम विजय गुणाकरो ॥ तस शिष्यनामें सुगुण कामें, पद्मविजये आदर्यो, शुभ एह आदर भवि

सहाधर, नाम षट्पर्वी धर्यो ॥ इति षटपर्वी महिमागुणवर्णन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीषट आरास्वरुपकथक श्रीमहावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ सकल जिणंद पाये नमी, पामी परमानंद ॥ दोय कर जोडी विनवुं, चोवीसमो जिणंद ॥ १ ॥ जंबुद्वीपे भरत खित्त, मगध देश मझार ॥ राजग्रही रळीआमणी, नयरी नाम उदार ॥ २ ॥ तीहां कणे स्वामी समोसर्या, चोवीसमो जिणंद ॥ चोसठ इंद्रे मली रच्युं समवसरण आणंद ॥ ३ ॥ सुरनर व्यंतर ज्योतिषी, विद्याधरनी कोडाकोडी ॥ बारे पर्षदा तिहां सुणे, धर्म सुवे करजोडी ॥ ४ ॥ गौतम स्वामी पुछीया, सुणे ते सुरनर कोडी ॥ काल चक्र कर्म नीपजे, वोले बेकर जोडी ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥१॥ फागनी ॥ अरे चरम जिणेसर इम भणे, सहु सुणो मन उल्लास ॥ काल चक्र इम नीपजे, प्रथम समय लीयो तास ॥ आ० ॥ १ ॥ पोयणी पानज कुअलां, बत्रीस मेलो सोई ॥ सबल पुरुष सोयेकरी, मतिसुं विंधे कोई ॥ २ ॥ आ० ॥ एक पान जब विंधाय, बीजा लगे सुई जाय ॥ चरम जिणेसर इम भणे, असंख्य समय तिहां थाय ॥ आ० ॥ ३ ॥ असंख्य समये हुए, आवलि आवलि केरु ए मान ॥ दोईसें छपन जब मेलीए, क्षुल्लक भव एक ताम

॥ आ० ॥ ४ ॥ एक कोडी अति आगलि, उपरे सतशठ लाख ॥ सहस सत्योतर दोयसें, सोलकेरी भाख ॥ आ० ॥ ५ ॥ एटली मेली आवलि, मुहुर्त तणुं एक मान ॥ दोय मुहुर्त वीजा अछे, तास क्षुल्लक भव ताम ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रीस मुहुर्त जब मेलीए, अहोरात दिन एक थाय ॥ पनरे दिने पक्ष होइ, मासे वरसे बारे जाई ॥ ॥ आ० ॥ ७ ॥ असंख्याता वरस जब मेलीए, पल्योपम एक कहाय ॥ चरम जिनेसर इम कहुं, ते सौ साधु सुहाय ॥आ०॥८॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ देशी चोपाईनी ॥

॥ बादर परमाणु जाणु सही, तेणे आठ त्रसरेणु कही ॥ ते आठ त्रसरेणु विचार, आठ रेणु वालाग्र उदार ॥ १ ॥ वालाग्र आठ एक लीख, आठ लीखे जुका सीख ॥ जुका आठे एक जव कहुं, आठे जवे ते अंगुल भण्युं ॥ २ ॥ ए खट आंगुले पाव प्रमाण बे पावे एक वेंतनुं मान ॥ बे वेंते एक हाथ प्रमाण, चिहूं हाथे एक धनुषनुं मान ॥ ३ ॥ बीहु सहस धनुषे गाउ एक, चीहुं गाउए जो- यण एक ॥ कुओ एक उंडो एटलो, पहोलो लांबो सम तेटलो ॥४ ॥ रोम खंड एवे वाले भरे, सिद्धांते बोल्युं तिम करे ॥ जुगल जण्या साते दिन बाल, तस आंगुल सीर लीजे वाल ॥ ५ ॥ सात सात आठे पावडी, खंड कीधा त्यारे संख्या चडी ॥ वीस लाख सताणुं सहस, एकसो बावन अधिक कहीश ॥ ६ ॥ केवल ज्ञानी आगे कह्या, रोम खंड असंख्याता थया ॥ पुनरपि नावे संलेखना, असंख्यात

मननी कीजे कल्पना ॥ ७ ॥ ते लई एक कुओ भर्यो, निश्चल ठांसी गाढो कर्यो ॥ जल भेदि नवि आगे बले, बेठो बाईनवीउछले ॥ ८ ॥ वरस सोए एक काढे अंश, यदा तदा ते होय निर अंश ॥ एह पल्योपम नाम उदार, कोडा कोडी दस एक सागर सार ॥ ९ ॥ वे सागर दस कोडा कोडी, एक उत्सर्पिणी एहवि जोडी ॥ काल चक्र दोइ एटले थयो, पुदगल मान अनेरो कह्यो ॥ १० ॥ पुद्गल केरा चार प्रकार, द्रव्य क्षेत्र काल भाव विचार ॥ चिहु तणा वली कीजे आठ, सूक्ष्म बादर तणो ए घाट ॥ ११ ॥ बादरनी परे एहवी सुणो, काल चक्र एहना समय सुणो ॥ एटला मरण करे जो सोय, बादर पुद्गल पुरा होय ॥ १२ ॥ चक्र ते पेहेले समे, बीजा मरण अनेरा गमे ॥ बीजो कालचक्र लगे यदा, बीजे समये मरण होय तदा ॥ १३ ॥ इम सहू समय पुरा करे, सूक्ष्म पुद्गल इणिपरे भरे ॥ चिहु तणी परे एहज सही, एवी वात जिणेसर कही ॥१४॥ उत्सर्पिणी षट आरा होय, जिनवर देखाडे सोय ॥ ते पण सहू ए सुणो उल्लासे, गौतम पूछे जिनपासे ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ ॥ विवाहलानी ॥

॥ पेहेलो आरो एम जाणीए, ए कोडा कोडी सागर च्यारके ॥ सुसम सुसमो ए, त्रिण पल्योपम आउखुंए ॥ काया गाउ त्रणनो मानके, युगलीयां जाणज्यो ए, ॥ १ ॥ बीजो आरो सुसम जाणज्यो ए, कोडा कोडी त्रिणनो मानके ॥ सागर संख्या कहीए, दोयपल्यो-

पम आउखुं ए ॥ काया गाउ दोयनो मानके, सहु सुख भोगवेए ॥ २ ॥ त्रीजो आरो सुसम दुसमोए, काया गाउ एकनो मान के ॥ पल्योपमनुं आउखूं ए ॥ ३ ॥ दोय कोडाकोडी जे भलो ए, आविओ ते तणो अंत के ॥ पूर्व कोडी उणी थाकतां ए ॥ ४ ॥ प्रथम जिणंद तिहां जनमीया ए, नाभी कुलगर घर चंद के, युगल तेणे वारीओ ए ॥ ५ ॥ राज नीति थापीओ ए, मांडीओ शुभ व्यवहार के, आरो त्रीजो ए सहीए ॥ ६ ॥ चोथो आरो दुसम सुसमो ए, कोडाकोडी एकनुं मानके, त्रेवीस जिन तीहां हुआ ए ॥ ७ ॥ बेतालीस सहस्र उणा अछे ए, बोलीया श्रीवर्द्धमानके, चरम जिन इम कहे ए ॥ ८ ॥ चडत पडत तीहां आउखां ए, कायानो एहज मान के, श्री जिनधर्म अतिभलो ए ॥ ९ ॥ चरम जिणेसर भाखीओए, पंचम आरानो मान के दुःखम ते सहु कहे ए ॥१०॥ एकवीस सहस्र एवां जाणज्यो ए, काया सात हाथ जाणके, उणो घणो आउखो ए ॥ ११ ॥ ठाकुर अति अन्याइयाए, मेले मन वरतशे लोक के, आरति मन सहु करे ए ॥ १२ ॥ लोक पाखंडे घणुं राचशे ए, साधु उपर थोडलो भावके, बहुला मत व्यापशे ए ॥ १३ ॥ जिनधर्म वरतशे थोडलो ए, आगिया सुपन मानके, उत्तम जन थोडला ए ॥ १४ ॥ इस्ये मारग सहुं चालशे ए, दुप्पसह लगे व्यवहार के परंपरा ज्यां होसे ए ॥ १५ ॥ तिहां एक साधु ने साधवी, श्रावक श्राविका एकके, आगम एक वरतशे ए ॥ १६ ॥ अतिशय ज्ञान गुरुने नमो ए, टाले मनना संदेह के, सोय कल्पे पहोंचशे ए ॥१७॥

इस्यो आरो जाशे पांचमो ए, आवशे तेह तणो अंत के, उत्पात घणा वरतशे ए ॥ १८ ॥

॥ ढाल ॥४॥ फागनी ॥ ए देशी ॥

आहे छठो आरो एहवो आवशे, जाणे जिनवर तेह ॥ पृथ्वी प्रलय थायशे, वरसशे विरुआ मेह ॥आहे० ॥१॥ तावडे तरडशे डुंगरा, वाये उडी उडी जाय, सहु समी होयशे मेदिनी, खाडने सेवतरे ॥ ॥ आहे० ॥ २ ॥ त्यारे प्रभु गोयम बोलीया, विनव्या जिनवर राय ॥ किहां रहेशे माणस मेदिनी, पृथ्वी बीज केम थाय ॥आहे०॥ ॥ ३ ॥ तिहां इम जिनवरे भाखीउं, अमृत समानी वाण ॥ वैताढय गिरि छे शाश्वतो, गंगा सिंधु नदी जाण॥आहे०॥४॥ ते बील वासी तिहां रहे, मनुष्यां केरी वखाण ॥ बहोतेर बील तिहां किण अछे, बीज तणुं ते ठाम ॥ आहे० ॥ ५ ॥ काया तेनी पुण हाथ छे, सोल वरसनो आय ॥ छ वरसे स्त्री गरभ धरे, दुखमांहे दुख थाय॥ ॥ आहे०॥ ६ ॥ अति घणा ताप घणा पडे, असराल वायशे वाय ॥ रात्रे ते बाहिर नीसरे, दिवसे बीलमांहे जाय ॥ आहे० ॥ ७ ॥ नव वार श्रोत्र तिहां रहे, विरुइ गंधाशे काय॥ सहु भक्षण करशे मांछलां, मरी ए दुर्गति जाय ॥ आहे० ॥ ८ ॥ एकवीस सहस इशां होशे, दस क्षेत्रे इम जाणिं ॥ उत्कृष्टू पांचे अछे, महाविदेह वखाण ॥ आहे० ॥ ९ ॥ तिहां सदा हुए केवली, जिन धर्म तणी नही हाण ॥ समवसरण सुखदाई, जिनवरतणी इसी वाण॥आहे०॥१०॥ पूर्व कोडीनुं आउखुं, पांचशे धनुषनी काया, चरम जिणेसर इमभणे,

सदीव एवुं चाल्युं जाय ॥ आहे० ॥ ११ ॥ बांभण इणि परे विनवे वीर जीणंद अवधार ॥ प्रभु तोरे पाये नमुं, छठ्ठे आरे जन्म निवार ॥ आहे० ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ उलालानी ॥ ए देशी ॥

इम हर्ष धरीने स्तवीओ वीर जीणंद, राधणपुर मंडण पाय प्रणमे सुरनर वृंद ॥ १ ॥ में पुन्य पसाये पाम्या जिनवर पास, मुज पाप पडल सवि दुष्कृत दूरे जाय ॥२॥ श्रीतपगच्छनायक विजय दान सुरिंद, तस पाय प्रणमीने सवे सुरनर वृंद ॥ ३ ॥ तस नामे मुजने, टाळीओ मुज मिथ्यात, सेवतां पाम्यो, जिन धर्म जगत विख्यात ॥ ३ ॥ संवत सय सोलह इग्यारोत्तरा मान, आसो सुद पुनम वार शुभ ध्यान ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥ इम थुण्यो जिनवर वीर सुखकर, राधणपुर वर मंडणो ॥ तस पाय पामी सीस नामी. दुरीय दुरगति खंडणो ॥ सेवे सुरासुर, सुणे भासुर गर्भवास निस्तरो ॥ द्विज भणे देवीदास सेवक, सकल संघ मंगल करो ॥ १ ॥ इति षट आरास्वरूप कथक श्रीमहावीर स्तवन संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री चौद गुणस्थानकनुं स्तवन. ॥

॥ श्री शंखेश्वरपुर धणीजी, प्रणमी पास जिणंद ॥ नाम जपतां तेहनुंजी, आपे परमानंद ॥ भविक जन सांभलो एह वि-

चार ॥ कर्म ग्रंथ मांहे कह्योजी, ए सघलो अधिकार ॥ भविक०॥१॥ नाणावरणीय जाणीयेजी, बीजुं दर्शनी होय ॥ त्रीजुं वेदनीय भाखीयुंजी, मोहनीय चोथुं जोय ॥ भ० ॥ २॥ आयु कर्म वली पांचमुं जी छट्ठुं नाम विचार ॥ गोत्र कर्म ते सातमुं जी, आठमुं अंतराय ॥भ०॥ ॥ ३ ॥ मति श्रुत अवधि मन केवलुं जी, ज्ञानावर्णीयरे भेद ॥ चख्खु अचख्खु अवधि केवलोजी, दर्शनना ए भेद ॥ भविक०॥४॥ निद्रा पहेली निद्रानिद्राजी, त्रीजी प्रचला वखाण ॥ प्रचला प्रचला चोथी कहीजी, थिणद्धि पंचम जाण ॥ भ० ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीय तणाजी ए नवभेदज धार ॥ शाता अशाता वेदनीजी, जाणो ते निरधार ॥ भ० ॥ ६ ॥ भेद अट्ठावीस मोहनीजी समकित मोह मिच्छत्त ॥ क्रोध मान माया सहीजी, लोभ ए सेवे नित ॥ भ० ॥ ७ ॥ संज्वलन प्रत्याख्यानीओजी, अप्रत्याख्यान विशेष ॥ चोथो अनंतानुंबंधियोजी, प्राणीतूं उवेख ॥ भ० ॥ ८ ॥ प्रत्येके एक एकनाजी भेद कह्या अरिहंत ॥ च्यार च्यार करतां सोल हूवेजी, टालो ते गुणवंत ॥ भ०॥ ९ ॥ हास्य रति अरति भय परिहरुजी, सोग दुगंछा टाल ॥ नर स्त्री नपुंसक वेदथीजी, प्राणी तूं मन वाल ॥ भ०॥१०॥ देवता नर तिरि नारकीजी, आयुभेद विशाल ॥ कपुर विजय बुद्धराजथीजी, मणिविजय रंगरसाल ॥ भ० ॥ ११ ॥ इति चारकर्मपयडी प्रथम भाग ॥

॥ ढाल २ ॥ बे कर जोडी तामरे ॥ ए देशी ॥

नाम करमनो भेदरे, एकसो त्रणसुं ॥ ते विवरी हवे कहुं ए॥

चार गतिनां नामरे एकेंद्रि आदि पंचेद्रि पांच जाति कहीए॥ १ ॥औदा-
रिक वैक्रियरे, आहारक तैजस, पांचमुं कार्मण तनु सहीए ॥ अंग
उपांग ते जाणीरे, अंगोपांग त्रीजुं, औदारिक पंच बंधना ए ॥ २ ॥
संघातन विचारीरे, पंचभेदे करी, औदारिक आदिगणो ए ॥ वज्र-
ऋषभ नाराच रे, ऋषभनाराच, नाराच अर्ध कीलीका ए ॥ ३ ॥ छे
वठुं संघेणरे छठुं भाखीउं, षट संस्थानज जीवना ए ॥ सम चउरस्र
न्यग्रोध रे सादिक, कुब्ज, वामन हुंडक भाखीओ ए ॥ ४ ॥ कालो
निलो रातोरे, पीलो उजलो वर्ण पांचे जाणीएरे ॥ सुरभि दुरभि
गंधरे, पंचरस कह्या, तीखो कडवो कसायलो ए ॥ ५ ॥ खाटो मीठो
होयरे, फरस आठजे, गुरु लघु मृदु खर शीतलो ए ॥ उष्ण स्निग्ध
रुक्षरे, अनुपुर्वी, चारे गतिनी जुजुवीरे ॥ ६ ॥ शुभ अशुभ गति
दोयरे, ते वली वरणवी, पिंड प्रकृति चौदस हवीए ॥ हवे आठ
प्रत्येक. पराघात उसास, आताप उद्योत अगुरुलहु ए ॥ ७ ॥ तीर्थं-
कर निर्माणरे, पराघात कर्म्म, त्रस दशको कहूं सुंदरु ए ॥ त्रस
बादर पज्जत्तरे, प्रत्येक थीर शुभ, सुभग सुस्वर आदे यशा ए ॥८॥
थावर सुहूम अपज्जरे, साधारण अथिर ॥ असुभ दुभग सातमुं ए ॥
दुस्वर अनादेयरे, अयश ए दश स्थावर इणिपरे जाणि ए ॥ ९ ॥
एटली त्राणुं भेद रे, बंधन पांचनां, सत्ताये पन्नर भेद हुवे ए ॥ गोत्र
करमना भेदरे, उंच अने नीच, अंतराय वळी आठमुं ए ॥ १० ॥
दान लाभ अंतरायरे, भोग उपभोग, वीर्यांतराय ए पांचमुं ए ॥
एकसो अठ्ठावन्नरे, पयडी कर्मनी, मणिविजय बुध उपदीशी ए ॥ ११ ॥
इति श्रीकर्म पयडी द्वितीय भास ॥

॥ ढाल ॥३ ॥ केवल नाणे जाणतोरे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दिवाकर भाखीओरे लोल ॥ गुणस्थानक विचाररे ॥ सुगुण नर॥ लेशथकी हूं वरणवुंरे लोल, शास्त्र तणे अनुसाररे ॥ सुगुण नर ॥ १ ॥ वारो मिथ्यात्वने आवतोरे, जेम सीझे सवि कामरे ॥ ॥ सुगुण० ॥ प्रमादे करी जीवनेरे लोल, ओघ थकी बंध होयरे ॥ ॥सुगुण०॥ पयडी एकशत वीसनीरे लोल, ए परमारथ जोयरे ॥सु०॥ ॥ वा० ॥ २ ॥ एकसो बावीस आगलीरे, पयडी उदये थायरे ॥सु०॥ उदय नाव्युं जे होवेरे, ते उदीरणा कहेवायरे ॥ सु० ॥ वा० ॥३ ॥ एहना भेद वळी तेटलारे लोल, सत्ताना वली भेदरे ॥सु०॥ अट्ठावनने एकसोरे लोल, थायते ध्रुवेदेशरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ पेहेले, गुणठाणे हुवेरे लोल ॥ एकसो सतर बंधरे ॥ सु० ॥ तीर्थंकर नाम भेलतारे लोल, आहारक दोय अबंधरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ पयडी मिश्र समकित सुणोरे लोल, आहारक द्विक जिन नामरे ॥ सु० ॥ उदय नहीं ए पांचनोरे लोल, गुणठाणे पेहेले जामरे ॥ सु०॥ वा०॥ ॥६॥ कर्म स्थिति सत्ता कहीरे लोल, पयडी शत अड्यालरे ॥ सु० गुणठाणे पेहेले सहीरे लोल, भाखी देव दयाळरे ॥ सु० ॥ वा० ॥७॥ इणे गुणठाणे प्राणीयारे लोल, नरक निगोद मोजार रे ॥ सु० ॥ कहेतां पार न उपजेरे लोल, ते जाणे किरतार रे ॥ सु०॥वा० ॥८॥ एह मिथ्यात्वथी टालियारे लो, श्री जिन जगदाधाररे ॥ सु० ॥ कर्पुरविजय गुरु रायथीरे लोल, लहीये भवजल पाररे ॥ सु०॥वा०॥ ॥९॥ इति श्री प्रथम गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कपुर होवे अति उजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ बीजुं गुण ठाणुं सुणोरे, सास्वादान तस नाम ॥ समकित वमन पछी हूवेरे, जेहथी न सरे कामरे ॥ साजन छंडोए परिणाम ॥ जिम लहो गुण अभिरामरे ॥ सा० ॥ १ ॥ नारय त्रिक जाति चउरे, थावर चउहुंड संस्थान ॥ आतप नपुंसक छेवठ्ठुरे, मिच्छत्त ए सोल मानरे ॥ सा० ॥ २ ॥ एकसो एक पयडी तणोरे, बंधन एणे गुण ठाण ॥ सूक्ष्म त्रिक आतप वलीरे, मिथ्यात्व पंच वखाणरे ॥ ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरकनी अनुपूर्वीरे, एकसो अगिआर प्रमाण उदय कह्यो पयडी तणोरे, उदीरणा तिम जाणरे ॥ सा० ॥ ४ ॥ सत्ताए एकशत उपरेरे, पयडी सडतालीस ॥ जिननाम कर्म तणी तिहांरे, न कही सत्ता जगदीशरे ॥सा०॥ ५ ॥ सास्वादन गुण ठाणा तणोरे, अर्थ कह्यो लव लेश, मणिविजय बुध एम कहेरे, सुणजो छांडी क्लेशरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति द्वितीय गुण स्थानक भास ॥

॥ढाल॥५ ॥ गणधर दशपूर्वधर सुंदर ॥ ए देशी ॥

॥ मिश्र गुणठाणुं हवे त्रीजुं, भाख्युं त्रिभुवनभाणरे ॥ अंतर मुहुर्त स्थिति कही जेनी, सुणज्यो चतुर सुजाणरे ॥ मिश्र० ॥ १ ॥ तिर्यंच त्रिक थिणद्धी त्रिक, दुर्भग त्रिक वली कहीयेरे॥ च्यार अनंतानुबंधी वीरुआ, संठाण च्यार मध्य लहीयरे ॥ मिश्र० ॥ २ ॥ पेहेलुं छेलुं संघयण टाळी, निचगोत्र उद्योत नामरे ॥ अशुभ विहायो गति वेद स्त्रीनो, ए पयडीनां नामरे ॥ मिश्र० ॥ ३ ॥ गुणठाणे

त्रीजे ए पचवीस, पयडी बंधन थायरे ॥ उदये चार अनंतानुं बंधी थावर एकेंद्रि कहायरे ॥ मिश्र० ॥ ४ ॥ विगलेन्द्रिय त्रिक तिरी नर सुरनी, अनुपुर्वी नवि लहीयेरे ॥ मिश्रोदय मिश्र पयडी अंतज, उदये एकसो कहीयेरे ॥ मिश्र० ॥ ५ ॥ उदीरणा वळी उदय तणीपरे, जाणो भविजन प्राणीरे ॥ सत्ताये सास्वादनतणी परे, भाखे केवल नाणीरे ॥ मिश्र० ॥ ६ ॥ भाव अनेक त्रीजे गुणठाणे, कहेतां पारन आवेरे ॥ कपूरविजय बुध चरण पसाये, मणिविजय आनंद पावेरे ॥ मिश्र० ॥ ७ ॥ इति श्री तृतीय गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावेरे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे गुणठाणुं समकित धरीयेरे, शिवरमणी जिम सहेजे वरीये रे ॥ ते समकितना पांचज भेदरे, बोले आगम जे ध्रुवेदरे ॥हवे०॥१॥ जिन नामकर्म सुरनर आयुरे बंधे सित्तोत्तेर कहेवायरे ॥ समकित आनुपूर्वी चाररे, उदये एकसो चार विचाररे ॥हवे०॥ २ ॥ तेम उदीरणा आगम भाखीरे, सत्ता सुणज्यो जे हवे दाखीरे ॥ अपूर्वादिक चउगुणठाणरे, चार अनंतानुं बंधी जाणरे ॥ हवे० ॥ ॥ ३ ॥ तिरि नरयनुं आयु कहीयेरे, एकसो बेतालीस सत्ता लहीयेरे ॥ क्षपके समकित चार ठामरे, नरक तिरि सुर आयु जामरे ॥ हवे० ॥ ४ ॥ पयडी सोने पीस्तालीसरे, सातविना एकसो अडत्रीसरे ॥ नउमे अनिवृत्ति पेहले भागरे, सत्ता बोली श्री वीतरागरे ॥ हवे० ॥ ५ ॥ केवल नाणी भाख्यो धर्मरे, जेहथी लही शिवना

धर्मेरे ॥ ए त्रण तत्व सुधा जाणीरे, मणिविजय कहे आदरो प्राणीरे ॥ हवे० ॥ ६ ॥ इतिश्री चतुर्थ गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ आज न हेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ पंचमनाणी रे जिनवर इम कहे, देश विरति गुणठाण ॥ सुधो श्रावक तेने जाणीये, जे धरे जिनवर आण ॥ पंचम०॥ १ ॥ पेहेलुं संघयण नर त्रिक जाणीये, अप्रत्याख्यान कषाय ॥ तेहना भेदरे चार वखाणीये, औदारिक दो कहेवाय ॥पंचम०॥२॥ ए दश पयडीरे बंधन नवि हुवे, देशविरति मोजार ॥ सतसठि पयडीरे बंधज इहां सही, जोज्यो हृदय विचार ॥ पंचम० ॥ ३ ॥ उदय चार अपचखाणीया, अनुपूर्वी नर तिरियंच ॥ सुरत्रिक नरयत्रिक ते खट भण्या, वैक्रियदुग वली संच ॥ पंचम० ॥ ४ ॥ दुर्भग अनादेय अ-यश वली, सत्तर पयडी न होय ॥ सत्यासीनो रे उदय इहां कह्यो, तीम उदीरणा जोय ॥ पंचम० ॥ ५ ॥ सत्ता चोथारे गुणठाणथी, जाणो चतुर सुजाण ॥ मणिविजय कहे नित्य जे ए धरे, तेने कोडी कल्याण ॥ पंचम० ॥ ६ ॥ इति पंचम गुणस्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥ कहे नायक सुणो माहरी ॥ ए देशी ॥

॥ छठुं गुणठाणुं हवे, कहेतां हरख अपाररे, सुणो जिनवाणी रे ॥ प्रमत्तनाम छे जेहनुं, साधन कह्यो निरधाररे ॥ सुणो भवी प्राणी रे ॥ १ ॥ बंध थकी निश्चय हुवे, त्रेसठी पयडी जाणिरे ॥ सुणो जिन वाणीरे ॥ प्रत्याख्याने चारनो, बंध नहीं इण ठाणेरे ॥ सुणो०॥२॥

उदयथकी हवे सांभळो, तिर्यंचगति तिरियाउ रे ॥ सुणो जिन० ॥ निच गोत्र उद्योतनो, प्रत्याख्यानी कषायरे ॥ सुणो भ० ॥ ३ ॥ उदय नही ए आठनो, आहारक दोय उदाररे ॥ सुणो जि० ॥ ते भेळवतां एक्यासीनो, उदय कह्यो सुविचाररे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ उदीरणाये अंत हुवे, साता असाता दोयरे ॥ सुणो जि० ॥ आहारक द्विक थीणद्धि त्रीक, नर आयु आठ ते जोयरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्ता समकितथी लहो, दाखी आगम साररे ॥सुणो०॥ कर्पुरविजय गुरुजी जयो, मणिविजय हितकाररे ॥ सुणो भ० ॥ ६ ॥ इतिश्री प्रमत्त गुणस्थानक भास ॥

॥ढाल ॥९॥ वसुधाधिप वंदी वळ्यो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री जिनवर इम उपदिशे, अप्रमत्त गुण ठाणरे ॥ सर्व विरति इहां कही, धारो मुनिगुण खाणरे ॥ श्री जिनवर इम उपदिशे ॥१॥ए आंकणी॥ सोग अरति अथिर दुग, अयश अशाता केरोरे॥ बंध नहीं इहां खटतणो, सुर आयुबंध अनेरोरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ एके उणी साठीनो, अहवा अट्ठावन बंधरे ॥ आहार युगल मांहि भेलीए, बीजी पयडी अबंधरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उदय थकी छोतेर पयडी, थीणद्धी त्रिक दाखीरे ॥ आहारद्विक ए पांचनो, उदय नहीं सूत्र साखीरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अप्रमत्त आदि गुणठाणे, शाता अशाता नर आयरे, पयडी त्रण उणी करो, इम उदिरणा थायरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ समकित चोथे गुण ठाणे, सत्ता तिहांथी पेखोरे॥ मणिविजय बुध इम कहे, प्रमत्त गुण ठाण उवेखोरे ॥ श्री०॥६ ॥ इति श्री अप्रमत्त गुण स्थानक भास ॥

॥ढाल॥१०॥ पंथीडा संदेसडो ॥ए देशी ॥

॥ गुणठाणुं हवे आठमुं, भाख्युं श्री जिनराज, निवृत्ति नामे जाणीए, जेहथी सीझे काज ॥ १ ॥ साधु सहु तुमे चित्तधरो, आणी उलट अंग, अध्यवसाय विशेषथी, हुवे एहशुं चंग ॥ साधु० ॥ २ ॥ सात भाग करी तेहना, पेहेले अट्ठावन ॥ निद्रा दोयनो अंत करे, पणभाग छपन्न ॥ सा० ॥ ३ ॥ सुरदुग पंचेंद्रिय शुभगति, त्रस नव निरधार ॥ चार शरीर उरलविना, दो अंगोपांग उदार ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ सम चउरंस निर्माणने, जिननाम सुफार ॥ वर्णचार वळी कह्या, अगुरु लहु चार ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए त्रीस पयडी अंतकरे छठ्ठे भाग विचार ॥ बंध कह्यो छवीसनो, सातमो भाग मोजार ॥ ॥ सा० ॥६ ॥ हास्य रति भय दुगंछानो, अंत जिनने वयण ॥ उदय थकी समकित वली, छेल्लां त्रण संघयण ॥ सा० ॥ ७ ॥ उदय नहीं ए चारनो, बोहोतेर उदये जाण ॥ उदीरणा अप्रमत्तथी, भाखी केवल नाण ॥ सा० ॥ ८ ॥ चोथा समकित गुण ठाणथी, सत्ता दिलमें आणी ॥ कपूरविजय गुरु राजथी, मणि वंदे इम वाणी ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ इतिश्री अष्टम निवृत्ति गुणस्थानक भास ॥

॥ढाल॥११॥ निदरडी वेरण हुइरही ॥ ए देशी ॥

॥ अनिवृत्ति नवमुं आदरु, गुणठाणुं हो मुनिवर सुखकार के ॥ अंतरमुहूर्त्त जेहनी, स्थिति जाणी हो शास्त्रने अनुसार के ॥ अनिवृत्ति नवमुं आदरुं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ बंध कह्यो बावीसनो, वली कीजे हो एहना पंच भाग के ॥ पुरुषवेद संज्वलन चारे, एकेके

हो कीजे ए त्यागके ॥ अनि० ॥ २ ॥ उदय हुवे छासठीनो, हास्य रतिने हो वली अरति निवारके ॥ भयसोग दुगंछा खटतणो, नवि लही हो उदये विचार के ॥ अनि० ॥ ३ ॥ उदीरणा त्रिसठीनी, सत्ता दाखी हो बीजा भाग मझारके ॥ थावर तिरि नरय दुग, आ तप दुग हो थीण त्रिण निरधारके ॥ अनि०॥ ४ ॥ एकेंद्रिय विगल साधारण, ए सोलेहो सत्ता नवी होयके ॥ एकसो बावीस उपरे, बीजे भागे हो सत्ता तुं जोयके ॥ अनि०॥ ५ ॥ त्रीजे भागे सांभलो क्षय थाये हो बीयतीय कसाय के ॥ चोथे पांचमे खटभागे, सात आ- ठमे हो एकसो चार थायके ॥ अनि० ॥६ ॥ नउमे सो त्रिण उपरे, नपुंसक हो स्त्री वेद खट हासके ॥ पुंवेद संज्वलन ए त्रण्ये, क्षय होवे हो भागे अनुक्रमे जासके ॥ अनि० ॥ ७ ॥ नवमा भागने छेहडे, मायानो हो प्रभु भाख्यो अंत के ॥ कर्पुरविजय गुरु राजनो, शिष्य पभणे हो निजमननी खंति के ॥ अनि० ॥ ८ ॥ इतिश्री नवम गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ १२ ॥ देवतणी ऋद्धि भोगवी आव्यो ॥ ए देशी॥

॥ सूक्ष्म संपराय नामे दशमुं, गुणठाणुं ते जाणि ॥ चढते परि- णामे ए होवे, भाख्युं जिनवर भाणरे ॥ मुनिवर जोज्यो हृदय वि- चारी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ बंध कह्यो इहां सत्तर पयडी, दर्शन कहीयां चार ॥ उंच गोत्र यश नाणावरणी, अंतराय दशवारीरे ॥ ॥ मुनि०॥ २ ॥ ए सोले पयडी इणे ठाणे, वाले ते निरधार ॥ उदय कह्यो इंहां साठ ज पयडी ॥ वेद त्रण निवारीरे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥

संज्वलन त्रिक ए छ पयडी, उदय नहीं इण ठाय ॥ उदीरणा सत्तावन जाणो, सत्ता सतदुग थायरे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ संज्वलननो लोभ अंत करे इहां, जुओ सूत्र अनुसार ॥ कर्पूरविजय पंडित सुपसाये, मणि विजय जयकाररे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ इतिश्री सूक्ष्मसंपराय गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥१३॥ व्रतनी मनसा जाणे आणो ॥ ए देशी ॥

॥ हवे सुणज्यो भविदण प्राणी, श्री जिनवर केरी वाणी ॥ उपशांत मोह गुण ठाणे, एकादशमुं ए जाणे ॥ १ ॥ बंधे कहीये पयडी एक, आगमें जोई सुविवेक ॥ शातावेदनीय बंध उदार, बीजी पयडी नहीं निरधार ॥ २ ॥ उदय थकी हवे सुणीए, एके उणी साठीज गणीए ॥ लोभ संज्वलन केरो अंत, एणे ठाणे एहज संत ॥ ३ ॥ उदीरणा तणो अधिकार, सांभलतां हरख अपार ॥ भाखी पयडी छप्पन्न जेह, मनमांहि आणो तेह ॥ ४ ॥ सकल पंडित शिरदार, कर्पूरविजय सुखकार ॥ तस चरण पसायज पामी, मणिविजय कहे सीरनामी ॥ ५ ॥ इति उपशांत मोह गुण स्थानक एकादशम भास ॥

॥ढाल ॥१४ ॥ धिग् धिग् धिग् धिग् काया ॥ ए देशी ॥

॥ श्री जिनवर एम बोले, वाणी जे अमृत तोले हो ॥ सुणो मुनि समभावी ॥ क्षीण मोह गुण ठाण, द्वादशमुं गुणमणि खाण हो ॥सुणो०॥१॥ बंध कह्यो साता केरो, उदये ते भेद अनेरो हो ॥सुणो०॥

ऋषभ नाराच दुग टालो, सत्तावन उदये निहालो हो ॥ सुणो०॥२॥ उदये छेल्ले बे भागे, निद्रा प्रचला नावि लाग हो ॥ सु० ॥ उदीरणा चोपन केरी, सत्तायें पयडी अनेरी हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ छेल्ला दुग समे जोय, एकसो एक पयडी होय हो ॥ सु० ॥ निद्रा प्रचला इहां अंत, नवाणुं भेद ए तंत हो ॥ सुणो०॥ ४ ॥ दंसण चार पंच ज्ञान अंतराय पण चउद ज मान हो ॥ सु०॥ अंत करे एहनो छेडे, नवि-उपजे ते फिरे केडे हो ॥ सु०॥ ५ ॥ सकल पंडित शिणगार, कर्पूर-विजय शिरदारहो ॥ सु० ॥ तस सुपसाये भाव जाण्या, मणिविजय तेह वखाण्या हो ॥ सु०॥ ६ ॥ इतिश्री क्षीणमोह गुणस्थानक भास ॥

॥ ढाल १५॥ भले पधार्या तुमे साधुजीरे ॥ ए देशी ॥

॥ गुणठाणुं हवे तेरमुंरे, भाख्युं श्रीजिनरायरे ॥ सयोगी नामे भलुंरे, आव्युं ते नावि जायरे ॥ गुण०॥१॥ बंधे शाता वेदनीरे, उदय कहुं निरधाररे ॥ नाणावरणीय पांचे सहीरे, अंतराय पंचे विचाररे ॥ गुण०॥२॥ दर्शन चारे चउदओरे, उदय नहीं इणे ठाणरे ॥ तीर्थंकर नाम भेलतांरे, बेंतालिस उदय परिमाणरे ॥ गुण०॥ ३ ॥ उरल थिर खगई दुगरे, प्रत्येक त्रिक छ संठाणरे ॥ अगुरुलघु वर्ण चारनोरे, निर्माण तेजस जाणीरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कार्मण पेहेलो संघयणनोरे, दुसर सुसर जोयरे ॥ साता अशाता एकनोरे, ए त्रीसनो अंत होयरे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ एके उणी चालीसनीरे, उदीरणा अवदातरे ॥ पं-च्यासी पयडी तणीरे, सत्ता जेह विख्यातरे ॥ गुण० ॥ ६ ॥ संप्रति पंच विदेहमांरे, विचरे वीस मुणिंदरे ॥ संयोगी ठाणे अलंक-

थांरे, सेवे सुरनर वृंदरे ॥ गुण० ॥ ७ ॥ दोय कोडी साधु केवलीरे, वंदन तेने त्रिकालरे ॥ कर्पुरविजय गुरु नामथी, मणिविजय मंगल मालरे ॥गुण०॥८ ॥ इतिश्री सयोगी गुण स्थानक त्रयोदशम भास ॥

॥ ढाल ॥ १६ ॥ नयरी अयोध्याथी संचर्या ए ॥ ए देशी ॥

॥ अयोगी नामे चौदमुंरे, गुणठाण श्रीकार ॥ कहुं ए जिनवरुए, अ इ उ ऋ लृ मान ज एहतुं ए, जेहथी शिव-सुखसार ॥कहुं०॥ ॥ १ ॥ बंध नहीं पयडी तणो ए, उदय तणो भाव जोय ॥ कहुं० ॥ सुभग आदेय यश वली ए, वेदनी त्रस त्रिक होय ॥ क० ॥ २ ॥ पंचेंद्रिय जाति नर आउखुं ए, नरनी गति जिननाम ॥ कहुं०॥ उंच गोत्र ए बारनो ए, अंत थाय छेहेडे ताम ॥ क० ॥ ३ ॥ उदीरणा इहां नवि लहे ए, सत्ता सुणो वीरतंत ॥ क० ॥ छेल्ला दुग समे जाणीए ए, बोहोतेर पयडी अंत ॥ क० ॥ ४ ॥ नाम थकी हवे ते कहुं ए, सुर खगई गंध दोय ॥ क० ॥ फरस आठ वर्ण पांचनी ए, रस तनु बंधन सोय ॥ क० ॥ ५ ॥ संघातन ए सवि तणी ए, पंच पंच पयडी जेह ॥ क० ॥ निर्माण नाम ते भेलतांए, चालीस पुरी एह ॥ क० ॥ ६ ॥ संघयण अथीर खटसही ए, संस्थान खट-सुविवेक ॥ क० ॥ अगुरुलघु च्यार अपज्जता ए, अशाता साता एक ॥ क० ॥ ७ ॥ प्रत्येक उपांग त्रिण त्रिण कह्यां ए, सुस्वर नीच गोत्र जाण ॥ क० ॥ ए बोहोतेर पयडी तणो ए, अंत हुवे इण ठाण ॥ क० ॥ ८ ॥ छेह समे पयडी तेरनो ए, अंत करे गुणवंत ॥क०॥ आठ करम खेपवीए, पामी सुख अनंत ॥ क० ॥ ९ ॥ एम अनेक

भेद सुंदरु ए, आगम शास्त्र मझार ॥ क० ॥ मणिविजय बुध उपदिशेए, निज मतिने अनुसार ॥ क० ॥ १० ॥ इतिश्री अयोगी गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ १७ ॥ दीठो दीठोरे वामाको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ पूजो पूजोरे प्रभु पासजीने पूजो ॥ संखेश्वर परमेश्वर साहेब, ए सम देव न दूजोरे ॥ १ ॥ जेहने नामे नवनिधि पामे, मुक्ति वधु तस कामे ॥ सुरनर नारी वे कर जोडी, आवीने शीरनामेरे ॥ प्र० ॥ २ ॥ तेह तणे सुपसाय हरखे, गुणठाणा सुविचार ॥ बंध उदय उदीरणा सत्ता, भाखी पर उपगाररे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ शापुर मंडण शांति जिणेश्वर, महिमा महियल गाजे ॥ ४ ॥ पास चिंतामणि चिंता चुरे, सहस फणो जिनराजेरे ॥ प्रभु० ॥४॥ केसर चंदन मृगमद घोली, पूजे जे नरनारी ॥ भावना भावे जिनवर आगे, तेहनी दुर्गति वारीरे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तप गच्छनायक पुण्येपुरो, श्री विजय देव सुरिंद ॥ तस पट्टधारक कुमति वारक, श्री विजयप्रभ मुणिंदरे ॥ प्र०॥ ६ ॥ सकल पंडित शिर मुगट नगीनो, कपुरविजय गुरु शीस ॥ मणिविजय बुध इणिपरे जल्पे, पुरो संघ जगीसरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति श्री चतुर्दश गुण स्थानक संपूर्ण ॥

॥ ज्ञानदर्शन चारित्रनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ श्री इंद्रादिक भावथी, प्रणमे जगगुरु पाय ॥ ते प्रभु वीर जीणंदने, नमतां अतिसुख थाय ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चा-

रित्रनो, कहुं परस्पर संवाद ॥ त्रिक जोगे सिद्धि होये, एवो प्रवचन वाद ॥ २ ॥ समकित गुण जस चित्त रम्यो, तेहनो वादविवाद ॥ समुदायथी एक अंश ग्रही, मुख्य करे तिहां वाद ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनानी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानवादी पेहेलो कहे, त्रिभुवनमां हुं सार ललना ॥ नय निक्षेप प्रमाणनो, चउ अनुयोग विचार ललना ॥ १ ॥ ज्ञान भजो भवी प्राणीया ॥ ए आंकणी ॥ सप्तभंगी षट् द्रव्यनुं, मुज विण कुण लहे तत्त्व, ललना ॥ बंभी लीपीने प्रणमीया, गणधरादिक महासत्त्व ललना ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ मेरु सूर्यने इंद्रनी, उपमा ज्ञानीने होय ललना ॥ मुज वीण मूर्ख पशुतणी, एवी उपमा तसहोय ललना ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ ज्ञान पछी जिनराजने, अरिहंत पद होय भोग्य, ललना ॥ भोगववुं ते ज्ञाननो, उपदेश कहेवो जे योग्य ललना ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ज्ञान पछी किरिया कही, दशवैकालिक वाणी ललना, ज्ञान गुणे मुनि कह्या, उत्तराध्ययन प्रमाण ललना ॥ ज्ञा० ॥ ॥ ५ ॥ दीपक घट देखावशे, घटथी दीपक न देखाय ललना ॥ अ-प्रतिपाती ज्ञान गुण सही, महानिशीथे कहेवाय ललना ॥ ज्ञा० ॥६॥ अधिकुं सर्व पातिक थकी, अज्ञानी जाणे न चोज ललना ॥ आतम स्वरूप जाण्या विना, जीम फिरे जंगल रोज ललना ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ किरीया विण बहु सिद्धि लहे, तापसादिक दृष्टांत ललना ॥ गज बेठे मरुदेवीने, आपी में मुक्ति एकांत ललना ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ अज्ञान-वादी इम कहे, आपे मोक्ष न ज्ञान ललना ॥ उत्तर धर्मसंग्रहणीथी,

करजो मुज बहु मान ललना ॥ ज्ञा०॥ ९ ॥ जीव ने ज्ञान अभेद छे, मुजवीण जीव अजीव ललना ॥ अक्षरनो अनंतमो, भाग उघाडो सदैव ललना ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ क्रिया नये जे बाल छे, ज्ञान नये उजमाल ललना ॥ मुनिने सेववा योग्य ते, बोले उपदेशमाल ललना ॥ ज्ञा० ॥ ११॥ देवाचार्य मल्लवादीजी, जग जस वाद लहंत ललना बोध जीत्या मुज आश्रये, इम बहु शास्त्रे उदंत ललना ॥ज्ञा०॥ १२॥ देहीना मेल सारीखो, मुज विण किरिया धंध ललना ॥ तिक्ष्णता जे ज्ञाननी, तेहिज चरण अबंध ललना ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोड वरस तप जप किरिया करे, नवि मीट कर्मना पाश रे ॥ ज्ञानी ते एक सासोसासमां, अनेक कर्म करे नाश रे ॥ गुणीजन वांदोरे ज्ञानने लळी लळी ॥१॥ए आंकणी॥ ज्ञानना गुणने रे उत्तम संग्रहे, बालक माने ते वेषरे ॥ मध्यम नर किरिया गुण आदरे षोडशके उपदेश रे ॥ गुण० २ ॥ चारित्र हीणो रे ज्ञान गुणे घणो, वांदवो पूजवो तेह रे ॥ थोडा ज्ञानीनी किरिया क्लेश छे, उपदेश-मालामां एह रे ॥ गुण०॥३॥ महीयल माहाले रे मेले वेषथी, बगव्य-वहारे चालेरे ॥ जगने घाले रे ज्ञानविना धंधे, ते कीम धर्मने पालेरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ पीपलीया पान जीसा क्रिया गुरु, जहाज समा गुरु ज्ञानीरे ॥ किरिया रहित जे सिद्ध जिणंद छे, भगवती अंगनी वाणीरे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ मंडुक चरण जिम जलदागमे, किरियाये तेम भव व्याधिरे ॥ तस छार करवारे ज्ञाननी ज्योति छे, उपदेशपदे

एम साधीर ॥ गुण० ॥ ६ ॥ एकनो जाणग सर्व जाणग कह्यो, एहवी छे मारी वडाइ रे ॥ अविसंवादपणे जे जाणवुं, तेहीज समकित भाइरे ॥ गुण० ॥ ७ ॥ ज्ञान विना कहो समकित कीम रहे, किरिया तो ज्ञानली दासीरे ॥ छठ तपे सुका सेवाल भोजी कह्यो, देखे न सुख अविनासीरे ॥ गुण० ॥ ८ ॥ थोडली किरियारे ज्ञानीनी भली, जीम सुरनारीना भावरे ॥ बहुली किरिया रे ज्ञान विना कीसी, जीम अंधनारीना हावरे ॥ गुण० ॥ ९ ॥ सहस त्रेतालीस वसे नर बुझीया, नंदिषेण शुभ भाखेरे ॥ ज्ञानीए दीठुंरे तेहीज वस्तु छे, खरसिंह सम अन्य दाखेरे ॥ गुण० ॥ १० ॥ किरिया नयनेरे ज्ञान कहे तुमे, मुज थकी भिन्न अभिन्नरे ॥ भिन्न थशो तो रे जडता पामशो, भिन्नत्व मुजमांही लीनरे ॥ गुण० ॥ ११ ॥ न्याये त्रीजोरे जेहने आलंबीये, जुओ जुगति विमासीरे ॥ एक पद पामी चिलाति सुत तर्यो, ज्ञानथी सहु सुख वासीरे ॥ गुण० ॥१२॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जावेरे ॥ ए देशी॥

॥ समकितवादी हवे बोल्यो विमासीरे, मुजविण ज्ञान किरियानी बहु हांसीरे ॥ मुज विण ज्ञान अज्ञान ते जाणोरे ॥ शुकपाठक तथा वेदीया मानोरे ॥ १ ॥ मणिमय बिंब अनंत भरावेरे, सोवन देहेरां असंख्य करावेरे ॥ दंसण लवविण शुभ फल नापेरे, दंसण रयणायर इम थापे रे ॥ २ ॥ वार अनंती जीम जीवने फरस्योरे, जीम मृगतृष्णाए रेहेवे तरस्योरे ॥ ते एकवारमां दुःख सवी टालुंरे आत्ममंदिरमां करु अजुआलुंरे ॥ ३ ॥ मुज पछी ज्ञान किरिया दोय

साची रे, जलधर जोगे वनराय माचीरे ॥ पात्र कुपात्र तुमे नवि जोतारे, अमे भविक अकषाये मोहतारे ॥ ४ ॥ क्षण एक मुजने हृदये राखीरे, जिणे साहिबनी सुखडी चाखीरे ॥ मिथ्या वचन जो काये प्ररुपे रे, हुंतो रीसु पडे भव कूपे रे ॥५॥ बांहे झाल्यो ते कारण माटेरे, करुं सुखीयो पुद्गलअध साटेरे ॥ कृषीवल संबंध धरो मन- मांहीरे, समकितवंतने प्रणमो उछांहीरे ॥ ६ ॥ असुच्चा केवली कि- रियाहीनरे, सिद्धा मुजथकी अनुभव पीनरे ॥ दंसण रहित न सीझे कोईरे, निश्चय करो भवि आगम जोईरे ॥ ७ ॥ माला झाले निमाला लोचेरे, किरियाडंबर भणी बहु शोचेरे ॥ नव ग्रैवेयक सुधि लेई जावे रे, तोये समकित लव सुख नावेरे ॥ ८ ॥ जूठ किरियाए धरावे नामरे, हुं मुनि हुं श्रावक गुण धामरे ॥ मुज छतां मरीचीये भव न व- धार्यो रे, जमाली कुशीष्य जो समकित हार्यो रे ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ गुण वेलडीयां ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्ध नरे जेम संग्रह्यो रे ॥ बुद्धवंताजी ॥ विष पण अमृत थाय ॥ रुचिवंताजी ॥ तिम समकितवंते ग्रह्यो ॥ बुद्ध० ॥ शास्त्र सकल समुदाय ॥ रुचि० ॥ १ ॥ द्विपायन श्रेणिक भणी ॥बुद्ध०॥ वासुदेव पेढाल ॥ रुचि० ॥ अविरतिने पण सुखी करुं ॥ बुद्ध० ॥ मुज विण कवण आधार ॥ रुचि० ॥२ ॥ दश मिथ्यात्वगिरि भंज- वा ॥ बुद्ध०॥ पवि सम हुं समर्थ ॥ रुचि० ॥ शुभ दो आतम भावसुं ॥बुद्ध०॥ जिनपदवी मुज हाथ ॥ रुचि० ॥३ ॥ समकित अंक विणा सहु॥बुद्ध०॥किरियादिक बिन्दु रूप ॥ रुचि० ॥ अंगारमर्दक संबंधथी

॥बुद्ध०॥ समजो मुज स्वरूप ॥रुचि०॥ ४ ॥ कृष्णपखीओ अनादिनो ॥ बुद्ध० ॥ मुजथी मीटे ततखेव ॥ रुचि० ॥ शुक्लपखीयो तव थयो ॥ बुद्ध० ॥ मिटे अनादि भव सेव ॥ रुचि० ॥ ५ ॥ वरस हजार किरिया गई ॥ बुद्ध० ॥ कुंडरीकनी अकाज ॥ रुचि० ॥ मुजविण पूर्वधर गया ॥ बुद्ध० ॥ आवे निगोदमां वाज ॥ रुचि०॥ ६ ॥ पूर्व बद्धायु गतदंसणी ॥ बुद्ध० ॥ वे विण समकितवंत ॥ रुचि० ॥ वैमानिक पदवी लहे ॥ बुद्ध० ॥ इम महाभाष्य कहंत ॥ रुचि० ॥ ॥ ७ ॥ जीव प्रदेशे पुद्गल रह्या ॥ बुद्ध० ॥ मिथ्यातना जे समस्त ॥ रुचि० ॥ तेह मीटे जे शुद्धता ॥ बुद्ध० ॥ तेहीज समकित वस्त ॥ ॥ रुचि० ॥ ८ ॥ समकितने भावे हुवे ॥ बुद्ध० ॥ दर्शन सही गुरु देव ॥ रुचि० ॥ अगणित महिमा माहरो ॥ बुद्ध० ॥ समकित दश रुचि सेव ॥ रुचि० ॥ ९ ॥ दशमांहि नव अस्तिता ॥ बुद्ध० ॥ स्याद्वाद रहे मुजमांह ॥ रुचि० ॥ यथार्थ वस्तु हुं ग्रहुं ॥ बुद्ध० ॥ आठ पक्षथी उछांह ॥ रुचि० ॥ १० ॥ समकित मीटे चारित्र नही ॥ बुद्ध० ॥ आवश्यक मांहे वखाणी ॥ रुचि० ॥ समकित तेहज चरण छे ॥ बुद्ध० ॥ पेहेला अंगनी वाणी ॥रुचि०॥११॥ समकितनी सेवा सारी ॥ बुद्ध० ॥ नही मिथ्यामतिराज ॥ रुचि०॥ खट उपमान छे माहरे ॥ बुद्ध० ॥ सद्दह्यो मुनिराज ॥रुचि० ॥१२॥

॥ ढाल ॥५ ॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ हवे किरियावादी कहे मन रुली, न गणे ज्ञाननो गुण सुख दाई ॥ साजन सुणीयेहे॥ वांझणी सुत रंक राजवी, कीसी सुपने ज्ञान

चढाई ॥ सा० ॥ नरहर ना नमवारे, संयम धारीने ॥१॥ आंकणी॥
ज्ञानथी फल भोग नवि लहे, किरियाविण कोइक जीव ॥ सा० ॥
रसवती जल गुण जाणतां, तृप्ति नवि होये अतीव ॥ सा० ॥ न०॥
॥ २ ॥ किरिया विण पंथते नवी घटे, विचरे जलनिधि तरे ॥सा०॥
नटणी निज किरिया विना, जनरंजन कहो कीम करे ॥ सा०॥न०॥
॥ ३ ॥ शत्रुंजय महात्म्यमां कह्युं, मुनि वेष ते नमवो उछांहि ॥सा०॥
लिंग देखीने भावे प्रणमीया, साचित्र उदय गुणग्राही ॥ सा०॥न० ॥
॥ ४ ॥ भरतने केवल उपनो, लिंग विण नमीया नहीं देव ॥सा०॥
कहे उपदेश एक संबंधनो, असुच्चा केवली ततखेव ॥ सा०॥ न०॥
॥ ५ ॥ ज्ञाननुं फल विरति कह्युं, बहुविध शास्त्रमझार ॥ सा० ॥
चारित्र महाराजा तणा, ज्ञान समकित दो प्रतिहार ॥ सा० ॥ न०॥
॥ ६ ॥ गति चारमां समकित पामीये, नरगतिमांही संयम सिद्ध
॥ सा० ॥ किरियानय शास्त्रनो अंग छे ॥ निर्युक्तिना वचन प्रसिद्ध
॥ सा० ॥ न० ॥ ७ ॥ सर्व संवरी किरिया विना, ज्ञानने सुगति
न होय ॥ सा० ॥ अनंतर कारण हु सही, तेह धुर सिद्धा सहु
कोय ॥ सा० ॥ न० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जिनवर मंदिर सयल महियलमां, सोवन रयण मंडावे-
जी ॥ एक दिवसना चरण समोवड, कहो ते किम करी थावेजी ॥
आदर जीव किरिया गुण मनोहर, म करीश वाद विवादजी ॥ ए

आंकणी ॥ १ ॥ केवलीने पण एक संयमनुं, स्थानक स्थिर रहे शुद्धजी ॥ सकल प्रदेश स्थिरतारूप चारित्र, सिद्ध प्रभुने कहे बुद्ध जी ॥ आदर० ॥ २ ॥ एकवरसना संयमसुखमां, अनुत्तर सुरसुख थावेजी ॥ ए पण व्यावहारिक नय वचन छे, क्षणमांहि श्रेणी मंडावेजी ॥ आदर० ॥ ३ ॥ एक दिवसनी किरियापालक, संप्रति नरपति कीधोजी ॥ हरि नृपने नवयाम क्रियाए, पांचमे अनुत्तर सिधोजी ॥ आदर० ॥ ४ ॥ चार कषाय मीटे संयम होय, किरियाए महा लब्धिजी ॥ दशारसिंह सत्यकीने अधोगति, जो नहीं किरिया सबंधीजी ॥ आदर० ॥ ५ ॥ अक्रियावादी दशाचूर्णीमां, कृष्णपखीओ जीव नयमांजी ॥ क्रियावादी शुक्ल पखीओ, जिन उपदेशे महिमाजी ॥ आदर० ॥ ६ ॥ योग व्यापार नहि जो सिद्धने, तो किरिया किम व्यापेजी ॥ सघला नरनुं सार संयम छे, जिन गणधर कहुं आपेजी ॥ आदर० ॥ ७ ॥ खर जिम चंदन भार वहे बहु, तस फल भोग न थावेजी ॥ दीपक सहस कर्या पण अंधथी, कुण कारज सोहावेजी ॥ आदर० ॥ ८ ॥ दशार्णभद्रने नमीआ सुरपति, जो किरियाए गुणवंताजी ॥ मुज अवदात अनेक छे जगमां, धारो भवि जयवंताजी ॥ आदर० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ कोईलो पर्वत धुंधलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ एम निज निज मत थापता हो लाल, आव्या जिणेसर पासरे ॥ वालेसर ॥ करुणाकारक उपदिशे हो लाल ॥ अनुपम वचन विलासरे ॥ वालेसर ॥ जयो जयो जिनवर जगगुरु हो

लाल ॥ जेहथी मीटे भव पासरे ॥वा०॥१॥ ए आंकणी ॥ दंसण सहित ज्ञानी कह्या हो लाल, देशविराधक साचरे ॥ वा० ॥ ज्ञान रहित किरिया करे हो लाल, तो पण विराधक वाचरे ॥ वा० ॥ज०॥ ॥ २ ॥ देश देश उपगारीआ हो लाल, समुदाय सिद्धि लहंतरे ॥ वा० ॥ तीन समूहे नेह उपजे हो लाल ॥ बिन्दु बिन्दु सरहुंतरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ३ ॥ त्रिण भुवनना योगथी हो लाल, पूरण लोक कहेवायरे ॥ वा० ॥ केम ते एकमां थापीये हो लाल, एक सिथे तृप्ति न थायरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ४ ॥ ज्ञान समकित धोरी वहे हो लाल, संयम रथ सुविशालरे ॥ वा० ॥ बेसी जिनपंथे चढ्या हो लाल, थाशे ते परम निहालरे ॥ वां० ॥ ज० ॥ ५ ॥ निज निज पद प्राप्ति सुधी हो लाल, ज्ञानाचारादिक सेवरे ॥ वा० ॥ इम शुभ परिणामे करी हो लाल, वेगे होय शिवदेवरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ६ ॥ दंसण ज्ञानमां भेलवी हो लाल, ज्ञान क्रियाये कही सिद्धरे ॥वा०॥ पंगु अंधो नर दो मले हो लाल, मनह मनोरथ कीधोरे ॥वा०ज०॥७॥ जेटला वचन विचार छे हो लाल, तेटला नयना वादरे ॥ वा० ॥ सहु अंतर प्रीति करे हो लाल, सुणी वीरना वचन जे स्वादरे ॥ ॥ वा० ॥ ज० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ श्रीमहावीरजीना गुण गावो, संशय मनना मिटावोरे, मुक्ताफलनो थाल भरीने, प्रभुजीना ज्ञान वधावोरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ आ समये श्रुतज्ञानी मोटा, शुद्ध स्वरूप समजावोरे ॥ ज्ञानीनो जे

विनय सेवे, तो अतिचार न थावेरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आवश्यकादिक-ग्रंथ अनुसारे, रचना करी मनोहाररे ॥ हिनाधिक निजबुद्धि कहे-वाय, ते श्रुतधर सुधारीरे, ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मुनि कर सिद्धि चंद्रज वरसे, आठम शुदी भले भावेरे ॥ त्रणसें त्रीस कल्याणक ए दिन, त्रीस चोवीसीना थावेरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पेहेला पांच जीणंद नमि नेमि, सुव्रत पास सुपासरे ॥ दश जिननां अगीयार कल्याणक, ए दिवसे थया खासरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अडसिद्धि बुद्धि दायक एदीन, स्तवन रच्युं प्रमाणरे ॥ भणशे गुणशे जेह सांभलशे, तस घर कोडि कल्याणरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर प्रमुख केरो, अढीलाख उदार ए ॥ जिनबिंब स्थापी सुजस लीधो, दानसूरी सुखकार ए ॥ तस पाट परंपर तपागच्छे, सोभाग्य सूरि गणधार ए ॥ तास शिष्य ल-क्ष्मीसूरि पभणे संघने जयजयकार ए ॥ १ ॥

॥ अथ श्री पांचकारणनुं स्तवन. ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीये, जगदीपक जिनराज ॥ व-स्तु तत्त्व सवि जाणीये, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी सं-पजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्तभंगी रचना विना, बंध न बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नृप जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंधपुरुष एह गज ग्रही, अव-यव एकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मली अनेक ॥ ४ ॥

संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्धबोध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहि किश्यो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

॥ श्री जिनशासन जग जयकारी, स्याद्वाद शुद्धरूप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोई कहे एक कालतणे वश, सकल जगत गति होय रे ॥ काले उपजे काले विणसे, अवर न कारण कोयरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ काले गर्भ धरे जग वनिता, काले जन्मे पुतरे ॥ काले बोले काले चाले, काले झाले घरसुत्तरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काले दुधथकी दहीं थाये, काले फल परिपाकरे ॥ विविध पदारथ काल उपाये, काले सहु थाय खाखरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनचोवीश बार चक्रवर्ति, वासुदेव बलदेवरे ॥ काले कलित कोइ न दीसे, जसु करता सुर सेवरे ॥ ॥ श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्पिर्णी अवसर्पिणी आरा, छए जुइ जुइ भातरे ॥ ऋतुकाल विशेष विचारो, भिन्न भिन्न दिन रातरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ काले वाल विलास मनोहर, यौवने काला केश रे ॥ वृद्ध पण वली पली वपु अति दुर्बल, शक्ति नहि लव लेशरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ गिरुआ गुण वीरजी ॥ ए देशी ॥

॥ तत्र स्वभाववादी वदेजी, काल किस्युं करे रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निःशंक ॥ सुविवेक विचारी, जुओ जुओ वस्तु स्वभाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ छते योग जोवन-

वती जी, वांझणी न जणे बाल ॥ मुच्छ नहिं महिला मुखें जी, कर तल उगे न वाल ॥ सु० ॥ २. ॥ विण स्वभाव नावि निपजे जी, केम पदारथ कोई ॥ आंब न लागे लींबडे जी, बाग वसंते जोय ॥ सु० ॥३॥ मोर पिच्छ कुण चीतरे जी, कोण करे संध्या रंग ॥ अंग विविध सवि जीवनां जी, सुंदर नयन कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा बोर बबुलना जी, कोणे अणीयाला कीध ॥ रूप रंग गुण जुजुआ जी, तरु फल फुल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य वसे जी, मणि हरे विष ततकाल ॥ पर्वत स्थिर मल वायरोजी, उर्ध्व अग्निनी ज्वाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मत्स्य तुंब जलमां तजे जी, बूडे काग पहाण ॥ पंखी जात गयणे फिरेजी, इणी परे सयल विनाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठथी उपशमेजी, हरडे करे विरेच ॥ सीजे नहिं कण कांगडुं जी, शक्ति स्वभाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ देश विशेषें काष्ठना जी, भूमिमां थाय पहाण ॥ शंख अस्तिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ९. ॥ रवि तातो शशी शीतलोजी, भव्यादिक बहु भाव ॥ छए द्रव्य आप आपणांजी, न तजे कोई स्वभाव ॥ सु० ॥ १० ॥ इति स्वभाववाद ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपुर होय अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ काल किश्युं करे बापडोजी, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो नवि होये भावितव्यताजी, तो केम सिजे कज्जरे ॥ प्राणी म करो मन जंजाल ॥ भाविभाव निहालरे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जलनिधि तरे जंगल फरेजी, कोडी जतन करे कोय ॥ अणभावी होवे

नहीं जी, भावी होयते होयरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आंबे मोर वसंतमांजी, डाले डाले केई लाख ॥ केई खर्या केई खाखटीजी, केई आधां केई साखरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाउल जेम भवितव्यताजी, जिण जिण दिशि उजाय ॥ परवश मन माणस तणुजी, तृण जेम पुंठे धायरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नियति वशे विण चिंतव्युंजी, आवि मले तत काल ॥ वरसा सोनुं चिंतव्युंजी, नियति करे विसरालरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हणे गोवाल ॥ दोय सहस्स जस देवताजी, देहतणा रखवालरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कोकुहो कोयल करेजी, केम राखी शके प्राण ॥ आहेडी शर ताकीयोजी, उपर भमे सींचाणरे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ आहेडी नागे डश्योजी, बाण लाग्यो सिंचाण ॥ कोकुहो उडी गयोजी, जुओ जुओ नियति प्रमाणरे ॥प्रा०॥८॥ उडी शस्त्र हण्यां संग्राममांजी, राने पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांथी मानवीजी, राख्याही न रहंतरे ॥ प्रा०॥ ९ ॥ इति भवितव्यता वाद ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ राग मारुणी मनोहर हीरजीरे ॥

॥ काल स्वभाव नियत मति कुडी, कर्म करे ते थाय ॥ कर्मे निरय तिरिय नर सुरगतिजी, जीव भवांतरे जाय ॥ चेतन चेतीयेरे कर्म समो नहीं कोय ॥ चेतन०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कर्मे राम वस्या वनवासे, सीतापामे आल ॥ कर्मे लंकापति रावणनुं, राज थयुं विसराल ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर, कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग शोक दुःख पीडित, जन्म जाय विलपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे वीरने जुओ

योगमारे, खीला रोप्या कन्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्मे एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय रथ चढ्या चतुरनर, एक आगळ उजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ उद्यम मानी अंध तणी परे, जग हींडे हा हूतो ॥ कर्म बली ते लहे सकल फल, सुखभर सेजे सुतोरे ॥चे०॥ ॥ ६ ॥ उंदर एके कीधो उद्यम, करंडीयो कर कोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूख्यो, नाग रह्यो दुःख डोलेरे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी मूषक तस मुखमां, दीये आपणो देह ॥ मार्ग लई वन नाग पधार्या, कर्म मर्म जुओ एह ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति कर्म विवाद ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥

॥ हवे उद्यम वादी भणेए, ए चारे असमर्थ तो ॥ सकल पदार्थ साधवा, एक उद्यम समर्थ तो ॥१ ॥ उद्यम करतां मानवीए, शुं नवि सीझे काज तो ॥ रामे रयणायर तरीए, लीधुं लंका राज्य तो ॥ २ ॥ कर्म नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो ॥ देउल वाघ मुखे पंखीयांए, पीयु पेसंतां जायतो ॥ ३ ॥ विण उद्यम केम नीकले ए, तील मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढे ए, जुओ एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४॥ उद्यम करतां एक समे ए, जे नवि सीझे काज तो ॥ तेह फरी उद्यमथी हुवेए, जो नवि आवे वाजतो ॥ ५ ॥ उद्यम करी ओर्या विना ए, नवी रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पडे कोलीयो ए, मुखमां पखे जतन्न तो ॥६॥ कर्म पुत्त उद्यम पिताए, उद्यमे कीधां कर्म तो ॥ उद्यमथी दुरे टले ए, जुओ कर्मनो मर्म तो ॥७॥ दृढप्रहारी हत्या करीए, कीधां पाप अनंत तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थयो

अरिहंत तो ॥ ८ ॥ टीपे टीपे सर भरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो ॥ गिरि जेवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाळ तो ॥ ९ ॥ उद्यमथी जळ बिंदुओ ए, करे पाषणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणे ए, उद्यम जोडे दाम तो ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ ए छंडी कीहां राखी ॥

॥ ए पांचे नय वाद करंता, श्री जिन चरणे आवे ॥ अमिय सरस जिन वाणी सुणीने, आनंद अंग न मावेरे ॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणोरे ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्यामति जाणोरे ॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोई काज न सीझे ॥ अंगुलीयोगे कर तणी परे, जे बुझे ते रीझेर प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह आणी कोई एकने, एहमां दीजे वडाई ॥ पण सेना मिली सकल रणांगण, जीत सुभट लडाईरे प्राणी ॥ स० ॥ ३ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावे, काल क्रमे रे वणाये ॥ भवितव्यता होये तो नीपजे, नहीं तो विघ्न घणांयरे प्राणी ॥ स० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सकल सहकारी ॥ एम पांचे मली सकल पदारथ, उत्पत्ति जुओ विचारीरे प्राणी ॥ स० ॥ ५ ॥ नियति वशे हलु करमो थईने, निगोद थकी नीकलीयो ॥ पुण्ये मनुज भवादिक पामी, सद्गुरुने जई मलीयोरे प्राणी ॥ स० ॥ ६ ॥ भवस्थितिनो परिपाक थयोतव, पंडित वीर्य उल्लसीयो, भव्य स्वभावे शिवगति पामी, शिवपुर जईने वसीयो रे प्राणी ॥ सम० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान जिन एणी परे विनये,

शासन नायक गायो ॥ संघ सकल सुख होये जेहथी, स्याद्वाद रस पायोरे प्राणी ॥ सा० ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥ इम धर्म नायक, मुक्तिदायक, वीर जिनवर संशुण्यो ॥ सय सत्तर संवत वन्हि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्री विजयदेव सुरिंद पटधर श्री विजयप्रभ मुणिंद ए ॥ श्री कीर्त्तिविजय वाचक शिष्य इणिपरे, विनय कहे आणंद ए ॥ १ ॥

॥ अथश्री समकितनुं स्तवन. ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामिदुक्कडं ॥ ए देशी ॥

॥ सांभलरे तुं प्राणीया, सदगुरु उपदेशो ॥ मानव भव दोहीलो लह्यो, उत्तम कुल एसो ॥ सा०॥ १ ॥ देव तत्व नवि ओलख्यो, गुरुतत्व न जाण्यो ॥ धर्म तत्व नवि सद्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो ॥ सा० ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी सुर जिन प्रत्ये, सरखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि ओलख्यो, वयणे वखाण्या ॥सा०॥३॥ देव थया मांहे ग्रह्या, पासे रहे नारी ॥ काम तणे वश जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ सा० ॥ ४ ॥ केई क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ के कोईथी बीहता, हथीयार सवाह्या ॥ सा० ॥ ५ ॥ क्रूर नजर जेहनी घणी, देखंतां डरीये ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीये ॥ सा० ॥ ६ ॥ आठ करम सांकल जड्यां, भमे भवही मजारो ॥ जन्म मरण भव देखीये, पाम्या नहीं पारो ॥ सा० ॥ ७ ॥ देवथई नाटक करे, नाचे जण जण आगे ॥ वेषकरी राधा कृष्णनो, वली

भीक्षा मागे ॥ सा० ॥ ८ ॥ मुखे करी वाये वांसली, पेहेरे तन वाघा ॥ भावंतां भोजन करे, एहवा भ्रम लागा ॥ सा० ॥ ९ ॥ देखो दैत्य संहारवा, थया उद्यमवंतो ॥ हरि हीरणांकुश मारीयो नरसिंह बलवंतो ॥ सा० ॥१० ॥ मत्स्य कच्छ अवतार लई, सहु असुर विदार्या ॥ दश अवतार जुजुआ, दश दैत्य संहार्या ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ माने मूढ मिथ्या मति, एहवा पण देवो ॥ फरी फरी अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥सा०॥ १२ ॥ स्वामी सोहे जे हवो, तेहवो परिवारो॥ इम जाणीने परिहरो, जिन हर्ष विचारो ॥सा०१३॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ ओधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ जगनायक जिनराजने, दाखविये सही देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ ज० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया नहीं, नहीं लोभ अज्ञान ॥ रति अरति वेदे नहीं, छांडयां मद स्थान ॥ ज० ॥२ ॥ निद्रा शोक चोरी नहि, नही वयण आलक ॥ मत्सर भय वध प्राणनो, नकरे तह कीक ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं नारी प्रसंग ॥ हास्यादिक अढार ए, नहीं जेहने अंग ॥ ज० ॥ ४॥ पद्मासन पुरी करी, बेठा श्री अरिहंत ॥ निश्चल लोयण तेहना, नासाग्र रहंत ॥ज०॥५॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठां परम उल्लास ॥ समकित थाये निर्मलुं, तपे ज्ञान उजास ॥ ज० ॥६॥ गति आगति सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ मनः पर्याय सवि तणा, केवलज्ञान आलोक ॥ ज० ॥ ७ ॥ मूर्त्ति श्री जिनराजनी, समतानो भंडार ॥ शीतल नयन सुहामणो, नहीं वांक लगार ॥ज०॥

॥ ८ ॥ हसत वदन हरखे हैयुं, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर छबी प्रभु देहनी, शोभा वरणवी न जाय ॥ज०॥ ९ ॥ अवर तणी एहवी छबी, किहां एम न दीसंत ॥ देव तत्त्व ए जाणीये, जिनहर्ष कहंत ॥ ज० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ जत्तणीनी ॥ ए देशी ॥

॥ श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, जे कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासथ्थादिक पांचेई, पाप श्रमण कह्या साचेई ॥ १ ॥ गृहीना मंदिरथी आणी ॥ आहार करे भात पाणी ॥ सुवे उंघे नीशदिश, प्रमादी विसवावीस ॥ २ ॥ किरिया न करे किणीवार, पडिकमणुं सांज सवार ॥ न करे पच्चखाण सज्झाय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दुध दहीं अप्रमांण, खाय न करे पच्चखाण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां सुपवित्र ॥ ४ ॥ सुविहित मुनि समाचारी, पाले नही ते अणगारी ॥ आहारना दोय बयाल, टाले नहीं कीणहि काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसनो चाले, काचे जळे देह पखाले ॥ अर्चा रचना वंदावे, वस्त्रादिक शोभा बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली झाझा राखे, वली वली अधिकाने धाखे ॥ माठी करणी जे कहीये, ते सघली जिणमें लहीये ॥ ७ ॥ एहवा जे कुरु आरंभी, मुनि साधु कहेवाये दंभी ॥ कीइ कम्म प्रशंसा करीये, भव भव ग्रहमां अवतरीये ॥ ८ ॥ लोहानी नावा तोले, भवसायरमां जे बोळे ॥ जिनहर्ष भलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥९॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ करजोडी आगल रही ॥ ए देशी ॥

॥ गुण गीरुआ गुरु ओलखो, हीयडे सुमति विचारीरे ॥ गुरु परिक्षा दोहिली, भुल पडे नर नारीरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांच इंद्रिय जे वशकरे, पांच महाव्रत पालेरे ॥ चार चार कषाय तजी जेणे, पांचे किरिया टालेरे ॥ गु० ॥ २ ॥ पांच समिती समिता रहे, तीन गुप्ति जे धारेरे ॥ दोष बेतालीस टालीने, पाणी भात आहारेरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ ममता छांडी देहना, निर्लोभी निर्मायीरे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंते न कांइरे ॥ गु० ॥ ४ ॥ धर्मतणां उपकरण धरे, संयम पालवा काजेरे ॥ भूमि जोई पगलां भरे, लोक विरोधथी लाजेरे॥गु०॥५॥पडिलेहण नित्य त्रिविधे, करे प्रमाद निवारीरे काले शुद्ध क्रियाकरे, इच्छा जोग निवारीरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ले देखी सुविशेषेरे॥ काल प्रमाणे खपकरे, दूषण टलतां देखेरे॥गु०॥७॥ कुरुखी संबल जे कह्यां, सान्निध्य केम ही न राखेरे ॥ दे उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख भाखेरे ॥गु०॥८॥ तन मेलां मन उजळां, तप करी खीणी देहीरे ॥ बंधन वे छेदी करी, विचरे जन निःस्नेहीरे ॥ गु० ॥ ९ ॥ एहवा गुरु जोई करी, आदरीये शुभ भावेरे ॥ बीजुं तत्त्व सुगुरु तणुं, ए जिनहर्ष कहावेरे ॥ गु० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥५॥ कर्मन छुटे रे प्राणिया ॥ ए देशी ॥

॥ भवसायर तरवा भणी, धर्म करे हो सारंभ ॥ पथ्थर नावे रे बेसीने, तरवो समुद्र दुरलंभ ॥ भ० ॥ १ ॥ आपे गोकुल

गायनां, आपे कन्या रे दान ॥ आपे क्षेत्र पुण्यार्थे, ब्राह्मणने देइ मान ॥ भ० ॥ २ ॥ लूंटावे धाणी वली, पृथ्वीदान सुप्रेम, गोला कलशा रे मोरिया, आपे हल तिल हेम ॥ भ० ॥ ३ ॥ वली खणावेरे खंतशुं, कुआ सुंदर वाव ॥ पुष्करिणी करणी भली, सरोवर सरवर तलाव ॥ भ० ॥ ४ ॥ कंद मूल मूके नहीं, अगीआरसने हो दीस ॥ आरंभ ते दिन अति घणो, धर्म कीहां जगदीश ॥ भ० ॥ ५ ॥ याग करे होमे तिहां, घोडा नरने रे छाग ॥ होमे जलचर मीडकां, धर्म कीहां वीतराग ॥ भ० ॥ ६ ॥ करे सदाये रे नोरतां, जीव तणां आरंभ ॥ हणे महिषने बोकडा, जेहथी नरक सुलंभ ॥ भ० ॥ ७ ॥ सारे सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वजनां रे श्राद्ध ॥ तेडी पोखेरे कागडा, देखो:एह उपाधि ॥ भ० ॥ ८ ॥ तीर्थ जाय गोदावरी, गंगा गया प्रयाग ॥ न्हावे अणगल नीरमां, धर्म तणो नहीं लाग ॥ भ० ॥९॥ इत्यादिक करणी करे, परभव सुखनेरे काज ॥ कहे जिन हर्ष मले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥ भ० ॥ १० ॥

॥ ढाल॥६॥ जाया तुज विण घडीरे छमास ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म खरो जिनवर तणोजी, शिव सुखनो दातार ॥ श्री जिनराजे प्रकाशीयोजी, जेहना चार प्रकार ॥ भविक जन ज्ञान विचारीरे जोय ॥ दुर्गति पडता जीवने जी, धारे ते धर्म होय ॥ भविकजन०॥१॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी, दशविध धर्म विचार ॥ हित करीने जिनवर कह्योजी, श्रावकनां व्रत बार ॥ भविक० ॥ २ ॥ पंचुंबर चारे विगयजी, विष सहु माटीरे हिम ॥ रात्री

भोजनने कह्याजी, बहु बीजोनो नेम ॥ भविक० ॥ ३ ॥ घोलवडां वली रींगणांजी, अनंतकाय बत्रीस ॥ अणजाण्यां फल फूलडांजी, संधाणां निशदीश ॥ भविक० ॥ ४ ॥ चालित अन्न वाशी थयुंजी, तुच्छ सहु फल दक्ष ॥ धर्मी नर खाये नहींजी, ए बावीस अभक्ष ॥ ॥ भविक० ॥ ५ ॥ न करे निद्धंधस पणेजी, घरना आरंभ धीर ॥ जीवतणी जयणा घणीजी, न पीये अणगल नीर ॥ भविक० ॥६ ॥ घृतपरे पाणी वावरेजी, बीये करतां पाप ॥ सामायिक व्रत पौषधेजी, टाले भवना ताप ॥ भविक० ॥ ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीजी, सेवा भक्ति सदीव ॥ धर्म शास्त्र सुणतां थकांजी, समजे कोमल जीव ॥ भविक० ॥ ८ ॥ मास मासने आंतरेजी, कुश अग्रे भुंजे बाल ॥ कला न पहोंचे शोलमीजी, श्री जिनधर्म विशाल ॥ भविक० ॥ ९॥ जिन धर्म मुक्ति पुरी दीयेजी, चउगति भ्रमण मिथ्यात्व ॥ एम जिन-हर्ष प्रकाशीयेजी, त्रीजुं तत्त्व विख्यात ॥ भविक० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥७॥ मधुकर आज रहोरे मत चलो ए देशी ॥

॥ श्री जिनधर्म आराधियेजी, करी निज समकित शुद्ध ॥ भवियण॥ तप जप किरिया कीधलीजी, लेखे पडे विशुद्ध ॥भ०श्री०॥ ॥१॥ कंचन कशी कशी लिजियेजी, नाणुं लींजे परीख ॥भ०॥ देव धर्म गुरु जोईनेजी, आदरीये सुणी शीख ॥भ० ॥श्री०॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनेजी, परिहरिये विष जेम ॥ भ० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म-नेजी, ग्रहीये अमृत तेम ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मूल धर्म ते जिने कह्योजी, समकित सुरतरु एह ॥ भ० ॥ भव भव सुख संपत्ति थकी-

जी, समकितशुं धरी नेह ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सत्तरसें छत्रीस समेजी, नभ शुदी दशमी दीस ॥ भ० ॥ समकितसित्तरी ए रची जी, पुरपाटण सुजगीश ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भणजो गुणजो भावशुंजी, लेशो अविचल श्रेय ॥ भ० ॥ शांति हर्ष वाचक तणोजी, कहे जिन हर्ष विनेय ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति श्री समकित-सित्तरी संपूर्ण ॥

॥ श्री बार आरानुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ सरस्वती भगवती भारती, ब्रह्माणी करी सार ॥ आरा बारतणो वळी, कहीशुं सोय विचार ॥ १ ॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं, जस अतिशय चोत्रीस ॥ समवसरण बेठा प्रभु, वाणी गुण पांत्रीस ॥ २ ॥ गौतम पूछे वीरने, पर उपगारी अकामी ॥ अनेक बोल विवरी करी, भाखे त्रिभुवन स्वामी ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ चोपाई ॥

॥ स्वामी वचन कहे सुकुमाल, आ कहीये अवसर्पिणी काल ॥ दस कोडाकोडी सागर जोय, तिहां षट् आरा गौतम होय ॥ १ ॥ सुसम सुसमा पहेलो सार, त्यारे जुगल धरे अवतार ॥ बीजो सुसमा आरो लहु, त्यारे जुगल जुगलणी कहुं ॥२॥ सुसम दुसमा त्रीजो वली, त्यारे जुगल कहे केवली ॥ अंते कुलगर हुआ सात, नाभिहुआ आदीश्वर तात ॥ ३ ॥

॥ दूहा ॥ आदि धर्म जेणे थापीओ, शीखव्या पुरुष अनं-त ॥ त्रीजा आरामांहे वली, मुक्ति गया भगवंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ राग परजीओ ॥ मनोहरजीनी ॥ ए देशी ॥

॥ पछी वली गौतम चोथे आरे, हुआ त्रेवीस जिणंदो ॥ एकादश चक्रवर्त्ती तिहां हुआ, त्रीजे भरत नरिंदारे ॥ १ ॥ गौतम सांभलोरे, दीन दीन पडतो काल ॥ ए आंकणी ॥ क्रोध लोभ मद मत्सर वधशे, दे अणहुतां आल ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ २ ॥ चक्री आठ गया नर मुक्ति, बे चक्री सुर मोटा ॥ सुभूमराय ब्रह्मदत्त गया नरके, पुन्यकाज हुआ खोटा ॥ गो० ॥ दीन० ॥ ३ ॥ वासुदेवनव निश्चय हुआ, नरक तणी लही वाट्यो ॥ जे भूपति संग्राम करंता, त्रिण सयांने साठयो ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ४ ॥ इह प्रतिवासुदेव नव नीका, नवि छंडे धन नारी ॥ वासुदेव तणे करे मारे, ते नरक तणा अधिकारी ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ५ ॥ नव बलदेव हूआ इणे आरे, नव नारद ते मोटा ॥ सुरगति मुक्ति तणा भजनारा, शियल वज्र कछोटा ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ गौतम अंत्ये हूं हवो, तव काया कर सात ॥ मुज शासनमांहे जेहवुं, हशे ते भाखो वात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ नगरका वणझारा ॥ ए देशी ॥

॥ भाखे वीर जिणेसर त्यारे, में संजम लीधो ज्यारे रे ॥ वरस त्रण गयां तिहांयशाले, त्यारे कुशिष्य मिल्यो गोशालोरे ॥ भाखे० ॥ १ ॥ तेजोलेश्या ते पण ग्रही तो, दोय मुनिवर जिन दहतु जाईरे ॥ अंते पातक आलोईने, बारमे स्वर्गे सुर होइरे ॥ भाखे० ॥ २ ॥

॥ दुहा ॥ वीर कहे केवली पछी, विचमांहे एतो काल ॥ चउद वरसे उपन्यो, निन्हव सोय जमाल ॥ १ ॥ तिष्य गुप्ति बीजो सही, सोले वरसे तेह ॥ अंते ते पाछो वले, समकित पामे जेह ॥२॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ राग गोडी ॥ भावी पटधर वीरनो ॥ ए देशी ॥

॥ दुसम आरोरे आगले, वीस सो वरसनुं आयु छे ॥ होशे वरस वीसनुं, दोय हाथनी काय ॥ कहुं तुज गौतम गणधर ॥ १ ॥ वळी कहे वीर जीणेसरु, माहरो सुधर्मा शीष्य ॥ छेहे होसे दुप्पसह मुनी, ते विचे उदय त्रेवीस ॥ कहे० ॥ २ ॥ युगप्रधान जिणे कह्या जस एक अवतार ॥ पंचम आरे ते हशे, दोय सहसने चार ॥कहे० ॥ ३ ॥ युग प्रधान सरिखा हशे, मुनिवर लाख अगीयार ॥ ते उपर अधिका कहूं, मुनिवर सोल हजार ॥ कहे० ॥ ४ ॥ जैन भूपति जगमां हशे, करशे धर्म उद्धार ॥ लाख अगीआरने उपरे, संख्या सोल हजार ॥ ५ ॥ वीर पछी गौतम जशे, बारे वरसे मोक्ष वीसे सिद्धिगते सुधर्मा, प्रणमी पातिक शोष ॥ कहे० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ वीर थकी वरस चोसठे, मुक्ति जंबु स्वामि ॥ जंबु जाते सही जशे, दसवानां तस ठाम ॥ १ ॥

॥ ढाल॥५॥ राग आशावरी कानजी बजावे वांसली ॥ ए देशी॥

॥ मन पर्यव त्यारे नहींरे, परम अवधि ज्ञान ॥ पुलाक लब्धि आहारक तनुरे, क्षपक श्रेणी निधान ॥ १ ॥ उपशम श्रेणि जिन कल्पशुंरे, संजम त्रिण जाय ॥ केवलज्ञान नवमुं लहेरे, तव

मोक्ष पलाय ॥ २ ॥ वीर कहे वरस मुज पछीरे, चिउत्तरे थाय ॥ प्रभव स्वामी त्रीजे पाटेरे, परलोके जे जाय ॥ ३ ॥ शय्यंभवसूरि मुनिवरूरे, जे चोथे पाटे थाय ॥ वीरथी वरस अठाणुंएरे, लहे शुभ गति वाट ॥ ४ ॥ वीरथी वरस गयां घणांरे, एकसो अडताल, यशोभद्र सुरलोकमांरे, तब देता फाल ॥ ५ ॥ छट्ठे पाटे संभूति विजयरे, हशे पंडित जाण ॥ वीरथी एकसो सित्तेरे रे, वरसे निरवाण ॥ ६ ॥

॥ दुहा॥ तबपूर्व ओछा थया, सुण गौतम कहे वीर ॥ भद्रबाहु लगे ते हशे, जेहमां अर्थ गंभीर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ राग मोडी ॥ सिंह तणी परे एकलो ॥ ए देशी॥

॥ वरस बसें चउदे वलीरे, निन्हव त्रीजो जे होय ॥ आषाढाचारज तणोरे, शिष्य कहो वली सोयरे ॥ गौतम सांभलो रे ॥ १ ॥ निन्हव सो एटले सहीरे, पामे समकित सार ॥ बसे पंदर वरस वलीरे, स्थूलिभद्र लहे पारो रे ॥ गौ० ॥ २ ॥ पूर्व अनुयोग त्यारे नहींरे, सूक्ष्म महा प्रणिधान ॥ पेहेलुं संघयण थाकीउंरे, वळी पेहेलुं संस्थानोरे ॥ गौ० ॥ ३ ॥ बसें वीस वरसे वलीरे, निन्हव चोथोरे जेह ॥ अश्वमित्र नाम जे हशेरे, पाछो वलशे नर तेहरे ॥ ॥ गौ० ॥ ४ ॥ वीर पछी वरस जशेरे, बसेंने अट्ठावीश ॥ तव निन्हव होसे पांचमोरे, धनगुप्तनो शिष्यरे ॥ गौ० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ गंगाचारज ते सही, ते मति आणे ठाहि ॥ चा-

रसेने सितेरे, वीरथी विक्रम राय ॥ १ ॥ जे निज शाको थापशे, परदुःख भंजणहार ॥ जैन शिरोमणि ते हशे, शूरवीर दातार ॥२॥

॥ढाल॥७॥ राग धन्याश्री ॥ पाट कुसुमनी न पुजरूपे॥ए देशी॥

॥ वीर कहे वरस मुजथी जाशे, पंचसयां चउंआल ॥ रोहागुप्ति निन्हव होय छट्ठो, भमशे ते बहु काल हो ॥ गौतम दिन दिन कुमति वधशे ॥ १ ॥ भूपति नहीं कोई संयम धारी, दान पचावी दे सेहो ॥ पंचसयां चोरासी वरसे, होशे गोष्ठामाहील ॥ सातमो निन्हव तेने कहीए, चाले भुंडी चालो हो ॥ गौ० ॥ २ ॥ पंचसयां चोरासी गौतम, वरस गयां तुं जोई ॥ दसपूर्व थाकशे त्यारे, वयरस्वामी लगे होई हो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ वीरथी वरस छसे नव जाये ताम दिगंबर थाय ॥ सर्व विसंवादी ए निन्हव, आठमो तेह कहाय हो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ वरस छसेने सोलज अंते, पूर्व साडा नव छेद ॥ दुर्बलिका पुत्र ज लगे होई, पाछल सोयने खेद हो ॥ गौ०॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ नवसें त्राणुं वरसज गये, पुस्तकारुढ ज होय ॥ चोथे पर्युषण आणसे, कालिकाचार्य सोय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥ राग परजीओ ॥ हितकरी हीरजीनुं ॥ए देशी॥

॥ अथ सिंधु ॥ वीरथी वरस हजार गया पछीरे, पूर्व होये तव छेदोरे ॥ तेरसयारे वरसे मत हशेरे, बोले नवनव भेदोरे ॥ इन्द्रभूति मोह्योरे वीर वचन रसेरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दिन दिन काल पडतो सही हशेरे, पुन्यवंता नर क्यांहीरे ॥ नीच कुलीरे नरपति

बहु थशेरे, पापतणी मती माहेरे ॥ इंद्र० ॥ २ ॥ वास वैराग्य विनय थोडा थशेरे, न मले मन्य मन्नोरे ॥ सुपुरुष छते सहु सगपण छांडशेरे, वाहालो होशे धन्नोरे ॥ इंद्र० ॥ ३ ॥ कलियुगमांहेरे मुनि लोभी हशेरे, विरला कही व्यवहारोरे ॥ धर्म तजशे क्षत्री नर वलीरे, ब्रह्म धरे हथियारोरे ॥ इंद्र० ॥ ४ ॥

॥ दुहा ॥ गौतम वीर थकी जशे, वरस सयां ओगणीस ॥ पांच मासने उपरे, भाषा बारज दीस ॥ १ ॥

॥ ढाल॥९॥ राग रामगीरी ॥ राम भणे हरी उठीये ॥ए देशी॥

॥ ताम कलंकीरे उपजे, कुल चंडाल असार रे ॥ माता जसोदारे बाह्मणी, होशे तीहां अवतार रे ॥ दुर्गति गामी रे ते सही ॥ १ ॥ चैत्र सुदीरे आठम दिने, विष्टिए जनम ते होयरे ॥ देहवरण तस उजलुं, पीलां लोचन दोइरे ॥ दु० ॥ २ ॥ रुद्र कलंकी चतुर्मुखा, ए होशे त्रणज नामो रे ॥ छासी वरसनुं आउखुं, पाटलीपुर जस गामरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ छट्ठो भागज भीखनो, लेशे कलंकी राय रे ॥ षट दरसणरे माने नहीं, दंड कुदंड थायरे ॥ दु० ॥४॥ इंद्र इहां पछे आवशे, धरशे विप्रनुं रूपरे ॥ वेगे हणशेरे रायने, लेशे नरकनुं कूपरे ॥ दु० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ तेहनो सुत सुंदर हशे, दत्त भूप अभिराम ॥ शत्रुंजय उद्धार करावशे, राखे जगमां नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥१०॥ राग रामगिरी ॥ प्रणमी तुम गुरुजी ॥ए देशी॥

॥ आगल आरे पांचमेजी, दुप्पसह मुनिवर होय ॥ सुरगति

मांहेथी आवशेजी, आगल सुरपति सोय ॥ सोभागी छेहलो मुनिवर एह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ छेहेलो संघ दुप्पसह तणोजी, आण न खंडे तेह ॥ सोभागी० ॥ वीस वरसनुं आउखुंजी, बार वरस घर वास ॥ चार वरस मुनिवर पणुंजी, वरस चार गछ धार ॥ सो० ॥ ॥२॥ फुलुक श्रीनामे साधवीजी, नायल श्रावक सोय ॥ सत्यश्री नामे श्राविकाजी, संघ चतुर्विध होय ॥ सो० ॥ ३ ॥ सुविहित संघ छेलो सहीजी, अल्प आउखुंरे त्यांही ॥ संघश्रुत श्रेय वलीजी, जाशे पोरज मांहे ॥ सो० ॥ ४ ॥ विमल वाहन नरपति जी, सुधर्म मंत्रीरे जेह न्याय नीत अग्नि जशेजी, वळी मध्यान्हे तेह ॥ सो० ॥५॥

॥ दुहा ॥ जैन धर्म एतां लगे, पछी नहीं पुन्य दान ॥ वायु मेघ भुंडा हशे, सुण गौतम तस मान ॥ १ ॥

॥ढाल॥११॥ राग सारंग ॥ मगध देशनो राजा राजेसर ॥ए देशी॥

॥ मान प्रकाशे मेघज केरु, पेहेलो ते जलधार ॥ बीजो अग्नितणो तिहां होशे, त्रीजो ते विषधार हो ॥ गौतम सुणतुं मधुरी वाण ॥१॥ चोथो आंबिलनो घन वरसे, वीजळीनो वरसाद ॥ एकेको मेघ त्यांहि वरसे, वासर रातज सात हो ॥ गो० ॥ २ ॥ बोतेर बोल वैताढ्यज केरा, छे वळी शाश्वता त्यांय॥ नरनारी पंखी हय हरणां, ते रहशे ते मांहे हो ॥गौ० ॥ ३ ॥ आगल छट्ठो आरो होशे, दुसम दुसमा नाम ॥ एकवीस सहस वरसनो जाणो, नहीं नगरी नहीं गाम हो ॥ गौतम० ॥४॥ गर्भ धरे खट वरसनी नारी, बिलवासी मछ खाय ॥ छेल्ले काया एक हाथनी होशे, सोल वरसनुं आयु हो ॥गौ०॥५॥

॥ दुहा ॥ आगल वली उत्सर्पिणी, त्यां षट आरा जोय ॥ पेहेलो छठो सारिखो, दुसम दुसमा सोय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ १२ ॥ राग केदारो ॥ वांदांयणाना ॥ ए देशी ॥

॥ आगल बीजो आरो सारो, त्यारे मेघ होशे वली चारो ॥ पुष्करावर्त्त खीर अमृत अपारो, चोथो वरसे घृतनी धारो ॥ १ ॥ फालशे वन वनस्पति बहु गामो, आगल साते कुलगर तामो ॥ दुसम सुसमा त्रिजो अभिरामो, त्रेवीस जिनना तीहां ठामो ॥ २ ॥ नव नारद चक्री अगीआरो, नव वलदेव हशे तीहां सारो ॥ वासुदेव नव तेणी वारो, नव प्रतिवासुदेव अपारो ॥ ३ ॥ सुसम दुसमा चोथा मांहि, एक जिनवर एक चक्री त्यांही ॥ अंत्ये जुगल होशे बहु जांहि, आउ पल्योपम भद्रक प्राहिं ॥ ४ ॥ आगल सुसम पंचम आरो, जुगल देह बे गाउ धारो ॥ छठो सुसम सुसमा संभारो, जुगल देह त्रण गाउ विचारो ॥ ५ ॥ पूछ्यां वचन कह्यां वली वीरे चित्तमां धरीया गौतम धीरे ॥ भणतां सुणतां सुखह शरीरे, ऋद्धि रमणीघर भरी वीरे ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥ भले स्तवन कीधु, नाम दीधु, गौतम प्रश्नोत्तर सही ॥ संवत सिद्धि मुनि अंग चंदे, भाद्रवा सुदी तियां तहिं ॥ १॥ तपगच्छ तिलक समान सोहे, गुरुश्री विजयानंद सूरीश्वरु ॥ सागणनो सुत ऋषभ श्रावक, कहे गच्छ मंगल करु ॥ २ ॥ इतिश्री बार आरानुं स्तवन. ॥

॥ अथ श्री आंतरानुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ शारद शारदना सुपरे, पंद पंकज प्रणमेय ॥ चोविसे जिन वरणवुं, अंतर युत संखेय ॥ १ ॥ वीर पार्श्वने आंतरु, वरस अढीसें होय ॥ पंच कल्याणक पार्श्वना, सांभलजो सहु कोय ॥ २ ॥

॥ढाल॥१॥ निरुपम नयरी वणारसी जी, श्रीअश्वसेन नरिंदतो ॥ वामा राणी गुण भर्याजी, मुख जिम पुनम चंद तो ॥ भवी भाव धरीने प्रणमो पास जिणंदतो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्राणत कल्प थकी चव्याजी, चैत्र वदी चोथने दीन तो ॥ तेहनी कुखे अवतर्याजी, प्रभु जिम किंदर सिंह तो ॥भवि०॥ २ ॥ पोस बहुल दशमी दीनेजी, जन्म्या पास कुमार तो ॥ जोवन वय प्रभु आवीयाजी, वरीया प्रभावती नारी तो ॥ भवि० ॥ ३ ॥ कमठ तणो मद गालीयोजी, उधर्यो नाग सजोर तो ॥ वद अगीआरस पोसनी जी, संजम लीये ऋद्धि छोडतो ॥ भवि०॥ ४ ॥ गाज विज ने वायरो जी, मुसलधार मेघ तो ॥ उपसर्ग कमठे कर्योजी, धरणेंद्रे निवार्या तेह तो ॥भवि०५॥ कर्म खपावी केवल लहीजी, चैत्रवदी चोथ सुजाणतो ॥ श्रावण शुद दीन आठमेजी, प्रभुजीनुं नीर्वाण तो ॥ भवि० ॥ ६ ॥ एकसो वरसनु आउखुंजी, पास चरित्रे कहुं एम तो, वरस चोरासी सहसनुं जी, आंतरु पासने नेम तो ॥ भवि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥२॥ सोरीपुर नयर सोहामणुं, जगजविनारे नेम ॥ समुद्रविजय नरपाल तो, दीलरंजनारे नेम ॥ चविया अपराजित थकी, जग जीवनारे नेम ॥ कारतक वद बारस दीनहो, दील रंजनारे नेम ॥ १ ॥ शीवा देवी कुखे अवतर्या ॥ जग० ॥ मान सर जिम मराल हो ॥ दील० ॥ श्रावण शुदी दीन पंचमी ॥ जग० ॥ प्रसव्यो पुत्र रतनहो ॥ दील० ॥ २ ॥ जोबन वय प्रभु आवीया ॥ जग० ॥ नील कमल दलवान हो ॥दी०॥ परणो सुंदर सुंदरी ॥ ॥ जग० ॥ इम कहे गोपी कान हो ॥ दी० ॥ ३ ॥ श्री उग्रसेननी कुंवरी ॥ जग० ॥ वरवा कीधी जान हो ॥ दील० ॥ पशु देखी पाछा वल्या ॥ जग० ॥ हुवा जादव कुल हेरान हो ॥ दी० ॥ ४ ॥ तोडे हारने तीहां रडे ॥जग०॥ राजुल दुःख न माय हो ॥ दील०॥ कहे पीयुजी पाये पडुं ॥ जग० ॥ छोडी मुने मत जाओ ॥ दी०५॥ कीडीसुं कटक कांकरो ॥ जग० ॥ ए तुम कुण आचार हो ॥ दी०॥ माणसना दील दुहवो ॥ जग० ॥ पशुआंशुं करो प्यारहो ॥ दी० ॥ ॥ ६ ॥ नरभव नेह निवारीओरे ॥जग०॥ देइ संवच्छरी दान हो ॥ दील० ॥ श्रावण सुद छठने दीनेरे ॥ जग० ॥ संजम लीए वड वान हो ॥ दील० ॥ ७ ॥ तारी राजुल सुंदरी ॥ जग० ॥ देइने दीक्षा दान हो ॥ दी० ॥ अमावस्या आसोज तणीरे ॥ जग० ॥ प्रभु लहे केवल ज्ञान हो ॥ दील० ॥ ८ ॥ सहस वरस प्रभु आउखुंरे ॥जग०॥ पाली श्री जिनराज हो ॥ दील०॥ अषाढ सुदी दीन आठमेरे ॥ जग० ॥ प्रभु लहे शीवपुरराज हो ॥ दील० ॥ ९ ॥

॥ढाल॥३॥थारा महेला उपर मेह झबुके वीजली हो लाल॥ए देशी॥

॥ पांच लाख वरस नमि नेमने आंतरु हो लाल, नमी नेमने आंतरु ॥ मुनिसुव्रत नमि नाथने छ लाख चित्त धरुं, हो लाल, छ लाख चित्त धरुं ॥ चोपन लाख वरस मुनिसुव्रत मल्लिने हो लाल, मुनिसुव्रत मल्लिने ॥ कोड सहस वली जाणो मल्ली अर नाथने हो लाल, मल्ली अरनाथने ॥१॥ कोड सहस वरस करी, उणो पल्यनुं हो लाल, उणो पल्यनुं ॥ चोथो भाग अरनाथवली कुंथुनाथने हो लाल, वली कुंथु नाथने ॥ पल्योपमनुं अरध जाणी शांति कुंथुने हो लाल, जाणो शांति कुंथुने ॥ शांति धर्म पल्योपम उणे सागर त्रणनुं हो लाल, सागर त्रणनुं ॥ २ ॥ सागर चार अनंतने धर्म जिणंदने हो लाल, धर्म जिणंदने ॥ नव सागर वली अनंत विमल जिन चंद्रने हो लाल, अनंत विमल जिन चंद्रने ॥ सागर त्रीस विमल वासुपूज्यने हो लाल, विमल वासुपूज्यने ॥ सागर चोपन श्री वासुपूज्य श्रेयांसने हो लाल, वासुपृज्य श्रेयांसने ॥ ३ ॥ लाख पांसठ सहस छवीस वरससो सागरु हो लाल, वरससो सागरु ॥ उणो सागर कोड श्रेयांस शीतल करे हो लाल, श्रेयांस शीतल करे ॥ सुविधि शीतलने नव कोड सागर भावज्यो हो लाल, सागर भावजो ॥ सुविधि चंद्रप्रभु नेउ कोडी सागर भावजो हो लाल, सागर मन भावजो ॥ ४ ॥ सागर नवसें कोड सुपास चंद्रप्रभु हो लाल, सुपास चंद्रप्रभु ॥ सागर

नव सहस कोड सुपास पद्म प्रभु हो लाल, सुपास पद्म प्रभु ॥सुमति पद्म प्रभु नेउ सहस कोड सागरु हो लाल, कोड सागरु ॥ सुमति अभिनंदन नव लाख कोड सागरु हो लाल, कोड सागरु ॥ ५ ॥ दस लाखकोड सागर संभव अभिनंदने हो लाल, संभव अभिनंदने ॥ त्रीस लाख कोड सागर संभव अजितने हो लाल, संभव अजितने ॥ पचास लाख कोड सागर अजित जिन ऋषभने हो लाल, आजित जिन ऋषभने ॥ एक कोडा कोड सागरु ऋषभने वीरने हो लाल, ऋषभने वीरने ॥ ६ ॥ सहस बेंतालीस तीन वरस वली जाणीए हो लाल, वरस वली जाणीये ॥ साडा आठ महिना उणा ते वखाणीए हो लाल, उणा ते वखाणीये ॥ नवसे एंसी वरसे होइ पुस्तक वांचना हो लाल, पुस्तक वांचना ॥ अंतर काल जाणो जिन चोवीसनो हो लाल, के जिन चोवीसनो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ दीन सकल मनोहर ॥ ए देशी ॥

॥ जयो आदि जिणेसर, त्रिभुवननो अवतंस ॥ नाभी राजा मरुदेवा, कुल मानुं सर हंस ॥ सर्वार्थ सिद्धथी, चवि इक्ष्वाकु भूमि वरठाम ॥ असाड वदी चोथे अवतर्या पुरुष प्रसन्न ॥ १ ॥ चैत्र वदी आठमे, जन्म्या श्री जिनराय ॥ आवे इंद्र इद्राणी, प्रभुजीना गुणगाय ॥ सुनंदा सुमंगला, वरिया जोबन पाय ॥ भरतादिक एकसो, पुत्र पुत्री दो थाय ॥ २ ॥ करी राजनी थापना, वासि वनिता इंद्र ॥ जगमां निति चलाय, मारु देवीनो नंद ॥ प्रभु शील्प देखाडी चारे जुगल आचार ॥ नरकला बहोतेर, चोसठ महिला सार ॥३॥

भरतादिकने दीए, अंगादिकनुं राज्य ॥ सुरनर इम जपे, जय जय श्री जिनराज ॥ देइ दान संवच्छरी, प्रभु लीए संयम भार, चार सहस राजाशुं, चैत्रवद आठम सार ॥४॥ प्रभु विचरे महीयल, वरस दिवस विण आहार ।' गजरथने घोडा, जन दिए राजकुमारी ॥ प्रभुतो नवि लेवे, जुवे शुद्ध आहार ॥ पडिलाभ्या प्रभुजी, श्रीश्रेयांसकुमार ॥ ५ ॥ फागण अंधारि, अगीआरस शुभ ध्यान ॥ प्रभु अठम भक्ते, पाम्या केवलनाण ॥ गढ त्रणे रचे सुर, सेवा करे करजोड ॥ चक्र रत्न उपन्यो, भरतने मन कोड ॥ ६ ॥ मारुदेवा मोहे, दुःख आणे मनजोर ॥ मारो ऋषभ सहे छे, वनवासी दुःख घोर ॥ तब भरत पयंपे, त्रिभुवन केरो राज ॥ ७ ॥ गजरथ बेसाडी, समवसरणनी पास ॥ भरतेसर आवे, प्रभुवंदन उल्लास ॥ सुणी देवनी दुंदुभी, उलसित आणंदपुर ॥ आव्यां हरखनां आंसुं, तिमिर पडल गयां दूर ॥ ८ ॥ प्रभुनी ऋद्धि देखी, एम चिंते मनमांहे ॥ धिक् धिक् कुडी माया, कोना सुत कोना तात ॥ एम भावना भावतां पाम्यां केवलज्ञान ॥ तत्क्षण मरुदेवा, तिहां लह्यो निर्वाण ॥ ९ ॥ धन्य धन्य ए प्रभुजी, धन्य एहनो परिवार ॥ लाख पूर्व चोरासी, पाली आयु उदार ॥ महावदी तेरस दीने, पाम्या सिद्धिनुं राज ॥ अष्टापद शिखरे, जय जय श्री जिनराज ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ चोवीस जिनवर तणो अंतर, भण्यो अतिउल्लास ए, संवत सतर तहोतरे, एम रही चोमासुंए ॥ संघतणो आग्रह ग्रही

आ स्तवननी सातमी गाथामां बे चरण त्रुटे छे.

में, श्री विमलविजय उवझायए ॥ तस शिष्य रामविजय नामे, वर्यो जय जय कार ए ॥ इति श्रीआंतरानुं स्तवन संपूर्ण. ॥

॥ महारमाहाविरकरांगतार, सदासमाले हितदेवमाना, समारमा मागमया सरामा, सिद्धांइ कामे लवता दयामा ॥१॥ इति स्तुतिः

॥ श्री रोहिणी तप विधि स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ सुखकर शंखेश्वर नमी, शुभगुरुने आधार ॥ रोहिणी तप महिमा विधि, कहिशुं भवि उपगार ॥ १ ॥ भक्त पान कुच्छित दिए, मुनिने जाण अजाण ॥ नरक तीर्यंचमां जीवते, पामे बहु दुःख खाण ॥२॥ ते पण रोहिणी तप थकी, पामी सुख संसार ॥ मोक्षे गया तेहनो कहुं, सुंदर ए अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ शीतलजिन सहेजानंदी ॥ ए देशी ॥

॥ मघवा नगरी करी झंपा, अरिवर्गे थकी नहि कंपा, आरंभे पुरी छे चंपा, राम सीता सरोवर पंपा ॥ १ ॥ पनोता प्रेमथी तप कीजे, गुरुपांस तप उचरीजे ॥ ए आंकणी ॥ वासुपूज्यना पुत्र कहाय, मघवा नामे तिहां राय, तस लक्ष्मीवती छे राणी, आठ पुत्र उपर एक जाणी ॥ प० ॥ २ ॥ रोहिणी नामे थई बेटी, नृप वल्लभसुं थई मोटी, यौवन वयमां जब आवे, तब वरनी चिंता थावे ॥ प० ॥ ३ ॥ स्वयंवर मंडप मंडावे, दूरथी राजपुत्र मिलावे, रोहिणी शणगार धरावी, जाणुं चंद्र प्रिया इहां आवी ॥ प० ॥ ४ ॥

नागपुर वितशोक भूपाल, तस पुत्र अशोक कुमार, वरमाला कंठे ठावे, नृप रोहिणीने परणावे ॥ प० ॥ ५ ॥ परिकरसुं सासरे जावे, अशोकने राज्ये ठावे, प्रिया पुण्ये वधी बहु ऋद्धि, वितशोके दीक्षा लीधी ॥ प० ॥ ६ ॥ सुख विलसे पंच प्रकार, आठ पुत्र सुता थई चार, रही दंपति सातमे माले, लघु पुत्र रमाडे खोले ॥ प० ॥ ७॥ लोकपालाभिधानने बाल, रही गोखे जुए जन चाल, तस सन्मुख रोति नारी, गयो पुत्र मरण संभारी ॥ प० ॥ ८ ॥ शिर छाती कुटे मली केती, माय रोती जलजली देती, माथाना केश ते रोले, जोई रोहिणी कंतने बोले ॥ प० ॥ ९ ॥ आज में नवुं नाटक दीठुं, जोतां बहु लागे मीठुं, नाच शीखी कीहांथी नारी, सुणी रोशे भर्यो नृप भारी ॥ प० ॥ १० ॥ कहे नाच शीखो इणि वेला, लेई पुत्र बाहिर दीए झोला, करथी विछोड्यो ते बाल, नृप हाहाकरे ततकाल ॥प०॥ ॥११॥ पुरदेव विचेथी लेता, भुंय सिंहासन करी देता, राणी हसती हसती जुए, हेठुं राजा ए कौतक दीठुं ॥ प० ॥ १२ ॥ लोक सघळा विस्मय पामे, वासुपूज्य शिष्य वन ठामे, आव्या रूप सोवन कुंभ नामा, शुभ वीर करे परणामा ॥ प० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ चउनाणी नृप प्रणमि पाय, निज राणीनुं प्रश्न कराय ॥ आ भवदुख नवि जाण्या एह, ए उपर मुज अधिको नेह ॥ १ ॥ मुनि कहे इण नगरे धनवतो, धनमित्र नामा शेठज हतो ॥ दुर्गंधा तस बेटी थई, कुब्जा कुरूपा दुर्भगा भई ॥२ ॥ योवन वय धन देता

सही, दुर्भगपणे कोई परणे नहीं ।। नृप हणतां कौतव शिष्येण, राखी परणावी सा तेण ।। ३ ।। नाठो ते दुर्गंधा लही, दान देयंतां सा घरे रही ।। ज्ञानीने परभव पूछती, मुनि कहे रैवतगिरि तट हती ।। ४ ।। पृथ्वीपाल नृप सिद्धिमति, नारी नृप वनमां क्रिडती ।। राय कहे देखी गुणवंता, तपसी मुनि गोचरीए जता ।।५।। दान दीयां घर पाछां वली, तव क्रीडा रसे रीसें बली ।। मूर्ख पणे करी बलते हैये, कडवो तुंबड मुनिने दीए ।। ६ ।। पारणुं करतां प्राण ज गया, सुर-लोके मुनि देवज थया ।। अशुभ कर्म बांधे सा नारी, जाणी नृप काढे पुर बारे ।। ७ ।। कुष्ट रोग दिन साते मरी, गई छट्ठे नरके दुःख भारी ।। तिरीय भवे अंतरता लही, मरीने सात नरकमां गई ।। ८ ।। नागण करभी ने कुतरी, उंदर धीरोली जलो शुकरी ।। काकी चंडालण भव लही, नवकार मंत्र तिहां सद्दही ।। ९ ।। मरीने शेठनी पुत्री भई, शेष कर्म दुर्गंधा थई ।। सांभलि जाति स्मरण लही श्री शुभ वीर वचन सद्दही ।। १० ।।

।। ढाल ।। ३ ।। गजरा मारुजी चाल्या चाकरीरे ।। ए देशी ।।

।। दुर्गंधा कहे साधुने रे दुःख भोगावियां अतिरेक ।। करुणा करीने दाखीएरे जिम जाए पाप अनेक रे ।। १ ।। जिम मुनि कहे रोहिणी तप करोरे, सात वरस उपर सात मास ।। रोहिणी नक्षत्रने दिनेरे, गुरुमुख करीए उपवासरे ।। गुरु० ।। २ ।। तपथी अशोक नृपनी प्रियारे, थई भोगवी भोगविलास ।। वासुपूज्य जिन तीर्थेरे,

तमो पामशो मोक्ष निवासरे ॥ तमे० ॥ ३ ॥ उजमणे पुरे तपेरे, वासुपूज्यनी पडिमा भराय ॥ चैत्य अशोक तरु तलेरे, अशोक रोहिणी चितरायरे ॥ अशो० ॥ ४ ॥ साहमिवच्छलपधरावीनेरे, गुरु वस्त्र सिद्धांत लखाय ॥ कुमारसुगंध तणी परेरे, दुष्कर्म सकल क्षय जाय रे ॥ दुष० ॥ ५ ॥ साधु कहे सिंहपुरमांरे, सिंहसेन नरेसर सार ॥ कनकप्रभा राणी तणोरे, दुर्गंधी अनिष्ट कुमाररे ॥ दुर्ग० ॥ ६ ॥ पद्मप्रभुने पुछतारे, जिन जल्पे पूर्व भव तास ॥ बार जोजन नागपुरथीरे, एक शिला निलगिरि पासरे ॥एक०॥७॥ ते उपर मुनि ध्यानथीरे, न लहे आहेडी शिकार ॥ गोचरी गत शिला तळेरे, कोप्यो घरे अग्नि अपाररे ॥कोप्यो० ॥८ ॥ शिला तपी रह्या उपरेरे, मुनि आहार करे काउसग्ग ॥ क्षपक श्रेणी थई केवलीरे, ततक्षण पाम्या अपवर्गरे ॥ ॥ तत० ॥ ९ ॥ आहेडी कुष्टी थई रे, गयो सातमी नरक मझार ॥ मच्छ मघा अहीं पांचमी, सिंह चोथी चित्र अवतार ॥ सिंह० ॥१०॥ त्रीजी विलाडो बीजीएरे, घूक प्रथम नरक दुःख जाल ॥ दुखना भव भमी ते थयोरे, एक शेठ घरे पशुपाल रे ॥ एक०॥ ११ ॥ धर्म लही दवमां बल्योरे, निद्राए हृदय नवकार ॥ श्री शुभवीरना ध्यानथीरे, तुज पुत्र पणे अवतार ॥ तुज० ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ मारी अंबाना वडला हेठ ॥ ए देशी ॥

॥ निसुणी दुर्गंध कुमार, जाति स्मरण पामतोरे ॥ पद्मप्रभु चरणे शीस, नामी उपाय ते पूछतोरे ॥ प्रभु वयणे उजमणे युक्त, रोहिणीनो तप सेवियोरे ॥ दुर्गंध पणुं गयुं दूर, नामे सुगंधी कुमार थयो

रे रोहिणी तप महिमा सार, सांभळतां नव विसरेरे ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ रही वात अधुरी एह, सांभळशो रोहिणीने भवेरे ॥ इम सुणी दुर्गंधा नारी, रोहिणी तप करे ओछवेरे ॥ सुगंधि लहि सुख भोग, स्वर्गे देवी सोहामणीरे ॥ तुज कांता मघवा धुअ, चवि चंपाए थई रोहिणीरे ॥ रो० ॥ २ ॥ तप पुण्य तणे प्रभाव, जन्मथी दुःख न देखीओरे ॥ अति स्नेह कीस्यो अम साथ, राय अशोके वली पुरीयुंरे ॥ गुरु बोले सुगंधि राय, देव थई पुष्कलावतीरे ॥ विजये थई चक्रि तेह, संजमधर हुआ अच्युतपतिरे ॥ रो० ॥ ३ ॥ चविने थया तमे अशोक, एक तपे प्रेम बन्यो घणोरे ॥ सात पुत्रनी सुणज्यो वात, मथुरामां एक मांहणोरे ॥ अग्नि शर्मा सुत सात, पाटलिपुर जई भीक्षा भमेरे ॥ मुनि पासे लई वैराग, विचर्या साते रही संजमेरे ॥ रो० ॥ ४ ॥ सौधर्मे हुआ सुरसात, ते सुत साते रोहिणीतणा रे ॥ वैताढ्ये भल्ल चूल खेट, समकित शुद्ध सोहामणारे ॥ गुरुदेवनी भक्ति पसाय, धुर स्वर्गे थई देवतारे ॥ लघु सुत आठमो लोकपाल, रोहिणीनो ते सुर सेवतारे ॥ रो० ॥ ५ ॥ वली खेट सुता छे चार, रमवाने वनमा गईरे ॥ तीहां दीठा एक अणगार, भाखे धर्म वेला थईरे ॥ पूछयाथी कहे मुनि भास, आठ पहोर तुम आयुछेरे ॥ आज पंचमीनो उपवास, करशो तो फलदाय छेरे ॥ रो० ॥ ६ ॥ धुजंती करी पचखाण, गेह अगासे जई सोवतिरे ॥ पडी विजळीये वली तेह धुर सुर लोके देवी थतीरे ॥ चवी थई तुम पुत्री चार, एक दिन पंचमी तप करीरे ॥ इम सांभली सहुं परिवार, वात पूर्व भवनी

सांलळीरे ॥ रो० ॥ ७ ॥ गुरु वंदी गया निज गेह, रोहिणी तप करतां सहुरे ॥ मोटी शक्ति बहुमान, उजमणां वस्तु बहुरे ॥ इम धर्म करि परिवार, साथे मोक्षपुरी वरीरे ॥ शुभ वीरना शासन मांह, सुख फल पामो तप आदरीरे ॥ रो० ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥ इम त्रिजग नायक मुक्तिदायक वीर जिनवर भाखीयो ॥ तप रोहिणीनो फल विधाने विधि विशेषे दाखीयो ॥ श्री क्षमाविजय जसविजय पाटे, शुभविजय सुमति धरो ॥ तस चरण सेवक कहे पंडित वीर विजयो जय करो ॥ इति श्री रोहिणी तप विधि स्तवन संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री अक्षयनिधि तपनुं स्तवन. ॥

॥दुहा॥ श्री शंखेश्वर शिरनमी, कहुं तप फल सुविचार ॥ अक्षय निधि तप भाखीयो, प्रवचन सार उद्धार ॥ १ ॥ तप तपतां अरिहा प्रभु, केवल नाणने हेत ॥ नाण लही तप तजी कीयो, शिव रमणी संकेत ॥ २ ॥ तिम सुंदरी परे तप करो, अक्षयनिधि गुण-वान, श्रुन केवलीये जे रच्यो, कल्पसूत्र बहु मान ॥ ३ ॥

॥ढाल॥१॥ रुडीने रढीयालीरे वाला तारी वांसळीरे ॥ए देशी॥

॥ जंबु भरते रे नयरी राजग्रहीरे, संवर शेठ वसे एक सार॥ गुणवंती नारीरे कठण आजीविकारे, घर दारिद्रय तणो भंडार ॥ सुंदरी सेवोरे अक्षय निधि तप भलोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुण्य

संजोगेरे पिया गरभे फलीरे, तब तस वृत्ति चली घरबार ।। केई व्य-
वहारीरे वणज करावतारे, वाध्यो शेठतणो व्यवहार ।।सुंदरी०।।२।।
पूरण मासेरे जन्मी कुमारिकारे, प्रगट्यो नाल निखेप निधान ।।
लक्षणवंतीरे पुत्री प्रभावथीरे, राय सुणी करतो वहु मान ।।सुंदरी०।।
।। ३ ।। पुत्रनी परेरे जन्म ओच्छव कर्योरे, सजनवर्ग नोतरीया
गेह ।। संवर शेठेरे थाप्युं सुंदरीरे, नाम महोत्सव करी धरी नेह ।।
।। सुंदरी० ।। ४ ।। बाल स्वभावेरे रमती सुंदरीरे, जिहां जिहां भूमि
खणंती रमाय ।। पूर्वे पुन्येरे मणि माणेक भर्योरे. तिहां तिहां द्रव्य-
निधि प्रगटाय ।। सुंदरी० ।। ५ ।। आणी आपरे तातने सुंदरीरे,
तिणे ते शेठ हुओ धनवंत ।। यौवन जागेरे रंभा उर्वशीरे, देखी
शेठ करे वरचिंत ।। सुंदरी० ।। ६ ।। शेठ समुद्रप्रियाभिध नगरमां रे
कमल सिरि नारी तसपुत्त ।। श्रीदत्तनामेरे रुप कला भर्योरे, तस
परणावी ते धन जुत्त ।। सुंदरी० ।। ७ ।। पुण्य पनोतीरे सासरे सुंद-
रीरे, आवी ततक्षण निधि प्रगटाय ।। पग अंगुठेरे कांकरो काढतां रे,
पूर्ण कलश धन लेती जाय ।। सुंदरी० ।। ८ ।। मोसाले भाणेजीने
तेड्यां भोजनेरे ।। तेहने घर पण लक्ष्मी नमाय ।। इम जिहां बालारे
शा पगलां ठवेरे, निधि प्रगटे सहु सुखियां थाय ।। सुंदरी० ।। ९ ।।
वहुने मानेरे ससरो भली परेरे ।। राजा पण चित्त विस्मय थाय ।।
एक दिन आव्या धर्म घोष सूरिवरारे, राजा प्रमुख ते वंदन जाय ।।
।। सुंदरी० ।। १० ।। सुंदरी पूछे कहो कुण कारणेरे, पग पग पामु
ऋद्धि रसाल ।। सूरि कहे साचोरे पूर्व भवतें कर्योरे, अक्षयनिधि तप
थई उजमाल ।। सुंदरी० ।। ११ ।।

॥ढाल॥२॥ माता जसोदा तमारो कान, मही वेचतां मागे दाण॥ए देशी॥
॥ अथवा चोपाईनी देशी ॥

॥ खेटकपुर संयम अभिधान, शेठ प्रिया ऋजुवति गुणवान ॥ ऋजुमति तप राति रहे, ज्ञान भक्ति सुख संपद लहे ॥१॥ रयणावली कनकावली करे, एकावली विधिये उचरे ॥ पाडोसी वसु शेठे वरी, सोमसुंदरी बहु मच्छर भरी, ॥ २ ॥ पुण्यवती तप राति बहु, ऋजुमति प्रशंसे सहु ॥ सोमसुंदरी सुणी निंदा करे, डाकणी परे छल जोती फरे ॥ ३ ॥ मुख्यो ब्राह्मण वगायो ढोर, चांप्यो नाग नासंतो चोर ॥ रांड भांडने मातो सांढ, ए सातेथी उगरीये मांड ॥ ॥ ४ ॥ लाग्युं घर शेठ संजम तणुं, सोमसुंदरी चित्त हरख्युं घणुं ॥ नारी प्रभावे न बळी एक छडी, बळी एक दिन घर धाडज पडी ॥ ५ ॥ पाडोसण मन चिन्ते इसु, पापी शेठनुं न गयुं किसुं ॥ देती आपने निर्धन थया, ते दंपति सुरलोके गया ॥ ६ ॥ सोम सुंदरी गुणी मच्छर भरी, अशुभ कर्म उपार्जन करी ॥ पामी मरण सा कोइक गुणी, श्रावक मुख नवकारज सुणी ॥ ७ ॥ जितशत्रु मथुरानो राय, चउसुत उपर बेटी थाय ॥ सर्व ऋद्धि नामज तसदई पंच धावसुं मोटी थई ॥ ८ ॥ शत्रु सैन्य समूहे नड्यो, जितशत्रु रणयोगे पड्यो ॥ लुंट पडी जब राजद्वार, कुंवरी पण नाठी तिणीवार ॥ ९ ॥ उजाति एक अटवी पडी, रवि उदये मार्ग शिर चढी ॥ वनफल वृत्तें वनचर थई, यौवन वेला निष्फल गई ॥ १०॥ एक विद्याधर देखी करी, परणी सा जिन मंदिर धरी ॥ तिणि

वेला घर लागी गयुं, सर्व ऋद्धि पगलेथी गयुं ॥ ११ ॥ विद्याधरे फरी वनमां धरी, पल्लिपति एक भीले हरी ॥ त्रीजे दीन घर तेनुं बल्यु, नारी निंदन सहूं जन भल्युं ॥ १२ ॥ सार्थवाह कर वेची तीणे, चाल्यो निज देसावर जाणी ॥ पंथ वचे लुटाणा तेह, सर्व ऋद्धि नाठा लई देह ॥ १३ ॥ वनमां सरोवर तीरे खडी, राजकुमारी कर्मे नडी ॥ पुन्ये मुनि मल्या गुण गेह, मीठे वयणे बोलावी तेह ॥१४॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ छोरी जाटडीनी ॥ ए देशी ॥

॥ छोरीरे बेटी तुंतो रायनी, हे कांई उभी सरोवर पाळरे ॥ शुं दुःख चिंतवे ॥ सिरदार सहूने सुख करे, महाराज मुनि एम उच्चरे ॥ पूर्वभव मच्छर करी, हे कांई फली तरु शाखा डालरे ॥ सोम सुंदरी भवे ॥सिर०॥ म० ॥१॥ तात मरण पुर लुंटीयुं, हे कांई पडी तुं अटवी मोजाररे ॥ दुःख पामी घणी खेचरशुं, इणे भवे लह्यो ॥ हे सुख संभोग एक वाररे, वली वनचर पणुं ॥ सि० ॥ म० ॥ २ ॥ ज्ञानी गुरु वयणां सुणी, हे राजकुमारी पुछायरे ॥ गुरु चरणे नमी, आ दुःखथी किम छुटीये ॥ हो कहीये करी सुपसायरे, दुःख वेला खमी ॥ सि० ॥ म० ॥ ३ ॥ अक्षयनिधि तप विधि करो, हे ज्ञान भक्ति विस्ताररे ॥ शक्ति न गोपवी, श्रावण वदी चोथे थकी ॥ हे संवत्सरी दिन साररे, पूरण तप तपी ॥ सि० ॥ म० ॥ ४ ॥ चोथभक्त एकासणो, हे शक्ति तणे अनुसाररे ॥ घट अक्षत भरो, विधि गुरुगमथी आचरो ॥ हे गणणुं दोय हजाररे, पडिक्कमणां करो ॥ ॥ सि० ॥ म० ॥ ५ ॥ एक वरस जघन्यथी, हे तीन वरस उक्कि-

हरे ॥ इण विधि तप करो, शासन देवी कारणे ॥ हे चोथे वरस वीसी ठरे, वळी ए आदरो ॥ सि० म० ॥ ६ ॥ आभव मनवंछित फले, हे परभव ऋिद्धी न मायरे ॥ हरि चक्रिपरे, इम निसुणी कुमरी तिहां ॥ हे वांदी गुरुना पायरे, गई गामांतरे ॥ सि० ॥ म० ॥ ७ ॥ परघर करतां चाकरी, हे आजीविका निर्वाहरे ॥ सुख दुखमां करे, अल्प विधियें तप तिणे कर्यो ॥ हे प्रथम वरस फरि चाहेरे, बीज भलिपरे ॥ सि० म० ॥ ८ ॥ चोथे वरस तप मांडतां, हे कोईक हुई धनवंतरे ॥ एक दिन आवीया, विद्याधर क्रीडा वशे ॥ हे पूरव नेह उलसंतरे, देखी निज प्रिया ॥ सि० ॥म०॥९॥ थापी जई अंते उरे, हे सा करे शीलव्रत मुख्यरे ॥ इणि काया धरी, शेषायु अणसणे मरी ॥ हे संवर पुत्री तुजरे, कहुं सुण सुंदरी ॥ सि०॥ म० ॥ १० ॥

॥ढाल॥४॥ कोश्या वेश्या कहे रागीजी, मनोहर मन गमता ॥ए देशी॥

॥ निज पूर्वभव सुणी तेहजी, सुंदरी सुकुमाली जाति स्मरण वरे तेहजी ॥ सुं० ॥ तप फले लहो ऋद्धि रसालजी ॥ सुं० ॥ कहे धर्मघोष अणगारजी ॥ सुं० ॥ १ ॥ कहे सुंदरी सर्वे साचुंजी ॥ सुं० ॥ तुम ज्ञान मांहे नहि काचुंजी ॥ सुं० ॥ अवंति मांहे वखाण्यांजी ॥ सु० ॥ तेहवा में तुमने जाण्याजी ॥ सुं० ॥ २ ॥ सूरी वंदी निज घर आवेजी ॥ सुं० ॥ तप अक्षय निधि मंडावेजी ॥सुं०॥ राजा राणीं तिणि वेलाजी ॥ सुं० ॥ शेठ सामंत सर्व भेलाजी ॥ सुं० ॥ ३ ॥ पग पग प्रगटे जे निधानजी ॥ सुं० ॥ करे प्रभावना बहुमानजी ॥ सुं० ॥ नाम सुंदरी तो विसराणीजी ॥ सुं० ॥ ते तो

अक्षय निधि कहे वाणीजी ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ मनमोटे पूर्ण फल लीधुंजी ॥ सु० ॥ पंचमीये पारणुं कीधुंजी ॥ सु० ॥ ज्ञान भक्ति महोच्छव देखीजी ॥ सु० ॥ देवी देव हुआ अनिमेषीजी ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ सुख विलसंता संसारजी ॥ सु० ॥ हुआ सुत चउ पुत्री चारजी ॥ सु० ॥ लियो अंते संयम भारजी ॥ सु० ॥ घनघाति खपाव्यां चारजी ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ लहि केवल शिवपुर जावेजी ॥ ॥ सु० ॥ गुण अगुरुलघु निपजावेजी ॥ सु० ॥ अवगाहन लक्षण संताजी ॥ सु० ॥ तिहां बीजा सिद्ध अनंताजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ तस फरसित देश प्रदेशेजी ॥ सु० ॥ असंख्य गुणा सुविशेषेजी ॥ सु० ॥ जुओ प्रथम उपांगे ठामजी ॥ सु० ॥ शुभवीर कहे प्रणामजी ॥८ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ कोईलो पर्वत धुंधलोरे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिणेसर गुण नीलोरे लोल, ए भाख्यो अधिकाररे ॥ सुगुणनर ॥ वरते शासन जेहनुंरे लोल, एकवीस वरस हजाररे ॥ ॥ सुगुणनर ॥ वीर जीणेसर गुणनीलोरे ॥ १ ॥ जिहां सफल जिन गुण सुणीरे लोल, दिहा सफल प्रभु ध्यानरे ॥ सु० ॥ जन्म सफल प्रभु दरिसणेरे लोल ॥ वाणीये सफल कानरे ॥ सु०॥ वी० ॥ २ ॥ तास परंपर पाटवीरे लोल, श्रीविजयसिंह सुरीसर ॥ सु० ॥ सत्य-विजय बुध तेहनारे लोल, कपुरविजय कवि शिष्यरे ॥ सु०॥ वी०॥ ॥ ३ ॥ क्षमाविजय गुरु तेहनारे लोल, श्रीजसविजय पन्यासरे ॥सु०॥ श्रीशुभविजय सुगुरु नमीरे लोल, सुरत रही चउमासरे ॥सु०॥वी०॥

॥४॥ चंद्र मुनि वसु हिमंकररे लोल, वरसे श्रावणमासेरे ॥ सु० ॥ श्रीशुभवीरने शासनेरे लोल, होजो ज्ञानप्रकाशेरे ॥ सु०॥वी०॥५॥

॥ कलश ॥ ए पंच ढाल रसाल भक्ति पंच ज्ञान आराधवा ॥ काम प्रमाद किरिया पंच छंडी पंचमी गति साधवा ॥ नभ कृष्ण पंचमी स्तवन रचीओ, अक्षय निधिके कारणे ॥ शुभवीर ज्ञाने देवसुंदरी नाचवा घरबारणे ॥१॥ इति अक्षय निधि तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ पुरिसा दाणी पासजी, बहु गुणमणि वास ॥ ऋद्धि वृद्धि मंगल करण, प्रणमुं मन उल्लास ॥ १ ॥ सरसती सामिनी विनवुं, कवि जन केरी माय ॥ सरस वाणी मुजने दीओ मोटो करी पसाय ॥ २॥ लब्धि विनय गुरु समरीए, अहर्निश हर्ष धरेव ॥ ज्ञान दृष्टि जेथी लही, पद पंकज प्रणमेव ॥ ३ ॥ प्रथम जिणेसर जे हुओ, मुनिवर प्रथम वखाण ॥ केवलधर पहेलो जे कहे, प्रथम भिक्षाचर जाण ॥ ४ ॥ पहेला दाता ए कह्यो, आ चोवीसी मझार ॥ तेह तणा गुण वरणवुं, आणो हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ढाल॥१॥ धन्य धन्य संप्रति साचो राजा॥ए देशी॥राग आसावरी॥

॥ पेहेले भव धन सार्थवाहे, समकित पाम्या साररे ॥ आराधी बीजे भव पाम्या, जुगलतणो अवताररे ॥ १ ॥ सेवो समकित

साचुं जाणी, ए सवि धर्मना खाणीरे ॥ नवि पामे जे अभव्य अ-
नाणी, एहवी जिननी वाणीरे ॥ सेवो० ॥२॥ ए आंकणी ॥ जुगल
चवि पेहेले देवलोके, भवतिजे सुर थायरे ॥ चोथे भवे विद्याधर कुले
थया, महाबल नामे रायरे ॥ सेवो० ॥३॥ गुरुपासे दीक्षा पालीने,
अणसण दीधुं अंतरे ॥ पांचमे भवे बीजे देवलोके, ललितांग सुर
दीपंतरे ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ देवचवी छठ्ठे भवे राजा, वज्रजंघ एणे
नामेरे ॥ तीहांथी सातमे भवे अवतरीआ, जुगला धर्मशुं ठामेरे ॥
॥ सेवो०॥५॥ पूर्ण आयु करी आठमे भवे, सुधर्म देवलोक देवरे ॥
देवतणी ऋद्धि बहुली पाम्या, देवतणा वळी भोगरे ॥ सेवो० ॥६॥
मुनिभव जिवानंद नवमे भवे, वैद चवी थयो देवरे ॥ साधुनी वैयावच्च
करी, दिक्षा लई पाळे स्वयमेवरे ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ वेदै जीव दसमे
भवे स्वर्गे, बारमें सुरह होयरे ॥ तिहांकणे आयु भोगवी पुरुं, बावीस
सागर जोयरे ॥ सेवो० ॥ ८ ॥ अगीयारमें भवे देव चवीने, चक्री-
हुओ वज्रनाभरे ॥ दीक्षा लई वीस स्थानक साधी, लीधो जिनपद
लाभरे ॥ सेवो० ॥ ९ ॥ चौद लाख पूर्वनी दीक्षा, पाली निर्मल
भावेरे ॥ सर्वार्थ सिद्ध अवतारीया, बारमे भव आयरे ॥ सेवो० ॥
॥ १० ॥ तेत्रीस सागर आयु प्रमाणे, सुख भोगवे तिहां देवरे ॥
तेरसमा भव केरो हवेहुं, चरित्र कहुं संखेवरे ॥ सेवो० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ वाडी फूली अति भली मनभमरारे ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीप सोहामणुं ॥ मन मोहना ॥ लाख जोजन परि-
माण लाल ॥ मन मोहना ॥ दक्षिण भरत भलुं तिहां ॥ मन मोहना ॥

अनुपम धर्मनुं ठाम ॥ लाल मन मोहना ॥ १ ॥ नयरी विनिता जाणीए ॥ मन० ॥ स्वर्गपुरी अवतार ॥ लाल० ॥ नाभीराय कुलगर तिहां ॥ मन० ॥ मरुदेवी तस नारि ॥ लाल० ॥ २ ॥ प्रीति भक्ति पाले सदा ॥ मन० ॥ पीयुशुं प्रेम अपार ॥ लाल० ॥ सुख विलसे संसारनां ॥ मन० ॥ सुरपेरे स्त्री भरथार ॥ लाल० ॥ ३ ॥ एक दिन सूती मालीये ॥ मन० ॥ मरुदेवी सुपवित्र ॥ लाल० ॥ चोथ अंधारी अषाडनी ॥ मन० उत्तराषाढा नक्षत्र ॥ लाल० ॥ ४ ॥ तेत्रीस सागर आउखे ॥ मन० ॥ भोगवी अनुपम सुख ॥ लाल० ॥ सर्वार्थ सिद्धथी चवी ॥ मन० ॥ सुर अवतरीओ कुख ॥ लाल० ॥ ॥ ५ ॥ चउद सुपन दीठां तीसे ॥ मन० ॥ राणी मध्यम रात ॥ ॥ लाल० ॥ जई कहे निज कंतने ॥ मन० ॥ सुपन तणो सवि वात ॥ लाल० ॥ ६ ॥ कंथ कहे निज नारीने ॥ मन० ॥ सुपन अर्थ विचार ॥ लाल० ॥ कुलदीपक त्रिभुवन पति ॥ मन० ॥ पुत्र होशे सुखकार ॥ लाल० ॥७॥ सुपन अर्थ पीउंथी सुणी ॥मन०॥ मन हरख्यां मरुदेव ॥ लाल० ॥ सुखे करी प्रतिपालना ॥ मन० ॥ गर्भ तणी नित मैव ॥ लाल० ॥ ८ ॥ नव मसवाडा उपरे ॥ मन० ॥ दिन हुवा साढासात ॥ लाल० ॥ चैत्रवद आठम दीने ॥ मन० ॥ उत्तराषाढा विख्यात ॥ लाल० ॥ ९ ॥ मझीम रयणीने समे ॥ मन० ॥ जन्म्यो पुत्र रतन ॥ लाल० ॥ जन्म महोच्छव तवकरे ॥ मन० ॥ दिशी कुमरी छप्पन्न ॥ लाल० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ देशी हमचडीनी ॥

॥ आसन कंप्युं इंद्रतणुरे, अवधिज्ञाने जाणि ॥ जिननो जन्म महोच्छव तब करवा, आवे इंद्र इंद्राणीरे ॥ हमचडी ॥ १ ॥ सुर परिवारे परवर्योरे, मेरु शिखर लई जाय ॥ प्रभुने नमण करीने पूजी, प्रणमी बहु गुणगायरे ॥ हमचडी ॥ २ ॥ आणी माता पासे मेहेली, सुर सुरलोके पहुंता ॥ दीन दीन वाधे चंद्र तणी परे, देखी हरखे मातारे ॥ हमचडी० ॥ ३ ॥ वृषभ तणुं लंछन प्रभु चरणे, मात पिताए देखी ॥ सुपन मांहे वली वृषभ जे पेहेला, दीठो उज्वल पेखीरे ॥ हमचडी० ॥ ४ ॥ तेहथी मात पिताए दीधुं, ऋषभ कुमार गुण गेह ॥ पांचसे धनुष प्रमाणे उंची, सोवन वरणी देहरे ॥ हम०॥ ॥ ५ ॥ वीस पुर्व लख्व कुमार पणेरे, रहीया प्रभु घरवासे ॥ सुमंगला सुनंदा कुंवारी, परण्या दोय उलासेरे ॥ हमचडी०॥६॥ त्याशी लाख पूर्व घरवासे, वसीय ऋषभ जिणंद ॥ भरतादिक सुत शत हुआरे, पुत्री दोय सुख कंदरे ॥ हमचडी० ॥ ७ ॥ तव लोकांतिक सुर आवीनेरे, कहे प्रभु तीर्थ थापो ॥ दान सवच्छरी देई दिक्षा, समय जाणी प्रभु आणीरे ॥ हमचडी० ॥ ८ ॥ दीक्षा महोच्छव करवा आवे, सपरिवार सुरिंदो ॥ शिबिका नामे सुदर्शना, आगल ठवे नरींदरे ॥ हमचडी० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ राग मारु ॥ ए देशी ॥

॥ चैत्रवदी आठम दीनेरे, उत्तराषाढारे चंद ॥ शिबिकाये बेसी गयारे, सिद्धारथ वनचंदो ॥ १ ॥ ऋषभ संयम लीये ॥ ए

आंकणी ॥ अशोक तरुतले आवीनेरे, चउ मुठी लोच कीध ॥ चार सहस वड राजवीरे, साथे चारित्र लीधरे ॥ ऋ० ॥ २ ॥ त्यांथी विचर्या जिनपतिरे, साधुतणे परिवार ॥ घरघर फरतां गौचरीरे, महीअल करे विहाररे ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ फरतां तप करतां थकांरे, वरस दिवस हुआ जाम ॥ गजपुर नयर पधारीयारे, दीठा श्रेयांस तामरे ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ वरसी पारणुं जिन जईरे, शेलडी रस तिहां कीध ॥ श्रेयांसे दान देईनेरे, परभव संबल लीधरे ॥ऋ०॥५॥ सहस वरस लगे तप तपीरे, कर्म कर्यां चकचूररे ॥ पुरिमतालपुर आ आवीनेरे, वीचरंता बहु गुण पुर्यारे ॥ ऋ० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ कपुर होवे अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण देवे भलीरे, रचियुं अतिहि उदार ॥ सिंहासन बेसी करीरे, दीए देशना जिन सार ॥ चतुरनर० ॥ १ ॥ कीजे धर्म सदाइ, जिम तुम शिवसुख थाय ॥ चतुरनर ॥ कीजे०॥ बारे परखदा आगलेरे, कहे धर्म च्यारे प्रकार ॥ अमृत सम देशना सुणीरे, प्रति बोध्या नरनार ॥ चतुरनर० ॥ २ ॥ भरत तणा सुत पांचसेरे, पुत्री सातसें जाण ॥ दिक्षा लीये जिनजी कनेरे, वैरागे मन आण ॥ चतुरनर०॥ ३ ॥ पुंडरीक प्रमुख थयारे, चोरासी गणधार ॥ सहस चोरासी तिम भलीरे, साधु तणो परिवार ॥ ॥ चतुरनर० ॥ ४ ॥ ब्राह्मी प्रमुख वली साहुणीरे, त्रण लाख सुविचार ॥ पांच सहस त्रण लाख भलारे, श्रावक समकित् धार ॥ चतुरनर० ॥ ५ ॥ चोपन सह पंच लाख कहीरे, श्राविका शुद्ध

आचार ॥ इम चउविह संघ थापीनेरे, ऋषभ करे विहार ॥ चतुर०॥ ॥ ६ ॥ चारित्र एक लख पूर्वनुरे, पाल्युं ऋषभ जिणंद ॥ धर्म तणे उपदेशथीरे, तार्या भविजन वृंद ॥ चतुरनर० ॥ ७ ॥ मोक्ष समय जाणी करीरे, अष्टापद गिरि आव ॥ साधु सहसदशसुं तिहांरे, अणसण कीधुं भाव ॥ चतुरनर० ॥ ८ ॥ महावदी तेरस दीनेरे, अभि नक्षत्र चंद्र योग ॥ मुक्ति पहोत्या ऋषभजीरे, अनंत सुख संजोग ॥ चतुरनर० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ राग धन्याश्री ॥ कडखानी ॥ ए देशी ॥

॥ तुं जयो तुं जयो ऋषभ जिन तुं जयो, अलजयो हुं तुम दरसन करवा ॥ मेहेर करो घणी, विंनवुं तुम भणी, अवर न कोई धणीज उधारवा ॥तुज०॥१॥ जगमांहे मेहने मोर जिम प्रीतडी, प्रीतडी जेहवी चंद्र चकोर॥प्रीतडी राम लक्ष्मण तणी जेहवी,रात दिन ध्याउं दरस तोरा ॥तुज०॥२॥ शितल सुरतरु तणी तीहां छांयडी, सितलो चंद चंदन घसारो ॥ शीतलुं केल कपुर जिम शितलुं, सीतलो तिम मुझ मुख तमारो ॥ तुज० ॥ ३ ॥ मीठडो सेलडी रस जिम जाणीए, खटरस द्राख मीठी वखाणी ॥ मीठडि आंबला शाखातिम तुम तणी, मिठडि मुजमन तिम तुम वाणी ॥ तुज० ॥ ४ ॥ तुम तणा गुण तणो पारहुं नवि लहु, एक जीभे केम में कहीजे ॥ तार मुज तात संसार सागर थकी, रंगशुं शीवरमणी वरीजे ॥ तुज० ॥ ५ ॥

॥ कलस ॥ इम ऋषभ स्वामी, मुक्तिगामी चरण नामी

शीरए ॥ मरुदेवी नंदन सुख कंदन, प्रथम जिन जगदीशए॥ मनरंग आणी, सुखवाणी, गाइओ जग हितकरु ॥ कविराय लब्धि निज सुसेवक प्रेम विजय आनंद करो ॥ इति श्री ऋषभ स्वामीना तेर भवनुं स्तवन ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथजीनो स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ नवपद समरी मनशुद्धे, वली गौतम गणधार ॥ सरस्वती मात चित्त धरुं, वाधे वचन उदार ॥ १ ॥ मल्लीनाथ ओगणीसमा, जिनवर जगमां जेह ॥ गुण गाइशुं तेहना, सुगण सुणो धरी नेह ॥ २ ॥ किण देश किण नगरमें, कवण पिता कुण मात ॥ पांच कल्याणक परगडा, विगत करी कहुं वात ॥ ३ ॥

॥ढाल॥१॥ रामचंदके बागमे चंपो मोय रह्योरी ॥ए देशी॥

॥ इणहीज जंबुद्वीप, क्षेत्र भरत सुखकारि ॥ नयरी मिथिला नाम, अलकाने अणुहारि ॥१ ॥ तिहां नृप कुंभ नरेसर राय, राणी प्रभावती नामे ॥ शीयल गुण समिहित, जस पसर्यो ठामो ठामे ॥ २॥ एक दिवस ते नार, सुती सेज मोझारि ॥ देखी चौदे सुपन, ते जागी तिणिवारे ॥ ३ ॥ पतिने पहोती पास, सुपन सहुं ते कहीया ॥ नृप हरख्यो मन मांहे, अनुपम हेते लहीया ॥ ४ ॥ सुपन तणो अनुसार, पुत्री होशे पुन्यवंति ॥ अरथ सुणीने तेह, घरपोहोती गहगहती ॥ ५ ॥ कहुं पुर्व भव वात, जिहांथी चवी आव्या ॥ वी-

तशोका नामे नगरी, महाबल नाम कहाया ॥६॥ ते मलीया छए मित्र, सहु मली दीक्षा लीधी ॥ महाबल वंच्या मित्र, तपमे माया कीधि ॥ ७ ॥ सेव्यां स्थानक वीस, गौत्र तीर्थंकर बांध्यो ॥ स्त्री वेद उदार, पुन्यमें पापए साध्यो ॥ ८ ॥ अणसण करीय ते वार, जिन धर्मसुं लय लाई ॥ छए जीव जयन्ति विमान, सुर पद्वी तीहां पाई ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ श्री चंद्रप्रभु पाहुणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ इणहीज जंबुद्वीपमारे, भरत क्षेत्र कहेवायरे ॥ छए मित्र तिहां जे उपनारे, ते सुणज्यो चितलायरे ॥ इणहीज० ॥ १ ॥ पडिबुद्धा इख्खागमांरे, वदछाय अंगरायरे ॥ शंख काशीनो राजीयोरे, रुपी कुणाल कहायरे ॥ इणहीज० ॥ २ ॥ आदित शत्रु कुडु देशमांरे, जितशत्रु पंचाल कहायरे ॥ जयंतथी चवी ते सहुंरे, इहां अवतार लहायरे ॥ इणहीज० ॥ ३ ॥ महाबल जीव तिहां थकीरे, पुन्यवंत प्रधानरे ॥ फागणसुदी चोथनेरे, चविया श्री जयंतविमानरे ॥ इण० ॥ ४ ॥ प्रभावती उर अवतर्यारे, मास हुआ जव तीनरे ॥ डोहलो एवो उपनोरे, विण पून्या रहे दीनरे ॥ इणहीज० ॥ ५ ॥ जल थल उपना फूलनीरे, सुवुं सेज बिछायरे ॥ पांच वरण फूल चंद्रुआरे, सुगंध सरुप सहायरे ॥ इणहीज० ॥६॥ नवसरो हार फूलां तणोरे, हुं पेहेरुं मनरंग ॥ वाणव्यंतर ते देवतारे, पुरे तेह सुगंधरे ॥ इणहीज० ॥ ७ ॥ मृगसीर शुदी अगीआरसेरे, जायी पुत्री रतनरे, ॥ अर्ध नीशा वीत्या पछीरे, माताजी हरखी मनरे ॥ ॥ इणहीज० ॥ ८ ॥

॥ ढाल॥३॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ छपन कुमरि आई तिहां हरखे, जिनवर वंदी पायजी ॥ जन्म महोच्छव करीय जुगतीसुं, गइ निजगृह मति लायजी ॥छपन० ॥ १ ॥ चोसठ इंद्र तिहांकणे आवी, मेरुशिखर नवरायजी ॥ गीत मधुर ध्वनि नाटक करके, मुकी गया निज ठामजी ॥ छपन० ॥ ॥ २ ॥ हवे प्रभात थयो कुंभ राजा, जन्म महोच्छव कीधजी ॥ दश उठण बहु जन जमावी, मल्लि कुंवर नाम दीधजी ॥छपन०॥३॥ एक शत वरस थया केई उणा, अवधि प्रयुंजी ज्ञानजी ॥ पूर्वभव छए मित्रो केरा, लही आवागमने नामजी ॥ छपन० ॥ ४ ॥ ते मुज रूपे मोह्या सघला, आसा एणे ठामजी ॥ इम जाणी कुंमरीगृह मांहे कनक मूर्ति करी तामजी ॥ छपन० ॥ ५ ॥ मस्तके रोज कवल एक मुके, आप जिमे तिणे मांहीजी ॥ दिवस केते ते दुर्गंध प्रगटी मित्रो देखाई उछांहीजी ॥ छपन० ॥ ६ ॥ ते देखी छए मित्र प्रति बोध्या, सहू गया निज निज गेहजी ॥ हवे मल्ली दीक्षा अवसर जाणी, दे वर्षीदान तेहजी ॥ छपन० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥४॥ जिन प्रतिमा हो जिन सारीखी कही ॥ ए देशी ॥

॥ मृगशीर शुदी अगीआरसे आवीया, तीनसे नर लई साथ ॥ तीनसे नारी हो वली लीधी दिक्षा, छोडी सहू घर आथ ॥ ॥ मृगसीर० ॥ १ ॥ तीणहीज दिन संध्या समय थयां, लहीये केवळ राज ॥ ततक्षण समवसरण देवे कीधां, सीध्यां सघला काज ॥मृग०॥

॥ २ ॥ परखदा बारह लही बेठां तिहां, सुणी धर्म धरि नेह ॥ तीण समें छए मित्र पण आवीया, लइ दिक्षा तजी नेह ॥मृग०॥३॥अठावीस गणधर थाए जिनवरने, साधु सहस चालीश ॥ साध्वी सहस पंचावन जेहने, करे धर्म निशदीश ॥मृग०॥४॥ सहस चोरासी एक लख श्रावक, श्रावकणी लख तीन ॥ सहस पांसठ छे उपर जेहने, तप जप करे नीस दीन ॥ मृग० ॥ ५ ॥ सहस पंचावन आयु पालीने, उपशम धरीये उदार ॥ परउपगारी हो श्री जिनवरतणो, नाम लीयो निस्तार ॥ मृग० ॥ ६ ॥ पांचसे साधु अढीसें साधवी, लई साथे परीवार ॥ समेतशिखरे जिनवर चालीया, सुमति गुप्ति सुविचार ॥ मृग० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ आजहो परमारथ पायो ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिहो समेतशिखर सिधाया, गिरिवर देखी बहु सुख पाया ॥ सघलां साध्यारे मन भाया, छोडी सकल संसारनी माया ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ सहू जीवनां पुढवी पद पमज्जण कीधा, साधांरा मन वंछीत सिद्धा ॥ मल्लि० ॥ डाभ संथारे सुमन दीधा, धर्म शुक्ल ध्यान साथे लीधा ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ चोरासी लख जीव खमाया, पाप अढारे दूर गमाया ॥ सिद्धिवधू मिलवा उमाया, पडिलेही छोडी निज काया ॥मल्लि०॥ ३ ॥ साधवी अंतर परखद रहीये, बारह परखदा साधुनी कहीये ॥ काउसग्ग करीने काया दहीये, सिद्ध ध्यानसुं शिवपद लहीये ॥ मल्लि० ॥४॥ ऋतु वसंत फागण सुखदाई,

शुक्रपक्ष बारस अतिसा साइ ॥ अरधी नीशा जीम भरणी आइ, तब मल्लि जिन मुगति सीरी पाई ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ अविनाशी अविकार कहाई, परम अतींद्रिय सुख लहाई ॥ समाधान सरवंग सहाइ, परम रस सरवंग सहाई ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ सिद्ध बुद्ध अविरुद्ध ए कहीये, आदि न कोइ एहनो लहीये ॥ मृगशिर सुद अगीआरस आया, जिन वचने करी सद्दहीए ॥ मल्लि० ॥७॥

॥ कलश ॥ संवत सत्तर वरस छपंन, आसो मास उदार ए ॥ प्रतिपदा तिथि शुक्र पक्षे, जेसलमेर मोजार ए ॥ प्रधान पाठक श्री कुशल धीरे, गुरुए सांनिध्य करी ॥ ए स्तवन कीधो कुशल लाभे, धर्म मार्ग मनमें धरी ॥ इति श्री मल्लिनाथजी वृद्ध स्तवन. ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीनुं स्तवन. ॥

॥ढाल॥१॥ सरसती सामिणी पाय नमुंजी, गायशुं नेमी जिणंद ॥ समुद्रविजय कुले उपनोजी, प्रगट्यो पुनमचंद ॥ सुणो नर नेम समो नही कोय ॥ सौरीपुरनो राजीओजी, शिवादेवी सुत सोय ॥ सुणो-नर०॥१॥ ए आंकणी ॥ चौद सुपन सूचित भलाजी, जनम्या नेमि कुमार ॥ जोबन वय प्रभु आवीयाजी, सकल लोक शणगार ॥सुणो०॥ ॥ २ ॥ एक दीन आवे मलपताजी, आयुधशाला ज्यांय ॥ शंख चक्रने गदा भलीजी, सारंग धनुष त्यांह ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ नेमि धनुष चढावीयोजी, चक्र भमाडयुं त्यांह ॥ गदा उपाडी फेरवीजी, शंख लीओ करमांह ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ नेमि वजावे शंखनेजी, नादे

डोल्यारे इंद्र ॥ शेषनाग पातालमांजी, गगने ताराचंद्र ॥ सुणो० ॥५॥ वनमां बीन्या मृगपतीजी, हंस सरोवर कंठ ॥ नारी बीनीकामिनीजी, आलंबी पीया कंठ ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ शब्द सुण्यो जब शंखनोजी, करतो कृष्ण विचार ॥ कहे कुण वयरी उपनोजी, राज लीये निरधार ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ हरि हेलामांहे आवियाजी, ज्यांछे नेमि कुमार ॥ मुखथी मीठुं बोलतांजी, हीयडे रोष अपार ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ कृ-ष्ण कहे सुणो राजीयाजी, नेमि नीरुपम नाम ॥ बल परीक्षा इहां कीजीएजी, आछे अनोपम ठाम ॥ सुणो० ॥ ९ ॥ कृष्णे कर लं-बावीयोजी, झाली नेम कुमार ॥ कणयर कांब जिम वालीयोजी, क्षण नव लागी वार ॥ सुणो० ॥ १० ॥ कृष्ण कर धर्यो नेमनोजी, वाल्यो किमही न जाय ॥ नेमे कृष्ण धंधोलीओजी, हरी मन झांखो थाय ॥ सुणो० ॥ ११ ॥ कृष्ण वल्या घर आपणेजी, चिंते हृदय मोजार ॥ बत्रीस सहस अंतेउरो जी, बोलावी घर नार ॥ सुणो० ॥ ॥ १२ ॥ नेम कुंवर छे लाडकाजी, बंधव श्याम शरीर ॥ विवाह तास मनाववाजी, पेहेरो कंचुक चीर ॥ सुणो० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥२॥ टोले मीली सवि हरनी नारी, प्रमदा पहोती गढ गीरनारी, खंडोखली मांहि भरीउ नीर, झीले पहेरी आछां चीर ॥ १ ॥ नेम तणो इम झाली हाथ, हास्य विनोद करती नेम साथ ॥ सोवन सिंगी नीरे भरी, छांटे नेम कुंवरने फीरी ॥ २ ॥ एक मुख नेम कुमारनुं धुए, वदन एक चीर जई लुहे ॥ देवर मारा सुंदर सार, परणो नारी नेम कुमार ॥ ३ ॥ भोला देवर करो विचार,

नारी विना कुण करसे सार ॥ भोयण सुयण फोफल पान, नारी विना कूण देशे मान ॥ ४ ॥ नारी विना नर हाली होय, बार पहुणो नावे कोय ॥ साधु साधवी श्रावक सोय, भक्ति करे जो स्त्री घर होय ॥ ५ ॥ नेम कहे सुणो भाभी वात, ए मीछुं हुं सवि अवदात ॥ नारी मोहे जे नर पड्या, साते नरके ते रडवड्या ॥ ६ ॥ ए नारी नव केहनी होय, तु पण हृदय विचारी जोय ॥ सुरनर किंनर दानव जेह, नारी आप्या तेहने छेह ॥ ७ ॥ भोज मुज पर देशी जेह, शब्द विडंब्या नारी तेह ॥ दीक धनने जिम नारी नडयो, राय भर्तृहरि इम रडवड्यो ॥ ८ ॥ ब्रह्मराय घर चुलणी जेह, पोते पुत्र मरावे तेह ॥ गौतम ऋषिनी अहल्या नार, इंद्र भोगवे भुवन मझार ॥ ९ ॥ ए नारीनो जुओ विचार, जोतां कांइ नव दीसे सार ॥ समज्या ते नर मुकी गया, नवि समज्या ते खुंची रह्या ॥ ॥ १० ॥ अक्कल गई नरनी वली एम, जिहांथी प्रगट्यां तिहां बहु प्रेम ॥ उत्पत्ति जोई न तुं आपणी, समजी मुके ते मती पापिणी ॥ ११ ॥ मात पिताने जोगे वली, शोणी शुक्र गया बहु मिली ॥ जग सघलो तिहां जई उपनो, नानो मोटो एम नीपनो ॥ १२ ॥ तो ते साथे शो वली रंग, न करुं नारीकेरो संग ॥ भोग करंतां हिंसा बहु, नरनारी तुमे सुणजो सहू ॥ १३ ॥ बे इंद्रि पंचेद्रि जेह, नव नव लाख कहीजे तेह ॥ मनुष्य असंख्य संमूर्छिम जाणी, भोग करंतां तेहनी हाण ॥ १४ ॥ इस्यां वचन जब नेमे कह्यां, अंतेउर सवि झांखां थयां ॥ कृष्ण राय प्रत्ये जइ कहे, नेमनाथ गृह वासे नावि रहे ॥ १५ ॥ गौरी गंधारी लक्ष्मणा, रुक्मिणी बोल कहे तिहां

घणा ॥ जंबुवतीने सुसीमा सती, सत्यभामाने पद्मावती ॥ १६ ॥ पटराणी ए हरिनी हशे, देवर मती कांताहारी खसे ॥ ऋषभ देव सामु नवि जोय, जन्म कुंवारो न रह्यो कोय ॥ १७ ॥ भरतराय तो परण्यो खरी, चउसठ्ठि सहस जो अंतेउरी ॥ हवडां तारो बंधव भलो, बत्रीस सहस निरवहे एकलो ॥१८॥ एक थकी थाये आकलो, परणा वाने पाछा वलो ॥ ना ना कहेतां नावे लाज, किम रहेशे क्षत्रीकुल राज ॥१९॥ इस्यां वचन कहे हरीनी नारी, पासे उभा देवमुरारि ॥ नेम न बोल्या मुखथी फरी, मान्युं मान्युं कहे सुंदरी ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥३॥ उग्रसेन घर बेटडी, मन भमरारे ॥ नामे राजुल नार, लाल मन भमरारे ॥ कृष्ण देव तिहां आविया ॥ मन०॥ राय तणे दरबार ॥ लाल मन० ॥ १ ॥ उग्रसेन घणुं हरखीया ॥मन०॥ धन्यधन्य दिन मुज आज ॥ लाल० ॥ हरी आव्या मुज आंगणे ॥ मन० ॥ तो सरीआं सवि मुज काज ॥ लाल० ॥ २ ॥ कृष्ण कहे सुणो राजीया ॥ मन० ॥ मुज बंधव तुज धुअ ॥ लाल ॥ प्रेम धरी परणावीये ॥ मन० ॥ जिम वाधे बहु नेह ॥ लाल० ॥ ३ ॥ हरी विवाह मेलीओ ॥ मन० ॥ नेम तणो निरधार ॥ लाल० ॥ मंडप घाल्या बारणे ॥ मन भमरारे ॥ तोरण बांध्यां सार ॥ लाल०॥ ॥ ४ ॥ खाजां लाडु लापशी ॥मन०॥ अति मोंढां पकवान ॥लाल०॥ जमो जलेबी पातळी ॥ मन० ॥ जीम वाधे निजवान ॥ लाल० ॥ ॥ ५ ॥ पेंडा मरकी मने गमे ॥ मन० ॥ तनमनी कोहळा पाक ॥ ॥ लाल० ॥ उपर भोजन अतिभलां ॥ मन० ॥ सुंदर शोभित शाक

॥ लाल० ॥ ६ ॥ सजन कुटुंब संतोषीया ॥ मन० ॥ नेम वधारयो वान ॥ लाल० ॥ खुंप भर्यो शिर शोभतो ॥ मन० ॥ मुख चावे बहु पान ॥ लाल० ॥ ७ ॥ काने कुंडल रयणमई ॥ मन० ॥ कमर बांधीरे कमाय ॥ लाल० ॥ चामर विझे चिहुं दिसे ॥ मन० ॥ गज चढीया नेमराय ॥ लाल० ॥ ८ ॥ चीर पीतांबर पामरी ॥ मन० ॥ कंठे कुसुमनो हार ॥ लाल० ॥ गजरथ घोडा पालखी ॥ मन० ॥ आगल बहु असवार ॥ लाल० ॥ ९ ॥ छपन कोडि यादव मल्या ॥ मन० ॥ चाली जिनवर जान ॥ लाल० ॥ कोकिल कंठ कामिनी ॥ मन० ॥ गोपी करे तिहां गान ॥ लाल० ॥ १० ॥ ढोल ददामा गडगडे ॥ मन० ॥ पंच शब्द तिहां सार ॥ लाल० ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ मन० ॥ सुणीओ पशु नो पोकार ॥ लाल० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ हरिणी कहे सुणो कथं हमारा, हमणां प्राण हणशे तुमारा ॥ ओ आवे जिन नेम कुमारा, कर कांइ तु आतम सारा ॥ १ ॥ हरणो कहे सहुको खेम, अति अपराधे म हणे नेम ॥ विण अवगुण प्रभु किमे न मारे, हरणो वचन वदे तिणवारे ॥ २ ॥ हुं न करुं परकेरी आश, जई जंगलमां पुरु वास ॥ पर्वत पाणी चरि घास, नवी ठाकुर नही कही दास ॥ ३ ॥ विण अपराधे मृग ने मारे, ते नर भमशे गति जो च्यारे ॥ वात करे नर पशुअ पोकारे शब्द सुणीने आप विचारे ॥ ४ ॥ जो परणुं नो पशुं हणाय, मुज अनुकंपा नाठी जाय ॥ भोग भोगवी कुण दुखीयो थाय, नेमनाथ

रथ फेरी जाय ॥५॥ वरस दिवस जे दीधुं दान, सहस पुरुष शुं संयम ध्यान ॥ चोपन दिन छद्मस्था मान, नेमे पाम्युं केवल ज्ञान ॥ ६ ॥

॥ढाल॥५॥ राजीमती तो पुंठे जाय, नेम विना दुख सबलो थाय ॥ कहे कंथ मुज अवगुणी, नीर विना किम रहे पोयणी ॥ १ ॥ अष्ट भवंतर आगे नेह, तो किम आपे हमणां छेह ॥ स्वामी कठिन हृदय मम करो, परणवाने पाछा वलो ॥ २ ॥ इस्यां वचन भाखे मुख तिहां, वाघ सिंह बोले वन मांहे ॥ हीयडे चिंते राजुल नारी, कीशां करम कीधां कीरतार ॥ ३ ॥ के में जलमां नांख्या जाल, के में माय विछोह्यां बाल ॥ के में सती ने चडाव्यां आल, के में भाखी विरुद्द गाल ॥ ४ ॥ के में वन दावानल दीया, के में पर-धन वंची लीया ॥ केमें शील खंडना करी, तो मुजने नेमे परिहरि ॥ ५ ॥ इस्यां वचन भांखे सुंदरी, नेम तणे पासे संचरी ॥ स्वामी वचन सुण्यां जब सार, मनथी चिंते अथीर संसार ॥ ६ ॥ राजेमती वैरागीणी थई, हारदोर तिहां छोडे सही ॥ कंकण चुडी अलगी ठवी, लई संयमने हूई साधवी ॥ ७ ॥ सुणी व्याख्यान वळी एक मने, त्रुठ्यो मेघ चमकी दामिनी ॥ वस्त्रे लाग्युं काचुं नीर, भींतुं राजुल तणुं शरीर ॥ ८ ॥ रेहेनेम उभा छे जिहां, राजुल वस्त्र सु-कवती तिहां ॥ रेहेनेमी दीठा सुंदरी, परवश पुतां तव इंदरी ॥९॥ प्रगट थई नर बोल्यो यति, भाभी दुःख म धरस्यो रति ॥ नेम गयो तो मुजने वरो, काम भोग मुज साथे करो ॥ १० ॥ अंग विभूषण सवि आदरो, नगर अमारे पाछा फरो ॥ तुज कारण हुं मुकुं जोग

जो तुं मुजस्युं विलसे भोग ॥११॥ एक वचन मानो सुंदरी, आगल संजम लेजो फरी ॥ कुप छांयडी करापि जेम धन्न, विसमे ठामे उग्युं छे वन ॥ १२ ॥ तेना फल जेम तिहां विसमे, तिम तुं योवन कां एळे गमे ॥ राजुल कहे सुण मूढ गत आण, पश्चिम दीश उगे जो भाण॥ ॥१३॥ चंद्र थकी वरसे अंगार, तोहे न वांछुं तुज भरथार ॥ पर्वत पाणी पाछां चढे, कायर सुरा उ्यम जो वढे ॥ १४ ॥ पाप करीने पामे लील, तोए न खंडु मारुं शील ॥ वमी वस्तुने शुं आदरे, विषय काजे कां दुर्गति फरे ॥ १५ ॥ रेहेनेमि मन झांखो थयो, हे हे वचन किश्योमें कह्यो ॥ उत्तम कुलनी न रही लाज, धिग् धिग् तुं रे विरुआ काज ॥ १६ ॥ आतम निंदा करतो आप, मुज भाइ पोढां लाग्यां पाप ॥ नेम तणा जे वंदे पाय, लेई संयमने मुक्ति जाय ॥ १७ ॥ राजीमती तिहां बहुतप तपे, अरिहंत नाम हृदयमां जपे ॥ नेमे तारी घरनी नार, राजुल मुकी मुगति मोजार ॥ १८ ॥

॥ ढाल ॥ नेमनाथ नित्य वंदो बावीसमारे, वंदोरे नेमनाथ राजेमतिरे ॥ संवत सोल सत साठि संघ सहु सांभलोरे ॥ पोसमास सुद बीज गुरुरे ॥ स्थंभ नयर मांहे जिन थुण्योरे ॥

॥ कलश ॥ इयनेमिं जिनवर, पुण्य दिनकर, सकल गुण मणि सागरो ॥ जस नाम जपतां कर्म खपीए, छुटीए भव आगरो ॥ तपगच्छ मुनिवर सकल सुखकर श्री विजयसेन सूरीसरो ॥ तस तणो श्रावक ऋषभ बोले, थुण्यो नेमि जिणेसरो ॥ इति श्री नेमनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

॥ श्री महावीर स्वामीनुं सतावीस भवनुं स्तवन. ॥

॥ मारुमन मोह्युंरे श्री सिद्धाचलरे ॥ ए देशी ॥

॥ पेहेलाने समरुं पास संखेश्वरोरे, वली शारद सुखकंद ॥ निज गुरु केरारे चरण कमल नमुंरे, थुणसुं वीर जीणंद ॥ भवि तमे सुणोरे, सत्तावीस भव मोटकारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नयसार नामरे अपर विदेहमांरे, महिपतिने आदेश ॥ काष्ठ लेवा नर वन गयो परिकरारे, गिरिगहनने परदेश ॥ भवि० ॥ २ ॥ आहार वेलारे रसवति निपनीरे, दानरुची चित्तलाय ॥ अतिथि जुओरे इण अवसररे, धरी अंतरथी भाव ॥ भवि० ॥ ३ ॥ पुण्य संयोगरे मुनिवर आवियारे, मार्ग भूल्या छे तेह ॥ निरखी चिंतेरे धन्य मुज ए भाग्यनेरे, रोमांचित थया देह ॥ भवि० ॥ ४ ॥ निरवद्य आहार देइने इम कहेरे, निस्तारो मुज स्वाम ॥ जोग जाणीने मुनि दीये देशनारे, समकित लह्यो अभिराम ॥ भवि० ॥ ५ ॥ मार्ग देखाडी वांदिने वळ्यारे, संभरंतो नवकार ॥ देवगुरु धर्म तत्त्वने आदरीरे, शास्वतो सुख दातार ॥ भवि० ॥ ६ ॥ पहेले भवे इम धर्म आराधीनेरे, सौधर्मे थयो देव ॥ एक पल्योपम आउखुं भोगवीरे, बीजे भव स्वयमेव ॥भवि०॥७॥ त्रीजे भव चक्रिभरतेसररे, तस हुआ मरिचि कुमार ॥ प्रभु वचनामृत सांभलो रंगथीरे, दिक्षीत थयो अणगार ॥भवि०॥८॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन ग्रीष्म कालमां, विचरंतो एकाकीरे ॥ अलगो

स्वामी थकी रहे, ज्ञानमदे अति छाकीरे ॥ त्रीजो भव भवि सांभलो ॥ १ ॥ टेक ॥ तपने तपे अति आकरो, मेले मलिन छे देहरे ॥ श्रमण पणुं दुक्कर घणुं, जलवाये नहीं एहरे ॥ त्रीजो० ॥ २ ॥ घर जावुं जुगतुं नहीं, एम धारीने विरचीरे ॥ वेश नवो त्रिदंडीनो, चंदन देह ते चरचेरे ॥ त्री० ॥ ३ ॥ कर कमले ग्रहुं दंडने, भगवुं कपडुं करवुंरे ॥ पाये उपानह पहेरणे, माथे छत्रने धरावुंरे ॥ त्री० ॥ ४ ॥ परिमित जलसुं स्नानहो, मुंड जटा जुट धारेरे ॥ राखुं जनोई सुवर्णनी, प्राणी स्थूल न मारेरे ॥ त्री० ॥ ५ ॥ वेष करीने लिंगीनो, धर्म करे वली साचोरे ॥ वाणी गुणे पडिबोहतो, जेवो हीरो काचोरे त्री० ॥ ६ ॥ जाणी दिक्षा योग्यने, आणी मुनिने आपेरे ॥ जण जण आगल रागथी, साधु तणा गुण थापेरे ॥ त्री० ॥ ७ ॥ आदि जिणंद समोसर्या, साकेतन उद्यानेरे ॥ भरतजी वंदन संचर्या, वंद्या हरख अमानेरे ॥ त्री० ॥ ८ ॥ भरतजी वंदन संचरे, कोइ अछे तुम सरखोरे ॥ स्वामी कहे सुण राजीआ, तुम सुत मरिची ए परखोरे ॥ त्री० ॥ ९ ॥ वासुदेव पेहेलो होशे, चक्रवर्ती अमुकायेरे ॥ तीर्थपति चोवीसमो, नामे वीर कहायेरे ॥ त्री० ॥ १० ॥ पुलकित थई प्रभु वंदीने, मरिची निकटे पहोतोरे ॥ त्रण प्रदक्षिणा देईने, वंदे मन गहगहतोरे ॥ त्री० ॥ ११ ॥ गुण स्तवना करी इम कहे, वंदुंछुं एह मरमरे ॥ वासुदेव चक्री थई, थाशो जिनपति चरम रे ॥ त्री० ॥ १२ ॥ जिन वचनामृत दाखवी, रंगे उलट आणीरे ॥ प्रणमि भरत घरे गयो, मरिचीने गुण निधि जाणीरे ॥ त्री० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥३॥ नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीआं ॥ ए देशी ॥

॥ मरिचि इम चिंतवे, भरत वचन सुणि, मुज सम अवर न कोय, छे जगमानुं गुणी ॥ जेटला लाभ जगतमां छे तेमें लह्या, अहोश्री आदि जिणंद ते निज मुखथी लह्या ॥१ ॥ रत्नाकर मुज वंश अनोपम गुणयुता, दादो जिनमां मुख्य चक्रीमां मुजपिता ॥ अहो उत्तम कुल मारुं हुं सहुं शिरे ॥ धन धन मुज अवतार हरिमां हुं धुर ॥ २ ॥ चक्रवर्ती थई चरम जिणेसर थाइशुं, कनक कमल परे निजपद कमलने ठायशुं ॥ सुरनर कोडा कोड मली मुज प्रणमशे, प्रतिहारज वर आठसुं समवसरण थशे ॥३॥ मद करवाथी नीच गोत्र इम बांधीउं, भव भव नीच कर्मनुं फल इहां सांधीउं ॥ एक दिन रोग उदयथी मने एम चिंतवे, सेवाकारक शिष्य करुं कोइक हवे ॥ ४ ॥ सार न पुछे एमुनि परिचित छे घणा, डुंगरा दूरथकी दिसे रळिआमणा ॥ एवे कपिल नामे एक नृप सुत आवीओ, तेंन मरिचीए प्रभुनो धर्म सुणावियो ॥५॥ योग्य जाणी कहे जाओ मुनिपासे तुमे, दिक्षा ल्यो शुभ भावथी कहीए छीए अमे ॥ कपिल कहेतव धर्म नथी शुं तुम गच्छे, मनथी चिंते अजोग ए मुज लायक अछे॥६॥ मरिची कहे जो कपील इहां पण धर्म छे, चित्त रुचे तिहां सेवीए ए हित मर्म छे ॥ इम उत्सूत्र कह्याथी संसार वधारीयो, सागर कोडा कोड अपारा चोरीयो ॥ ७ ॥ चोरासी लख पूर्वनुं आयुष भोगवी, अंते अनालोचित त्रीजे भवथी चवी ॥ दश सागर भव चोथे पंचम स्वर्गथी, उपन्यो पंचम भव हवे ब्राह्मण वर्गमां ॥ ८ ॥ एंसी पूर्व

लख आउखे कौशिक द्विज थयो, थूण नयरीए छठ्ठे भव भमतां गयो ॥ बहोतेर लख पुर्वायुष्य द्विज नामथी, अंते त्रिदंडी थईने मुओ ते अकामथी ॥ ९ ॥ सातमे सोहम चैत्यपुरे भव आठमे, अग्निद्योत द्विज लख पुर्वायु साठमे ॥ अंते त्रिदंडी थइने हवे नवमे भवे, इशाने अमृत सुख रंगे अनुभवे ॥ १० ॥

॥ढाळ॥४॥दशरथ पूर्वद्विपनुं भविका सिद्धगिरि ध्याओ ॥ ए देशी ॥

॥ अग्निभूति द्वीज दसमे आयो, मंदर पुरमां तेह सुहायो ॥ लालन तेह सुहायो ॥ छप्पन लख पूर्वायु धरतो, अंते त्रिदंडीयो थइने ते फरतो ॥ लालन थईने ते फरतो ॥ १ ॥ इग्यारमे भव सनत्कुमार, बारमे श्वेतांबिये अवतार ॥ ला०॥ श्वे० ॥ बिभारद्वाज अंते त्रिदंडी, चुंआलीस लाख पूर्वायु मंडि ॥ ला० ॥ पु० ॥ २ ॥ तेरमे भव थयो माहेंद्रदेव, चौदमे थावर ब्राह्मण देव ॥ ला० ॥ ब्रा० ॥ चोत्रीस लाख पुर्वायु पाली, त्रिदंडीयो थइ कायाने गाळी ॥ ला० ॥ ॥ का० ॥ ३ ॥ पनरमे भवे पांचमे स्वर्गे, तीहांथी चवी भमियो भव वरगे ॥ ला० ॥ भ० ॥ सोलमे भवे विश्वभूति नामे, क्षत्रीय सूत उपन्यो ते सकामे ॥ ला० ॥ उ० ॥ ४ ॥ विशाखभूति धारणीनो जायो, संभूतिसाधुये तेह वंदायो ॥ ला० ते० ॥ सहस वरस जिण चरण आराधि, तपसी थयो अति वीरमि उपाधि ॥ ला० ॥ वी० ॥ ॥ ५ ॥ एक दिन मथुरामां गोचरी चाल्यो, वरजात्रा जतां भाइये भाल्यो ॥ ला० ॥ भा० ॥ एहवे एक गाये तस मार्यो, भूमि पड्यो

अति क्रोधे धार्यो ॥ ला०॥ क्रो०॥ ६ ॥ ते जोतां गौ गगने भमाडी, एम निज भुज बले तेहने देखाडि ॥ ला० ॥ ते० ॥ अणसण साथे नियाणुं कीधुं, तप साटे बल मागीने लीधुं ॥ ला० ॥ मा० ॥ ७ ॥ कोड वरसनुं जीवित सारि, सत्तरमे शुक्र स्वर्गे अवतारि ॥ ला० ॥ ॥ स० ॥ अढारमे भव पुत्रीनो कामी, प्रजापति पोतनपुर स्वामी ॥ ला० ॥ पु० ॥ ८ ॥ मृगपति राणीये कुखे धरियो, सात सुपन सूचित अवतरीयो ॥ ला० ॥ सू० ॥ बालपणे जेणे सिंहने हणीयो, त्रिपृष्ट नारायण करी सुणीयो ॥ ला० ॥ ना० ॥ ९ ॥ त्रणसें साठ संग्राम ते कीधो, सज्या पालकने दुःख दीधो ॥ ला० ॥ पा० ॥ लाख चोरासी वरसनुं आय, भोगवी सातमी नरके ते जाय ॥ला०॥ ॥ न० ॥ १० ॥ ओगणीसमे भवे दुःख अतिवेदी, वीसमे भव हुओ भव सिंह सखेदी ॥ला०॥सिं० ॥ चोथी नरकमें भव एकवीसमे बहु भव, भमतां हवे बावीसमे ॥ला०॥ह० ॥११॥ कोई शुभयोगे नरभव पायो, त्रेवीसमे भव चक्री गवायो ॥ ला० ॥ च० ॥ धनंजय धारणीनो ते बेटो, मुका नगरीये भुजबल तेजो ॥ ला० ॥ भु० ॥ १२॥ खट खंड पृथ्वीमां आण मनावी, चौद रयण निधि संपद पाइ ॥ ॥ ला० ॥ सं० ॥ पोटिलाचार्य गुरु तिहांवांदी, दीक्षा आदरी मनथी आनंदी ॥ ला० म० ॥ १३ ॥ चोरासी लाख पूर्व प्रमाण, आयु पाळी हवे चोवीसमे जाण ॥ ला० चो० ॥ महाशुक्रे हुवो अमर उमंगे, अमृत सुख भोगवे रंगे ॥ ला० ॥ भो० १४ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ दशरथ पूरव वर दिपतुं ॥ ए देशी ॥

॥ आ भरते छत्रिका पुरी, पचवीसमे भवे आयाजी ॥ भद्रा जितशत्रु नृप कुले, नन्दन नाम सुहायाजी ॥त्रोटक॥ नाम नंदन त्रिजग वंदन, पोटिलाचारज कन्हे ॥ ग्रही चरण दमतो करण, विचरे मृग-पति जिम वने ॥१॥ तीहां मासखमणे, वीस स्थानक, तप तपी दुःकर पणे ॥ पद बांधियुं इहां तीर्थंकरनुं, भावथी आदर घणे ॥ चाल ॥ अभिग्रही मासखमण कीयां, जावजीव विहरंतोजी ॥ उलसित भावे तप तपी, कीधो करमनो अंतोजी ॥ २ ॥ त्रोटक ॥ भव अंत कीधो काज सिध्यो तास संख्या हुं कहुं, अगीआर लाखने सहस एंसी, छसें पीस्तालीस लहुं ॥ दीन पांच उपर अधिक जाणो, लाख पचवीस सहसनुं ॥ आउखूं पाली भ्रमण टाली, काम कीधूं मरदनुं ॥ ३ ॥ चाल ॥ अणसण मास संलेखणा, करी वधते परि-णामेजी ॥ सवि जगजंतु खमावीने, चवियो तीहांथी सकामेजी ॥ ४ ॥ ॥ त्रोटक ॥ चवियो सकामे स्वर्ग दशमे वीस सागरे सुर हुओ तीहां विविध सुर सुख भोगवे, खट वीसमो भव ए जुओ ॥ मरिची भवे ए कर्म बाध्युं ते हजी खुटयुं नहीं, चरिम सत्तावीसमे भव उदय आव्युं ते सही ॥ ५ ॥ चाल ॥ ऋषभदत्त ब्राह्मण वसे, वर माहण कुंड गामजी, तस घरणी गुण गोरडी, देवानंदा इति नामेजी ॥ ६ ॥ ॥ त्रोटक० ॥ देवानंदा कुखे आया चौद सुमिणा निसि लहे ॥ तत्र इंद्र अवधिए जोइने हरणीगमेषीने कहे ॥ नगर क्षत्रीय कुंडगामे सि-द्धारथ छे नरपति ॥ तस पट्टराणी तेह खाणी नामे त्रिशला गुणवती

॥ ६ ॥ चाल ॥ तीहां जई गर्भने पालटो ए, तुमने छे आदेशजी ॥ कोई काले एम नवी बन्युं, द्विज कुल होय जिनेशजी ॥ ७ ॥ त्रोटक॥ द्विज कुले न होय जिनपति वली, एह अचरिजनी कथा लवणमां जिम अमृत लहरि मरुमां सुरुतरु यथा ॥ एम इंद्रवयणां सांभळी पहोंची तीहां प्रणमे प्रभु, बहु गर्भ पलटी रंगभरथी जई वहे नीज विभु ॥ ९ ॥

॥ढाल॥६॥ हांरे कांई जोबनीयानो चटको दहाडा च्यारजो॥ए देशी॥

॥हांरे मारे ऐसी दीन इम वसीने द्विज घरमांहिजी, त्रीशला कुंखे त्रिभुवन नायक आविया रे ॥लोल॥ हांरे मारे तेहज राते चौद सुपन लहे मातजो, सुपन पाठक तेडीने अर्थ सुणावियारे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे गर्भ स्थिती पूर्ण थये जनम्या स्वामीजो, नारक स्थावर जनना सुखने भावतारे लो ॥ हांरे मारे सूति कर्मने करती धरती हर्षजो, अमरिरे गुण समरी जिनपद पावतीरे लो० ॥ २ ॥ हांरे मारे सोहम इंद्रादिकनो ओच्छव हुतजो, सिद्धारथ पण तिम वली मन मोटे कररे लो० ॥ हांरे मारे नाम ठव्युं श्री वर्द्धमान सुकुमारजो, दिन दिन वाधे प्रभुजी कल्पतरु पेरेरे लो० ॥ ३ ॥ हांरे मारे देवे अभिधा दिधुं श्री महावीरजो, जोवन वय वली संठवे नव नव भोगनेरे लो० ॥ हांरे मारे इम करतां मात पितागयां स्वर्ग मोजार जो, लोकांतिक तब आवी करे उपजोगनेरे लो० ॥ ४ ॥ हांरे मारे वरसीदान दइने संजम लीधजो, परिसहने उपसर्ग सह्या प्रभुए घणारे लो० ॥ हांरे मारे लाख वरस तपसी पूर्व भव नाथजो,

तो पण आभव तपनी राखी नहीं मणारे लो० ॥ ५ ॥ हांरे मारे बे खटमासी तेमां पण दिन उणजो, नव चउमासी बे त्रणमासीने लहुंरे लो० ॥ हांरे मारे बे अढीमासी खट बे मासी जाणजो, दोय मासी दोय मास खमण बारे कहुंरे लो० ॥ ६ ॥ हांरे मारे बोतेर पास खमण वली अठ्ठम बारजो, दोयसत ओगणत्रीस ए छठ तपने भणुरे लो० ॥ हांरे मारे आदि प्रभु तप तपीया ते विणुं नीरजो, त्रणसें गुण पंचास ए पारणे दिन गणुंरे लो० ॥ ७ ॥ हांरे मारे तिम अप्रति बंधी बेठा नहीं भगवंतजो, वार वरसमां निद्रा बे घडीनी करीरे लो० ॥ हांरे मारे तेम निरमल ध्याने घातिकर्म खपायजो, दर्शन ज्ञान विलसी केवलने वरीरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ हांरे मारे प्रभु केवल पाम्या रजुवालिका तीरजो, आवेरे विचरंतां चित्त उमंगथीरे लो० ॥ हांरे मारे अति उलसे थइने सुरनर कोडा कोड जो, जिन वचनामृत सुणवा आवे रंगथीरे लो० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ देशी हमिरियानी गीतनी छे ॥

॥ हमसेन वनमां समोसर्या, जगनायक जिनचंद सुज्ञानी ॥ समवसरण रचना रची, प्रणमें चोसठ इंद्र सुज्ञानी ॥ वीर जीर्णंदने वंदीये ॥१॥ ए आंकणी॥ प्रतिहारज वर आठसुं, शोभे प्रभुनो देदार ॥ सुज्ञानी ॥ दीठा ध्वनि देवे देशना, सांभले परखदा बार ॥ ॥ सुज्ञानी ॥वी०॥२॥ इंद्राभूति द्विज प्रमुखने, गणधर थापे इग्यार ॥ ॥ सुज्ञानी ॥ दर्सण नाण चरण धरा, चौद सहस अणगार ॥ ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ३ ॥ छत्रीस सहस सुसाहुणी, चारसें वादि

प्रमाण ॥ सुज्ञानी ॥ वैक्रिय लब्धिने केवली, सातसें सातसें जाण ॥ सुज्ञानी ॥ वीर०॥ ४ ॥ ओही नाणीधर तेरसे, मनः पर्यवशत पंच ॥ सुज्ञानी ॥ वी० ॥ ५ ॥ दोढ लाख नव सहस छे, श्रमणोपासक सार ॥ सुज्ञानी० ॥ श्राविका वळी त्रण लाखने, उपर सहस अढार ॥ सुज्ञानी ॥ वीर०॥ ६ ॥ चउविध संघनी स्थापना, करता फिरता नाथ ॥ सुज्ञानी ॥ भविक कमल पडिबोहता, मेलता शिवपुर साथ ॥ सुज्ञानी ॥ वीर०॥ ७ ॥ पुत सपुत न एहवा, जगमां दीसे कोय ॥सुज्ञानी॥ ब्यासी दीन कुखे वस्या, ए उपकारने जोय ॥ सुज्ञानी॥ ॥वीर०॥८॥शिवपुर तेहने पठावीया, ब्राह्मण ब्राह्मणी दोय॥सुज्ञानी॥ जगवत्सल जिन वंदतां, हियडुं हरखीत होय ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ॥ ९ ॥ त्रीस वरस गृहवासना, भोगवी भोग उदार ॥ सुज्ञानी ॥ छद्मस्थान वस्था सहि, बारसाधिक वर्ष धार ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ॥ १० ॥ त्रीस वरस जीणे अनुभव्यो, केवल लीलविलास ॥ सुज्ञानी ॥ पूर्ण आउखुं पालीने, बोतेर वरसनुं खास ॥ सुज्ञानी ॥ ॥ वीर० ॥ ११ ॥ दिवाली दीन शिव वर्या, छोडी सयल जंजाल ॥ सुज्ञानी ॥ सहजानंदी सुख लहुं, आतम शक्ति अजुआल ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १२ ॥ भूत भावि वर्त्तमानना, सुर सुख लेई अशेष ॥ सुज्ञानी ॥ नभखदे शठव करी, कीजे वर्ग विशेष ॥ सुज्ञानी ॥ ॥ वीर० ॥ १३ ॥ इणीपरे वर्ग अनंतना, करीये सहु समुदाय ॥ ॥ सुज्ञानी ॥ अव्याबाधित सुखतणो, अंश न एक लखाय ॥ सुज्ञानी॥ ॥ वीर० ॥ १४ ॥ निजगुण भोगी भोगवे, सादि अनंतो काल ॥ ॥ सुज्ञानी ॥ निज सत्ताने विलसता, निश्चय नय संभाल ॥सुज्ञानी ॥

॥ वीर०॥ १५ ॥ इम अमृत पदने वरी, बेठा थई निशंक ॥ सुज्ञानी॥ वर्द्धमान भावेकरी, वंदे नित नित रंग ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥१६॥

॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर दुरित मूखह जिम मणी, युग बाण वसु शशी मान वरसे, संथुण्यो त्रिभुवन धणी॥ सगवीस भवनुं स्तवन भवियण, सांभली जे सद्दहे ॥ ते ऋद्धि वृद्धि सु सिद्धि सघले, सदा रंग विजयलहे ॥ इति श्री सत्तावीस भवनुं वीर जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ श्रीमहावीरस्वामीनुं पंचकल्याणकनुं-
त्रण ढाळनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ शासन नायक शिवकरण, वंदुवीर जिणंद ॥ पंच कल्याणक जेहना, गाशुं धरी आणंद ॥ १ ॥ सुणतां थुणतां प्रभु तणा, गुण गीरुआ एकवार ॥ ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफल हुए अवतार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ बापडी सुण जीभलडी ॥ ए देशी ॥

॥ सांभळज्यो सस्नेही सयणां, प्रभुनां चरित्र उल्लासे ॥ जे सांभळशे प्रभु गुण जेहना, समकित निर्मल थाशेरे ॥ सां० ॥ १ ॥ जंबुद्वीपे दक्षिण भरते, माहण कुंड गामे ॥ ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामेरे ॥ सां० ॥ २ ॥ आषाढसुदी छठ्ठे प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी चविया ॥ उत्तरा फाल्गुनी योगे आवी, तस कुखे अव-

तरीयारे ॥ सां० ॥ ३ ॥ तिण रयणी सा देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे ॥ प्रभाते सुणी कंथ ऋषभदत्त, हियडामांही हरखेरे ॥सां०॥४॥ भांखे भोग अर्थ सुख होस्ये, होस्ये पुत्र सुजाण ॥ ते निसुणी तिण देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाणरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ भोग भला भोगवता विचरे, ए हवे अचरिज होवे ॥ सतकृत जीव सूरेसर हरख्यो, अवधि प्रभुने जोवेरे ॥ सां० ॥ ६ ॥ करी वंदनने इंद्र सन्मुख, सात आठ पग आवे ॥ शक्रस्तव विधि सहित भणीने, सिंहासन सोहावेरे ॥ ॥ सां० ॥ ७ ॥ संशय पडिओ एम विमासे, जिनचक्री हरीराम ॥ तुच्छ दरिद्र माहणकुल नावे, उग्रभोग विण धामेरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ अंतिम जिन माहण कुल आव्या, एह अछेरु कहीए ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एहवुं लहीएरे॥सां०॥९॥इण अवसर्पिणी दश अछेरां, थयां ते कहीए तेह ॥ गर्भ हरण गोसाला उपसर्ग, निष्फल देशना जेहरे ॥ सां० ॥ १० ॥ मूल विमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात ॥ ए श्रीवीरजिणेसर वारे, उपना पंच विख्यातरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ स्त्री तीर्थ मल्लिजिनवारे, शीतलने हरिवंश ॥ ऋषभने अष्ठोत्तरसो सीधा ॥ सुविधि अंसजती संसरे ॥ सां० ॥ ॥ १२ ॥ शंख शब्द मीलीया हरि हरस्युं, नेमीसरने वारे ॥ तीम प्रभु नीच कुले अवतरीया, सुरपति एम विचारेरे ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ नदी यमुनाके तीर ॥ ए देशी ॥

॥ भव सत्तावीस स्थूलमांहि त्रीजे भवे, मरीची कीयो कुलनो मद भरत यदा स्तवे ॥ नीच गोत्र करम तिहां बांध्युं ते वती ॥

अवतरीया माहण कुल अंतीम जिनपती ॥ १ ॥ अति अघटतुं एह थयुं थाशे नहीं, जे प्रसवे जिन चक्री नीचकुले नहीं ॥ इहां मारो आचार धरुं उत्तम कुले हरणीगमेषी देव तेडावे एटले ॥ २ ॥ कहे माहणकुंड नयरे जाई उचित करो, देवानंदा कुखेथी प्रभुने सं-हरो ॥ नयर क्षत्रीयकुंड राय सिद्धारथ गेहिनी, त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनी ॥ ३ ॥ त्रीशला गर्भ लइने धरो माहणी उरे, ब्यासी रात वसीने कहुं तीम सुरकरे ॥ माहणी देखे सुपन जाणे त्रीशला हर्यां, त्रीशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्यां ॥ ४ ॥ हाथी वृषभ सिंह लक्ष्मी माला सुंदरुं, शशी रवि ध्वज कुंभ पद्म सरोवर सागरुं ॥ देव विमान रयण पुंज अग्नि विमले, एहवे देखे त्रिशला एह के पीउने विनवे ॥ ५ ॥ हरख्यो राय सुपन पाठक तेडाविया, राजभोग सुतफल सुणी तेह वधाविया ॥ त्रिशलाराणी विधिस्युं गर्भसुखे हवे, माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे ॥ ६ ॥ माय धरे दुःख ओर विलाप घणुंकरे, कहे में कीधां पाप अघोर भवांतरे ॥ गर्भ हर्यो मुज केण हवे केम पामीए, दुखनो कारण जाणी विचार्युं स्वामीये ॥७॥ अहो अहो मोह विटंबण जालम जगतमे, अणदीठे दुःख एवडो उ-पायो पलकमें ॥ ताम अभिग्रह धारे प्रभु ते कहुं, मात पिता जीवतां संयम नावि ग्रहुं ॥ ८ ॥ करुणा आणी अंग हलाव्युं जिनपति, बोली त्रिशला मात हिये घणुं हिसती ॥ अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सलसल्यो, सेव्यो श्री जिनधर्म के सुरतरु जिम फल्यो ॥ ९ ॥ सखीय कहे शीखामण स्वामीनी सांभलो, हळवे हळवे बोलो हसो

रंगे चलो ॥ इम आनंदे विचरंतां डोहला पुरते, नव महिनाने साडा-सात दिवस थते ॥ १० ॥ चैत्र तणी सुद तेरस नक्षत्र उत्तरा, जोगे जन्म्या वीर के तव वीकसी धरा ॥ त्रिभुवन थयो उद्योत के रंग वधामणां, सोना रूपानी वृष्टि करे घेर सुर घणा ॥ ११ ॥ आवी छप्पन कुमारी के ओछव प्रभु तणे, चल्युंरे सिंहासन इंद्रके घंटारण झणे ॥ मळी सुरनी कोड के सुरवर आवीयो, पंच रुप करी प्रभुने सुरगिरि लावीओ ॥ १२ ॥ एक कोड साठ लाख कलश जलशुं भर्यो, किम सेहेस्ये लघु वीर के इंद्र संशय धर्यो ॥ प्रभु अंगुठे मेरु चांप्यो अति घड घडे, गडगडे पृथ्वी लोक जगतना लडथडे ॥ १३ ॥ अनंत बळी प्रभु जाणी इंद्रे खामीओ, च्यार वृषभनां रूप करी जल नामीओ ॥ पूजी अरची प्रभुने माय पास धरे, धरी अंगुठे अमृत गया नंदीश्वरे ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ देशी हमचडीनी ॥

॥ करी महोच्छव सिद्धारथ भूप, नाम धरे वर्धमान ॥ दीन दीन वाधे प्रभु सुरतरु जिम, रुप कला असमान रे ॥ हमचडी ॥ ॥ १ ॥ एक दिन प्रभुजी रमवा कारण, पुर बाहिर जब जावे ॥ इंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वी सुर आवेरे ॥ हमचडी॥ २ ॥ अहि रूपे विटाणो तरुस्युं, प्रभु नांख्यो उछाली ॥ सात ताडनुं रूप कर्युं तब, मुठे नांख्यो वाली रे ॥ हमचडी० ॥ ३ ॥ पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर ॥ जेवो इंद्रे वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीररे ॥ हमचडी० ॥ ४ ॥ मात पीता निशाळे

मुके, आठ वरसना जाणी ॥ इंद्रतणा तिहां संशय टाल्या, नव व्या-करण वखाणीरे ॥ हमचडी० ॥ ५ ॥ अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदा राणी ॥ अट्ठावीशे वरसे प्रभुनां, मात पिता निर्वाणीरे ॥ हमचडी० ॥ ६ ॥ दोय वरस भाइने आग्रह, प्रभु घरवासे वसीया ॥ धर्म पंथ देखाड्यो इम कहे, लोकांतिक उलसीयारे ॥ हमचडी० ॥ ॥ ७ ॥ एक कोड आठ लाख सोनइया, दीन दीन प्रभुजी आपे ॥ इम संवच्छरी दान दइने, जगनां दारिद्रय कापेरे ॥हमचडी०॥ ८ ॥ छांडयां राज अंतेउर प्रभुजी, भाइए अनुमति दीधी ॥ मृगशीर वद दशमी उत्तराये, वीरे दीक्षा लीधीरे ॥ हमचडी० ॥ ९ ॥ चउनाणी तिण दीनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझेरे ॥ चिवर अर्ध ब्राह्मणने दीधुं, खंड खंड बे फेरी रे ॥हमच०॥१०॥ घोर परिसह साढा बारे, वरस जे जे सहीया ॥ घोर अभिग्रह जे जे धरिया,ते नावि जाये कहीयारे ।हमचडी॥११॥ सूलपाणीने संगमदेवे, चंडकोसी गोसाले ॥ दीधुं दुखने पायस रांधी, पग उपर गोवालेरे । हमचडी ॥१२॥ काने गोपे खीला मार्यां, काढतां मुकी राढी ॥ जे सांभलतां त्रिभुवन कंप्यां, पर्वत शिला फाटीरे ॥हमचडी॥१३॥ ते तें दुष्ट सहुं उधरीया, प्रभुजी पर उपगारी ॥ अडद तणा बाकुला लइने, चंदन बाला तारीरे ॥ हमचडी ॥ १४ ॥ दोय छ मासी नव चउ मासी, अढी मासी त्रणमासी ॥ दोढ मासी बे बे कीधां छकीधां बे मासीरे ॥हमचडी॥१५॥ बार मासने पख बोहो-तेर, छठ बसें ओगणत्रीस वखाणुं ॥ बार अठम भद्रादि प्रतिमा, दीन दोइ चार दश जाणुंरे ॥ हमचडी ॥ १६ ॥ इम तप कीधां बारे

वरसे, वीण पाणी उल्लासे ॥ तेमां पारणां प्रभुजीए कीधां, त्रणसें ओगणपचासरे ॥ हमचडी ॥ १७ ॥ कर्म खपावी वैसाखमासे, सुद दशमी सुभ जाण ॥ उत्तरा योग शालिवृक्ष तले, पाम्या केवल नाणरे ॥ हमचडी॥ १८ ॥ इंद्रभूति अदि प्रतिबोध्या, गणधर पदवी दीधी॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधीरे ॥हमचडी॥ ॥ १९ ॥ चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीस कहीजे ॥ एक लाखने सहस गुण सहि, श्रावक शुद्ध कहीजेरे ॥ हमचडी ॥ ॥२०॥ तीन लाख अठार सहस वली, श्राविका संख्या जाणी ॥ त्रणसें चौद पूर्वधारी, तेरसें ओही नाणीरे ॥ हमचडी० ॥ २१ ॥ सात सयां ते केवलनाणी, लब्धिधारी पण तेता ॥ विपुल मतिया पांचसें कहीया, चारसें वादी जित्यारे ॥ हमचडी ॥ २२ ॥ सातसें अंतेवासी सीध्या, साधवी चौदसें सार॥ दीन दीन तेज सवाये दीपे ए, प्रभुजीनो परिवाररे ॥ हमचडी ॥ २३ ॥ त्रीस वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे ॥ तीस वरस केवल बेंतालीस, वरस समणा मधेरे ॥ हमचडी ॥ २४ ॥ वरस बहोतेर केरु आयु, वीर जिणंदनुं जाणो ॥ दीवाली दीन स्वाती नक्षत्र, प्रभुजीनो निरवा-णरे हमचडी ॥ २५ ॥ पंचकल्याणक एम वखाण्या, प्रभुजीनां उ-ल्लासे ॥ संघ तणे आग्रह हरख भरीने, सुरत रही चोमासुंरे ॥हम-चडी ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥ इम चरम जिनवर, सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी ॥ अषाड उज्वल पंचमी दिन, संवत शत त्रीहोतरे ॥

भाद्रवा शुद पडवा तणे दीन, रविवारे उलट भरो ॥ विमल विजय उवझाय पयकज, भ्रमर सम शुभ शीष्य ए॥ रामविजय जिनवर नामे, लहे अधिक जगीसए ॥ २७ ॥ इति श्री वीर जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री दान शीयल तप भावनुं चोढालीयुं॥

॥दुहा॥ प्रथम जिणेसर पायनमी, पामी सुगुरु प्रसाद ॥ दानशीयल तप भावना, बोलीश हुं संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसर्या, राज ग्रही उद्यान ॥ समवसरण देवे रच्युं, बेठा श्री वर्द्धमान ॥ २ ॥ बेठी बार परखदा. सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रभु हुं वडो, मुजने प्रथम वखाण ॥३॥ सांभलजो सहुं को तुमे, कुण छे मुज समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पेहेलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पोहोरे दातारनो, लीये सहुं कोई नाम॥ दीधारि देवल चढे, सीझे वंछीत काम ॥ ॥ ५ ॥ तीर्थंकरने पारणे, कुण करे मुज होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी, साढी बारह करोड ॥ ६ ॥ हुं जग सघलो वश करुं, मुज मोटीछे वात ॥ कुण कुण दानथकी तर्या, ते सुणज्यो अवदात ॥७॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ धन्य सार्थवाह साधुनुं, दीधुं घृतनुं दान ॥ ललना ॥ तीर्थंकर पदमें दीयो, तिणे मुजने अभिमान ॥ललना॥ ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडो, मुज सरीखो नहि कोई ॥ ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपजे, दाने दोलत होय ॥ ललना ॥ दा०॥२॥ सुमुख नामे गाथापति, पडिलाभ्या अणगार ॥ ललना ॥ कुमार सुबाहु सुखलहे, ते तो मुज उपगार ॥ ललना० ॥ दा० ॥ ३ ॥ पां·

चसें मुनिने पारणुं, देतो वोहोरी आण ॥ ललना ॥ भरत थयो चक्रवर्ति भलो, ते पण मुज फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ मासखमणने पारणे, पडिलाभ्यो ऋषिराय ॥ ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे, दान तणो सुपसाय ॥ ललना० ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या अडदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दान तणो फल देख ॥ ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणे, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ ललना ॥ शेलडी रस वोहोरावीयो, पाम्यो भवनो पार ॥ललना॥दा०॥७॥ चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर ॥ ललना ॥ पंच दिव्य प्रगट थया, सुंदर रूप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ ॥ पूर्व भव पारेवडुं, शरणे राख्युं सुर ॥ ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्ती पणे, प्रगट्यो पुण्य पडुर ॥ ललना॥ ॥ दा० ॥ ९ ॥ गज भवे ससलो राखीयो, करुणा कीधी सार ॥ ललना ॥ श्रेणीकने घरे अवतर्यो, अंगज मेघकुमार ॥ ललना॥ ॥ दा० ॥ १० ॥ इम अनेकमें उद्धर्या, कहेतां नावे पार ॥ललना॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी, पेहेलो मुज अधिकार ॥ललना॥दा०॥११॥

॥ दुहा ॥ शियल कहे सुण दानतुं, कीशुं करे अहंकार ॥ आडंबर आठे पहोर, याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अंतराय वली ताहरे भोग कर्म संसार ॥ जिनवर कर नीचो करे, तुजने पड्यो धिक्कार ॥ २॥ गर्व म कररे दान तुं, मुजपुठे सहुं कोय ॥ चाकर चाले आगले, तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं, नवुं निपावे कोय ॥ सोवन कोडि दान दे, शियल समो नहि कोय ॥ ४ ॥

शियले संकट सवि टले, शियले सुजस सौभाग्य ॥ शियले सुर सांनिध्य करे, शियले वडो वैराग्य ॥५॥ शियले सर्प न आभडे, शियले शीतल आग ॥ शियले अरि करी केसरी, भय जाये सहुं भाग ॥६॥ जन्म मरणना दुःख थकी, में छोडाव्या अनेक ॥ नाम कहुं हवे तेहना, सांभलज्यो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ पास जिणंद जुहारिए ॥ ए देशी ॥

॥ शियल कहे जग हुं वडो, मुज वात सुणो अति मीठीरे ॥ लालच लावे लोकने, में दान तणी वात दीठीरे ॥ शि० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीए, वली विरती नहीं पण कोईरे ॥ ते नारद में सिझव्यो, मुज जुओ ए अधिकाईरे ॥ शि० ॥ २ ॥ बांहे पहेर्या बेरखा, शंख राजाए दुपण दीधोरे ॥ काप्या हाथ कलावती, पण में नव पल्लव कीधारे ॥ शि० ॥ ३ ॥ रावण घर सीता रही, रामचंद्र घर आंणीरे ॥ सीता कलंक उतारीयो, में पावक कीधो पाणीरे ॥शि०॥ ४ ॥ चंपा बार उघाडीया, वली चालणी काढ्या नीरोरे ॥ सती सुभद्रा जस थयो, ते में तस कीधी भीरोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयाए दुषण दाख्यांरे ॥ सुली सिंहासन में कीधुं, में शेठ सुदर्शन राख्योरे ॥ शि० ॥ ६ ॥ शील सन्नाहमंत्रीसरे, आवतां अरिदल थंभ्यारे ॥ तिहां पण सांनिध्य में करी, वली धर्म काज आरंभ्यांरे ॥ शि० ॥ ७ ॥ पेरण चीर प्रगट कीया, में अठोत्तर सो वाररे ॥ पांडवनारी द्रौपदी, में राखी माम उदारोरे ॥ शि० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालीका, वली शीयल-

वंती दमयंतीरे ॥ चेडानी साते सुता, राजीमति सुंदर कुंतीरे ॥ ॥ शि० ॥ ९ ॥ इत्यादिकमें उधर्या, नरनारी केरा वृंदोरे ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी, पेहेलो मुज आणंदोरे ॥ शि० ॥ १० ॥

॥ दुहा ॥ तप बोल्युं त्रटकी करी, दाने तुं अवहील ॥ पण मुज आगल तुं कीशो, सांभलरे तुं शील ॥ १ ॥ सरसां भोजन ते तज्यां, न गमे मीठा नाद ॥ देह तणी शोभा तजी, तुझमें कीश्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी डरतो रहे, कायर कीसो वखाण ॥ कुड कपट बहु केळवी, जीम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरे, छांडे सहुं संसार ॥ आप एक तुं भांजतां, बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ कर्म निकाचित तोडवुं, भांजुं भव भडभीम ॥ अरिहंत मुजने आदरे, वरस छमासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर पर्वते मुज लब्धे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वता, आणंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटो जोयण लाखनो, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायक तणा, रुप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसे उपसमे, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अट्ठावीस उपजे, उत्तम तप संयोग ॥८॥ जे में तार्या ते कहुं, सुणज्यो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित्त पामशो देजो मुज शाबास ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ नणदलनी ॥ ए देशी ॥

॥ द्रढ प्रहारी अति पापीयो, हत्या कीधी चारहो ॥सुंदर॥ ते में तीण भव उद्धर्यो, मुक्यो मोक्ष मोजार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥

तप सरिखुं जग को नहि, तप करे कर्मनुं सुड हो सुंदर ॥ तप करवुं अतिदोहिलुं, तप मांहे नहि को कुड हो सुंदर ॥ त० ॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन मालि में उद्धर्यो, छेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ॥ ३ ॥ नंदिषेणने में कीयो, स्त्री वल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बोतेर सहस अंतेउरी, सुख भोगवे नितमेव हो सुंदर ॥ त० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंडाल हो सुंदर ॥ सुरनर क्रोड सेवा करे, ते में कीधी चाल हो सुंदर ॥ त० ॥ ५ ॥ विष्णुकुमार लब्धिए कीयो, लाख जोजननो रूप हो सुंदर ॥ श्री संघ केरे कारणे, ए मुज शक्ति अनुप हो सुंदर ॥ त० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पण प्रति बुझव्या, तिणे मुज अधिक जगीस हो सुंदर ॥ त० ॥ ७ ॥ चौद सहस अणगारमें, श्री धन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो ए पण मुज अधिकार हो सुंदर ॥ त० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगळे, दुःक्करकारक हेव हो सुंदर ॥ ढंढण नेमि प्रशंसीयो, मुज महिमा सवि तेह हो सुंदर ॥ त० ॥ ९ ॥ नंदिषेण वहोरण गयो, गणिका कीधी हास्य हो सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवन्न तणी, में तस पुरी आश हो सुंदर ॥ त० ॥ १० ॥ इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपस्वी जीव हो सुंदर ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी, पहेलो मुज प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ भाव कहे तप तुं कीस्युं, छेडयो करे कषाय ॥

पूर्वे कोडि तप जो तपे, क्षणमें खेरु थाय ॥१॥ खंधक आचारज प्रत्ये, में बाळ्यो सवि देश ॥ अशुभ नियाणुं तुं करे, क्षमा नहीं लवलेश ॥२॥ द्वैपायन ऋषि दुहव्यो, सांब प्रद्युम्नने साहि ॥ ते तप क्रोधे करी तीहा, दीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शियल तप सांभळो, म करो झुठ गुमान ॥ लोक सहुंको साख दे, धर्मे भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक छो त्रणे, द्ये व्याकरणते साख ॥ काम सरे नहीं को इनुं, भाव भणे मो पाख ॥ ५ ॥ रसविण कनक न नीपजे, जलविण नहीं तरु वृद्धि ॥ रसवती रस नहीं लवण विना, तिम मुज विण नहीं सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देव धर्म गुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फले नित्यमेव ॥ ७ ॥ दान शियल तप जे तुमे, निज निज कह्यां वृत्तान्त ॥ तीहां जो भाव नवि होत तो, कोई सिद्धि नवि हुंत ॥ ८॥ भाव कहे में एकले, तार्या बहु नर नार ॥ सावधान थई सांभलो, नाम कहुं निरधार ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कपुर होवे अति उजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ काननमे काउसग रह्यारे, प्रसन्नचंद्र ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवलीरे, ततक्षण कर्म खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर भाव वडो संसार, एतो बीजो मुज परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलोरे, पहोचाडुं भव पार ॥ सो० ॥ २ ॥ वंश उपर चढी खेलतोरे, इलाची पुत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कीयोरे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ भुख तृषा खमी अती घणीरे, करतो क्रूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करेरे, कूरगडु अणगार ॥सो०॥ ४ ॥

लाभथी लोभ वधे घणोरे, आण्यो मन वैराग्य ॥ कपिल थयो ते मुनि केवलीरे, ते मुजने सौभाग्य ।।सो०॥५॥ अर्निका सुत गच्छनो धणीरे, क्षीण जंघा वली जाण ॥ कीधो अंतगड केवलीरे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरसें तापस भणीरे, दीधी गौतमें दीक्ष ॥ ततूक्षण कीधा केवलीरे, जो मुज मानी सीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीए पीलीयारे, खंधक सूरिना शिष्य ॥ जन्म मरणथी छोडव्यारे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंद्ररुद्र निशि चालतांरे, दीधा दंड प्रहार ॥ नव दिक्षित थयो केवलीरे, ते गुरु पण तेणीवार ॥सो०॥ धन रथ कारक साधुनेरे, पडिलाभ्यो उल्लास ॥ मृगलो भावना भावतांरे, पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध खमावतीरे, मुक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनेमें दीयोरे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज उपरेरे, पेखी पुत्रनी ऋद्धि ॥ मुजने मनमांहे धर्योरे, तनूक्षण पामी सिद्धि ॥ सो० ॥१२॥ वीर वंदण चल्यो मारगेरे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामे देवतारे, तेह थयो मुज संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रभु पाय पूजण निसरीरे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म वीचमां करीरे, पोहोची स्वर्ग मोजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा कारमीरे, रूप कीस्यो अभिमान, भरत अरिसा भुवनमांरे, पाम्या केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ अषाडभूति कलानिलोरे, प्रगट्यो भरत स्वरुप ॥ नाटक करतां पामीयोरे, केवल ज्ञान अनुप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिक्षा दिन काउसगे रह्योरे, गजसुकुमाल मसाण ॥ सोमिल शिष्य प्रजालियोरे,

सिद्धि गयो शुभ जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे, सांभली पृथ्वीचंद ॥ पोते केवल पामीयोरे, सेवा करे सुर इंद्र ॥ ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेक में उद्धर्यारे, मूक्या शिवपुर वास ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजीरे, मुजने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥

॥ दुहा ॥ वीर कहे तुमे सांभलो, दान शियल तप भाव ॥ निंदा छे अति पापीणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पींड भराय ॥ वेढ राढ वाधे घणो, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरीखो पापीयो, भुंडो कोई न दीठ ॥ वली चंडाल समो कह्यो, निंदक मूर्ख अदीठ ॥ ३ ॥ आप प्रशंसा आपणी, करता इंद्र नरिंद्र ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निज गुण वृंद ॥ ४ ॥ को कहेनिम करो तुमे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणे ठामे रहो, सहुको भलो संसार ॥ ५ ॥ तो पण अधिको भाव छे, एकाकी सुसमर्थ्थ ॥ दान शियल तप त्रण भला, भाव विना अकयत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजता, अधिकी आणी रेख ॥ रजमांहे तज काढतां, अधिको भाव विशेष ॥ ७ ॥ भगवंत हठ भंजन भणी, चारे सरीखा गणंत ॥ च्यार करी मुख आपणां, चतुर्विध धर्म कहंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥५॥ प्रश्नोत्तर पूछे पितारे ॥ ए देशी ॥

वीर जिणेसर इम भणेरे, बेठा परखदा बार ॥ धर्म करो तुमे प्राणीयारे, जिम पामो भव पाररे ॥ धर्म हैये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकाररे ॥ भवियण सांभलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारोरे ॥ध०॥ ए आंकणी ॥ धर्म थकी

धन संपजेरे धर्मथी शिव सुख होय ॥ धर्म थकी आरति टलेरे, धर्म समो नहीं कोयरे ॥ध०॥२॥ दुर्गति पडतां प्राणीयारे, राखे श्री जिन धर्म॥ कुटुंब सहुको कारमोरे, मत भुलो भव भर्मरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जीके सुखीया थयोरे, वली होसे छेह जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथीरे, मत कोइकरो संदेहोरे ॥ध०॥ ४ ॥ सोलशे छासठमे समेरे, सांगानेर मझार ॥ पद्मप्रभु सुपसाउलेरे, एह भण्यो अधिकारोरे ॥ ध० ॥५॥ सोहम स्वामी परंपरार, खरतर गच्छ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगडोरे, श्री जिनचंद सुरिंदोरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतोरे, विनयवंत जसवंत ॥ आचारज चढति कलारे, श्री जिनसिंह सूरि महंतोरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यनारे, सकलचंद तस शिष्य॥ समय सुंदर वाचक भणेरे, संघ सदा सुजगीसोरे ॥ध०॥ ॥ ८ ॥ दान शियल तप भावनारे, सरस रच्यो संवाद ॥ भणतां गणतां भावशुंरे, ऋद्धि समृद्धि सुप्रसादोरे ॥ धर्म हीए धरो ॥ ९ ॥ इति दान शीयल तपनुं चोढालीयुं संपूर्ण. ॥

॥ श्रीआंबिल वर्धमान तपनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वर्द्धमान जिनपति नमी, वर्द्धमान तप नाम ॥ ओली आंबिलनी करुं, वर्द्धमान परिणाम ॥ १ ॥ एक एक दिन यावत् शत, ओली संख्या थाय ॥ कर्म निकाचित तोडवा, वज्र समान गणाय ॥ २ ॥ चौद वर्ष त्रण मासनी, ए संख्या दिननी वीस ॥ यथा विधि आराधतां, धर्मरत्न पद इश ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वर्द्धमान तपनुं स्तवन ॥

॥ नवपद धरजो ध्यान, भविक तमे नवपद धरज्यो ध्यान ॥ ए देशी॥

॥ तप पद धरजो ध्यान, भविक तमे, नामे श्री वर्द्धमान ॥ दिन दिन चढत वान, भविक तमे, सेवो थई सावधान ॥ भ०॥ १ ॥ प्रथम ओली एम पालीनेरे, बीजी ए आंबिल दोय । भ० ॥ त्रीजी त्रण चोथी चार छेरे, ऊपवास अंतरे होय ॥ भ० ॥ २ ॥ एम आंबिल सो वृत्तनीरे, सोमी ओली थाय ॥ भ० ॥ शक्ति अभावे आंतरेरे, विश्रामे पहोंचाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ चौद वरस त्रण मासनीरे, उपर संख्या वीश ॥ भ० ॥ काल मान ए जाणवुंरे, कहे वीर जगदीश ॥ भ० ॥ ४ ॥ अंतगड अंगे वरणव्युंरे, आचारदिनकर लेख ॥ भ० ॥ ग्रंथांतरथी जाणवुंरे, ए तपनुं उल्लेख ॥भ० ॥५॥ पांच हजार पचाश छेरे, आंबिल संख्या सर्व ॥ भ० ॥ संख्या सो उपवासनीरे, तप मान गाले गर्व ॥ भ० ॥ ६ ॥ महासेन कृष्णा साधवीरे, वर्द्धमान तप कीध ॥ भ० ॥ अंतगड केवल पामीनेरे अजरामर पद लीध ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्रीचंदकेवलीए तप सेविओरे, पाम्या पद निर्वाण ॥ भ० ॥ धर्म रत्न पद पामवारे, ए उत्तम अनुमान ॥ भ० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ जेम जेम ए गिरि भेटीएरे, तेम तेम पाप पलाय सलुणा ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम ए तप कीजीएरे, तिम तिम भवपरिपाक

सलुणा ॥ निकट भवि जीव जाणवोरे ॥ एम गीतार्थ साख सलुणा ॥ जिम० ॥ १ ॥ आंबिल तप विधि सांभलोरे, वर्द्धमान गुणखाण सलुणा ॥ पाप मलक्षय कारणेरे, कतक फल उपमान सलुणा ॥ ॥ जिम० ॥ २ ॥ शुभ महुर्त्त शुभ योगमांरे, सद्गुरु आदि योग सलुणा ॥ आंबिल तप पद उचरीरे, आराधो अनुयोग सलुणा ॥ ॥ जिम० ॥ ३ ॥ गुरु मुख आंबिल उचरीरे, पुजी प्रतिमा सार सलुणा ॥ नवपदनी पूजा भणीरे, मागो पद अणहार सलुणा ॥ ॥ जिम० ॥ ४ ॥ खटरस भोजन त्यागवारे, भूमि संथारो थाय सलुणा ॥ ब्रह्मचर्यादि पालवारे, आरंभ जयणा थाय सलुणा ॥जि०॥५॥ तप पदनी आरधनारे, काउसग्ग लोगस्स बार सलुणा ॥ खमासमणां वार आपवारे, गयणु दोय हजार ॥स० ॥ जि ॥६॥ अथवा सिद्धपद आश्रयिरे, काउसग्ग लोगस्स आठ सलुणा ॥ खमासमणां आठ जाणवारे, नमो सिद्धाणं पाठ सलुणा ॥जि०॥७॥ बीजे दीन ऊपवासमारे, पोषधादि व्रतयुक्त सलुणा ॥ पडिक्कमणादि क्रिया करीरे, भावना परिमल युक्त सलुणा ॥जिं०॥८॥ एम आरधतां भावथीरे, विधि पूर्वक धरो प्रेम सलुणा ॥ लावो ध्यावो भविजनारे, धर्म रत्न पद एम ॥ ॥ स० ॥ जि०॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ नरभव नयर सोहामणुं वणजारारे ॥ ए देशी ॥

॥ *जिन धर्म नंदन वन भलो, राज हंसारे, शीतल छाया सेवोने, राज हंसारे ॥ प्राणी तुं था सावधान अहो राज हंसारे ॥१॥ अमृत फल आस्वादीने राज हंसारे, काढ अनादिनी भुख ॥अहो०॥

---

१ आ गाथामां एक चरण त्रुटेछे.

भव परिभ्रमण भमतु ॥ राज० ॥ अवसर पामी न चुक ॥अहो०॥२॥ शत शाखाथी शोभतो ॥राज०॥ पांच हजार पचास ॥ अहोराजहंसारे, आंबिल फुले अलंकर्यो ॥राज०॥ अक्षय पद फल तास ॥अहो०॥३॥ विमलेसर सुर शांतिध्ये ॥ राज० ॥ तु निर्भय थयो आज ॥ अहो०॥ कृत कृत्य थई मागतुं ॥ राज० ॥ अकल स्वरुपी राज ॥ अहो० ॥ ॥ ४ ॥ विग्रह गति वोसरावीने ॥ राज० ॥ लोकाग्रे करवास ॥ ॥ अहो० ॥ धन्य तुं कृत्य पुण्य तुं ॥ राज० ॥ सिद्ध स्वरुप प्रकाश ॥ अहो० ॥ ५ ॥ तप चिंतामणी काउसगे ॥ राज० ॥ वीर तपो धन ध्यान ॥ अहो० ॥ महासेन कृष्णा साधवी ॥ राज० ॥ श्रीचंद भवजल नाव ॥ अहो० ॥६ सूरिश्री जगचंद्रजी ॥ राज० ॥ हीरविजय गुरु हीर ॥ अहो० ॥ मल्लिवादी प्रभु कुरगडु ॥ राज० ॥ आचार्य सुहस्ती वीर ॥ अहो०॥ ७ ॥ पारंगत तपजलधिना ॥ राज०॥ जे जे थया अणगार ॥ अहो० ॥ जीत्या जीह्वा स्वादने ॥ राज० ॥ धन्य धन्य तस अवतार ॥अहो०॥ ८ ॥ एक आंबिले तुटशे ॥राज०॥ एक हजार दस क्रोड ॥ अहो० ॥ दस हजार क्रोड वरसनुं ॥ ॥ राज० ॥ ऊपवासे नरक आयुष ॥ अहो राज० ॥ ९ ॥ तपसु दर्शन चक्रथी ॥ राज० ॥ करो कर्मनो नाश ॥ अहो० ॥ धर्म रत्न पद पामवा ॥ राज० ॥ आदरो तप अभ्यास ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ तप आराधन धर्मसाधन, वर्द्धमान तप परगडो ॥ मनकामना सहुं पूरवामां सर्वथा ए सुरघडो ॥ अन्नदानथी शुभध्यानथी सुभवि जीव ए तपस्या करो ॥ श्री विजयधर्म सूरीश

सेवक, रत्नविजय कहे शीव्र वरो ॥ १ ॥ इति वर्द्धमान तप स्तवन सम्पूर्ण. ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान तपनी थोयो. ॥

॥ वर्द्धमान ओली करो, भव भव पातिक त्यारे हरो ॥ वर्द्धमान जिन पामीने, दूर करो सहुं खामीने ॥ १ ॥ वर्द्धमानादिक जिन तर्या, पूर्वे भवे जे तप कर्या ॥ ते तप मुजने फल आपो, आहारादिक संज्ञा कापो ॥ २ ॥ अंतगड आचार दिन, श्री चंद्र चरित्र आदरुं, तप कुलकादि ग्रंथजे, तप साधनना पंथ छे ॥ ३ ॥ तपगच्छ नंदन सुरतरु, श्री विजय धर्म सुरीसरु ॥ रत्न विजय सुखदायिका , सहायकरे सिद्धायिका ॥ ४ ॥ इति थोयो. ॥

॥ श्रीवर्द्धमान तपनी सज्झाय. ॥

॥ मोरा साहिबहो श्रीशीतलनाथके अरजसुणो एक माहरी ॥ ए देशी॥

॥ मोरा चेतन हो कहुं अनुभव वातके, सांभल स्थिर थई मित्र तुं ॥ जिम पामे हो तुं शिवसुख सारके, क्षणमां होय पवित्र तुं ॥ १ ॥ तप आंबिल हो करजे वर्द्धमान के, विघ्न विदारण केसरी अष्टसिद्धि हो अणिमादिक थायके, प्रगटे ऋद्धि परमेश्वरी ॥ २ ॥ भय साते हो सहुं दूर पलायके, आंबिले बली नहीं द्वारिका ॥ देव सांनिध्य हो करे हरे सौ कष्ट के, मंत्र तंत्र फल कारका ॥३॥ मयणा सुंदरी हो श्रीपाल नरेश के, ए तपथी सुखीया थयाके ॥ ए सेव्या हो

तप सुरवृक्षके, मुक्ती पदवी लह्या ॥ ४ ॥ नवकारशी हो तोडे एकसो वर्षके, नरकायु सुरनुं करे ॥ तो तोडे पोरसी हो, वर्ष एक हजार के आयु ते साठ पोरसी हरे ॥ ५ ॥ एक लाख हो पुरिमड्ढ हरंतके एकासण दस लाखनुं, नीवी करतां हो एक क्रोड कपायके एकलठाणा दस क्रोडनुं ॥ ६ ॥ कापे सो क्रोड हो वर्ष एकलदातिके, हजार क्रोड वरस आंबिले ॥ उपवासे हो दस सहस क्रोडके, नरक आयुषतुं कापले ॥ ७ ॥ ए वाख्या हो मध्यम फल जाण के, केवल लहे उत्कृष्टथी ॥ दस धारो हो ए आसि सूर्य हासके, मुष्टि ज्ञाने ग्रही मुष्टिथी ॥ ८ ॥ नमो नवस्सहो गणो दोय हजारके खमासमणा बार छे, गणो लोगस्स हो बार काउस्सग रुपके, साचो कर्म कुठार छे ॥९॥ यथा शक्ति हो करो तप अनुकुलके, संयम श्रेणी आदरो ॥ तप वर्द्धमान हो वर्द्धमान परिमाणके धर्म रत्न पद अनुसरो ॥ १० ॥ इति वर्द्धमान तप सज्जाय. ॥

॥ अथ अक्षयनिधि तपनो विधि. ॥

॥ श्रावण वद चोथने दिवसे प्रारंभ करवो, प्रथम एक कुंभ सुवर्णनो अथवा रत्ननो जडीत शक्ति प्रमाणे करवो, जण दिठ भिन्न भिन्न करवा, ते कुंभ पवित्र पणे एकान्त स्थानके स्थापवो, डांगरनी ढगली उपर स्थापवो, ने कुंभ उपर एक श्रीफल मुकवुं, अने आगळ चोखानो स्वातिक करवो, ते घडामां शक्ति होय तो हमेश रुपा नाणुं नांखवुं, नहितो पहेले दिवसे तथा छेल्ले दीवसे रुपानाणुं नाखवुं,

वचला दीवसोमां यथा शक्ति नांखवुं पण हमेश कुंभमां नाणुं तो नांखवुं ज जोइये, तिहां ज्ञान बांधवुं, एक पीठिका उपर कल्पसूत्रनु पुस्तक पधरावबुं पुस्तक उपर चन्द्रवो बांधवो, धूप दीप करवो, अने ते दीपक अखंड राखवो जोईए. ॥

॥ प्रथम इरिया वही प्रतिक्रमवा, तस्स उत्तरी कहेवी पछी एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी "अक्षयनिधि तप आराधवा चैत्यवन्दन करुं" एम कही अक्षय निधिनुं चैत्यवन्दन करवुं, पछी नमुथ्थुणं–जावंति चेइयाणं–जावंत केविसाहु–पछी नमोऽर्हत्–पछी स्तवन अक्षयनिधिनुं कहेवुं, पछी जयवीयराय कहेवां, पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन श्री श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ, एक नवकारनो काउसग्ग, पछी नमोऽर्हत्० कही श्रुतदेवतानी थुई कहेवी, पछी पच्चखाण करवां, आ प्रमाणे चैत्यवन्दननी विधि छे.

॥ हवे ज्ञाननी पूजा भणाववानी विधि कहं छे.

नवपद मध्येथी–दुहो–सप्तमपद श्री ज्ञाननो, सिद्ध चउदपद मांहि, आराधीजे शुभमने, दिनदिन अधिक उच्छाह ॥ १ ॥

छंद गाथा=अन्नाणसम्मोहतमोहरस्स सातमा पदनी पूजा भणावी पछी " ॐ ह्रीं परमात्मने नमः " ज्ञानपदेभ्यः कलशं

यजामहे स्वाहाः ॥ एम कहीने ज्ञानने फरती कलशथी धारावाडी देवी, पछी वास क्षेप तथा, रुपानाणुं हाथमां लइने, थोय कहेवी,

॥ जिन जोजनभूमि, वाणिनो विस्तार । प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार ॥ सोय आगम सुणतां, छेदीजे गतिचार ॥ प्रभु वचन वखाणी, लईये भवनो पार ॥ १ ॥ आ थोय कहीने ज्ञान पुजवुं, प्रथम वासक्षेपनी पुजा करे पछी द्रव्य पूजा करे, पछी चोखा निर्मल बे हाथे पसली भरीने, उपर पैसो सोपारी मुकीने उभा रही ज्ञाननी स्तुति करीये, ॥ दुहो ॥ ज्ञानसमो कोई धन नहीं, समता समुं नहि सुख ॥ जीवित समी आशा नहि, लोभ समो नहि दुःख ॥ १ ॥ पछी चोखानी पसली कुंभमां नांखीये, उपर श्रीफल. १ मुकवुं, एम दीन १५ सुधी चोखानी पसली तथा सोपारी रुपानाणुं घडामां नांखीये, सोलमे दीवसे कुंभ पुरो भरीये, पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिसह भगवान् श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्ग करुं, इच्छं, श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्ग, अन्नथ्थ, एक नवकारनो काउसग्ग करी, नमोऽर्हत्० कहीने ज्ञाननी थोय कहेवी, पछी खमासणा वीस देवां, पछी हमेशां अक्षयनिधि ढाल सांभळवी. ॥

पछी " ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स " ए पदनी नवकारवाली २० गणवी, छेल्ले दीवसे रात्री जगो, पूजा, प्रभावना करवी, भादरवासुदी त्रीज सुधी एकमणा पंदर करवां, सुदी ४ संवच्छरीनो

छेल्लो उपवास करवो, सुदी पांचमें पारणुं करवुं, ते दीवसे वरघोडो मोटा आडंबरथी चढाववो, नैवेद्य सुखडी शक्ति प्रमाणे करावी थाल भराववां, कुंभ उपर लीलो पीलो तास्तो बांधवो, नाडाछडी बांधे, फूलनी माला होय तो नांखवी, पछी सौभाग्यवंती स्त्रीने माथे चढा, वीये ते वरघोडो वाजते गाजते विशाल चैत्य होय त्यां आवे, पछी कुंभवाली स्त्रीयो प्रदक्षिणा त्रण दे, नैवेद्य प्रभु आगल ढोंकवां, पछी पुस्तक गुरू महाराजना उपाश्रये पधराववुं, अने ज्ञान पूजन गुरू पुजन त्यां करीये, निरंन्तर भोंय सुवुं, निर्मल शियल पालवुं, ए रीते जेटलां तप करतां होय तेटला कुंभ भिन्न भिन्न जोईये, देव वंदन पडिलेहण करवां एम चार वर्ष सुधी करवुं, त्यारे चोसठ दीवसनो ए तप पूर्ण थाय इति श्री अक्षयनिधि तपनी विधि सम्पूर्ण. ॥

॥ अथ अक्षयनिधि तपनी विधि. ॥

॥ प्रथम ईरियावही कहेवी, पछी तस्स उत्तरी कहेवी, पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवी, पछी, अक्षय निधि तप आराधवा चैत्यवंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करवुं. ॥

॥ शासन नायक सुखकरण, वर्द्धमान जिन भाण ॥ अहनिंश एहनी शिरवहु, आंणा गुण मणि खाण ॥ १ ॥ ते जिनवरथी

पामीया, त्रिपदी श्री गणधार ॥ आगम रचना बहु विधि, करी अर्थ विचार ॥ २ ॥ ते श्री श्रुतमां भाखिया, ए तप बहु विधि सुखकार ॥ श्री जिन आगम पामीने, साधे मुनि शिवसार ॥ ३ ॥ सिद्धांत वाणी सुणवा रसिक, श्रावक समकित धार ॥ अष्ट सिद्धि अर्थे करे, अक्षयनिधि तप सार ॥ ४ ॥ तप तो सूत्रमां अतिघणां, साधे मुनिवर जेह ॥ अक्षय निधानने कारणे, श्रावक ते गुण गेह ॥ ५ ॥ ते माटे भवि तप करो, सर्व ऋद्धिपरे सार, विधिशुं एह आराधतां, पामी जे भवपार ॥ ६ ॥ श्री जिनवर पूजा करो, त्रिक शुद्धे त्रिकाल ॥ तेम वळी श्री श्रुत ज्ञाननी, भक्ति थई उजमाल ॥ ७ ॥ पडिकमणा दोय टंकना, ब्रह्मचर्यने धरीये ॥ ज्ञाननी सेवा करी, सेजे भवजल तरीये ॥ ८ ॥ चैत्यवंदन शुभ भावथीए ॥ स्तवन थुई नमस्कार, श्रुतदेवी उपासना, धीरविजय हितकार ॥ ९ ॥

पछी नमुथ्थुणं कहेवुं, पछी जावंति चेईआइं, जावंत केवि-साहू, कही नमोर्हत्० कहीने स्तवन कहेवुं.

॥ लावो लावोरे राज मोघां मूलां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ तप वर कीजेरे, अक्षय निधि अभिधाने ॥ सुखभर लीजेरे, दिन दिन चढते वाने ॥ १ ॥ आंकणी ॥ पर्व पजुसण पर्व शिरोमणि, जे श्री पर्व कहाय ॥ मास पास छठ्ठ दशम दूवालस, तप पण ए दिन थाय ॥ तप० ॥ २ ॥ पण अक्षयनिधि पर्व पजुसण केरो कहे जिन भाण ॥ श्रावण वदी चोथे प्रारंभी, संवच्छरी प्रमा-

ण ॥ तप० ॥ ३ ॥ ए तप करतां सर्व ऋद्धिवरे, पगे पगे प्रगटे निधान ॥ अनुक्रमे पामे तेह परम पद, सांबीया नाम प्रधान ॥तप०॥ ॥ ४ ॥ पर मच्छरथी कर्म बंधाणुं, तिणे पामी दुख जाल ॥ ए तप करतां ते पूर्वलुं, कर्म थयुं विसराल ॥ तप० ॥ ५ ॥ ज्ञान पूजा श्रुत देवी काउस्सग्ग, स्वस्तिक अतिशय सोहावे ॥ सोवन जडित कुंभ निज शक्ति, संपूर्ण क्रमे थावे ॥ तप० ॥ ६ ॥ जघन्य मध्यम उत्कृष्टनाथी करीये, इगदोय तीन वरिस ॥ वरस चोथे श्रुतदेवी निमित्ते, ए तप वीसवा वीस ॥ तप० ॥ ७ ॥ इणे अनुसारे ज्ञान तणुंवर, गणणुं गणीए उदार ॥ आवश्यकादिक करणी संयुक्त, करतां लहे भवपार ॥ तप० ॥ ८ ॥ इहभव परभव आ संसार, हित करो भवि प्राणी ॥ जे पर पुदगल ग्रहण न करवुं, ते तप कहे वरनाणी ॥ ॥ तप० ॥ ९ ॥ राति जगा पूजा प्रभावना, हयगयरथ शणगारी जे ॥ पारणादिन पंच शब्द वाजे, वाजंते पधरावी जे ॥ तप०॥१०॥ चैत्य विशाल होय तिहां आवी, प्रदक्षिणा वली दीजे ॥ कुंभ विविध नैवेद्य संगाते, प्रभु आगल ढोइजे ॥ तप० ॥ ११ ॥ राधणपुरे ए तप सुणी बहु जन, थया उजमाल तपकाज ॥ तेहमां मुख्य मंडाण ओच्छवमां, मसालिया देवराज ॥ तप० ॥ १२ ॥ संवत अढार त्रेतालीस वर्षे, ए तप बहु भवि कीधो ॥ श्री जिन उत्तम पास पसाये, पद्मविजये फल लीधो ॥ तप० ॥ १३ ॥

ते वार पछी जयवियराय कही, सुयदेवयाए करेमि काउसग्गं कही, एक नवकारनो काउसग्ग करी, पछी गुरु "सुयदेवयानी थोयं" कहे, पछी पच्चखाण करवां पछी पूजानी ढाल कहेवी ॥

॥ पूजानी ढाल ॥

॥ दुहा ॥ सप्तमपद श्रीज्ञाननुं, सिद्ध चउपद मांही ॥ आराधीजे शुभमने, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥ १ ॥

॥ छंद गाथा ॥ अन्नाणसम्मोहतमो हरस्स ॥ नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ पंचप्पयासु उरगारयस्स, सन्नाण तव्वथ्थ पयासगस्स ॥ १ ॥ हुंवे जेहथी सर्व अज्ञानरोधो, जिनादीश्वर प्रोक्त अर्थाविबोधो ॥ मति आदि पंचप्रकारे प्रसिद्धो, जगद्भासते सर्व देवाविरुद्धो ॥ २ ॥ यदीयप्रभावे सुभक्ष्यमभक्ष्यं, सुपेयं अपेयं सुकृत्यं अकृत्यं ॥ जेने जाणीये लोक मध्ये सुनाणं, सदा मे विशुद्धं तदेव प्रमाणं ॥ ३ ॥

॥ ढाल॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी ॥ पर्याय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥चाल॥ जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भाव विलच्छना ॥ मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी प्रथम भेदाभेदता, सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥

॥ ढाल॥ भक्षाभक्ष न जे विण लहीए, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जेविण लहीए, ज्ञान ते सकल आधाररे ॥भ०सिद्ध॥ ॥१॥ प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा, श्रीसिद्धांते भाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान मनिंदो, ज्ञानीए शिव सुख चाख्युंरे ॥भ०॥२॥ सकल क्रियानु

मुल जे श्रद्धा, तेहनुं मुल जे कहिए॥ तेह ज्ञान नित्य नित्य वंदीजे, ते विण कहो किम रहीएरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दिपक परे त्रिभुवन उपगारी, वली जेम रवि शशी मेहरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ लोक उर्ध्व अधो तिर्यग ज्योतिष, वैमानिकने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, ते ज्ञाने मुज शुद्धिरे ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे ॥ तो होय एहिज आत्मा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥ श्री वीर जिणेसर उपदिशे ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने नमः ज्ञानपदेभ्यः कलशं यजामहे स्वाहाः ॥ ए ढाल थई रहे एटले ज्ञान पूजे वासपूजा करे द्रव्य पूजाकरे सोना मोहोर तथा रुपा मोहोरथी ज्ञान पुजे तेमां यथा शक्ति जाणवुं.

॥ दुहा ॥ सुखकर शंखेश्वर नमी, थुणशुं श्री श्रुतनाण ॥ चउमुगा श्रुत एक छे, स्वपर प्रकाशक भाण ॥ १ ॥ अभिलाप्य अनंतमे, भागे रचियो जेह ॥ गणधर देवे प्रणमीयो, आगम रयण अछेह ॥ २ ॥ इम बहुली वक्तव्यता, छठाण वडीया भाव ॥ क्षमा श्रमणभाष्ये कह्युं, गोपय सर्पि जमाव ॥ ३ ॥ लेश थकी श्रुत वरणवुं, भेद भला तस वीस ॥ अक्षयनिधि तपने दिने, क्षमाश्रमण तेवीस ॥ ४ ॥ सूत्र अनंत अर्थ मयी, अक्षय अंश लहाय ॥ श्रुतकेवली केवलीपरे, भाखे श्रुत पर्याय ॥ ५ ॥ श्रीश्रुतज्ञानने नित

नमो, भाव मंगलने काज ॥ पूजन अर्चन द्रव्यथी, पामो अविचल राज ॥ ६ ॥ आ छेला दुहा खमासण दीठ कहेवा ॥ ॥ इगसय अडवीस स्वरतणा, तिहां आकार अढार ॥ श्रुत पर्याय समासमे, अंश असंख्य विचार ॥श्रीश्रुत०॥१॥ बत्रीश वर्ण समायछे, एक श्लोक मझार ॥ तेमांहे एक अक्षर ग्रहे, ते अक्षर श्रुतसार ॥ श्रीश्रुत० ॥ ॥ २ ॥ क्षयोपशम भावे करी, बहु अक्षरनो जेह ॥ जाणग ठाणांग आगले, ते श्रुतनिधि गुणगेह ॥ श्रीश्रुत० ॥ ३ ॥ कोडि एकावन अडलखा, अडसय अठ्यासी हजार ॥ चालीस अक्षर पद तणा, कह्‌ अनुयोगद्वार ॥ श्रीश्रुत० ॥ ४ ॥ अर्थांते इहां पद कहुं, जिहां अधिकार ठराय ॥ ते पद श्रुतने प्रणमता, ज्ञानावर्णीय हठाय ॥श्रीश्रुत०॥ ॥ ५ ॥ अढार हजार पदेकरी, अंग प्रथम सुविलास ॥ दुगुणा श्रुत बहु पद ग्रहे, ते पद श्रुत समास ॥ श्रीश्रुत० ॥ ६ ॥ पिंडप्रकृतिमां एके पदे, जाणे बहु अवदात ॥ क्षयोपशमनी विचित्रता, तेहज श्रुत संघात ॥ श्रीश्रुत० ॥ ७ ॥ पंचोतेर भेदे करी, स्थिति बंधादि विलास ॥ कम्मपयडी पयडी ग्रहे, श्रुत संघात समास ॥ श्रीश्रुत० ॥ ॥ ८ ॥ गत्यादिक जे मार्गणा, जाणे तेहमां एक ॥ वहेंचण गुणठाणादिके, तस प्रतिपत्ति विवेक ॥ श्रीश्रुत० ॥ ९ ॥ जे बासट्ठि मार्गण पदे, लेश्या आदि निवास ॥ संग्रह तरतम योगथी, ते प्रतिपत्ति समास ॥ श्रीश्रुत०॥१० ॥ संतपदादिक द्वारमां, जे जाणे शिवलोक ॥ एक दोय द्वारे करी, श्रद्धाश्रुत अनुयोग ॥ श्रीश्रुत ॥ ११ ॥ वळी सत्तादिक नव पदे, तिहां मार्गणाभास ॥ सिद्धतणी स्तवना करे

श्रुत अनुयोग समास ॥श्रीश्रुत०॥१२॥ प्राभृतप्राभृत श्रुत नमुं, पूर्वना अधिकार ॥ बुद्धि बल प्रभावथी, जाणे एक अधिकार ॥ श्रीश्रुत० ॥ ॥१३॥ प्राभृत प्राभृत श्रुतसमा, सान्निध लब्धि विशेष॥ बहु अधिकार इस्या ग्रहे, क्षीराश्रव उपदेश ॥ श्रीश्रुत० ॥ १४ ॥ पूर्वभव गत वस्तु जिके, प्राभृत श्रुत ते नाम ॥ एक प्राभृत जाणे मुनि, तास करुं प्रणाम ॥श्रीश्रुत०॥ १५ ॥ पूर्वलब्धि प्रभावथी, प्राभृत श्रुत समास ॥ अधिकार बहुला ग्रहे, पद अनुसार विलास ॥ श्रीश्रुत० ॥ १६ ॥ आचारादिक नामथी, वस्तुनाम श्रुत सार ॥ अर्थ अनेकविधे ग्रहे ते पण एक अधिकार ॥ श्रीश्रुत० ॥१७॥ दुगसय पणवीस वस्तु छे, चौद पूर्वनो सार ॥ जाणे तेहने वंदना, एक सासे सोवार ॥श्रीश्रुत०॥ ॥१८॥ उत्पादादिक पूर्व जे, सूत्र अर्थ एक सार ॥ विद्यामंत्र तणो कह्यो, पूर्वश्रुत भंडार ॥श्रीश्रुत० ॥१९॥ बिंदुसार लगे भणे, तेहिज पूर्व समास ॥ श्रीशुभ वीरने शासने, होज्यो ज्ञान प्रकाश ॥श्रीश्रु०॥ ॥ २० ॥ इति अक्षयनिधि तप खमासमण विधि दुहा समाप्त ॥

॥ श्री सीमन्धरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामीजी, जीवन जगदाधार ॥ वाहाला सुणो एक विनति, मारा प्राण आधार ॥ प्रभुजी मानीए महाराज ॥ १ ॥ हियडु ते मुज हे जालुओ, संशय भर्या उभराय ॥ एक पलक धीरज नवी धरी, कहुं कवण आगल जाय ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ क्षण क्षण मनोरथ नवनवा, उपजे ते मनडामांहि ॥ फीरी ते मनमां वीरमे,

कांइ जेम कुवानी छांहि ॥ प्र० ॥ ३ ॥ एक घडी अथवा अधघडी, जो प्रभु मले एकांत ॥ तो वात सवी मननी कहुं, भांजो ते सघली भ्रांत ॥ प्र०॥ ४ ॥ भले सरज्यां पंखेरुआं, मन चिंतवे तिहां जाय ॥ माणसने न सरजी पांखडी, तीणे रह्युं मन अकलाय ॥प्र०॥५॥ कुण मित्र जग एहवो मिले, जे लहे मननी वात ॥ वेधे नही मन जेह शुं, कीम मिले तेह सुधात ॥ प्रभुजी०॥ ६ ॥ नवनवा रंगी जीवडा. अति विषम पंचम काल ॥ आप आपणा मन रंगमां, सहुको थई रह्या लाल ॥ प्रभुजी० ॥ ७ ॥ कहुं कुण आगल वातडी, कुण सांभले वली तेह ॥ टाले ते कुण प्रभु तुम विना, मनडातणा संदेह ॥ प्रभुजी० ॥ ८ ॥ संसार सघलो जोवतां, मुज मन न रुचे कांही ॥ जीम कमल वननो भमरलो, तेने अवर न गमे कांही॥प्र०॥९॥ धन्य महाविदेहना लोकने, जे रहे सदा प्रभु पास ॥ मुखचंद देखी तुम तणो, पुरजो मननी आश ॥प्रभुजी०॥ १० ॥ तुम वयणा अमृत सरीखा, श्रवणे सुणो नित्यमेव ॥ संदेह पुछी मन तणो, निर्णयकरी नित्यमेव ॥११॥ शे गुनहे अमने अवगुणी, प्रभुजी वश्या अतिदुर ॥ शी भक्ति एवी ते हुंति, जे कर्या आप हजुर ॥ १२ ॥ जो गुनहा लाख गमे करी, सेवक लहीता जेह ॥ तो पण पोताना त्रेवडी, साहेब दाखी छेह ॥ प्रभुजी० ॥ १३ ॥ वळी वळी शुं कहीए घणुं, प्रभु विनति मन मांही ॥ इम भक्तने उवेखतां, नहीं भला दीसो कांही ॥ प्रभुजी० ॥ १४ ॥ मुज सरिखा कोडी गमे, सेवक तुमारे स्वाम॥ पण मारे प्रभु तुम विना, नहीं अवर मन वीसराम ॥ प्रभुजी०॥१५॥

ए अरज मारी सांभळी, करुणा करी मन साथ ॥ कहे हंस प्रभु हेजे हवे, दरीसण दीजे नाथ ॥ प्रभुजी० ॥ १६ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन. ॥

॥ नाभिनंदन पूर्व नवाणुं, श्री आदीश्वर आव्या ॥ अजित शांति चोमासुं रहीया, सुरनरपति मन भाव्या, भवि तुमे वंदोरे, सिद्धाचल सुविचारी ॥ पाप निकंदोरे, गिरि गुण मनमां धारी ॥१॥ चैत्र सुद पुनमने दिवसे, गुण रयणायर भरीया ॥ पांच कोडीसुं पुंडरिक गणधर, भव सायरने तरिया ॥ भवि० ॥ २ ॥ पोतरा प्रथम प्रभुजी केरा, द्राविड वारिषेण जाणो ॥ कार्त्तिक सुदी पुनमने दिवसे, दस कोडी गुण खाणी ॥ भवि० ॥ ३ ॥ कुंता माता सती शिरोमणी, यदुवंशी सुखकारी ॥ पांडव वीस कोडीशुं सिद्धा, अशरीरी अणहारी ॥भवि० ॥४॥ फागण सुदी दशमीने सेवो, नमि विनमी बे कोडि. आतम गुण निर्मल निपजाव्या, नावे एहनी जोडी ॥ भवि० ॥ ५ ॥ चैत्र वदी चौदस शिव पामी, नमि पुत्री चोसठ ॥ रत्न त्रयी संपूर्ण साधी, पामी ए परमठ्ठ ॥भवि० ॥६॥ फागण सुदी तेरसे शिव पाम्या, शांब प्रद्युम्न गुण खाणी ॥ साडी आठ कोडीशुं मुनिवर, परणी शिव पटराणी ॥ भवि० ॥ ७ ॥ राम भरत त्रण कोडी मुनिशुं, अचल थया अरिहंत ॥ छेहेला नारद लाख एकाणुं, समरो मन करी संत ॥ भवि० ॥ ८ ॥ एक हजारसुं शुक परिव्राजक, पाम्या पद अविचलजी

॥ भवि० ॥ ९ ॥ अतीत चोवीसीना चोवीसमा प्रभु, तेहना गणधर वंदो ॥ कदंब नाम एक कोडशुं, सिद्ध थया सुखकंदो ॥ ॥ भवि० ॥ १० ॥ एक हजारने आठ संघाते, बाहुबलि मुनि मोटा त्रण कोडि जयराम ऋषीश्वर, सिद्ध थया नहीं खोटा ॥ भवि० ॥ ॥ ११ ॥ अंधक विष्णुपिता मा धारणी, तेह तणा दस पुत्र ॥ गौतम समुद्र प्रमुख शिव पाम्या, राख्युं घरनुं सूत्र ॥ भवि० ॥ १२ ॥ वळी तेहना आठ पुत्र वखाणो, अक्षोभ आदि कुमारा ॥ सोल वरस संजम आराधी, पाम्या भवनो पारा ॥ भवि० ॥ १३ ॥ अ-नाधृष्टिने दारुग मुनि दोय, आतम शक्ति समारी ॥ ऋषभ सेना-दिक तीर्थंकर पण, इहां वरीआ शिवनारी ॥ भवि० ॥ १४ ॥ भरत वंशे राजादि घणेरा, आतम धर्मने साध्यो ॥ शुक राजन शो-कागत सुणीओ, मुक्ति निलय गुण वाध्यो ॥ भवि० ॥ १५ ॥ जालि मयालिने उवयालि, देवकी खट सुत चारु ॥ सिद्ध थया मंडुक मुनि वळी, नमतां मन होय चारु ॥ भवि० ॥ १६ ॥ अतीत काले सिद्धा अनंता, सीझशे वळी अनंता ॥ संप्रतिकाले मोटुं ती-रथ, इम भांखे भगवंता ॥ भवि० ॥ १७ ॥ धन्य ए तीरथ मोटो महिमा, पामी पातिक जाये, क्षमाविजय जस तीरथध्याने, शुभ मन सिद्धि थाये ॥भवि०॥१८॥ इति श्री सिद्धाचल स्तवन संपूर्ण ॥

श्री सुमतिनाथ स्तवन.

॥ सजनी मोरी सुमति जिनेसर सेवोरे ॥ स० ॥ नरभवनो

ए मेवोरे ॥ स० ॥ सारंगपुर शणगाररे ॥ स० ॥ आपे भवनो पाररे ॥ स० ॥ विनतडी अवधारोरे ॥ स० ॥ निज आतमने तारोरे ॥ १ ॥ ॥ स० ॥ भोग कर्म क्षय जाणीरे ॥ स० ॥ परण्या संजम राणीरे ॥ स० ॥ पुद्गल अनुभव छांडयोरे ॥ स० ॥ करमशुं झघडो मांड्योरे ॥ २ ॥ स० ॥ संवर कोट श्रीकाररे ॥ स० ॥ चोकी भावना बाररे ॥ स० ॥ धीरज ढाल पर सिद्धरे, क्षमा खडग कर लीधरे ॥ ३ ॥ स० ॥ शियल सन्नाह धरी धीररे ॥ स० ॥ तप तिरकस भरी तीररे ॥ स० ॥ ज्ञानना गोला चलावीरे ॥ स० ॥ ध्यान अनल सलगावीरे ॥ ४ ॥ स० ॥ मोह रायने मार्योरे ॥ स० ॥ निज आतमने तार्योरे ॥ स० ॥ करम कटक सवि भाग्युंरे ॥ स० ॥ जीत नगारुं वाग्युंरे ॥ ५ ॥ स० ॥ केवल कमला वरियारे ॥ स० ॥ ज्ञानादिक गुण दरिआरे ॥ स० ॥ आतम सुखना भोगीरे ॥ स० ॥ पुद्गल भाव वियोगीरे ॥ ६ ॥ स० ॥ सुमति जिन सुमति आपेरे ॥ स० ॥ आप समोवड थापेरे ॥ स० ॥ ए सम अवरन कोइरे ॥ स० ॥ त्रण भुवनमां जोइरे ॥ ७ ॥ स० ॥ आप थया शिव गामीरे ॥ स० ॥ करमशुं करशे हरामीरे ॥ स० ॥ सादि अनंते भागेरे ॥ स० ॥ ए पद कुण न मागेरे ॥ ८ ॥ स० ॥ शुं विषया रस राचोरे ॥ स० ॥ भवसुख जाणो काचोरे ॥ स० ॥ घरनो धंधो छोडोरे ॥ स० ॥ धर्मशुं ममता जोडोरे ॥ ९ ॥ स० ॥ मणि उद्योत प्रभु पामीरे॥स०॥ किम थाये विषयारामीरे ॥स०॥ कुण पीये खाटी छाशरे ॥ स० ॥ मुकी अमृत सुवासरे ॥१०॥ इति श्री सुमतिनाथ स्तवन ॥

॥ श्री नवकारनो रास. ॥

॥ सरसती स्वामिनी द्यो मुज माय तो, गौतम गणधर लागुजी पाय तो ॥ ते फल जाणजो श्री नवकार तो, रास भणुं श्रीनवकारनो ॥ १ ॥ पेहेलां लीजे श्री अरिहंतनुं नाम तो, साधु सर्वने करुं प्रणाम तो ॥ सद्‌गुरु वाणी तुमे सांभलो, भुल्या जो अक्षर लीखज्यो जीगमतो ॥ चौद पूर्व पेहेलां कह्यां, ते पछी पुरशे मन तणी आश तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ २ ॥ एणे मंत्रे बांध्यो बीज आकाश तो, अमावास्या पुनिम कहे ॥ वृक्ष उपाडी चलावियो साथे तो, विचे वाघ वासो वसे, डाकणी साकणी लागेजी पाय तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ३ ॥ मंत्र मांहि कीधो वडोरे नवकार तो, गुणतां आणंदजी लागे पाय तो ॥ ए रत्नरुप ए निरमलां, कर्म रहित थया मोक्ष द्वार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुरनर नारी तुमे सांभळो वात तो, गाता पुरशे मन तणी आश तो ॥ ध्यायतां सर्व संकट टळी जाय तो ॥ वैरी विरोध दुर टळे, सुगुणीनो पिता मुक्तिनो साथ तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ५ ॥ एहनो एक अक्षर संभारे तो, पाप खपावे सागर सात तो ॥ पुरे पद आगल कहुं दुरित हरे, सागर पचास तो ॥ पांचसे पूर्णता लहु, वही उपधान भणे नवकार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ६ ॥ सूत्र सिद्धांत तोहि एणे प्रकाश तो, तोहि पण एणे समो कोइ नहीं, जिनवरे भाखीओ ए लेलाट तो ॥ साधु श्रावक एम जपिया ॥ मोक्षनुं कारण लहुं भव पार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ७ ॥ शाश्वता पद ए जगमां जाणतो, तोही पण एणे समें कोइ नहीं ॥

एक शियल बीजो नवकार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ८ ॥ केरडा चारंतो बोळे वेसतो, नदी जल उलट आविया शेठ तो ॥ बालक साथे चलावियो नावतो, तेणे समर्यो मनमां नवकारतो ॥ नदी जल फाटी हुइरे द्वार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ९ ॥ एहना मांहे सुरतरु रंगे तो, रंग फाटे फीटे नहीं ॥ गायंता ततक्षण सहु परिवार तो ॥ अवरमां कोइ सांसो नहीं ॥ कोह्ल वणारसी कुने पसाय तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ॥ १० ॥ रत्न जडित गले पेहेरीयो हार तो, तप तणी मुद्रिका जलहले ॥ खेमा तो खटकण राखीयो हार तो, पंचमी गतिनो एह दातार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ११ ॥ रत्नमूलानो हाथ परिमाण तो, शियळ अनोपम जगमां जाणुं तो ॥ जे नरनारी नीर वह्यां, अनुभव सुरतरु जय जयकार तो ॥ ते० ॥ परभव पामशे मोक्ष द्वार तो ॥ रा० ॥ १२ ॥ कन्या घुघर तणी सांभलो वात तो, कुडी न पुरशो कोइ तणी साख्य तो ॥ थापण मोसो मत करो, गंधरपनी परे उपनो रोग तो ॥ दुष्कृतनी परे जाणीए ॥ जीभ सडेने पडेरे वियोग तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १३ ॥ चंदापुरी नगरीतणी सांभलो वात तो, सतीने कलंक आव्यां अपरीघ तो ॥ नाम सुभद्रा जाणजो, कुडुं न भाख्युं रतिय लगार तो ॥ ते० रा० ॥ १४॥ जितशत्रु राजा पालशे राज्य तो ॥ दीन दीन एक एक बीजोरु खाय तो ॥ जीभ तणे रसे इंद्रीए चोरतो, एह बीजोरे राखीओ हारतो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १५ ॥ एक दिने चिठी आवी जिनदास तो, राये बोलावी आपण पास तो ॥ उठो शेठजी बीजोरु लावज्यो, शेठने उठतां लागी

छे वार तो, तेणे समर्यो मनमां नवकार तो ॥ देवता उठीने लाग्योजी पाय तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १६ ॥ एक पूरवतणी सांभलो वात तो, राजाने खोळे विशम्यो रास तों, लोक मांहि महिमा घणो ॥ अनुभव सुरतरु जय जय कारतो ॥ परभव पामशो मोक्षद्वार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १७ ॥ पोतनपुरतणी सांभलो वात तो, मदन नामे एक श्रावक सारतो, तेहनी बेटी छे श्रीमति, परणीछे मिथ्यात्विने घेर तो, धर्म उपर द्वेष छे घणो, तेणे राखीयो घडामांहि सापतो, नवकार प्रभावे थई फूलनी मालतो ॥ १८ ॥ रत्नपुरी नगरे यशोभद्र राय तो, तेहनो बेटो शिवकुमार तो, सात व्यसननो सेवन हार तो, पर वचन सेवे घणुं, मात पिता कुटुंब सहु परिवार तो, केण न माने कोय तणुं, संकट पडे समर्या नवकार तो, फरश्याथी उठी नीकळ्यो बहार तो ॥ त० ॥ रा० ॥ १९ ॥ मथुरा नगरी तणी सांभळो वात तो ॥ अधिक चोर वसे ते मांहि तो ॥ खातर पाडी धन लावे घणुं ॥ मथुरां नगरी तणो कहुं अवदात तो ॥ कुलवंती वेश्याए मांड्यो वाद तो ॥ त० ॥ रा० ॥ ॥ २० ॥ हार पडयो चोर झालीओ एक तो, ते लेई नांख्यो करडानी पास तो ॥ शुळी उपरे जो रोपीओ, पाणीनी तृषा लागी अपार तो ॥ हाथ साने जल मागीओ ॥त०॥रा०॥२१॥राजाने भये कोय पाणी न पायतो, जिनदास शेठे एम कह्युं,पाणी लावुं त्यां लगी गणे नवकार तो॥ तिणे समर्यो मनमां नवकार तो, तेह मरी थयो यक्ष कुमार तो॥ शत्रुंजयेशा निग्रत्ते करे ॥त०॥रा०॥२२॥ चारुदत्त नामे

शेठनो पुत्र तो ॥ वेश्याने संगे हार्यो वित्ततो, द्रव्य उपरे उद्यम करे, अनुक्रमे आव्यो दरीआनी तीरतो ॥ काउसग्ग अणसण उचरे, सुणी नवकारने गयो देव लोक तो, देवता आवीने करे प्रणाम तो ॥ त० ॥ रा० ॥ २३ ॥ चंद्रावती नगरी मनोहार तो, वीरधवल राजा करे राज्य तो ॥ बेटी मलयासुंदरी कर्म वशे गई देश नेपाल तो ॥ दुख सह्यां कीधां अपार तो, पंखी थकी जलधर पडे, तीहां समर्यो मनमांही नवकार तो ॥ जलधर तरी उतर्या पारतो ॥ ते० ॥ ॥ रा० ॥ २४ ॥ फोफलपुर नगरी जस दीप मोजार तो, दमण सागर ऋषि रह्या चोमासुं तो ॥ त्यां बेसी बेहु शीख्यां नवकार तो, राजकुमार रत्नावली, चारित्र पाली गया मोक्ष दुवार तो ॥ ॥ ते० ॥ रा० ॥ २५ ॥ त्रिभुवनमां हुओ जयजय कार तो, तेफल जाण ज्यो श्रीनवकार तो ॥ रास भणुं नवकारनो रास भणुं श्रीअ-रिहंतनो ॥ रास भणुं श्री गौतम स्वामीनो, रास भणुं सर्व साधु नो ॥ ते फल जाणज्यो श्री नवकार तो, रास भणुं श्री नवकारनो ॥ ते० ॥ रा० ॥ २६ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवन. ॥

॥ हरणी जव चरे लालनां ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडी कहे कामिनी ललना, लालाहो प्रीतमजी अवधार, एह गिरिवरु रे ललना ॥सफल करो लही आपणो ललना, लालाहो मानवनो अवतार ॥ एह गिरि० ॥ १ ॥ नव लखो टीलो-

आ स्तवनमां केटलीक गाथाओमां चरणो वधारे ओछां छे तेम अर्थ संगति पण बरोबर जणाती नथी.

स्युं करु ललना, लाला होशे जवाली जोडावे ॥ एह० ॥ सुनंदानो नाहलो ल०, लालाहो त्रिभुवन तिलक भेटावी, ॥ एह० ॥ २ ॥ ऋषभ सेनादिक जिनवरा ललना, लालाहो मुक्ति गया इणे ठाम ॥ एह० ॥ जिनतणी फरसी भूमिका ललना, लालाहो सिद्ध अनंतानो ठाम ॥ एह० ॥ ३ ॥ इणी चोवीशी सिद्धाचले ललना, लालाहो नेमि विना त्रेवीस ॥ एह० ॥ भावी चोवीशी आवशे ललनां, लालाहो पद्मनाभादि जिनेश, ॥ एह० ॥ ४ ॥ आदि जिणंद समोसर्या ललना, लालाहो पूर्व नवाणुं वार, ॥ एह० ॥ चोमासुं अजित जिनेश्वर ललना, लालाहो शान्ति चोमासुं सार ॥ एह० ॥ ॥ ५ ॥ पांच कोडि परिवारशुं ललना, लालाहो ऋषभसेना पुंडरीक, ॥ एह० ॥ चैत्री पुनमी शिव संपदा ललना, लालाहो पांमी थया नीरभीक, ॥ एह० ॥ ६ ॥ कार्तिक पुनम कामित वर्या ललनां, लालाहो द्राविड वारिषेण दोय ॥ एह० ॥ दस कोडि मुनि महंतशुं ललनां, लालाहो प्रणमी पातक धोय ॥ एह० ॥ ७ ॥ नेमि विनमि विद्याधरा ललना, लाला हो बे कोडी साधु संगाते ॥एह०॥ फागण सुदी दशमी शमी ललना, लाला हो कीधो कर्मनो घात, ॥ ८ ॥ ऋषभ वंश नरपाति घणां ललना, लाला हो भरत अंगज केई पाट, ॥ एह० ॥ सिद्धक्षेत्र श्रेणि चढी ललना, लाला हो रोप्यां धर्मना घाट ॥ एह० ॥ ९ ॥ नारद एकाणुं लाखशुं ललना, लाला हो राम भरत त्रण कोटी, ॥ एह०॥ वीश कोटिशुं पांडवा ललना, लाला हो देवकी सुत षट कोटि, ॥ एह० ॥ १० ॥ हरिनंदन दोय

वंदिई ललना, लाला हो श्याम प्रद्युम्न कुमार, ॥ एह० ॥ साढी आठ कोडि साथे थया ललना, लाला हो शिव सुंदरी भरथार, ॥ एह० ॥ ११ ॥ थावच्चा सुत संयमी ललना, लाला हो सहसशुं अण सण लीध, ॥ एह० ॥ नेमी सिस नांदिषेणजी ललना, लाला हो अजित शान्ति स्तव कीध, ॥ एह० ॥ १२ ॥ सुव्रत सहस मुणिंद शुं ललना, लाला हो शुक परिव्राजक सिद्ध ॥ एह० ॥ पंचसया सेलकसूरि ललना, लाला हो मंडुक मुणिसुप्रसिद्ध, ॥ एह० ॥ ॥१३॥ सिद्धाचल विमलगिरि ललनां, लाल हो मुक्ति निलय सिद्ध ठाम ॥ एह० ॥ शत्रुंजय आदि जेहनां ललना, लाला हो उत्तम एकबीस नाम ॥ एह० ॥ १४ ॥ भवसायर तरीए जिणे ललना लाला हो तीरथ तेह कहाय ॥ एह० ॥ कारण सकल सफल होय ललना, लाला हो आतम वीर्य सहाय, ॥ एह० ॥ १५ ॥ कीर्त्ति स्थंभ ए जैननो ललना, लालाहो शिवमंदिर सोपान, ॥ एह० ॥ क्षमाविजय गुरुथी लही ललना, लाला हो सेवक जिनधरे ध्यान ॥ ॥ एह० ॥ १६ ॥ इति श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ जीरे मारे श्री सिद्धाचल तीर्थ, शास्वतुं प्रायः जाणीये ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे नाभिनरेश्वर नन्द, ऋषभ जिणंद वखाणीये ॥जीरे जी॥ जीरे मारे पूर्वनवाणुं वार, गिरि दर्शनने आवीया ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे आद्य आठमथी जाण, फागण सुदी मन

भावीया ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जीरे मारे रायण ऋषभ मनोहार, ते चरणे पावन करी ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे हुं वन्दु त्रण काल, भावघणो मनमां धरी ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे भरतेश्वर निजनंद, पुछे प्रभु बहु मानथी ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे तुम सरीखा जगनाथ, पूज्य कहे कुण कामथी ॥जीरे जी॥२॥ जीरे मारे कृपावन्त भगवन्त तीर्थ महिमा अति दाखीयो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे आठ उपर सो नाम, रस स्वाद करी चाखवो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे सांभळी जिनवर वाण, ऋषभसेन प्रमुख वली ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे चोरासी गणधार, तीर्थ स्थापे मन रुली ॥ जीरे जी ॥ ३ ॥ जीरे मारे ऋषभसेन पुंडरीक, पुछे प्रभु चरणे नमी ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे कीहां होशे मुज सिद्धि, भाष्यो पूज्य केवल गमी ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे कहे केवली जिनराज, नाण निर्वाण साधशो ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे ए तीर्थे महा भाग्य, गुण अतिशय वाधशो ॥ जीरेजी ॥ ४ ॥ जीरे मारे पांच कोडी अणगार, फागण सुदी पूनम भली ॥जीरेजी॥ जीरे मारे करी संलेखन सार, चैत्र सुदी पूनम वली ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे पामी केवल नाण, अजरामर सुख पामीया ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे सादि अनंत निवास, जन्म जरा दुःख वामीया ॥जीरेजी॥ ॥ ५ ॥ जीरे मारे द्राविड ने वारिषेण, दशकोडी मुनि परिवारशुं ॥ जीरेजी॥ जीरे मारे कार्त्तिक पुनम दिनसार, हुं वंदु भला, भावशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे विद्याधर मुनि दोय, नमि विनामि वखाणीये ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे बे कोडी मुनि संजुत्त, आव्या बाध

सुख पामीया ॥ जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरे मारे सागरचंद मुनिराय, त्रण कोडि परिवारशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे सोमजय अणगार, तेर कोडि भलाभावशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे दभी तारी नीसल्ल, चउद सहससुं सिद्ध थया ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे बाहुबली बलवंत, एक सहस आठशुं शिव गया ॥ जीरेजी ॥ ७ ॥ जीरे मारे पांडव पांच झूझार, वीश कोडि परिवारशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे आसो पुनम दिन सार, मुक्ति वर्या भले भावसुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे इत्यादिक अनेक, कांकरे कांकरे सिद्ध थया ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे ए तीरथ आधार, कर्म खपावी मोक्षे गया ॥ जीरेजी ॥ ८ ॥ जीरे मारे जात्रा नवाणुं एह, जे करशे भला भावशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे ते तरशे संसार, न पडे भवना दावशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे जिन उत्तम महाराज, पाय पद्म तस नामीये ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे रूप विजय कविराय, शिव सुख लक्ष्मी पामीय ॥ जीरेजी ॥ ९ ॥ इतिश्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवनं ॥

॥ एकादशी तिथि सेवीयेरे लाल, उलट आणी अंग मेरे प्यारे ॥ कल्याणक दिन ए वडोरे लाल, कहे जिनजी मनरंग ॥ मेरे प्यारे रे ॥ एका० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव वलीरे लाल, अर मल्लि नमिनाथ ॥ मेरे प्या० ॥ पार्श्वनाथ दीक्षा वलीरे लाल; सेवो शिवपुर साथ ॥ मेरे प्या० ॥ एका० ॥ २ ॥ मौन एकादशी एव-

डीरे लाल, कल्याणक एकसो पचास, ॥ मेरे प्या० ॥ शत उपवास आराधतांरे लाल, होइ धरी लिल वास॥ मेरे ॥ प्या० ॥ एका०३॥ केवलज्ञानी ज्ञानशुंरे लाल, महिमा भाख्यो उदार ॥ मेरे० ॥ कृष्ण प्रभु मुखे आदर्योरे लाल, उजव्यो विधि मनोहार ॥ मेरे० ॥ ॥ एका० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वी माने घणुंरे लाल, जिनशासन दिन एह ॥मेरे० ॥ आदरीये आदर घणा रे लाल, धणकण कंचन गेह ॥ मेरे० ॥ एका० ॥ ५ ॥ मौन पणे पोसह करीरे लाल, विकथा नो परिहार ॥ मेरे० ॥ गणणुं गणीए नेहशुंरे लाल, होई अल्प संसार ॥ मेरे० ॥ एका० ॥ ६ ॥ एकादशी महिमा कहुंरे लाल, गौतम आगले वीर ॥ मेरे० ॥ श्री मेरुविजय सुपसाउलेरे लाल, मेरु लहे भव तीर ॥ मेरे० ॥ एका० ॥ ७ ॥ इति एकादशी स्तवनम् ॥

॥ अथ सज्झायो ॥ ढुंढक पचवीसीनी सज्झाय ॥

॥ श्री श्रुतदेवी प्रणमी कहेस्युं, जिन प्रतिमा अधिकार ॥ नवि माने तस वदन चपेटा, माने तस सिणगार ॥ श्री जिन प्रतिमाशुं नहीं रंग, तेनो कदिय न कीजे संग ॥ १ ॥ केवल नाणी चउं नाणी, एण समे नहीं भरत मझार ॥ जिन प्रतिमा जिन प्रवचन, जिनो ए मोटो आधार ॥ श्री० ॥ २ ॥ ते जिनवर प्रतिमा उत्थापी, कुमति हैया फूटे ॥ ते विना कीरिया हानि लागे, तेतां थोथा कूटे ॥श्री०॥३॥ जिन प्रतिमा दर्शथी दर्शन, लहीए व्रतनुं मूल ॥ तेहज मूल कारण उत्थापी, शुं थाये जग शूल ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अभयकु-

मार मूकी प्रतिमा, देखी आर्द्रकुमार ॥ प्रतिबोधे संयम लई सुधो, ए चावो अधिकार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रतिमा आकारे मच्छ निहाले, अन्य मच्छ सवि बुझे ॥ समकित पामे जाति स्मरण, तस पूर्वभव सूझे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चैत्य विना अन्यतीरथ मुजने, वंदन पूजा निषेधे ॥ सातमे अंगे श्री आणंदे, समकित धारुं सूधे ॥ श्री० ॥७॥ छठ्ठे अंगे ज्ञाता सूत्रे, द्रौपदीए जिन पूज्या ॥ एहवा अक्षर देखे तो पण, मूढ मति नवि बूझ्या ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चारण मुनिए चेइय वंद्या, भगवइ अंगे रंगे ॥ मरडी अर्थ करे तिणे स्थानक, कुमति तणे प्रसंगे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ भगवई आदि श्रीगणधरजी, बंभी लीपीने वांदे, एहवा अक्षर स्थापना देखी, कुमति कहो किम नंदे ॥ श्री० ॥ ॥१०॥ सूर्याभे जिन आगले, नाटक कीधुं मनने रंगे ॥ समकित-दृष्टि तेह वखाण्या, रायपसेणी उवंगे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ समकितदृष्टी श्रावक करणी, जिनघर जेह करावे ॥ ते बारमे देवलोके पहोचे, महा निशीथ आलावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ अष्टापद गिरि उपर भरते, मणि-मय बिंब भराव्या ॥ एहवा अक्षर आवश्यकसूत्रे, गौतम वंदन आया ॥ श्री० ॥ १३ ॥ परंपरागत पुस्तक प्रतिमा, माने तेहज नाणी ॥ नवि माने तेहज अज्ञानी, एवी जिनवर वाणी ॥ श्री० ॥ १४ ॥ ढुंढक वाणी कुमत समानी, सूणो मत भूलो प्राणी ॥ बोधिबीजनी करसे हाणी, किम वरशे शिवराणी ॥श्री०॥ १५ ॥ क्षेत्रपाल भवानी देहरे, तिहां जावुं नवि वारे ॥ वीतरागने देहरे वारे, ते कुणसूत्र अनुसारे ॥ श्री० ॥ १६ ॥ मेलां कपडां मोढुं बांधी, घर घर भीक्षा

फरता ॥ मांदा माणसनी परे थोडुं, बोले जाणे मरता ॥श्री०॥१७॥ बारस काला मांहे काला, जेहवा काला पारा ॥ पंचम काले ए दुष्ट प्रगट्या, महामूढ विकराला ॥ श्री० ॥ १८ ॥ ढुंढत ढूंढत प्राणी, तोही धर्म न पायो ॥ ते माटे मूढ ढुंढक कहेवायो, एले जनम गमायो ॥ श्री० ॥ १९ ॥भाव भेद तत्त्व नवी जाणे, दया दया मुख भाखे मुग्ध लोकने भरमे पाडे, ए पण दुर्गति माटे ॥ श्री०॥ २० ॥ भाष्य चूर्णी टीका नवी माने, केवल सूत्र पोकारे ॥ ते मांहे निज कल्पित स्थापी, बहु संसार वधारे ॥ श्री० ॥ २१ ॥ आगमनो एक वर्ण उत्थापे, ते कह्यो अनंतसंसारी ॥ आखो स्कंध उत्थापे तेनी, शी गति होशे सारी ॥ श्री० ॥ २२ ॥ चित्रलिखित नारी जोवंता, वाधे काम विकार ॥ तिम जिन प्रतिमा मुद्रा देखी, शुद्ध भाव विस्तार ॥ श्री० ॥ २३ ॥ ते माटे हठ छंडो भवियां, प्रतिमाशुं दिल राखो॥ जिनप्रवचन जेने, अनुभव भरी रस चाखो ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ढुंढक पचवीसी एह मे गाई, नगर नाडुल मजार ॥ जसवंत श्रीजिनेंद्र पयंप, हितकार अधिकार ॥ श्री० ॥ २५ ॥

॥ द्वारिका नगरीनी सज्जाय ॥

॥ दोनुं बंधव आरडे, दुख धरतां मन मांहे ॥ बलती देखी द्वारिका, कीजे कवण उपाय ॥ १ ॥ रतन भींत सोवन तणी, तेह बले तत्काल ॥ सोवन थंभा कांगरा, जाणे बले पराल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ बलती द्वारिका देखीरे, भाइ घणा थया

दिलगीररे ॥ छाती ते लागी फाटवारे, भाइ नयणे वछुटया नीररे॥ माधव इम बोले ॥ १ ॥ बे बंधव मलीने तीहांरे, भाइ वात करे करुणांय ॥ दुख माले द्वारिका तणुंरे, भाइ अब कीजे कवण उपायरे ॥ मा० ॥ २ ॥ किहांरे द्वारिकानी साहिबीरे, भाइ कीहां गजदालनो ठाठ ॥ सज्जननो मेलो किहांरे, भाइ क्षणमां हुआ घणा घाटरे॥मा०॥ ॥ ३ ॥ हाथी घोडा रथ बलेरे, भाइ बेताली बेतालीस लाख ॥ अडतालीस क्रोड पाला हुंतारे, भाइ क्षणमां हुइ गया राखरे॥मा०॥ ॥४॥ हलधरने हरजी कहेरे, भाइ धिग कायरपणुं मोय ॥ नगरी बले मुज देखतांरे, भाइ जोर मुज न चाले कोयरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ नगरी बले मुज देखतांरे, भाइ राखी न शकुंरे जेम ॥ इंद्र धनुष में चढावीयुंरे, भाइए बल भाग्युं केमरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ जीणी दीशी जोग तिण दिशेरे, भाइ सेवक सहस अनेक ॥ हाथ जोडी उभा खडारे, भाइ आज न दीसे एकरे ॥ मा०॥ ७ ॥ मोटा मोटा राजवीरे, भाइ शरणे रहेत आय ॥ उलटो शरणो ताकीओरे, भाइ वेरण वेला आयरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ वादल वीजतणी परेरे, भाइ ऋद्धि बदलाये सोय ॥ इण दोहीलीमां आपणोरे, भाइ सगो न दीसे कोयरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ मेहेल उपगरण आयुध बलेरे, भाइ बले सहु परिवार ॥ आ आपदा पुरी पडीरे, भाइ कीजे कवण विचाररे ॥ मा० ॥ १० ॥ वळतां हलधर इम कहेरे, भाइ प्रगटयां पूर्वनां पाप ॥ बीजुं तो सघळुं रह्युंरे, भाइ मांहे बळे माय बापरे मा० ॥ ११ ॥ दोनुं बांधव मांहे धश्यारे, भाइ नगरीमां चाल्या जाय ॥ रथ जोडी तेणे समेरे, भाइ मांहे घाल्या

मात तातरे ॥ मा० १२ ॥ दोनुं बांधव जुतियारे, आव्या पोळनी मांय ॥ दोनुं बंधव बहार नीकळ्यारे, भाइ दरवाजो पडियो आयरे ॥मा०॥१३॥ पाछुं वळी जुए तीहांरे भाइ, घणा थया दिलगीर ॥ छाती ते लागी फाटवारे, भाइ नयणे वछुटयां नीररे ॥ मा० ॥ ॥१४॥ हळदरने हरजी कहेरे, भाइ सांभळ बंधव वात ॥ किण दीशी आपणे जाइशुंरे, भाइ ते दिश मोय बतायरे ॥ मा० ॥ १५ ॥ वचन सुणी माधव तणांरे, भाइ हळधर बोले एह ॥ पांडव भाइ कुंतातणारे, भाइ हळधर बोले एह ॥ पांडव भाइ कुंता तणारे, भाइ अब जाइये तेहने गेहरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ वयणां सुणी हळधर तणांरे, भाइ माधव बोले एम ॥ देशवटो देइ काढीयारे, भाइ ते घर जाओ केमरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ वळता हळधर इम कहेरे, भाइ देखी होंश दिलगीर ॥ ते किम अवगुण आणशेरे, भाइ गिरुआ गुणगंभीररे ॥मा०॥१८॥ तें तेहनां कारज कियांरे, भाइ धातकी खंडमां जाय ॥ द्रौपदी सोंपी आणीनेरे, भाइ ते केम भुलशे भायरे॥मा०॥१९॥अहंकारी सीर सेहरारे, भाइ एहवी संपदा पाय ॥ ते नर पाळा चालियारे,आपदा पडी बहु आयरे ॥ मा० ॥ २० ॥ पांडव मथुरां प्रगटी जिहांरे, भाइ अग्निखुण समुद्रनी तीर ॥ तीण नगरी भणी चालीयारे, भाइ बंधव बेहु सधीररे ॥ मा० ॥ २१॥ जे नर सज्याए पोढतारे, भाइ ते नरपाळा होय ॥ करजोडी विनय विजय इम भणेरे, भाइ आ भव पार उताररे ॥ माधव इम बोले, ॥ २२ ॥

॥ अथ स्थूलिभद्रनी सज्झाय ॥

॥ बोली गयो मुख बोल, च्यार घडीनो कोल ॥ आछे लाल॥ हजीए न आव्यो वालहो ॥ देइ गयो दुखदाह, पाछो नाव्यो नाह ॥ आ० ॥ के सही केणे भोलव्योजी ॥ १ ॥ रहेतो नहीं क्षण एक, रे दासी सुविवेक ॥ आ० ॥ जाइ जुओ दिसा दसेजी ॥ एम बोलंती बाल, एनी उत्तम चाल ॥आछे लाल॥ छेल गयो मुजछेतरीजी ॥२॥ उलस वालस थाय, अंग उधाम थाय ॥ आछंगा नयणे नावे निंद्रडीजी ॥ चोखा चंपक शरीर, नणदलना हो वीर ॥ आ० ॥ नयणे दीठा नवीजी ॥ ३ ॥ जेम बपैया मेह, मच्छने जलशुं नेह ॥ आ० ॥ भमराने मन केतकीजी ॥ चकवो चाहे चंद्र, इन्द्राणी मन इन्द्र ॥ आ० ॥ अहनिशी तमने ओलगुंजी ॥ ४ ॥ तुमविण घडीए छ मास, तें मुज नाखी पास ॥ आ० ॥ निष्टुरपणुं नर नें कर्युंजी ॥ भाखो कोइक दोष, मुकी मननो रोष ॥ आछे० ॥ कांइक तो करुणा करोजी ॥ ५ ॥ हुं निराधार नार, मेली गयो भरथार ॥ आ० ॥ उंभी करुं आलोचनाजी ॥ एम विलवलती कोस, देती करमनो दोष ॥ आ० ॥ दासी आवीरे दोडतीजी ॥ ६ ॥ सांभळ स्वामीनी वात, लाछिल्ल देनो जात ॥ आछे० ॥ स्थूलिभद्र आव्योरे आंगणेजी ॥ वनिता सांभळी वात, हियडे हरख न मात ॥ आ० ॥ प्रीति पावन प्रभु तें करीजी ॥ ७ ॥ पधारो घर मुज, मुनि भाख्यो सवि गुज ॥ आ० ॥ उठ हाथ अलगी रहेजी ॥

माता आगे मुसाल, तिम मुज आगल ख्याल ॥ आ० ॥ एह प्रपंच किहां भण्याजी ॥ ८ ॥ चित्रशाली चोमास, निहाली मुखतास, ॥ आ० ॥ वनिता विधिशुं आलोचवेजी ॥ मादल ताल कंसाल, भुंगल भेरि रसाल ॥ आ० ॥ गावे नव नव रागशुंजी ॥ ९ ॥ वाळे विधिशुं अंग, फरती फुदडी चंग ॥ आ० ॥ हावभाव बहु हेजसुंजी ॥ सांभल स्वामीनी वात, सिंहने घाले घात ॥ आ० ॥ राइनो पाड राते गयोजी ॥ १० ॥ सो बालक साथे रोइ, पावइयाने पानो न होय, ॥आ०॥ पथ्थर फाट्यो ते किम मलेजी ॥ समुद्र मीठो न थाय, पृथ्वी रसातल जाय ॥ आ० ॥ सूर्य उगे पश्चिम दिशेजी ॥ ११ ॥ प्रति बोधी इम कोश, छोडी रागने रोष ॥ आ० ॥ द्वादश व्रत उचरेजी ॥ पूरण कीधो चोमास, आव्या श्री गुरुपास ॥ आ० ॥ दुकर दुकर तुं सहीजी ॥ १२ ॥ त्रीस वरस घरवास, पुरी सहुनी आश ॥ आछे० ॥ पंचमहाव्रत पालताजी ॥ धन्य मात धन्य तात, नागर न्याति कहात, ॥ आछे० ॥ वारु वंश दीपावीयोजी ॥ १३ ॥ जे नरनारी गाय; तस घर लच्छी सवाय ॥ आछे० ॥ पभणे शांति मया थकीजी ॥ १४ ॥ इति स्थूलिभद्रनी सज्झाय ॥

नेमराजेमतीनी सज्झाय.

॥ राणी राजुल करजोडी कहे, एतो जादवकुल शणगाररे ॥ वाला मारा ॥ भवरे आठनो नेहलो, प्रभु मत मेलो विसारीरे ॥ वाला मारा ॥ १ ॥ वारिहुं जिनवर नेमजी, एक विनतडी अवधा-

रे ॥ वा० सुरतरु सरखो साहिबो, हुंतो नित्य नित्य धरु देदाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ २ ॥ प्रथम भवे धनवतिनो, तुं धननामे भरताररे ॥ वा० ॥ निसाले जातां मुजने, छानो मेल्यो मोती केरो हाररे ॥ ॥ वा०॥मा०॥३॥ दिक्षा लेइ हरखे करी, तिहां देवतणो अवताररे ॥ वा० ॥ क्षणविरह खमता नहीं, तिहां पण धरता प्याररे ॥वा०॥ मा० ॥ ४ ॥ त्रीजे भवे विद्याधरु, तिहां चित्रगति राजकुमाररे ॥ ॥ वा० ॥ भूपति पदवी भोगवो, हुं रत्नवती तुजनाररे ॥ वा० मा० ॥ ५ ॥ महाव्रत पाली साधुना, तिहां चोथे भवे सुरदाररे ॥ वा० ॥ आरण्य देवलोके बेउ जणा. तिहां सुख विलस्यां सविकाररे ॥ वा० मा० ॥ ६ ॥ पांचमो भव अति शोभतो, तिहां नृप अपराजित साररे ॥ वा० ॥ प्रीतमवंती हुं ताहरी, थइ प्रभु हैयानो हाररे ॥ वा० मा० ॥ ७ ॥ ग्रही दीक्षा हरखे करी, तिहां छठे भवे सुरदाररे ॥ वा० ॥ माहेंद्र देवलोकमां, तिहां सुख विलस्यां वारोवाररे ॥ वा० मा० ॥८॥ शंख राजा भव सातमो, तिहां जसमति प्राण आधाररे ॥ वा० ॥ वीस स्थानक तीहां फरसतां, जिनवर पद बांध्यु साररे ॥ वा० मा० ॥ ९ ॥ आठमे भव अपराजिते, तिहां वरस गयां बत्रीस हजाररे ॥ वा० ॥ आहारनी इच्छा उपनी, एतो पूर्व पुन्य प्रकाशरे ॥ वा० मा० ॥ १० ॥ हरिवंशमांथी उपनी, मारी शिवादेवी सासु मल्हाररे ॥वा०॥ नवमे भवे क्यां परिहरो, प्रभु राखो लोक व्यवहाररे ॥वा०॥११॥ एरे संबंध सुणी पाछलो, तिहां नेमजी भणे ब्रह्मचारीरे ॥ वा० ॥ हुं तमने तेडवा कारणे, आव्यो ससराजीने वासरे ॥ वा० ॥ मा०

॥ १२ ॥ अविचल कीधो एणे साहिबो, रुडो नेहलो मुक्तिमां जायरे ॥ वा० ॥ मानी वचन राजेमति, तिहां चाली पिउडानी लाररे ॥वा० मा० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य जिन बावीसमो, जिणे तारी पोतानी नाररे ॥ वा० ॥ धन्य धन्य उग्रसेननी नंदिनी, जे सतीयोमें सिरदाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ १४ ॥ संवत सतर इकोतरे, तिहां शुभवेला शुभ वाररे ॥ वा० ॥ कांतिविजय राजुलनां, तिहां गुण गाया श्रीकाररे ॥ वाला मारा ॥ वारिहुं जिनवर नेमजी ॥ १५ ॥ इति नेमराजेमति सज्झाय ॥

॥ अथ श्रीअगीआरसनी सज्झाय. ॥

॥ उलगाणनी ॥ देशी ॥

॥ गोयम पूछे वीरने, सुणो स्वामीजी, मौन एकादशी किणे कही, किणे पालो किणे आदरो ॥ सुणो० ॥ एह अपूर्व दिन सही ॥ १ ॥ वीर कहे सुणो गोयमा, गुण गेहाजी, नेमे प्रकाशी एकादशी, मौन एकादशी निर्मली, सुणो गोयमजी ॥ गोविंद करे मलारसी॥२॥ द्वारामती नगरी भली ॥ सुणो० ॥ नव जोयण आराम वसी, छप्पन क्रोड जादव वसे ॥ सुणो० ॥ कृष्ण बिराजे तिणे नगरी ॥ ३ ॥ विचरंता विचरंता नेमजी ॥ सुणो० ॥ आवी रह्या उज्वज शिखरे, मधुरी ध्वनि दिये देशना ॥ सुणो० ॥ भवियणने उपगार करे ॥४॥ भव अटवी भिषण घणी ॥ सुणो० ॥ ते तरवा पंच पर्वी कही, बीजे बे विध सांचवो ॥सुणो०॥ देश विरति सर्वविरति सही॥५॥पंचमी ज्ञान आराधीये ॥ सुणो० ॥ पंच वरस पंच मास वळी, अष्टमी दिन अष्ट

कर्मनो ॥सुणो० ॥ परभव आयुनो बंध करे ॥ ६ ॥ त्रीजे भागे नवमे भागे ॥सुणो० ॥ सत्तावीसमे भागे सही, अथवा अंतर्मुहुर्त्त समे ॥ सुणो० ॥ श्वासोश्वासमां बंधकरे ॥ ७ ॥ माया कपट जे केळवे ॥ सुणो० ॥ नरक तिर्यंचनुं आयु धरे, राग तणे वश मोहीयो ॥ सुणो० ॥ विकल थयो परवश पणे ॥ ८ ॥ करणी अकरणी नवी गणे ॥ सुणो० ॥ मोह तिमिर अंधकार पणे, मोहे मद धर्यो फिरे ॥ सुणो०॥ दे घूमरी घणुं जोर पणे ॥ ९ ॥ घायल जिम रहे घूमतो ॥सुणो०॥कहुं न माने नेह पणे,जीव रुले संसारमां ॥ सुणो०॥ मोह कर्मनी सही जाणी॥१०॥अल्प सुख सरसव जेवु॥सुणो०॥तो तेने मेरु समान गणे, लोभे लंपट कहीयो॥सुणो०॥ नविगणे ते अंधपणे ॥११॥ ज्ञानी विण कह्यो कुण लहे ॥ सुणो० ॥ शुं जाणे छद्मस्थपणे, अष्टमी एकादशी चउदशी ॥ सुणो०॥ सामायिक पोसह करे ॥१२॥ धर्मने दिवसे कर्मनो ॥ सुणो० ॥ आरंभ जे करे नरनारी, निश्चय सदगति नवि लहे ॥ सुणो० ॥ अशुभ कर्मनां फल छे भारी ॥ १३ ॥ पांच भरत पाच ऐरवते ॥ सुणो० ॥ महाविदेह ते पांच भणी, कर्मभूमी सघळी थई॥सुणो०॥सुकल्याणक पंच सोय भणे॥१४॥ श्रीविशालसोम सूरीश्वर प्रभु ॥ सुणो० ॥ तप गच्छको सिरदार मुणि, तस गुरु चरण कमल नमी ॥ सुणो० ॥ सुव्रत रुप सज्झाय भणी ॥ १५ ॥ इति अगीआरसनी सज्झाय संपूर्णम् ॥

अथ त्रेसठशलाका पुरुषनी सज्झाय.

॥ चोपाइनी देशी ॥ प्रहसमे प्रणमुं सरसती माय, वळी सद्-

गुरुने लागुं पाय॥ त्रेसठ शलाकानां कहुं नाम,नाम जपतां सीजे काम ॥ १ ॥ प्रथम चोवीस तीर्थंकर जाण, तेहतणां हुं करीश वखाण ॥ ऋषभ अजितने संभव स्वाम, चोथा अभिनंदन अभिराम ॥ २ ॥ सुमति पद्म प्रभु पुरे आश, सुपार्श्व चंद्रप्रभ दे सुखवास ॥ सुविधि शीतलने श्रेयांसनाथ, ए छे साचा शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जिन विमल अनंत, धर्म शांति कुंथु अरिहंत, अरमल्ली मुनिसुव्रत स्वाम, एहथी लहीए मुक्तिनुं ठाम ॥ ४ ॥ नमिनाथ नेमिसर देव, जस सुरनर नित्य सारे सेव ॥ पार्श्वनाथ महावीर प्रसिद्ध, त्रुठया आपे अविचल ऋद्धि ॥५ ॥ हवे नाम चक्रवर्ती तणां, बार चक्रीजे शास्त्र भण्या ॥ पहेलो चक्री भरतनरेश, सुखे साध्या जिणे षटखंड देश ॥ ६ ॥ बीजो सगर नामे भूपाल, त्रीजो मघवराय सुविशाल ॥ चोथा कहीये सनतकुमार, देवपदवी पाम्या छे सार ॥ ७ ॥ शांति कुंथुं अर त्रिणे राय, तीर्थंकर पण पद कहेवाय ॥ सुभूम आठमो चक्री थयो, अति लोभे ते नरके गयो॥८॥ महा पद्मराय बुद्धि निधान,हरिषेण दशमो राजन॥इग्यारमो जय नाम नरेश, बारमो ब्रह्मदत्त चक्रनरेश ॥९॥ ए बारे चक्रिसर कह्या, सूत्र सिद्धांत थकी में लह्या ॥ हवे वासुदेव कहुं नवनाम, त्रिण खंड जेणे जीत्या ठाम ॥ १० ॥ वीर जीव प्रथम त्रिपृष्ट, बीजो नृप जाणो द्वीपृष्ट ॥ स्वयंभू पुरुषोत्तम महाराय, पुरुषसिंह पुंडरिक राय ॥११॥ दत्त नारायण कृष्ण नरेश, एह नव हवे बलदेव विशेष॥ अचल विजयभद्र सुप्रभ भूप, सुदर्शन आनंदनंदनरुप ॥ १२ ॥ पद्मराम ए नव

बलदेव, प्रति शत्रु नव प्रति वासुदेव ॥ अश्वग्रीव तारक राजेंद्र, मेरक मधु निशुभ बलेंद्र ॥ १३ ॥ प्रल्हादने रावण जरासंघ, जीत्या चक्रबले सत्यसंघ ॥ त्रेसठ संख्या पदवी कही, माता इकसठ ग्रंथे लहि ॥ १४ ॥ पिता बावनने साठ शरीर, ओगणसाठ जीव महाधीर ॥ पंचवरण तीर्थंकर जाण, चक्री सोवन वान वखाण ॥ १५ ॥ वासुदेव नव शामलवान, उज्वल तनु बलदेव प्रधान ॥ तीर्थंकर मुक्तिपद वर्या, आठ चक्री साथे संचर्या ॥ १६ ॥ बलदेव आठ तेहने साथ, शिवपदलीधो हाथोहाथ ॥ मघव सनत् कुमार सुरलोक, त्रीजे सुर सेवे गत सोग ॥ १७ ॥ नवमो बलदेव ब्रह्मनिवास, वासुदेव सहु अधगति वास ॥ अष्टम बारम चक्रिसाथ, प्रति वासुदेव समा नरनाथ ॥ १८ ॥ सुरवर सुखशाता भोगवी, नरक दुःख व्यथा अनुभवी ॥ अनुक्रमे कर्म सैन्य जय करी, नरवर चतुरंगी सुखवरी ॥ १९ ॥ सद्गुरु जोगे क्षायिकभाव, दर्शन ज्ञान भवोदधि नाव ॥ आरोहि शिव मंदिर वसे, अनंत चतुष्टय तव उल्लसे ॥ २० ॥ लेशे अक्षय पद निर्वाण, सिद्ध सर्वे द्यो मुज कल्याण ॥ उत्तम नाम जपो नरनार, सरुपचंद्र लहे जय जयकार ॥२१॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुषनी सज्झाय ॥

॥ अथ माननी सज्झाय ॥

॥ मान न करशोरे मानवी, काची कायानो शो गर्वरे ॥ सुरनर किन्नर राजीआ, अंते मरीगया सर्वरे ॥ मा० ॥ माने ज्ञान·

विनाशेरे, माने अपशय वासरे ॥ माने केवल नाशरे ॥ ए आकणी॥
॥ १ ॥ सोना वर्णीरे चढे बले, रुपा वर्णी धुवासरे ॥ कुमकुम
वर्णीरे देहडी, अगनी परजालि करी छाररे ॥ मा० ॥ २ ॥ जे
नर शीर कसी बांधता, सालु कसबीना पाघरे ॥ ते नर पोढया
पाधरा, चांच मारे शिर कागरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ केई चाल्या केई
चालशे, केता चालण हाररे ॥ मारग वेहरे उतावलो, पडखे नहीं
लगाररे ॥ मा०॥ ४ ॥ अंतरे प्राणनो आवशे, न जुए वार कुवा-
ररे ॥ भद्रा भरणीने योगणी, शनी सोम वली कालरे ॥ मा० ॥५॥
जे वहालां विण एक घडी, सोहतो नहीं लगाररे ॥ ते विना जन-
मारा वही गया, नही शुद्धि नहीं समाचाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे
नर गाजीरे बोलता, वावरता मुख पानरे ॥ ते नर अग्निमां पोढी
या, काया काजल वानरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ चीर पीतांबर पेहेरता,
कंठे कनकनो हाररे ॥ ते नर काले माटी थया, जो जो अस्थिर सं-
माररे ॥ मा० ॥ ८ ॥ जे शिर छत्र ढळावता, चढता हाथीने खं-
धरे ॥ ते नर अंतेरे लई गया, देई दोरडाना बंधरे ॥ मा० ॥ ९ ॥
कोडी मणनी सीला कर ग्रही, गिरिधर कहावे नामरे ॥ तरसे तरफडे
त्रीकमो, नहीं कोई पाणी पानारेर ॥ मा० ॥ १० ॥ चोसठ सहस
अंतेउरी, पायक छन्नु करोडरे ॥ ते नर अंते रे एकलो, सूतो चिवर
ओढ ॥ मा० ॥ ११ ॥ जे जिहां ते तिहां रह्यो, पापने पुण्य बे
साथेरे ॥ अहो स्वरूपने देखीने, पुण्य करो निज हाथरे ॥ मात० ॥
॥ १२ ॥ जे नर हसी हसी बोलता, करता भोजन साररे ॥ ते नर

अंतेरे माटी थया, घडता पात्र कुंभारेरे ॥मा० ॥ १३॥ चंपा वरणी देहडी, कदली कोमल जंघरे ॥ ते नर सुतारे काष्ठमां, पडे धडोधड डांगरे ॥ मां० ॥ १४ ॥ देह विटंवना नर सुणो, न करो तरणानो लोभरे ॥ जे संघ सरखोरे राजवी, अंते न रह्या ते थोभरे ॥ मा० ॥ १५ ॥ अस्थिर संसार जाणी करी, ममता न करो कोईरे ॥ कवी ऋषभनीरे शीखडी, सांभलजो सहु कोइरे ॥ ॥ मा० ॥ १६ ॥

॥ श्री आत्महितशिक्षा सज्झाय ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणा जयवंताजी ॥ ए देशी ॥ चेतना कहे करजोडीनेरे ॥ सुणोरंग रसीया ॥ प्राणीगर आतमराम ॥ प्रीतम पातळीआ ॥ कुमति कदाग्रह गेहनीरे ॥ सु० ॥ कुडकपटनुं धाम ॥ ॥ प्री० ॥ १ ॥ कुलहीणी कुलक्षणीरे ॥ सु० ॥ लज्जाविहुणी रीसाल ॥ प्री० ॥ क्रोध मुखी चंडालणी ॥ सु० ॥ छोडी द्यो एहनो ख्याल ॥ प्री० ॥ २ ॥ श्री जिनधर्म समाचरोरे ॥ सुणो० ॥ तन मन करी एक चित्त ॥ प्री० ॥ संध्याराग वादळ जीसोरे ॥ सु० ॥ छे संसार अनित्य ॥ प्री० ॥३ ॥ स्वारथीओ संसार छेरे ॥ सु० ॥ सहु स्वार्थे धरे नेह ॥ प्री० ॥ जब स्वारथ पूगे नहींरे सु० ॥ छटकी देखावे छेह ॥ प्री० ॥ ४ ॥ काया कारमीरे ॥ सु० ॥ पलक पलक पलटाय ॥ प्री० ॥ समय समय आउ घटेरे ॥ सु० ॥ क्षण राख्युं न रहाय ॥ प्री० ॥५॥ लौकिक मातपिता सवेरे ॥सुणो०॥

बाह्य कुटुंब कहेवाय ॥ प्री० ॥ माल मूलक ए मालीयोरे ॥सुणो०॥ सबको छोडी जाय ॥ प्री० ॥ ६ ॥ लोकोत्तर कुटुंबथीरे ॥ सुणो० ॥ प्रेम धरो अंतरंग ॥ प्री० ॥ धैर्यपिता व्रत मावडीरे ॥ सु० ॥ भ्रात संजम शुचीचंग ॥ प्री० ॥ ७ ॥ सुकुलणी भगिनी दयारे ॥ सु० ॥ जगहित वच्छल मित्त ॥ प्री० ॥ कुल भासण खीमा धरणीरे ॥सु०॥ पुत्र विवेक पवित्त ॥ प्री० ॥ ८ ॥ शियल भूषण अंबर धरोरे ॥सु०॥ तिलक आणा वीतराग ॥ प्री०॥ सुमति रसोयण तप रुपीरे ॥सुणो०॥ भोजन खटरसपाक ॥ प्री० ॥ ९ ॥ उपशम सुंदर मंदिरेरे ॥ सु० ॥ ज्ञानदीपक मनोहार ॥ प्री० ॥ ध्यान पल्यंक बिछावीनेरे ॥ सु० ॥ धर्मक्रीडा करो सार॥प्री०॥१०॥समकित समचित पालीएरे ॥सुणो०॥ टाली मन विखवाद ॥ प्री० ॥ विनय करो सखाइयोरे ॥ सु० ॥ गाळे कुमतिनो नाद ॥ प्री० ॥ ११ ॥ एह कुटुंब छे तुमतणोरे ॥ सु० ॥ अचळ संबंध ठहराय ॥ प्री० ॥ काल अनादिनो शाश्वतोरे ॥ सु० ॥ भाखेश्री जिनराय ॥ प्री० ॥ १२ ॥ प्रेमे कांत ए सेवतांरे ॥ सु० ॥ प्रगटे रुप अभंग ॥ प्री० ॥ श्री विजयरंग कृपा थकीरे ॥ सु० ॥ दीपे अनुपम अंग॥प्रीतम पातळीआ ॥१३॥इति॥

॥ अभक्ष्यनी सज्झाय. ॥

॥ जिन शासनरे, शुद्धि सद्दहणा धरो, मिथ्यामतिरे, कुमति कदाग्रह परीहरो ॥ महीपाळोरे, ते नर समकित मन खरो ॥ ॥१॥ त्रुटक ॥ मनखरो समकित शुद्ध पालो टालो दोष दया परो ॥

धुर पंच अणुव्रत त्रिण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत धरो ॥ इम देशविरति क्रिया निरति, सुणो भवियण मन रुली ॥ दाखवियेे गुण परह केरा, दोष मम काढो वली ॥ २ ॥ मम काढोरे, लोभी नर कुडो करो ॥ जाणी सावद्यरे, अभक्ष बावीस परिहरो ॥ वड पीपलरे, पीपरने कटुंबरो ॥ उंबर फलरे, रखे तुमे भक्षण करो ॥ ३ ॥त्रुटक ॥ रखे तुमे भक्षण करो माखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा छांडी परहा, दोष मल माटी घणो ॥ परिहरो मंजन रयणी भोजन, प्रथम दुर्गति बारणुंः मत करो वालु अति असुरो, रवि उदे वीण पारणो ॥ ४ ॥ अथाणुंरे, अनंतकाय सवी नामीये, काचा गोरसेर मांहि कठोल न जीमीये ॥ वेगणरे,तुच्छ फल सवि छांडीए, आपण पूर्वरे व्रत लीधुं नवी खंडीए ॥५॥ त्रुटक॥ नवि खंडीए सवि नेम लेई, छेए फल व्रत भंगनो, अजाण फल बहु बीज भोजन ,चलित रस हुए जेहनो ॥ संवरे आणी अभक्ष्य जाणी, तजो ए बात्रीसए ॥ गुरु वयण विगते वळी पीछो, अनंत काय बत्रीसए ॥ ६ ॥ अनंतीरे कंद जाति जाणो सहुं, जस भक्षणरे, पाटक बोल्या छे बहु ॥ कचुरोरे, हलदर निलु आदु वली, वज्र चूरणरे, कंद बहु कुंलि फली ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ वली फलीय कुयली बीज पाखे, चाखे चतुर नर आबली ॥ रतालु पेडालु थेग थोहर, सतावरी लसण कली ॥ गाजर मुला गलो गरणी, वरीयाली ढुंक वथ्थुलो ॥ पल्यंक सूरण बाल बीली, मोथ नीली सांभळो ॥८॥ वंस कारेलारे कुंपल कुंला तरुतणा, ॥ अंकुरारे कोटा ते जल

पोयणा ॥ कुमारिरे. भमर वृक्षनी छालडी ॥ जे कहीयेरे लोके अमृत वेलडी ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ वेलडी केरा तंनु ताजा, खीलोडाने खरसुआ ॥ भोमी फोडा छत्राकार जाणो, निल फूल सवे जुआ ॥ बत्रीस बोल प्रसिद्ध बोल्या, लक्ष्मी रत्न सूरि इम कहे ॥ परिहरे जे नर दोष जाणी ते शिव सुख लहे ॥ १० ॥

॥ उपदेशनी सज्झाय ॥

तुने संसार सुख किम सांभरेरे लोल, दुख विसर्यां शुं गरभावासनाजो ॥ नव मास तुं रह्यो माने उदरेरेलो०मलमूत्र अशुची विसरामजो ॥ तु०॥ १ ॥ तीहां हवा पवन नहीं संचरेरे लो०, नहीं सेज तलाइ पलंगजो ॥ तीहां लटकी रह्यो उंधे शीरेरे लो०दुख सहन अपार अनंतजो ॥ तु० ॥ २ ॥ उठ कोडी सूय ताती करीरे लो० समकाले चांपे कोइ रायजो ॥ तेथी अनंतगुणो तीहां कणेरे ॥लो०॥ दुख सहन विचार तव थायजो ॥तु० ॥३॥ हवे प्रसवे जो मुजने मावडीरे लोल, तो हुं करुं तप जप ध्यानजो ॥ हवे सेवुं सदा जिन धर्मनेरे लोल, मुकु कुगुरुनो संग अज्ञानजो ॥ तु० ॥ ४ ॥ ज्यारे जनमीयो त्यारे भूली गयोरे लो०,उहां उहां रह्यो इम कहेजी ॥ तीहां लागी लालच रमवा तणीरे लो०, आयु अंजलीजल सम वाहजो ॥ तु० ॥ ५ ॥ इम बालक वय रमते गइरे, लो थयो जोबने मकरध्वज समानजो ॥ चित्त लाग्यो तदा रमणी सुखेरे लो० । पुत्र पौत्रा देखी हरखायजो ॥ तु० ॥ ६ ॥ थइ चिंता विवावाजमनीरे लो० । धन

कारणे धावे निस दीसजो ॥ पुण्य हीणो थइ पामे नहींरे लोल, चिंते चोरी करुं के लुटुं देशजो ॥ तु० ॥ ७ ॥ गयो योवन आवी जरा डाकणीरे ॥ लो० ॥ धृज्यो कर पग शीरने शरीरजो, ॥ घरे कह्युं कोइ माने नहींरे लो० ॥ पड्यो करे पोकार नहीं धीर जो ॥ तु० ॥ ८ ॥ इम काल अनंतो वही गयोरे लो०, अब चेत मूर्खना सरदारजो ॥ आवो जोग मळवो मुश्कील छेरे लो० । सेवो श्री जिन शिव संकेनजो ॥ तु० ॥ ९ ॥ कवि दास कहे मुज साहेबोरे लो० । कुडो कपटी कुशील शीर मोडजो ॥ मेंतो दीठो नहीं कोइ देशमांरे लो० ॥ मोटो धर्मनो ठग ठाकोरजो ॥ १० ॥ मुनि तत्त्व सागरना पसायथी रेलो०, धर्म ध्यान थयो मुज मांहेजो ॥ संघसेवा करे शांतिनाथनीरे लोल०। तेथी मंगलिक माल वरतायजो ॥ ॥ तु० ॥ ११ ॥ ओगणीसे त्रीस अशाडनीरे लो० । सुद एकमने बुधवारजो ॥ प्रभु करो कृपा कवीदास परे लो० । धन घातीयां चार निवारजो ॥ तु० १२ ॥

॥ अथ श्रीमार्गानुसारी गुणनी सज्झाय ॥

॥ वीर कहे भविजन प्रत्ये, मार्गतणो उपदेश हो ॥ सुंदर ॥ मार्गना अनुसरवा विना, किम लहे मार्ग प्रवेश हो ॥ सुंदर ॥१॥ मार्गानुसारी गुण भजो, ते संख्या पांत्रीस हो ॥ सुंदर ॥ तेहथी गृहीधर्म योग्यता, होय तेह कहीश हो ॥ सुं० ॥ मार्गानु० ॥ २ ॥ न्यायोपार्जित संपदा (१)॥ शिष्टाचारनो चाह हो (२) ॥ सुं०॥ अन्य

गोत्रीयना कुलशीले, सरखा साथे विवाह हो (३) सुंदर० ॥ मार्गा० ॥ ३ ॥ पाप कार्यथी बीहवुं (४) ॥ देशाचार सापेक्षहो (५) । सुंदर॥ अपयश कोइनो न बोलवो, राजादिकनो विशेषे हो (६) ॥सुंदर०॥ मार्गा० ।.४॥ नहि अति वावर सांकडे, ठाणाये करवो वांसहो ॥सुं०॥ पाडोशी होये भला, नहीं बहुद्वार प्रकाशहो (७) ॥ सु० ॥मार्गा०॥ ५ ॥ संग सदाचारी तणो (८) । मातपितानी सेवहो (९) ॥सुंदर०॥ बहु उपद्रवने उपने, स्थानक तजवा हेव हो (१०)॥ सु० मा० ॥६॥ नीचकर्म अप्रवर्त्तना (११) करवो व्यय जोइ आय हो (१२) ॥ सुंदर ॥ वित्त प्रमाणे वेसडो (१३) ॥ अडगुण बुद्धि प्रथाय हो (१४) ॥ सुं० मा० ॥ ७ ॥ सांभलवुं नित्य धर्मनुं (१५), अजीरणे भोजन त्याग हो (१६) ॥ सुंदर ॥ भोजन करवुं सातिमि, भूख तणे बहु लाग हो (१७) सुं० मा० ॥ ८ ॥ धर्मार्थ कामनुं साधवुं, मांहो मांहे अविरोध हो (१८) ॥ सुंदर ॥ साधु अतिथिनी दीननी, पडि-अरणा जहां संधि हो (१९) ॥ सुंदर० ॥ मार्गा० ॥ ९ ॥ परंपराभव बुद्धिये करी, कार्य तणो अनारंभ हो (२०) सुं० ॥ विनय नयादिक गुण तणो, पक्षपाते नहिं दंभ हो(२१)॥ सु०॥मा० ॥१०॥देशनिकाल विरुद्धनी, आचरणा परिहार हो(२२)सुंदर ॥ कार्य आरंभ अवसरे, शक्ति अशक्ति विचार हो (२३) ॥ सुं० ॥ मा० ॥ ११ ॥ ज्ञानी गुणवंत सेवना (२४), आश्रित पोषवो ध्यान हो (२५) सुंदर ॥ दीर्घ दृष्टि विचारवुं (२६), न्यून विशेषनुं ज्ञान हो (२७) ॥ सुं० ॥मा०॥

१२ ॥ कीधा गुणनुं जाणवुं (२८), जन अनुकुल प्रवृत्ति हो (२९) सुंदर ॥ लज्जा (३०) दयाने (३१) सौम्यता (३२) परउपकारीनी वृत्ति हो (३३) ॥ सुं० मा० ॥ १३ ॥ अंतर रिपु षडवर्ग जे, काम क्रोध लोभ मान हो ॥ सुंदर ॥ मदने हर्ष जीतवा (३४), वश पंचिंद्रिय तान हो (३५) सुं० मा० ॥ १४ ॥ एह गुणे जे गृहीपणुं, पाळे ते धन्य जीव हो ॥ सु० ॥ ते भव जुगल आराधतां, हुए आनंदी सदीव हो ॥ सुं० मा० ॥ १५ ॥ प्राये हुए तेहने विषे, धर्म बीजनो प्रसार हो ॥सुं०॥ शुद्ध भूमीये बीज वावीया,धान्य जाति विस्तार हो ॥ सुं० ॥ मा० ॥ १६ ॥ इम जाणी गुण आदरो, आदि धार्मिक एह जाणि हो ॥ सुं० ॥ पंडित शांतिविजय तणो, मान कहे शुभवाणी हो ॥ सु० मा० ॥ ॥ १७ ॥ इतिश्री मार्गानुसारीना पांत्रीस गुणनी सज्झाय संपूर्ण.

॥ कठिआरानी सज्झाय ॥

॥ वीर जिनवररे गौतम गणधरने कहे, गुरु वाणीरे पुन्यवंत प्राणी सद्दहे ॥ कठियारोरे परदेसी दुरबोधए, नवि निश्चयरे नवि पामे प्रतिबोधए ॥ त्रुटक ॥ प्रतिबोध निश्चय ते नवि पामे, जीवते दुर बोधए ॥ धन करम मरम जोग जडने धर्म साथे विरोधए ॥ तव कहे गौतमस्वामी,कर संपुट करी मनोहार ए, दृष्टांत कठियारातणो, मुज कहोने जगदाधार ए ॥ १ ॥ ढाळ ॥ तव जल्पे चरम जीनेसर तेह भणी, सुण उत्तमरे गौतम गोत्र तणा धणी ॥ कठियारोरे कोइक एक

पुरे रहे, तेतो अनुदीनरे, मूली लेवा वन वहे ॥ त्रुटक ॥ वन वहे ते इंधण काज गिरिगह्वर गयो, अतिसरल सुंदर तरु निहाली, हैया मांहे हरखीत थयो ॥ तेहतरु छेद्यो मूलखणतां, नीकळी एक माटली, वर पंचरत्ने जडित अद्भुत, जाति रुपतणी भली ॥२॥ सीर मूलीरे वांमे ते धरी माटली, घरे आवनारे त्रुप्ति हुइ अति आकुली ॥ मूली वेचीरे न शक्यो ते घरमां ठवि, खल खावारे आव्यो दीनपणुं चवी ॥ त्रुटक ॥ दीनपणुं चवि सुख विपुण हुतो, उछीनो खल आणीओ ॥ कनक माटली मांहे घालि, रांधे मूरख प्राणीओ ॥ मूलीका केरा खंड कापी, अगनी मांहे ते धरे॥तेह तणो परिमल अति अनर्गल०सवल सघले वीस्तरे ॥३॥ एहवे एकरे धन धने अवतारीओ, तीण पंथरे वडवखती व्यवहारीओ॥ जातां थकांरे गंध घणो तस आवीयो, मन भीतररे विस्मय भारी पामियो ॥ त्रु०॥ पामीयो तें गंध किहांथी, बावना चंदन तणो, एवो उदारने कवण भोगी, द्रव्य एम केहने घणो ॥ ते गंधने अनुसार आवे, गेह कठियारा तणे, अति असमंजस निहाळी, शेठ शीखामण भणे ॥ ४ ॥ अरे मुरखरे ममकर तुं अकाजरे, कांइ बालेरे बावना चंदन आजरे ॥ तुज आयुरे मूलि कनक बरोबरे ॥ सुख भोगवरे भामिनि सुंदर मंदिरे ॥ त्रु० ॥ मंदिर सुंदर जिम पुरंदर, कर विनोद विलासए, एह रयण रुडां कांइले, पुरवुं तुज आशए ॥ मूरख समजे नहीं, कंचन रयण विणसाडे जडे, मनखेद धरता घरे सिधाव्या, शेठ उपनय जगवडे ॥ ५ ॥ भवपाटणरे विस्तर भूरी वखाणीये, मन जालीरे जीव कबाडी जाणीये ॥ रुडी कायारे

कनक तणी ए माटली, पंचइंद्रिरे जोती रतन उपर छली ॥ त्रु० ॥ उपर छली रुचि रत्न केरी, विषय खोल असार ए, तेहतणे काजे आयुचंदन दहे मुढ गमारए ॥ निजकाया इंद्रि विगुण हुतो, कांति सकल करे वृथा, ए वात सघले विस्तार पामी, जेम तेल जल मांहे यथा॥६॥शेठ सद्गुरुरे प्रीति धरमति बोधवा, उपगारीरे दीए उपदेश नवा नवा ॥ नवि बुझेरे भारे करमी जीवडो, जन्म अंधारे करे शुं नस दीवडो ॥त्रु०॥ दीवडो ते शुं करे सद्गुरु,विषय अंधा जे जना, कलह कारी घरह केरी, वृथा निर्मलता विना ॥ए सुणी उपनय विषम विषय खल समो वीख वामीए,गुण विजय अधिपति वीरजपाति, परम पदवी पामीए ॥ ७ ॥इति कठीयारानी सज्झाय ॥

॥ श्री कर्म छत्रीसी ॥

॥ राग आसाउरी ॥ कर्म थकी छुटे नहीं प्राणी, कर्म सबल दुख खाणजी ॥ कर्म तणे वश जीव पडया सहु,कर्म करे ते प्रमाणजी ॥ १ ॥ करम० ॥ टेक ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ती अतुल बळ, वासुदेव बलदेवजी ॥ ते पण कर्म विंटव्या कहीये, कर्म सबल नीत मेवजी ॥ २ ॥ क० ॥ मुक्ति भणी उठया जे मुनिवर, ते पण चुकया केइजी सतीया मांहे पडयां दुख सबलां, मन को पाप करेइजी ॥ क० ॥ ३॥ कुण कुण जीव विटंब्या करमे, तेहतणां कहु नामजी ॥ कर्म विपाक घणा अति कडुवा, धरम करो अभिरामजी ॥ क० ॥ ४ ॥ आदिसर आहार न पाम्या, वरस सीम कहेवायजी ॥ खातां पीतां दान दीयंतां

मतको करो अंतरायजी ॥ क० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ तीर्थंकर लीधो, स्त्रीनो अवतारजी ॥ तप करतां माया तणी कीधी, कर्मे नगरनु कारजी॥क०॥६॥गोशाले संगम गोवाले, कीधो उपसर्ग घोरजी ॥ महावीरने चीस पडावी, करमसुं केहो जोरजी ॥ क० ॥ ७ ॥ साठ सहस सुतनो समकाले, लाग्यो सबलो दुःखजी ॥ सगरराय थयो मूर्छागत, करम न सांसे सुखजी ॥क०॥ ८ ॥ वळी सुभूम अतिसुख भोगवतो,षट्खंड लीलविलासजी ॥ सातमी नरकमांहे लइ नांख्यो, कर्मनो किश्यो विसवासजी ॥ क० ॥ ९ ॥ ब्रह्मदत्तने आंधो कीधो, दीठां दुःख अपारजी ॥ कुरुमति कुरुमति पडयो पोकारे, सातमी नरक मोजारजी ॥ क० ॥ १० ॥ इंद्र वखाण्यो रूप अनोपम, ते विणठो ततकालजी सातसें वरस सही बहु वेदना, सनत्कुमार करालजी ॥क० ॥११॥ कृष्णे कुण अवस्था पामी, दीठो द्वारिका दाहजी ॥ मातपिता पण काढी न शक्या, आप रह्यो वनमांहिजी ॥ क० ॥ १२ ॥ राणो रावण सबल कहातो, नवग्रह कीधां दासजी ॥ लक्ष्मण लंकागढ लूटायो दशशिर छेद्यां तासजी ॥ क० ॥ १३ ॥ दसरथ राय दीयो देसवटो राम रहीयो वनवासजी ॥ वली वियोग पडयो सीतानो, आठ पहोर उदासजी ॥ क० ॥ १४ ॥ चिर प्रतिपाल्यो चारित्र छोडी, लीधो बांधवराजजी ॥ कुंडरीकने कर्म विटंब्यो, कोइ न सर्यो काजजी ॥ क० ॥ १५ ॥ कोणिक कठ पंजर मांहि दीधो, श्रेणीक आपणो बापजी ॥ नरक गयो नारी मारी तो, प्रगटयो हिंसा पापजी ॥ क० ॥ १६ ॥ जसु अढार मुगटबंध राजा, सेवक रहे करजोडीजी ॥ को-

णिकथी बीहतो राय चेडो, कूप पडयो बलछोडीजी ॥ क० ॥ १७ ॥ लुब्ध्यो मुंज मृणालवतीसुं, उज्जेणीनो रायजी ॥ भीख मंगावी सुली दीधो, कर्णाट राय कहायजी ॥ क० १८ ॥ वाचना पांचसें साधुने देतो, जोगी वो थयो ग्रद्धजी ॥ अनार्य देशे सुमंगल उपन्यो, जोगी वटे संबंधजी ॥ क०॥ १९ ॥ कृष्ण पिताने गुरु नेमीश्वर, द्वारिका ऋद्धि समृद्धजी ॥ ढंढण ऋषि तिहां आहार न पाम्या, पूर्व कर्म प-सिद्धजी ॥ क० ॥ २० ॥ आर्द्र कुमार महंत मुनिश्वर, व्रत लीधो वैरागजी ॥ श्रीमति नारी संघाते लुब्ध्यो, है है कर्म विपाकजी ॥क० ॥ २१ ॥ सेलक नामे आचारज मोटो, राज पिंड थयो गृधजी ॥ मद्यपान करी रहे सुतो, नहि पडिक्कमणा सुद्धजी ॥ क० ॥ २२ ॥ कमलप्रभ उत्सुत्र थकी थयो, साविद्या चारिज्जजी ॥ तीर्थंकर दुर्लभे लींगमांड्यो, ए देखो अचरिजजी ॥ क० ॥ २३ ॥ नंदिषेण श्रेणिकनो बेटो, महावीरनो शिष्यजी ॥ बार वरस वेश्याशुं लुब्ध्यो, कर्मनी वात अलखजी ॥ क० ॥ २४ ॥ भगवंतनो भाणेज जमाई, वीरसुं कीधी वेठीजी ॥ तीर्थंकरनां वचन उथ्थाप्यां, हुवो जमाली सुरढंढजी ॥ क० ॥ २५ ॥ रज्जासाधवीने रोग उपन्यो, विणठ्यो कोढ सरीरजी ॥ भमी अनंत भव दुःख सहेती. दोष देखाडयो नारिजी ॥ क० ॥ २६ ॥ शील सन्नाह घणो समजावी, तोहि न मुक्या सालजी ॥ रुषिराय रुली भवमांहे, भुंडी घणो हवालजी ॥ क० ॥ ॥ २७ ॥ लख भवे सीम रुली वली लखमणा, कुवचन बोल्यां एमजी ॥ तीर्थंकर पडपीड न जाणी, मैथुन निवार्यो केमजी ॥ क० ॥

॥ २८ ॥ मुई जाणी मुकी वनमांहे, सुकुमालिका सरुपजी ॥ सार्थ वाहे घर घरणी कीधी, कर्मनो अकल सरुपजी ॥ क० ॥ २९ ॥ रोहिणी साधु भणी वहोराव्यो, कडवो तुंबो तेडजी ॥ भव अनंत भमी चिहु गतिमां, कर्म न मुके केडजी ॥ क० ॥ ३० ॥ एम मृगांक लेखा मृगावती, सतानीकनी नारीजी ॥ कष्टपडी कमला रति सुंदरी कहेतां नावे पारजी ॥ क०॥ ३१ ॥ कर्म विपाक सुणी एम कडवा, जीव करे जिन धर्मजी ॥ जीव अछे कर्म तुं जीत्यो, पण हवे जी पितु कर्मजी॥क०॥३२॥ श्रीमूलतान नगर मूलनायक, पार्श्वनाथ जिण जोयजी ॥ वासुपूज्य श्री सुमति प्रसादे, लोक सुखी सहु कोयजी ॥ ॥ क० ॥ ३३ ॥ श्री जिनचंदसूरि, जिनसिंघसूरि, गच्छपति गुण भरपूरजी ॥ सिंधु जेसलमेरी श्रावक, खडतर गच्छ पडुरजी ॥क०॥ ॥ ३४ ॥ सकल चंद सद्गुरु सुपसाये, सोलसे अठसट्टीजी, कर्म छत्रीसी एम ए कीधी, माह तणी सुद छट्ठीजी ॥ क०॥ ३५ ॥ कर्म छत्रीसी काने सुणीने करजो व्रत पच्चखाणजी ॥ समय सुंदर कहे शिवसुख लेशो, धर्म तणो परमाणजी ॥ क० ॥ ३६ ॥

॥ श्री परदेसी राजानी सज्झाय. ॥

॥ प्रभुजी वीर जिणंदने वंदीए ॥ ए देशी ॥

सूरिवर श्वेतांबी नयरी समोसर्या, श्रीकेशि गणधारहो ॥ परदेशि राजा ॥ आवो सांभलिये दीये गुरु देशना ॥ प्राणी भवसागर भमतां थकां, लाध्यो नर अवतारहो ॥ प० ॥ ॥१॥ पापी आतमशुं निद्रा

करे, एतो जागरण ठाम हो ॥प० ॥ निश्चय नरक तणां दुख लाववा, दुती ए हिंसा नाम हो ॥ प० ॥२॥ प्राणी आतम सरखो प्राहुणो आव्यो छेज घर देह हो ॥ प० ॥ तो तुं तेहने केम नथी देखतो, असंख्य प्रदेशी एह हो ॥ प० ॥३ ॥ एहनुं मूल घर मोक्षमां मोटकुं, एहने ऋद्धि अपारहो ॥ प० ॥ एतो अनंत चतुमयी आतमा, एकत्रीस गुणनो भंडार हो ॥ प० ॥ ४ ॥ नावे नजरे ते चर्म नेत्रथी, ज्ञानथी देखो सरुप हो ॥ प० ॥ एवां वचन सुणी गणधर तणां, बोल्यो नास्तिक भूप हो ॥प० ॥५ ॥ स्वामी जीव किहां दिसे नहीं, जोयु में चेरशरीर हो ॥ घाली भुंइरा मांडढ कीयो, जिहां न संचरे समीर हो ॥ प० ॥ ६ ॥तो ते मरण लह्यो जीव क्यां गयो, क्यांथी आव्या क्रमीया जीव हो ॥ प० ॥ एक जीवने साटे एटला, आव्यो तोए अजीव हो ॥ प० ॥ ७ ॥ जोयो चूर्ण करी जीव नवि जडयो जोयो तोळीने भार हो ॥ प० ॥ माटे जगमांहे जीव नथी, किहां पंचभूत पिंड विशेष हो ॥प० ॥ ८ ॥ गुरु कहे शंख शब्द भुंइरे करो, सांभले बाहिर केम हो ॥ प० ॥ कोने शब्द किहांथी आवीयो, जीवगति पण तेम हो ॥ प० ॥ ९ ॥ अरणी काष्ट चूरण करी जोइए, ते पण अग्नि ते मांहि हो ॥प०॥ दईडो पत्र तणो करी जोइए, तेनोतोलीए भार हो॥प०१०॥फरीने ते पाछो वली तोलिए,करीने पवन संचार हो ॥ प० ॥ माटे सूक्ष्म स्वरुप ए जीवनो, पामो कोइ न पार हो ॥ प० ॥ ११ ॥ पहोंचे आयु अनंत प्रभु तणां, केवलज्ञाने संयुत हो ॥ पण ते भाग अनंतमो नकही शके, आतम सूक्ष्म अनंत हो ॥ प० ॥ ॥१२ ॥ पुण्य पापनुं फल प्रत्यक्ष छे, निर्भागी धनवंत हो ॥ प० ॥

माटे पुण्यसंयोगे पामीओ, राज्यनी ऋद्धि महंत हो ॥ प० ॥ १३ ॥ एवो गुरु उपदेश ते सांभली, प्रतिबोध पाम्यो भूपाल हो ॥ प० ॥ मूल समकित बारे व्रत ग्रह्यां, वैराग्य चित्त विशाल हो प० ॥ १४ ॥ राणी सूरिकान्ता व्यभिचारिये, दिधुं राजाने विष हो ॥ प० ॥ शुभ ध्याने मरी सुर उपनो, ए सूरियाभ विमान हो ॥ प० ॥ १५ ॥ पामी नरभव मोक्षमां ते जशे, माहाविदेह क्षेत्र मोझार हो ॥ प० ॥ एम वीरजी गौतमने कहे, रायपसेणी विचार हो ॥ प० ॥ १६ ॥ केशी पास प्रभु संतानीया, कीधो त्यांथी विहार हो ॥ प० ॥ स्वामी गौतम पासे पडिवज्युं, शासन वीरनुं सार हो ॥ प० १७ ॥ एतो उतराध्ययनथी जाणजो, गणधर प्रश्न विचार हो ॥ प० ॥ थाजो विजय खुशाल पसायथी, उत्तम नित्य जयकार हो ॥ प० ॥१८ ॥

॥ सुबाहु कुमारनी सज्झाय ॥

॥ हवे सुबाहु कुमर एम विनवे, अमे लइशुं संजम भार ॥ ॥ माडी मोरीरे ॥ मा में वीर प्रभुनी वाणी सांभळी, तेणे में जाण्यो अस्थिर संसार ॥माडी मोरीरे ॥ हवे हुं नहीं रहुंरे संसारमां ॥ १ ॥ हांरे जाया तुजविना सुना मंदिर माळीआं, जाया तुज विण सुनो संसार ॥ जाया मोरारे ॥ माणेक मोतीने मुद्रिका ॥ कांइ ऋद्धि तणो नहीं पार ॥ जाया मोरारे ॥ तुज विना घडीय न नीसरे ॥२॥ हांरे माजी तन धन जोबन कारमुं, कारमो कुटुंब परिवार ॥ माडी मोरीरे ॥ कारमा सगपणमां कुण रहे, मेंतो जाण्यो अस्थिर संसार॥

॥ माडी० ॥ हवेहु० ॥ ३ ॥ हांरे जाया संजमपंथ घणो आकरो, जाया व्रत छे खांडानी धार ॥ जाया० ॥ बावीस परिसह जीतवा, जाया रहेवुंजी वनवास ॥जाया०॥तुज०॥४॥ हांरे माजी वनमां ते रहे छे मरगला, तेनी कुण करे छे संभाळ ॥ माडी० ॥ वन मृगनी पर चालशुं, एम एकलडी निरधार ॥ माडी० ॥ हवे० ॥ ५ ॥ हांरे जाया शीयाले शीत बहु पडे जाया उनाले लुवाय ॥ जाया मोरारे ॥ जाया वरसा लोचनी दोहीलो, कांइ वडीए वरस शोजाय ॥ जाया मोरारे॥तुज० ॥६॥हांरे माजी नरक निगोदमां हुं भम्यो, भम्यो अनंत अनंती वार ॥माडी०॥ छेदन भेदन में सह्यां, ते कहेतां न आवे पार ॥ माडी० ॥ हवे० ॥ ७ ॥ हांरे जाया पांचसें पांचसें नारीयो, रुपे अपच्छरा समान ॥ जाया० ॥ उचा ते कुलनी उपनी, रहेवा पांचसे पांचसें मेहेल ॥ जाया मोरारे तुज० ॥ ८ ॥ हांरे माजी घरमां जो नीकले एक नागणी, सुखे निद्रा न आवे लगार ॥ माडी मोरीरे ॥ तो पांचसें नागणीयोमां केम रहुं, मारुं मनडुं आकुल व्याकुल थाय ॥ माडी मोरीरे हवे० ॥ ९ ॥ हांरे जाया एटला दिवस हुं तो जाणती, रमाडीश वहुरोना बाल ॥ जाया मोरारे ॥ दिवस अटारो आवीयो, तुं लेछे संजम भार ॥ जाया०॥तुज०॥ १० ॥ हांरे माजी मुसाफर आव्यो कोइ परुणलो, फरी भेगो थाय न थाय ॥ माडी मोरीरे ॥ एम माणस भव पामवो दोहीलो ॥ धर्म विना दुर्गतिमां जाय ॥ माडी० हवे० ॥ ११ ॥ हवे पांचसो वहुरो एम विनवे, तेमां वडेरी करे जवाब ॥ वालम मोरारे ॥ स्वामी तमे तो संजम

लेवा संचर्यां, स्वामी अमने कवण आधार ॥ वा० ॥ वालम विना केम रही शकुं ॥ १२ ॥ हांरे माजी मात पिताने भाई बेनडी, नारी कुटुंबने परिवार ॥ माडी० ॥ अंत समय अलगा रहे, एक जैन धर्म तरण शरण ॥ माडी० ॥ हवे० ॥ १३ ॥ हांरे माजी काची ते काया कारमी, सडी पडी विणसी जाय ॥ माडी० ॥ जीवडो जाये ने काया पडी रहे, मुआ पछी बाळी करे राख ॥ माडी०॥ हवे०॥१४॥ हवे धारणी माता रही विनवे, आ पुत्र नहीं रहे संसार ॥ भविक जनरे ॥ एक दिवसनुं राज भोगवी, संजम लीधुं महावीर स्वामी पास ॥ भविक जनरे ॥ सोभागी कुंवरे संजम आदर्यु ॥ १५ ॥ तप जप करी काया शोषवी, आराधी गया देवलोक, भविक जनरे ॥ पंनर भव पुरा करी, महाविदेह क्षेत्रमां जाशे मोक्ष ॥ भविक जनरे सोभागी कुंवर संयम आदरे ॥ १६ ॥ हांरे माजी विपाक सूत्रमा भांखीउ बीजा सूत्र अखंड मोजार, भविक जनरे ॥ प्रथम अध्ययने ए कह्युं सूत्र विपाकमां अधीकार, भविक जनरे ॥ सोभागी कुवरे संयम आदर्यो ॥ १७ ॥

मोह मिथ्यात्वनी सज्झाय.

॥ मोह मिथ्यातनी निंदमां, सुतो काल अनंत ॥ माजी मोरी ॥ परमाधामीने वश पडयो, पाम्यो दुःख अनंत ॥ माजी मोरी ॥१॥ करणी तो करसुं चित नीरमली ॥ ए टेक ॥ रागतणा रसीआ हुंता, सुण सुण करता तान ॥माजी०॥धर्मकथा नवि सांभली, कापे तेहना कान ॥ माजी० ॥ क० ॥ २ ॥ परनारीना रूपनो, विषय वखाण्यो

जोय ॥ माजी० ॥ देव गुरु नीरख्या नहीं, तेने आंखो काढे दोय ॥ मा० ॥ क० ॥ ३ ॥ आगनी धखंती पुतळी, चांपे हृदयँ मोजार ॥ मा०॥ परनारीना संगथी, पाम्यो दुःख अपार ॥ मा० ॥ ४ ॥ सुरभी गंध सुंध्या घणा, गुंथ्याा फुल फराक ॥ मा० ॥ अंतर फूलेल पडावीया, कापे तेहना नाक ॥ मा० ॥ क० ॥ ५ ॥ जूठ वचन बोल्या घणुं, कुड कपटनी खाण ॥ मा० ॥ परमाधामी तेहनी, जीभ काढे जडताण ॥मा०॥क०॥६॥ गाडे वेहेले बेसीने, बळद दोडावे वाट ॥ मा० ॥ लोहमां धुंसरो धखावीयो, लेइ दोडावे घाट ॥ मा० ॥क० ॥ ७ ॥ रस्ते लुंटया रांकने, करी करी कीध अन्याय ॥ माजी० ॥ मांकण मारे तेहने, पीले घाणी मांहे ॥मा०क०॥८॥काचां कुलां फल भख्यां, गाजर मूलाकंद ॥ मा० ॥ उंधे मस्तक उपनो, पिडाया करे आक्रंद ॥ मा० ॥ क० ॥ ९ ॥ वनस्पति छेदन करी, काप्या तरु वनराय ॥ मा० ॥ सुडण निदण कीधा घणा, कापे तेहनी काय ॥ मा० ॥ क० ॥ १० ॥ टांका जवारा वावीने, फुलां सेज विछाय ॥ मा०॥ सुख भोगविया तेहने, कांटा चांपे काय ॥ मा०क० ॥ ११ ॥ कुलीं कलीयां फुलनी, तोडी गुंथ्या हार ॥ मा० ॥ सामली वृक्षे बांधीने, दीए कोरडानी मार ॥ मा० ॥ क० ॥ १२ ॥ वचन चूक्या नर जे हता, कुडाकपटी जेह ॥ मा० ॥ पकडी पछाडे पर्वतथी, खंडोखंड करता देह ॥ मा० ॥ क० ॥ १३ ॥ घरमां कलेश करावती, काथा कबली नार ॥ मा० ॥ परमाधामी तेहने, मुखमां भरेरे अंगार ॥ मा० ॥ क० ॥ १४ ॥ कुहाडे करीने छेदीयां, लीलां मोटां झाड

॥ मा० ॥ परमाधामी तेहने, छेदे मस्तक फाड ॥ मा० ॥क०॥१५॥ कोश कोदाला पावडा, पृथ्वी विदाहरण जेह ॥ मा० ॥ माग्यां जे कोइ आपशे, पामशे दुःख अछेह ॥ मा० ॥ क० ॥ १६ ॥ पूज्य कहीने पूजावता, करता अनरथ मूल ॥मा० ॥ कामिनी गर्भ गलावता, तेने परोवी दीधा त्रिशूल ॥ मा० ॥ क० ॥ १७ ॥ करी अंगीठी अग्निनी, चलम भरे चकडोल ॥ मा० ॥ गांजा तमाकु जे पीए, ते तो गया नरकनी पोळ॥ मा०क० ॥ १८ ॥ जे घर रमता होलीये, हसता पाणी ढोल ॥मा०॥ परमाधामि तेहनी, घणी उडाडे रोल ॥ मा० ॥ क० १९ ॥ तातुं तरवुं उकाळीने, करी करी क्रोध अपार ॥ मा० ॥ पीचकारी भरीने छांटता, उपर नांखे खार ॥ मा० ॥क०॥ २० ॥ घणा होका पीवता, अगनि जलादिक जीव ॥ मा० ॥ ताता लोह तपावीने, मुख चांपे करे रीव ॥ मा० ॥ क० ॥ २१ ॥ पाप करमथी उपनो, कुडा विपाक मांहे ॥ मा० ॥ उपर चुंटे कागडा, मांहे कीडा खाय ॥ मा० ॥ क० ॥ २२ ॥ मानवनो भव पामीने, हवे जावुं नही हार ॥ मा० ॥ निरंतर दर्शन जिन धर्मनो, लेशे तो पामे भवपार ॥ मा० क० ॥ २३ ॥ इति मोह मिथ्यात्वनी सज्झाय ॥

॥ श्री सिद्ध सज्झाय ॥

आठ कर्म चूरण करीरे लाल, आठ गुण परसिद्ध ॥ मेरे प्यारे ॥ क्षायिक समकितना धणीरे लाल ॥ वंदु वंदु एहवा सिद्ध ॥ ॥ मेरे प्यारे ॥ आ० ॥ १ ॥ अनंत नाण दरसण धरारे लाल,

चोथुं वीर्य अनंत ॥ मे० ॥ अगुरु लघु सूक्ष्म कह्यारे लाल आव्या बाध महंत ॥ मे० ॥ आ० ॥ २ ॥ जेहनी काया जेहवीरे लाल, उणी त्रीजे भागे ॥ मे० ॥ सिद्ध सिल्लाथी जोयणेरे लाल, अवगाहना वीतरागे ॥ मे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ सादि अनंता तिहां घणारे लाल, समय समय तेह जाय ॥ मे० ॥ मंदिर मांहे दिपालीकारे लाल, सघलो तेज समाय ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ मानव भवथी पामीयेरे लाल, सिद्ध तणा सुख संग ॥ एहनुं ध्यान सदा धरीरे लाल, एम बोले भगवई अंग ॥ मेरे० अ० ॥ ५ ॥ श्री विजयदेव पटोधररे लाल, श्री विजयसेन सुरीस ॥ मे० ॥ सिद्ध तणा गुण ए कह्यारे लाल, देव दीए आसीस ॥ मे० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्ध सज्झाय संपूर्ण. ॥

॥ मेघकुमारनी सज्झाय ॥

॥। धारणी मनावेरे मेघ कुमारनेरे, तुं मुज एकज पुत ॥ तुजविण पुत्ररे दीनडा कीम गमेरे, राखो राखो घरतणा सुत ॥धा०॥ ॥ १ ॥ तुजने परणावुंरे आठ कुमारिकारे, ते बहु अति सुकूमाल॥ मलपती चालेरे जीम वन हाथणीरे, नयण वयण सुविशाल ॥धा०॥ ॥ २ ॥ जाया ए ऋध सघली भोगवोरे, ए करुणा नहीं तुजवीर ॥ हुं तुज मातारे एटलुं विनवुंरे, पछी लेज्यो दीक्षा हो वीर ॥ धा० ॥ ॥ ३ ॥ मुज मन जाणारे हुंस हती घणीरे, जे रमाडीस वहु तणां बाल ॥ दैव अटारोरे देखी नवी शक्योरे, उपायो एहज झाल

॥ धा०॥ ४ ॥ सुण सुण माडीरे मेघ इम विनवेरे, नथी नथी केहनो कोय ॥ इण संसारेरे थीर को नवी रह्यारे, हरीहर चक्रवर्त्ती जोय ॥ धा० ॥ ५ मेघ कुमारेरे माता प्रतेने बुझवीरे, दीक्षा लीये वीर-जीनी पास ॥ अमर कहे ए मुनिने वांदतां रे, छुटसे भव तणो पास ॥ धा० ॥ ६ ॥

॥ नवपद महिमानी सज्झाय ॥

॥ सरसती माता मया करो, आपो वचन विलासोरे ॥ मयणासुंदरी सती गायशुं, आणी हीयडे भावोरे ॥ १ ॥ नवपद महीमा सांभळो, मनमां धरी उल्लासोरे ॥ मयणासुंदरी श्रीपालने, फलीयो धर्म उदारोरे ॥ न० ॥ २ ॥ मालव देशे मांही वली, उज्जेणी नयरी जामोरे ॥ राज्य करे तीहां राजीओ, पुहवी पाल नरिंदोरे ॥ न० ॥ ॥ ३ ॥ राय तणी मन मोहनी, धरणी अनोपम दोयरे ॥ तासु कुंखे सुता अवतरी, सुरसुंदरी मयणां जोडरे ॥ न० ॥ ४ ॥ सुर सुंदरी पंडित कने, शास्त्र भणी मिथ्यातोरे ॥ मयणासुंदरी सिद्धांतनो, अर्थ लीयो सुविचारोरे ॥ न० ॥ ५ ॥ राय कहे पुत्री प्रत्ये, हुं तुठो तुम जेहोरे ॥ वंछीत वर मागो तदा, आपु अनोपम जेहोरे ॥ न०॥ ॥ ६ ॥ सुरसुंदरीए वर मागीयो, परणावी शुभ ठामोरे ॥ मयणां-सुंदरी वयणां कहे, कर्म करे ते होयेरे ॥ न० ॥ ७ ॥ करमे तुमारो आवीयो, वरवरो बेटी जेहोरे ॥ तात आदेशे करग्रह्यो, वरीयो कुष्टी तेहोरे ॥ नव० ॥ ८ ॥ आंबिलनो तप आदरी, कोढ अढारनो का-

लोरे ॥ सद्गुरु आज्ञा शिरधरी, हुओ राय श्रीपालोरे ॥ न० ॥९॥ तप प्रसादे सुख संपदा, प्रत्यक्ष स्वर्गे पहुंतोरे ॥ उपसर्ग सवी दूरे टळ्या, पाम्यो सुख अनंतोरे ॥ न० ॥१०॥ देश देशांतर भमी करी, आव्यो ते वरसंतोरे ॥ नव राणी पाम्या भली, राज्य पाम्यो मतरंगोरे ॥ नव० ॥ ११॥ तपगच्छ दिनकर उगीयो, श्रीविजयसेन सुरिंदोरे, तास शिष्य विमल एम विनवे, सतीय नामे आणंदोरे॥१२॥

॥ साधुजीनी सझाय ॥

॥ पंचमहाव्रत दशविध यतिधर्म, सत्तर संजम भेद पालेजी ॥ वैयावच दस नवविधब्रह्मचर्य, वाड भली अजुआलोजी ॥ १ ॥ ज्ञानादि त्रय बारे भेदे, तप करे जे अनीदानजी ॥ क्रोधादीक चारेनो निग्रह, ए चरणसीतेरी मानजी ॥२॥ चउविध पिंड वसती वस्त्र पात्र,निर्दूपण ए लेवेजी, सुमति पांचवली पडीमां बारह, भावना बारह सेवेजी ॥३॥ पचविश पडीलेहण पंचइंद्रीया ॥ विषय विकारथी वारेजी, त्रिण गुप्तिने च्यार अभिग्रह, द्रव्यादिक संभारेजी ॥ ४ ॥ करणसीतेरि एहवी सेवे,गुण अनेकवली वाधेजी ॥ संजमी साधु तेहने कहीये, बीजा सवी नाम धरावेजी ॥ ५ ॥ ए गुण विण प्रव्रज्या बोली, आजीविकाने तोलेजी, ते खटकाय असंजमी जाणे,धर्मदास गणी बोलेजी ॥६॥ ज्ञानविमल गुरु आणा धरीने, संजम शुद्ध आराधोजी ॥ जीम अनुपम शिवसुख साधो,जगमां कीर्त्ति वाधेजी ॥७॥

॥ अथ श्रीसीताजीनी सज्झाय ॥

॥ जनकसुता सीता सती० रामचंद्रनी घरनारी रे०॥ कैके-

थी वरअनुभावथी ॥ पोत्यां वन मजारीरे ॥ १ ॥ अती रूपे रावणे हरी, तीहां राख्युं शील अखंडरे, रावण हणी लंका ग्रही, लक्ष्मण राम परचंदरे ॥ शीअलवंती सीता वंदीए० ॥ २ ॥ अनुक्रमे अयोध्याए आवीआ, करमेवशे थयुं दुखरे ॥ गरभ वंती वने एकली, मुकी पण थयु सुखरे ॥ शी ॥ ३ ॥ लव अने कुश सुत परगडा ॥ विद्यावंत विलासरे ॥ अनुक्रमे दीजे उतरया, जल थयु अग्नी जालारे शील० ॥ ४ ॥ दीक्षा ग्रही सुरपती थआ, अच्युतकल्पेतेहरे० ॥ तीहांथी चवी भव अंतरे ॥ शिव लेशे गुणगेहरे० ॥ शील० ॥ ५ ॥ लवकुश हनुमानजी राम लह्या शिव वासरे० ॥ रावण लक्षमण पामसे, जिनगणधर पद खासरे ॥ शील० ॥ ६ ॥ पद्मचरित्रे एहना, विस्तारे अधिकाररे० ज्ञानविमल गुरुथी लहो, सुख संपत्ति जय काररे० ॥ शील० ॥७॥ शीयलवंती सीता वंदीए ॥ संपूर्ण ॥

॥ इति सज्झाओ सम्पूर्ण ॥

॥ अथ पन्नर तिथिनी थोयो ॥

प्रतिपदा स्तुति.

॥ मंगल आठ करी जस आगल ॥ ए देसी ॥

॥ एक मिथ्यात्व असंजम अविरति, दूर करी शीव वसीयाजी ॥ संजमसंवर विरति तणा गुण, क्षायिक समकित रसीयाजी ॥ कुंथुं जिणंद सत्तरमा जिनवर, जे छठ्ठा नरदेवाजी ॥ पडवा दिन ते

शिवगति पहोता, सेवुं ते नित्य मेवाजी ॥ १ ॥ एक कल्याणक संप्रति जिननुं, इम दशनुं परिमाणजी ॥ दस क्षेत्र मळी त्रण चोवीसी, तेहनां त्रण कल्याणकजी ॥ पडवानो दिन अनोपम जाणी, समकित गुण आराधोजी ॥ सकल जिणेसर ध्यान धरीने, मनवंछीत फल साधोजी ॥ २ ॥ एक कृपारस अनुभव संयुत, आगम रयणनी खाणजी ॥ भविक लोक उपकार करवा, भाखेश्री जिनवाणीजी ॥ जिम मींडां लेखे नवि आवे, एकादिक विणुं अंकजी ॥ तिम समकित विण पक्ष न लेखे, प्रतिपद सम सुविवेकजी ॥ ३ ॥ कुंथुं जिनेसर सांनिध्यकारी, सेवे गंधर्व यक्षजी ॥ वंछित पूरे संकट चूरे, देवी बाला प्रत्यक्षजी ॥ संवेगी गुणवंत महायश, संयम रंग रंगीलाजी ॥ श्री ज्ञान विमल कहे श्री जिननामे, नित नित होवे लीलाजी ॥४ ॥

॥ अथ बीजनी स्तुति ॥

॥ बीज दीने धर्मनुं बीज आराधीए, शीतल जिनतणी सिद्धिगति साधीअे ॥ श्रीवत्स लंछन कंचन सम तनु, दृढरथ नृप सुत देह नेउ धणु ॥ १ ॥ अर अभिनंदन सुमति वासुपूज्यना, च्यवन जनम ज्ञान ज थया एहना ॥ पंच कल्याणक बीज दिने जाणीए, काल त्रण चोवीसी मन आणीए ॥ २ ॥ धर्म विहु भेदे जिनवर भाखीयो, साधु श्रावक तणो भविक चित्त वासीयो ॥ ए समकित तणो सार छे मूलगु, अहर्निश आगम ज्ञान ने ओलगु ॥ ३ ॥ मनुज सुर शासन सांनिध्य कारकु, श्री अशोकानिधि विघ्न भय

वारकु ॥ शीतल स्वामीना ध्यानथी सुख लहे, धीर गुरु सीस ज्ञान विमल कवि इम कहे ॥ ४ ॥

॥ अथ त्रीजनी स्तुति ॥

॥ संखेसर पासजी पुजीये ॥ ए देसी ॥

॥ श्रेयांस जिणेसर शिव गया, ते त्रीज दीने निरमल थया ॥ ऐंशी धनु सोवन वन काय, भव भव ते साहिब जिनराय ॥ १ ॥ विमल कुंथु धर्म सुविधि जिना, जस जन्म ज्ञान मनुज्ञान धना ॥ वतर्मान कल्याणक खट थया, जिनजी दीन दिन करजो मया ॥२॥ त्रिण तत्त्व जिहां किण उपदिश्यां, ते प्रवचन वयणां चित्त वश्यां ॥ त्रिण गुप्तिगुप्ता मुनिवरा, ते प्रवचन वांचे श्रुत धरा ॥ ३॥ इम सुर मानवी कर करा, जे समकित दृष्टि सुरवरा ॥ त्रिकरण शुध समकित तणी, नय लीला होजो अति घणी ॥ ४ ॥

॥ अथ चोथनी स्तुति ॥

॥ श्रावण सुद दिन पंचमीए ए देसी ॥

सर्वार्थ सिद्धथी चविए, मरुदेवी उयरे उपन्नतो ॥ युगल धर्म श्रीऋषभजीए, चोथ तणो दिन धन्नतो ॥१ ॥ मल्लि पास अ-भिनंदन ए, चविया वलि पास नाण तो ॥ विमल दीक्षा इम खट थया ए, संप्रति जिन कल्याण तो ॥ २ ॥ चार निक्षेपे स्थापना ए, चउ

विह देव निकाय तो ॥ चउमुख चउविध देशना ए, भाखे सूत्र समुदाय तो ॥ ३ ॥ गौमुख यक्ष चक्केसरीए, शासननी रखवाल तो ॥ सुमति संयोग सुवासना ए, नय धरि नेह निहालतो ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म जिणंद परम पद पाया, सुव्रता नामे राणी जाया, सुरनर मनडे भाया ॥ पण चालीस धनुषनी काया, पंचमि दीन ते ध्याने ध्याया, तवमें नवनिधि पाया ॥ १ ॥ नेमि सुविधिना जनम कहीजे, अजित अनंत संभव सहु लीजे, दीक्षा कुंथु ग्रहीजे ॥ चंद्र च्यवन संभवनाण सुणीजे, त्रिहु चोवीसी इम जाणीजे, सहुं जिनवर प्रणमीजे ॥ २ ॥ पंच प्रकारे आगम साखे, जिनवर चंद सुधा रस चाखे, भविजन हैयडे राखे ॥ पंचज्ञान तणो विधि दाखे, पंचमी गतिनो मारग भाख्वे, जेहथी सवी दुख नासे ॥ ३ ॥ जिन भक्ति प्रज्ञप्ति देवी, धर्मनाथ जिनपद प्रणमेवि, किंन्नर सुर संसेवि ॥ बोधिबीज शुभ दृष्टि लहेवि, सदामति देवी नयविमल, दुश्मन विघ्न हरेवि ॥ ४ ॥

॥ अथ छठ्ठनी स्तुती ॥

॥ शंखेसर पासजी पुजीये ॥ ए देशी ॥

॥ श्री नेमि जिणेसर लहे दीक्षा, छठ्ठ दिवसे सुविधि चरण

शिक्षा ॥ एककाजाल एक शशिकर गोरा, नित समरु जिम जलधर मोरा ॥ १ ॥ पद्मप्रभु शीतल वीरजीना, श्रेयांस जिणंद लहे तिहां चवना ॥ विमल सुपासज्ञान जेम होइ, कल्याणक संप्रति जिन जोइ ॥ २ ॥ ॥ जिहां जयणा खट विधकाय तणी, खट व्रत संप्रति मुनिराय तणी ॥ जे आगम मांहि जाणीये, ते अनोपम चितमां आणीए ॥ ३ ॥ जे समकित दृष्टि भाविशां, संवेग सुधारस सेवीया ॥ नय विमल कहे ते अनुसरो, अनुभव रस साथे प्रीतिधरो ॥ ४ ॥

॥ अथ सातमनी स्तुति ॥

॥ चंद्रप्रभु जिन ज्ञान पाम्या, वळी लह्या भवपार ॥ महसेननृप कुल कमल दिनकर, लखमणा मात मल्हार ॥ शशिअंक ससिसमगौर देहे, जगत जन सिणगार ॥ सप्तमी दीने तेह नमतां, हुवे नित्य जयकार ॥१॥ धर्म शांति अनंत जिनवर, विमलनाथ सुपास ॥ च्यवन जन्मने शिवपद, पामीया दोइ खास ॥ एम वर्त्तमान जिणंद केरा, थया सात कल्याण ॥ तें सातम दीन सात सुखनुं, हेतु लहीए जाण ॥ २ ॥ जिहां सात नयनुं रूप लहीए, सप्तभंगी भाव ॥ जे सात प्रकृतिना क्षय कर्याथी, लहे क्षायिक भाव ॥ ते जिनवर आगम सकल अनुभव, लहो लीलविलास ॥ जिम सात नरकनुं आयु छेदी, सातभय होवे नास ॥ ३ ॥ श्री चंद्रप्रभ जिनराय शासन, विजयदेव विशेष ॥ तसदेवी ज्वाला करे सांनिध, भविक जन सुविशेष ॥ दुख दुरित इति समंत सघले, विघन कोडी हरंत ॥ जिनराय ध्याने तनेतन नय लीना, ज्ञान विमल गुणवंत ॥ ४ ॥

॥ अथ आठमनी स्तुति ॥

॥ प्रह उठी वंदु ॥ ए देसी ॥

॥ अभिनंदन जिनवर परमानंद पद पामे ॥ वली तीम नेमिसर, जन्म लही शिव कामे ॥ तिम मोक्ष च्यवन बेहु, पास देव सुपास, आठमने दिवसे सुमति जन्म सुप्रकाश ॥ १ ॥ वली जन्मने दिक्षा, ऋषभ तणा जिहां होय ॥ सुव्रत जिन जन्म्या, संभव च्यवनुं जोय ॥ वळी जन्म अजितनो, इम इग्यार कल्याण ॥ संप्रति जिनवरना, आठमने दिन जाण ॥ २ ॥ जिहां प्रवचन माता, आठम नणो विस्तार ॥ अडभंगीए जाणो, सवि जग जीव विचार ॥ ते आगम आदर, आणीने आराधो ॥ आठमने दिवसे, आठ अक्षय सुख साधो ॥ ३ ॥ शासन रखवाली, विद्यादेवी सोल ॥ समकितनी सानिध्य, करनी छाकम छोल ॥ अनुभव रसलीला, आपे सुजश जगीस ॥ कवि धीरविमलनो, ज्ञान विमल कहे शीस. ॥ ४ ॥

॥ अथ नोमनी स्तुति ॥

॥ सुव्रत सुविधि सुमति शिव पाम्या, अजित सुमति नमि संयम पाम्या ॥ कुंथुं वासुपूज्य सुविधि चविया, नवमी दिन ते सुरवर नमिया ॥ १ ॥ शांति जिणंद थया जिहांज्ञानी, वर्त्तमान जिनवर शुभध्यानी ॥ दश कल्याणक नवमी दिवसे, सवि जिनवर प्रणमुं मन हरखे ॥ २ ॥ जिहां नव तत्त्व विचार कहीजे, नवविध ब्रह्म

आचार लहीजे ॥ ते आगम सुणतां सुख लहीए, नवविध परिग्रह विरती कहीए ॥ ३ ॥ समकित दृष्टि सुरसंदोहा, आपे सुमति विलास सस मोहा ॥ श्री ज्ञानविमल कहे जिननामे, दिन दिन दोलत अधिकी पामे. ॥ ४ ॥

॥ अथ दशमनी स्तुति ॥

॥ कनक तिलक भाले ॥ ए देशी ॥

अरनमि जिणंदा, टालिया दुखदंदा ॥ प्रभुपास जिणंदा, जन्मे पूज्या महिंदा ॥ दशमी दीन अमंदा, नंदमा कंद कंदा ॥ भविजन अरवृंदा, शासने जे दिणंदा ॥ १ ॥ अर जन्म सुहावे, वीरचारित्र पावे ॥ अनुभव रस लावे, केवलज्ञान थावे ॥ खट जिनवर कल्याण, संप्रति जे प्रमाण ॥ सवि जिनवर भाण, श्रीनिवासादि ठाण ॥ २ ॥ दशविध आचार, ज्ञान मांहे विचार ॥ दश सत्यप्रकार, पच्चखाणादि चार ॥ मुनिदशगणधार, भाखीया जिहां उदार ॥ ते प्रवचनसार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दसदिशि सुरपाला, जे महा लोकपाला ॥ सुरनर महिपाला, शुद्धदृष्टि कृपाला ॥ ज्ञानविमल विशाला, ज्ञान लच्छीमयाला ॥ जय मंगलमाला, पायनमे सुखाला ॥ ४ ॥

॥ अथ अगीआरसनी स्तुति ॥

॥ स्नातस्या प्रतिमस्य ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिदेवसु जन्मसंयम, महाज्ञानं लह्या जे दीन ॥ स एकादशी

वासरः शुभकर कल्याणमालालयः ॥ वैदेहेश्वरकुंभगूढजलधिप्रोल्ला-सने चंद्रमाः, माता यस्य प्रभावती भगवती कुंभध्वजो व्याजतः॥१॥ ज्ञानं श्री ऋषभांजितस्य, मतिप्रादूर्भव सन्निमे ॥ पार्श्वार चरणच मोक्षमगमत्, पद्मप्रभाख्य प्रभु॥इत्येतदशकं चयत्र दिवसे,कल्याणकानां शुभं ॥ जातं संप्रति वर्त्तमानजिन, पादद्रुमेद्दामंगलम् ॥२॥ सांगोपांग मनंतपर्यवगुणोपेतं सदोपासके ॥ एकादश्य प्रतिमाश्च यगदिता, श्रद्धावतां तीर्थपे, सिद्धांतानिधि भूपतिर्विजयते, विभ्रत्सदे एकादशा चारांगादिमयं वपुर्विलसितं, भक्त्या नुतं भावतः ॥ ३ ॥ वैरोया विदधाति मंगलनाति, सद्दर्शनोनामिह ॥ श्री मत्मक्लि जिनेश शासनसूर, कुबेरनामा पुनः ॥ दिग्पालगृहयक्षदक्षनिवहा, सर्वेपि ये देवता ॥ ते सर्वे विदधातु सौख्यमतुलं, ज्ञानात्मनां सूरिणां ॥ ४ ॥ *

॥ अथ बारसनी स्तुति. ॥

॥ श्रेय :श्रीयां मंगल केलिसद्म ॥ ए देशी ॥

॥ जे द्वादशीने दिने ज्ञान पाम्या, अरसुव्रत स्वामि सुरेंद्र नम्या ॥ मल्ली लहे सिद्धि संसार छोडी, विमल च्यवन वंदु बिहुं हाथ जोडी ॥ १ ॥ पद्म प्रभु शीतलचंद्र जाया, सुपास श्रेयांस चवे नेमिराया ॥ अभिनंदन शीतल चरण जान, इम तेर कल्याणक वर्त्तमान, त्रिकाल पूजिने करुं प्रणाम ॥ २ ॥ भिक्षु तणीजे प्रतिमा छे बार, ते द्वादशांगी रचना विचार ॥ उपांग बारह अनुयोगद्वार, छ छेद पयन्नादस मूलचार ॥ ३ ॥ श्री संघरक्षा

* आ अगीआरसनी चारे स्तुतिओ अशुद्ध छे.

करे देव भक्त्या, सुरासुर देवपद प्रशक्त्या ॥ सदा दिओ सुंदर बोध बीजं, सधर्म पावे न किमे पतिजं ॥ ४ ॥

॥ अथ तेरसनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार ॥ ए देसी ॥

॥ पढम जिणेसर शिवपद पावे, तेरसे अनुभव ओपम आवे, सकल समिहित लावे ॥ शांतिनाथ वळी मोक्ष सिधावे, दर्शन ज्ञान अनंत सुखपावे, सिद्ध स्वरूपी थावे ॥ नाभिराय मरुदेवी मात, ऋषभदेवना जे विख्यात, कंचन कोमल गात ॥ विश्वसेन नृप अ-चिरा मात, सेवो शांति जगनना तात, जेहना शुभ अवदात ॥ १ ॥ पद्मचंद्र श्रेयांस जिनेशा, धर्म सुपास जे जग जन इशा, संयम ले शुभ लेशा ॥ वीर अनंतने शांति महीशा, जन्म थया एहना सुजगीसा टाल्या सकल कलेसा ॥ वर्तमान कल्याणक हिसा, तेरस दीने सवि अमर महिसा, प्रणमे जेनी सादिशा ॥ सकल जिनेसर भवन दिनेसा मदन मान निर्मदन महिशा, ते सेवो वीसवावीसा ॥ २ ॥ तेर काठियाने जे गाळे, तेर क्रियाना स्थानक टाळे, ते आगम अजुवाळे॥ तेर संयोगीना गुण जाणे, ते पामीने झाणझाण, तेहने केवल नाण ॥ भक्तिमान बहुमान भणीजे, आशातना तेहनी टालीजे, जिनमुख तेर पद लीजे ॥ चार गुणी ते तेर कहीजे, बावन भेद विनय भणीजे, जिम संसार तरीजे॥३॥ चक्केसरी देवी गोमुख धरणी, समकित धारी सानिध्य करणी, ऋषभ चरित्र अनुसरणी ॥ गोमुख सुरनो मनडो

हरणी, निर्वाणी देवी जय करणी, गरुड यक्ष सुर धरणी ॥ सामिना गुण बोले वर्णी, दुश्मन दुर करण रवि भरणी ॥ संप्रति सुविस्तरणी, कीर्त्ति कमला उज्वल करणी, रोग सोग संकट उद्धरणी, ज्ञान विमल दुःख हरणी ॥ ४ ॥

॥ अथ चौदशनी स्तुति ॥

॥ वासुपूज्य जिनेसर शिव लह्या, ते रक्त कमलने वाने कह्या ॥ वासुपूज्य नृपति सुमात जया, चंपा नगरीये जन्म थया ॥ चौदशी दिवसे जे सिद्ध गया, जस लंछन रुपे महीष थया ॥ ते अजर अमर निकलंक भया, तस पाय नमी कृत्यकृत्य थया ॥१ ॥ श्रीशीतल संभव शांति वासुपूज्यजिना, अभिनंदन कुंथुं अनंत जिना ॥ संजम लीए शुभ भावना, केइ पंचम नाण लहे धना ॥ कल्याणक आठ सोहामणा, नित नित तस लीजे भामणा ॥ सविगुण मणि रयणा रोहिणी, पुरवी सवि मननी कामना ॥ २ ॥ तिहां चउदस भेद जीव तणा, जगभेद कह्या छे अति घणा ॥ गुणठाणां चउद तीहां भण्या, चउदस पूर्वनी वर्णना ॥ नवि कीजे शंका दुषणा, अतिचार तणी तिहां धारणा ॥ प्रवचन रस कीजे वारणा, एह छे भवजल तारणा ॥ ३ ॥ शासन देवी समकित चंडा, दिए दुर्गति दुर्जनने दंडा ॥ ॥ अकलंक कला धरी सम तुंडा, जस जिह्वा अमृतरस कुंडा ॥ जसकर जपमाला कोहंडा, सुरनाम कुमार छेउदंडा ॥ जिम आगले अवर छे एरंडा ॥ ज्ञानविमल सदा सुख अखंडा ॥ ४ ॥

॥ अथ पुनमनी स्तुति ॥

॥ श्री जिनपति संभव ल्ये संजम जिहां, श्रीमुनिसुव्रतनमि च्यवनुं तिहां ॥ सकल निर्मलचंद्र तणी विभ, विशदपक्ष तणो शिर पूर्णीमा ॥१॥ धर्मनाथ जिन केवल पामीआ, पद्मप्रभ जिन नाण सधामिआ, ॥ इम कल्याणक संप्रति जिन तणा, थया पुनिम दिवसे सोहामणा ॥ २ ॥ पन्नर योग तणे विरहे लह्या, पन्नर भेदे सिद्ध जिहां कह्या ॥ पन्नर बंधन प्रमुख विचारणा, जिनवर आगम तेसुणी ए जना ॥ ३ ॥ सकल सिद्धिं समिहित दायका, सुरवर जिन शासन नायका ॥ वधुकरो द्रुल कीर्त्तिकला घणी, ज्ञान विमल जिननाम तणो गुणी ॥ ४ ॥ इति पुनमनी स्तुति. ॥

॥ अथ अमावस्यानी स्तुति ॥

॥ चोपाईनी ॥ ए देसी ॥

॥ अमावास्यां तो थइ उजली, वीरतणे निर्वाणे मिली ॥ दिवाली दिन तीहांथी होत, राय अढार करे उद्योत ॥१॥ श्रीश्रेयांस नेमिलहे ज्ञान, वासुपूज्य ग्रहे संयम ध्यान ॥ संप्रति जिननां थयां कल्याण, अमावास्या दिवसे गुणखाण ॥ २ ॥ काल अनादि मिथ्यात्व निवास, पूरण संज्ञा कहीए तास ॥ आगम ज्ञान लह्यो जेणीवार, कृष्णपक्षी जीत्यो तेणीवार ॥ ३ ॥ मातंगयक्ष सिद्धाइ देवी, सांनिध्यकारी कीजे स्वयमेवि ॥ कवि ज्ञानविमल कहे शुभचित, मंगल लीला करो नित नित ॥ ४ ॥

॥ अथ पन्नर तीथीनी थोयो ॥

दीन सकल मनोहर ॥ ए देशी ॥

॥ सासयने असासय, चैत्यतणा बिहु भेद । थापन स्वरुपे, रूपातित बेहु भेद ॥ बिहु पक्षे ध्यावो, जिम होये भव छेद ॥ अविचल सुखपामे, नासे सघला खेद ॥ १ ॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी, काल बे भेद प्रमाण ॥ त्रिजेने चोथे, आरे जीनवर भाण ॥ उकृष्टा काले, सत्तरिसय जिनराज ॥ तिम वीस जघन्यथी, वंदे सारो काल ॥ २ ॥ बिहुं भेदे भाख्या, जिव सकल जगमांहे । एक कृष्णपक्षी एक, सुक्लपक्षी पणमांहे ॥ वली द्रव्य कह्या छे, जींव अजीव विचार । ते आगम जाणो, निश्चयने व्यवहार ॥ ३ ॥ संजमधर मुनिवर, श्रावक जे गुणवंत । बिहु पक्षना सानिध्य, कारक समकितवंत ॥ जे शासन सुरनर, विघ्न कोडी हरंत ॥ श्री ज्ञानविमलसूरि, लीला लब्धि लहंत ॥ ४ ॥ इति पन्नरतिथीनी थोयो संपूर्ण ॥

॥ अथ मौन अगिआरसनी थोय ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभाली, वर्धमान आगल रढीयाली, वाणी अतिहि रसाली ॥ मौन अगीआरस महिमा भाली, किणे कीधी ने कहो किणे पाली, प्रश्न करे टंकशालि ॥ कहोने स्वामी परव पंचालि, महिमा अधिक अधिक सुविसाली, कुण कहे कहो भ्रम टाली ॥ वीर कहे मागसर अजुआली, दोढसो कल्याणक निहाळी,

अगीआरस कृष्णे पाली ॥ १ ॥ नेमनाथने वारे जाणुं, कानुडो त्रण खंडनो राणो, वासुदेव नृपराणो ॥ परिग्रहने आरंभ भराणो, एकदिन अतिम किधो शाणो, जिन वंदन उजाणो ॥ नेमनाथने कहे हित आणो, वरसे वारु दिवस वखाणोपाली, थाउं हुं शिवराणो ॥ अतित अनागतने वर्त्तमान, नेउ जिननां हुआं कल्याण, अवर न एह समान ॥ २ ॥ आगम आराधो भवि प्राणी, जेहमां तीर्थंकरनी वाणी, गणधर देव कहाणी ॥ दोढसो कल्याणकनी खाणी, एक अगिआरसनो दिन जाणी, इम कहे केवल नाणी ॥ पुन्य पापतणी जेह कहाणी, सांभळतां सुख लेख लखाणी, तेहनी स्वर्ग निसाणी ॥ विद्या पूर्वगत विरचाणी, अंग उपांग जे सूत्रे गुंथाणी, सुणतां दिये शीवराणी ॥ ३ ॥ जिन शासनमां जे अधिकारी, देव देवी जे समकित धारी, सांनिध्य करो संभारी ॥ धर्म करे तस उपर प्यारी, निश्चल धर्म करे सुविचारी, तेछे परउपगारी ॥ वीड मंडण महावीर जुहारी, पाप पखालुं जिनने जुहारी, लालविजय हितकारी ॥ मातंग जक्ष सिधाइ सारी, ओलग सारे सुर अधिकारी, श्री संघनां विघन निवारी ॥४॥ इति मौन अगिआरसनी थोय. ॥

॥ अथ सिद्धाचलनी थोय ॥

॥ सकल मंगल लीला मुनि ध्याने, परभव भरत नुं दिधुं दान, भविजन एह प्रधान ॥ मरुदेवाए जनमज दीधो, इंद्र सेलडी आगम कीधो, वंस इख्खाग ते सीधो॥ सुनंदा सुमंगला राणी, पूरव

प्रीत भली पटराणी, परणावे इंद्र इंद्राणी ॥ सुख विलसे रस अमीरस गुजे, पूरवनवाणुं वार शेत्रुंजे, प्रभु जइ पगले पूजे ॥ १ ॥ अदि नहीं अंतर कोइ एहनो, केम वर्णवीजे सखी गुण एनो, मोटो महिमा तेनो ॥ अनंता तीर्थंकर इण गिरि आवे, विहरमान व्याख्यान सुणावे, दिलभरी दिल समजावे ॥ सकळ तीर्थनुं एहीज ठाम, सर्वे धर्मनुं एहीज ध्यान, ए मुज आतमराम ॥ रे रे मूरख मनसुं मुजे, पूजीये देव घणा शेत्रुंजे, ज्ञाननी सुखडी गुजे ॥ २ ॥ सोवन डुंगर टुंक रुपानी, अनोपम माणेक टुंक सोनानी, दीसे देरां दधानी ॥ एक टुंके मुनि अणसण करता, एक टुंके मुनिव्रत तप करता, एक टुंके उतरता ॥ सूरजकुंड जलधिप लगावो, महीपाळनो कोट गमावो, तेने ते समुद्र निपावो ॥ सवालाख शेत्रुंजय महातम, पापतणी तिहां न रहे रातम, सुणतां पवित्र थाय आतम ॥ ३ ॥ रमणिक भुइरु गढ रढीयालो, नवखंड कुमर तीर्थ निहालो, भविजन पाप पखाळो ॥ चोखा खाणने वाघण पोळ, चंदन तलावडी ओलखाजोर, कंचन भरोरे अंधोल ॥ मोक्ष बारीनो जगजस मोटो, सिद्धसिला उपर जइ लोटो, समकीत सुखडी बोटो ॥ सोना गभारे सोवन जाळी, ज्ञारो जिननी मूर्ति रसालो, चक्केसरी रखवाली. ॥ ४ ॥ इति श्री सीद्धाचलजीनी थोय संपूर्ण ॥

॥ अथ आठमनी थोय. ॥

॥ अष्टम जिनचंद्रप्रभ नमीए, अष्टम महामद दुरे दमीए, दुर्गतिमांहे नव भमीए ॥ महसेन नंद जिनगुण रमीए, अष्ट महाभय

भाव विसमीये, दुख दोहग निगमीए ॥ अष्ट मंगल जस आगलराजे, चंद्र लंछन जस चरणे छाजे, जग जस पडहो वाजे ॥ अष्ट कर्म भड संकट भाजे, प्रातिहार्य आठ विराजे, अष्टमी दिन तप ताजे ॥ १ ॥ अष्टापद जिनवरनां वृंद, जेहने प्रणमे असुर सुरिंद, जस गुण गाये नरिंद ॥ वंछित पूर्ण सुरतरु कंद, भाव भक्ति वंदू जिनचंद जिम पामु आणंद॥ अतित अनागत ने वर्त्तमान, त्रण चोवीसी बहुतेर मान, तेहनुं धरीये ध्यान ॥ प्रह उठी नित्य कीजे गान, दिन दिन वाधे अति घणुं वान, अष्टमी दीन सुप्रधान ॥ २ ॥ सुखदाइ जिन वरनी वाणी, भाव सहित अति उलट आणी, ते नीसुणी शुभ प्राणी ॥ मद मच्छर हरवे सपराणी, सरस सुकोमल सुधा समाणी, अभि-नव गुण मणि खाणी ॥ चौद पूर्वने अंग अगिआर, दस पयन्ना उ-पांग बार, छ छेदे मुल सूत्र चार ॥ नंदीने अनुयोग द्वार, ए सवि समयतणुं अधिकार, अठमी दिन सुविचार ॥ ३ ॥ चंद्रप्रभ जिन सेवक जक्ष, विजयनामे ते प्रत्यक्ष, समकित धारी दक्ष ॥ चउविह संघ तणा जे लक्ष, तस कामित देवे सुव्रक्ष, वारे विघ्न विपक्ष ॥ अष्टमहा-सिद्धि भोग अपार, अष्टदिशे कीरति विस्तार, सकल सुजन परि-वार ॥ अशरण अबला दीन आधार, राज रत्नवाचक सुखकार अष्टमी पोसह सार ॥ ४ ॥ इति आठमनी थोय. ॥

॥ पजुसणनी थोय. ॥

॥ पर्व पजुसण पुन्ये कीजे, सत्तरभेदी जिन पूजा रचीजे, वाजिंत्र नाद सूणीजे ॥ परभावना श्रीफलनी कीजे, याचक जनने

दानज दीजे, जीव अमारी करीजे ॥ मनुज जनम फल लाहो कीजे चोथ छठ्ठ अठ्ठइ तप कीजे, स्वामीवच्छल कीजे, इम अठ्ठाइमहोच्छव कीजे, कल्पसूत्र घर पधरावीजे, आदिनाथ पूजीजे ॥ १ ॥ वडाकल्प दीने धुरी मंडाण, दश कल्प आचार परमाण, नागकेतु वखाण ॥ पछे कीजे सूत्र मंडाण, नमुथ्थुणं होय प्रथम वखाण, मेघकुमार अही ठाण ॥ दश अछेरानो अधिकार, इंद्र आदेशे गर्भापहार, देखे सुपन उदार ॥ चोथे सुपने बीजो मार, सुपनपाठक आव्या दरबार, इम त्रीजुं जयकार ॥ २ ॥ चोथे वीर जनम वखाण, दिशि कुमरी सवि इंद्रने जाण, दिव्य पंच वखाण ॥ पारणे परिसह तपने नाण, गणधर वाद चोमासी परमाण, तिम पाम्या निरवाण ॥ ए छठ्ठे वखाणे कहीए, तेलाधर दिवसे ए लहीए, वीरचरित्र एम सुणीए ॥ पास नेमि जिन अंतर सात, आठमे ऋषभ थेरा अवदात, सुणतां होये सुखशात ॥ ३ ॥ संवच्छरी दिन सहु नरनारी बारसें सूत्रने समाचारी, निसुणे अठ्ठम-धारी ॥ सुणीए गुरु पट्टावली सारी, चैत्र परवाडी अति मनोहारी, भावे देव जुहारी ॥ साहमी साहमणी खामणा कीजे, समता रसमांही झीलीजे, दान संवच्छरी दीजे ॥ इम चक्केसरी सानिध कीजे, ज्ञान विमलसूरी जग जाणीजे, सुजस महोदय कीजे. ॥ ४ ॥ इति श्री पर्युषणापर्व स्तुति समाप्त ॥

॥ अथ श्री नवपद ओळीनी थोय ॥

अंग देश चंपापुर वासी, मयणांसु श्रीपाल खासी, समकित

सु मन वासी ॥ आदि जिणेसरनी उल्लासी, भाव पूजा कीधी मन आसी, भावधरी वीसवासी ॥ गलित कोढ गयो तिणे नासी, सुविधिसु सिद्धचक्र उपासी, थयो स्वर्ग निवासी ॥ आसो चैत्रनी पूरण मासी, प्रेम पूजा भक्ति विकासी, आदि पुरुष अविनाशी ॥ १ ॥ केसर चंदन मृगमद घोळी, हरखेसु भरी हेम कचोली, शुद्ध जले अघोली ॥ नव आंबेलनी कीजे ओली, आसो शुद सातमथी खोली, पूजो श्री जिन टोली ॥ चिंहु गतिनी महा आपद चोली, दुरगतिनां दुःख दूरे ढोली, कर्म निकाचित रोली ॥ क्रोध कषाय तणा मद लोली, जिम शिव रमणी भरम भोळी, पामो सुखनी ओळी ॥ २ ॥ आसो सुदी सातम सुविचारी, चैत्री पण चित्तशुं निरधारी, नव आंबेलनी सारी ॥ ओली कीजे आळस वारी, पुनिम लगे सचित्त परिहारी, देहरे देव जुहारी ॥ पडिकमणा बे कीजे धारी, सिद्धचक्र पूजो सुखकारी, श्री सिद्धांत मजारी ॥ श्री जिन भाषित पर उपकारी, नवपद जाप जपो नरनारी, जिम लहो मुक्तिनी बारी ॥ ३ ॥ श्याम भ्रमर सम वेणी काली, अति सुंदर सोहे सुकमाली, जाणो राज मराली ॥ जलहल चक्र धरे रुपाली, श्रीजिन शासननी रख, वाली, चक्रेश्वरी मैं भाली ॥ जे ओली करे उजमाली, तेहनां विघन हरे सा बाली, सेवक जिन संभाली ॥ उदय रत्न कहे आसन वाळी जे जिन नाम जपे जपमाली, ते घर नित्य दिवाळी ॥ ४ ॥

॥ थंभण पार्श्वनाथनी स्तुति ॥

॥ स्थंभण पुरवर पास जिणंदो, अश्वसेन कुल कमळ दिणंदो,

आमोली अभव कंदो ॥ मोहराय शिर पाडे दंडो, तिहुअण जास प्रताप अखंडो, भविअण मन आणंदो ॥ भव भय भीड भलि परे चूरे, मन वंछित सवि संपद पुरे, प्रभुकर मोरी सारो ॥ वरुणज कहीए पश्चीम स्वामी, जिणे आराध्यो तुं शीरनामी, वछर लक्ष इग्यारो ॥ १ ॥ एसी सहस संवच्छर भूतल,सेव्यो स्वामी हीयडे निरमल,वासग विसह स्वामी ॥ पछे पूज्यो ते परमेश्वर, सातमास नव दिवस निरंतर, दश-रथ नंदन रामो ॥ केतो ए काल प्रथम हरी ध्यायो, द्वारिका नगरी पाछल आयो, पूज्यो देव मोरार्यो ॥ द्वारिका दाह जल रहीओ, सागरदत्त शेठे संग्रहीओ, कांति नगर मोझारो ॥२॥ नागार्जुन जोगी ते लीयो, सेढी तट तेहनो रस सीधो, तुं वीण अवर न वीरो ॥ उवट नदीय वहे वरसाले, तुम उपर घणा वेलु वाले, गाय झरे सीर खीरो ॥ अभयदेव सूरी तिहां जाण्यो, भूंय भीतरथी उपर आण्यो ते तस दीधी देहो ॥ थंभण पुरवर प्रसादे बेठो, नयणानंदण जग सहु दीठो, नीला वन जिम मेहो ॥ ३ ॥ गुजरधर जव जवणि घस कीय, खंभनगर नें तैयअलंकीय, पुहविरो प्रगट प्रमाणो ॥ आद तुमारी जग कुण जाण, मतवीण माणस कीसुंअ वखाणे, हुंपीण सहज अयाणो ॥ कामधेनुं तिहां पत्तधरंगण, करयल चढीयो कर चिंतामण, फलीयो अमर वीसालो ॥ देव दयालु भावठ भंजण, जे तुठे संपत पुर मंडण, श्री पार्श्वनाथ चोसालो ॥ ४ ॥

॥ अथ नंदिश्वर स्तुति ॥

॥ सजयाति सतामीशः शांतिर्यदज्जिनतामरः । प्रकट मुकु-

टोट्टंकी रत्नांकुरप्रकरोरुवत् ध्वज पृषदनुच्छायः शंकेय दास्य लघूकृत स्तरुणाकिरणोपेतः कोपान् मृगांकगणोडरुणः ॥ १ ॥ शिवपथ कथां तथ्यातीर्थाधिपाः प्रथयंतु नः पृथुलदवथुं द्राक्कुर्वंतु श्लथांच भव-व्यथां मणि घृणि मिषाद्येषा माञ्जुः पतंति पदोरदो विमलमनसां-चेतांसि श्रीजिनाः प्रजयंतुते ॥ २ ॥ जिनपतिमतक्षोणिगाथ प्रकाशयनाथता मयि मयि शुचिः स्वर्गोपांगी सुवर्णमणी निधिः विदित चरितोऽस्तोके श्लोकः सदर्थकदर्थितः प्रतिभटघटः स्तात्यस्तुत्यानु शासन दर्शनः ॥ ३ ॥ गरुडसुकृतित्राणो दृतोर्ध्वदृशात्वयारुण, तरदृशादृष्टः कालः प्रकंपदरा तुरः पद बलगता शक्तो युक्तं सदंड धरोधुना विनचित मिमधन्यं मन्यं जन सुखीनं कुरु ॥ ४ ॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तुतिः ॥

॥ कृतजलधरधाराधोरणीरुद्धदेहो जयति जयति कायोत्सर्ग काले सपार्श्वः। किमु शमरसमग्नो नूनमाकंठमेतां जनयति जनशंकां कांतिकांतांगलक्ष्मीः ॥ १ ॥ त्रिदशरचितहेमां भोजबद्धप्रचारा विहरण भुवि येषां सूचयंत्यंह्रिपद्माः विमलकमलजालं निर्जत तेन चास्मान्महति शिरसि सोऽयंजैन वर्गः पुनातु ॥ २ ॥ समवसरण-भूमौ यानि शम्यामरेंद्रा दधति पुलकजालं चित्रवित्तस्वाचित्ताः। उप-शमरससारासारधारच्छटाभिः प्रकटितपुलका किं जैनगीः सा-पुनातु ॥ ३ ॥ नमदमरपुरंध्रीभूरिभालाग्रजाग्रन्मृगमदपद दंभा-त्पादपीठे दधौ या नतजनपठनावच्छेदि कर्माभ बध्वा विनायि-नि मयि सा गीर्जाडयजालं च्छिनत्तु॥४ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ मुद्रोन्निद्रयोगीन्द्र हृद्ध्यायमानं परिध्वस्तमानं सुरैर्गीयमानं लसन्मानवामानवामा न मानं, भजे वर्द्धमानं भजे वर्द्धमानं ॥ १ ॥ जिनाधीश लेखानताशेषलेखा नतद्वेषदोषप्रदोषांशुलेखा स्मृता-येन तं निः प्रतीपं प्रतीत्य कलं कोमलं कोमलं कोप्यलं स्यात् ॥२ ॥ महावीरवाणीगुणोवर्ण्यो वर्णः सकर्णेन नाकर्णितो येन तूर्णं । स-घूर्णन्महामायया मन्यते सारसंसारसंसारसंसारसारं ॥ ३ ॥ सुधर्मा सुराणामधीशः शचीनां शुचिप्रेधनर्मादि सौख्यं विहाय । जिनाधीशा विधौ यः प्रसक्तो सुदेवः सदेवः सदेवः सदैव ॥ ४ ॥ इति श्री महावीर स्तुतिः ॥

॥ दीवे नंदीसरम्मी चउदिशि चउरी अंजणा भानगिंदा तेहितो वाविमज्झो दहिमुहगिरिणो सयवण्णातवेव दुण्हं दोण्हं पितेसिं रुइर रइकला अंतराले यदोदो, बावण्णानत्थातित्थे सुरवर भवणा ते सुवंदे जिणिंदे ॥ १ ॥ मेरूणं पंचगंमी कुरु तरु सुतहा नागदं तेसुयारे, वेयट्ठे सुचनंदिसरवरिचनगं सासया सुप्पसिद्धा । वख्खारेसु नगेसु कुलगिरि उवरि कुंडले माणुसाणं सेले सीमाकरेजे जिण भवणाट्ठिया ते जिणेसा जयंतु ॥ २ ॥ जेतीयाणा गयंमी भव-जलहि तरी सन्निहंवट्टमाणे काले तित्थंकरे हि अमिय रससम भासियं अच्छओतं भव्वाणं मुख्खहेउं गणहररइयं सुत्तउबारसंगं सुत्त अनाणधंतं हरउ मह सया सासयं मव्वलोए ॥ ३ ॥ सोहंम्मि दाइणो जे तियस गणजुआ पंचहा जोइसीया, बत्तीसं वितरिंदा सुर भवणठिया देवदेविंहं जुत्ता पायालिंदाई वीसं चमरपभिणो धम्म

कुज्जु ज्जयस्स, सव्वेसंघस्स विग्घ मणासि सुमिरिया सुपसन्ना हरंतु ॥ ४ ॥ नंदीश्वरद्वीपमहीपरत्नालंकारसारा जिन चैत्यवाराः प्रमोद मेद श्विहृदेतिनूताः कुर्युः प्रसादं जिन दर्शनेन ॥ १ ॥ इति श्री नंदीश्वर स्तुति ॥

॥अथ श्रीशोभनमुनिकृता चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः॥

॥ अथ ऋषभजिनस्तुतिः ॥

॥ भव्याम्भोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली रम्भासामज नाभिनन्दन महानष्टापदाभासुरैः । भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुषां संपादय प्रोज्झितारम्भासाग जनाभिनन्दन महानष्टापदाभासुरैः ॥ १ ॥ ते वः पान्तु जिनोत्तमाःक्षतरुजो नाचिक्षिपुर्यन्मनोदारा विभ्रमरोचिताः सुमनसो मन्दारवा राजिताः । यत्पादौ च सुरोज्झिताःसुरभयाश्चक्रुःपतन्त्योऽम्बरादाराविभ्रमरोचिताः सुमनसो मन्दारवाराजिताः ॥२॥शान्तिं वस्तनुतान्मिथोऽनुगमनाद्यन्नैगमाद्यैर्नयैरक्षोभं जनहेऽतुलां छितमदोदीर्णाङ्गजालं कृतम् । तत्पूज्यैर्जगतां जिनैः प्रवचनं दृप्यत्कुवाद्यावलीरक्षोभञ्जनहेतुलाञ्छितमदो दीर्णाङ्गजालंकृतम् ॥ ३ ॥ शीतांशुत्विषि यत्र नित्यमदधद्गन्धाढ्यधूलीकणानाली केसरलालसा समुदिताशु भ्रामरीभासिता । पायाद्वः श्रुतदेवता निदधती तत्राब्जकान्ती क्रमौ नालीके सरलालसा समुदिता शुभ्रामरीभासिता ॥ ४ ॥

॥ इति ऋषभजिनस्तुतिः ॥

॥ अथाजितनाथस्तुतिः ॥

॥ तमजितमभिनौमि यो विराजद्वनघनमेरुपरागमस्तकान्तम्। निजजननमहोत्सवेऽधितष्ठावनधनमेरु परागमस्तकान्तम् ॥ १ ॥ स्तुत जिननिवह तमर्तितप्राध्वनदसुरामरवेण वस्तुवन्ति । यममरपतयः प्रगाय पार्श्वध्वनदसुरामरवेणव स्तुवन्ति ॥ २ ॥ प्रवितर वसति त्रिलोकबन्धो गम नययोगततान्तिमे पदे हे । नूनमत विततापवर्गवीथीगमनयथो गततान्ति मेऽपदेहे ॥ ३ ॥ सितशकुनिगताशु मानसीद्धात्ततिमिरंमहभा सुराजिताशम्। वितरतु दधती पविं क्षतोघत्ततिमिरं मदभासुराजिता शम् ॥ ४ ॥

॥ इत्यजितनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ संभवजिनस्तुतिः ॥

॥ निर्भिन्नशत्रुभवभय शं भवकान्तारतार तार ममारम् । वितर त्रातजगत्रय शंभव कान्तारतारममारम् ॥ १ ॥ आश्रयतु तव प्रणतं विभयापरमारमारमानमदमरैः । स्तुतरहित जिनकदम्बक विभयापरमार मारमानभमैरः ॥ २ ॥ जिनराज्या रचितं स्तादसमाननयानया नयायतमानम् । शिवशर्मणे मतं दधदसमाननयानयानया यतमानम् ॥ ३ ॥ श्रृङ्खलभृत्कनकानिभा यातामसमानमानमानवमहिताम् । श्रीवज्रश्रृङ्खलां कजयातामसमानमानमानवमहिताम् ॥ ४ ॥

॥ इति संभवजिनस्तुतिः ॥

॥ अथाभिनन्दनजिनस्तुतिः ॥

त्वमशुभान्यभिनन्दन नन्दिता सुरवधूनयनः परमोदरः। स्मरकरीन्द्रविदारणकेसरि न्सुरवधूनयनः परमोदरः ॥ १ ॥ जिनवराः प्रयतध्वमितामया मम तमोहरणाय महारिणः। प्रदधतो भुवि विश्वजनीनता ममतमोहरणा यमहारिणः ॥ २ ॥ असुमतां मृतिजात्यहिताय यो जिनवरागमनो भवमायतम्। प्रलघुतां नय निर्मथितोद्धता जिनवरागमनोभवमायतम् ॥ ३ ॥ विशिखशङ्खजुषा धनुपास्तस त्सुरभिया ततनुन्नमहारिणा। परिगतां विशदामिह रोहिणी सुरभियाततनुं न महारिणा ॥ ४ ॥

इत्यभिनन्दनजिनस्तुतिः।

॥ अथ सुमतिजिन स्तुति. ॥

मदमदनरहित नरहित सुमते सुमतेन कनकतोरतोर। दम दमपालय पालय दरादरातिक्षतिक्षपातः पातः ॥ १ ॥ विधुताराः विधुताराः सदा सदाना जिनाजिताघाताघाः। तनुतापातनुतापा हितमा हितमानवविभवा विभवाः ॥ २ ॥ मतिमति जिनराजि नरा- हितेहिते रुचितरुचि तमोहे गोहे। मतमत नूनं नूनं स्मरास्मरा धीर- धीरसुमतः सुमतः ॥ ३ ॥ नगदामानगदा मामहो महो राजि राजि- तरसातरसा। घनघनकाली काली बतावतादूनदूनसत्रासत्रा ॥ ४ ॥

॥ इति सुमतिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ पद्मप्रभजिनस्तुतिः ॥

पादद्वयी दलितपद्ममृदुः प्रमोद मुन्मुद्रतामरसदामलनान्तपात्री। पाद्मप्रभी प्रविदधातु सतां वितीर्ण मुन्मुद्रतामरसदा मलतान्तपात्री ॥ १॥ सा मे मतिं वितनुताज्जिनपङ्क्तिरस्त मुद्रा गतामरसभासुरमध्यगाद्याम् । रत्नांशुभिर्विदधती गगनान्तराल मुद्रागतामरसभासुरमध्यगाद्याम् ॥ २ ॥ श्रान्तिच्छिदं जिनवरागममाश्रयार्थ माराम मानम लसन्तमसंगमानाम् । धामाग्रिमं भवसरित्पतिसेतुमस्त माराममानमलसंतमसं गमानाम् ॥ ३ ॥ गान्धारि वज्रमुसले जयतः समीर पातालसत्कुवलयावलिनीलभे ते । कीर्तीः करप्रणयिनी तव ये निरुद्ध पातालसत्कुवलया बलिनी लभेते ॥ ४ ॥

॥ इति पद्मप्रभजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ सुपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

कृतनति कृतवान्यो जन्तुजातं निरस्त, स्मरपरमदमायामानबाधायशस्तम् । सुचिरमविचलत्वं चित्तवृत्तेः सुपार्श्वे स्मर परमदमाया मानबाधाय शस्तम् ॥ १ ॥ व्रजतु जिनततिः सा गोचरं चित्तवृत्तेः सदमरसहिताया वोऽधिका मानवानाम् । पदमुपरि दधाना वारिजानां व्यहार्षी त्सदमरसहिता या बोधिकामा नवानाम् ॥ २ ॥ दिशदुपशमसौख्यं संयतानां सदैवो रु जिनमतमुदारं काममायामहारि । जननमरणरीणान्वासयन्सिद्धवासे ऽरुजि नमतमुदारं काममायामहारि

॥ ३ ॥ दधाति रविसपत्नं रत्नमाभास्तभास्वन्नवघनतरवारिं वारणारावरीणाम् । गतवति विकरत्यालीं महामानसीष्टा न्नव धनतरवारिं बारणारावरीणाम् ॥ ४ ॥

॥ इति सुपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ चन्द्रप्रभजिनस्तुति ॥

तुभ्यं चन्द्रप्रभ जिन नमस्तामसोज्जृम्भितानां हाने कान्तानलसम दयावन्दितायासमान । विद्वत्पङ्क्त्या प्रकटितपृथुस्पष्टदृष्टान्तहेतूहानेकान्तानलसमदया वन्दितायासमान ॥ १ ॥ जीयाद्राजिर्जनितजननज्यानिहानिर्जिनानां सत्यागारं जयदमितरुक्सारविन्दावतारम् । भव्योद्धृत्या भुवि कृतवती या वहद्धर्मचक्रं सत्यागा रञ्जयद्दमितरुक्सा रविं दावतारम् ॥ २ ॥ सिद्धान्तः स्तादहितहतयेऽख्यापयद्यं जिनेन्द्रः सद्राजीवः स कविधिषणापादनेऽकोपमानः । दक्षः साक्षाच्छ्रवणचुलकैर्यं च मोदाद्विहायः- सद्राजीवः सकविधिषणापादनेकोपमानः ॥ ३ ॥ वज्राङ्कुश्यङ्कुलिशशृत्त्वं विधत्स्व प्रयत्नं स्वायत्यागे तनुमदवने हेमताराातिमत्ते । अध्यारूढे शशधरकरश्वेतभासि द्विपेन्द्रे स्वायत्यागेऽतनुमदवने हे ऽमताराातिमत्ते ॥ ४ ॥

॥ इति चन्द्रप्रभजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ सुविधिजिनस्तुतिः ॥

॥ तवाभिवृद्धिं सुविधिर्विधेयात्स भासुरालीनतपा दयावन् ।

यो योगिपङ्क्त्या प्रणतो नभः सत्सभासुरालीनतपादयावन् ॥ १ ॥ या जन्तुजाताय हितानि राजी साराजिनानामलपद्ममालम् । दिश्या न्मुदं पादयुगं दधाना साराजिनानामलपद्ममालम् ॥ २ ॥ जिनेन्द्र भृङ्गैः प्रसभं गभीराशु भारती शस्यतमस्तवेन । निर्नाशयन्ती मम शर्म दिश्यात् शुभारतीशस्य तमस्तवेन ॥ ३ ॥ दिश्यात्तवाशु ज्वल-नायुधाल्पमध्या सिताकं प्रवरालकस्य । अस्तेन्दुरास्यस्य रुचोरुपृष्ठ-मध्यासिताकम्प्रवरालकस्य ॥ ४ ॥

॥ इति सुविधिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तुतिः ॥

जयति शीतलतीर्थकृतः सदा चलनतामरसं सदलं घनम् । नवकमम्बुरुहां पथि संस्पृशच्चलनतामरसंसदलंघनम् ॥ १ ॥ स्मर जिनान्परिनुन्नजरारजोजननतानवतोद यमानतः । परमनिर्वृतिशर्मकृतो यतो जन नतानवतोऽदयमानतः ॥ २ ॥ जयति कल्पितकल्पतरूपमं मतमसारतरागमदारिणा । प्रथितमत्र जिनेन मनीषिणामतमसा रत-रागमदारिणा ॥ ३ ॥ घनरुचिर्जयताद्भुवि मानवी गुरुतरा विहता-मरसंगता । कृतकरास्त्रवरे फलपत्रभागुरुतरा विहतामरसं गता ॥४॥

॥ इति शीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रेयांसजिनस्तुतिः ॥

कुसुमधनुषा यस्मादन्यं न मोहवशं व्यधुः कमलसदृशा

गीतारावा बलादायि तापितम् । प्रणमततमां द्राक्श्रेयांसं न चाहृत यन्मनः कमलसदृशाङ्गी तारा वाबलदायितापि तम् ॥ १ ॥ जिनवरततिर्जीवालीनामकारणवत्सलासमदमहितामारादिष्टा समानवराजया । नमदमृतभुक्पङ्क्त्या नुता तनोतु मतिं ममासमदमाहितामारादिष्टा समानवराजया ॥ २ ॥ भवजलनिधिभ्राम्यज्जन्तुव्रजायतपोत हे ननु मतिमतां सन्नाशानां सदा नरसंपदम् । समभिलषतामर्हन्नाथागमानतभूपतिं तनुमति मनां सन्नाशानां सदानरसं पदम् ॥ ३ ॥ धृतपविफलाक्षालीघण्टैः करैः कृतबोधित प्रजयातिमहा कालीमर्त्याधिपङ्कजराजिभिः । निजतनुलतामध्यसीनां दधत्यपरिक्षतां प्रजयाति महाकाली मर्त्याधिपं कजराजिभिः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रेयांसजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ वासुपूज्यजिनस्तुतिः ॥

॥ पूज्यश्रीवासुपूज्यात्प्राजिन जिनपते नूतनादित्यकान्तेऽमायासंसारवासावन वर तरसाली नवालानबाहो । आनम्रा त्रायतां श्रीप्रभवभयाद्भिभ्रतीभक्तिभाजामायासंसारवासावनवरतरसालीनवालानबाहो ॥ १ ॥ पूतो यत्पादपांशुः शिरसि सुरततेराचरच्चूर्णशोभां या तापत्रासमाना प्रतिमदमवतीहार ताराजयन्ती । कीर्तेः कान्त्याततिः साप्राविकिरनुतरां जैनराजीरजस्ते यातापत्रासमानाप्रतिमदमवती हारताराजयन्ती ॥ २ ॥ नित्यं हेतूपपत्तिप्रतिहतकुमतप्रोद्धतध्वान्तब-

न्धापापायासद्यमानामदन तव सुधासारहृद्या हितानि ॥ वाणी नि-र्वाणमार्गप्रणयिपरिगता तीर्थनाथक्रियान्मे पापायासाद्यमानामदनत वसुधासार हृद्याहितानि ॥ ३ ॥ रक्षः क्षुद्रग्रहादिप्रतिहतिशमनी वाहितश्वेतभास्वत्सन्नालीकासदा प्तापरिकरमुदितासाक्षमाला भवन्तम्॥ शुभ्रा श्रीशान्तिदेवी जगति जनयतात् कुण्डिका भाति यस्याः सन्नालीका सदाप्ता परिकरमुदिता सा क्षमाला भवन्तम् ॥ ४ ॥

॥ इति वासुपूज्यस्तुतिः ॥

अथ विमलजिनस्तुतिः

॥ अपापदमलं घनं शमितमानमानो हितं नतामरसभासुरं विमलमालयामोदितम् । अपापदमलंघनं शमितमानमामोहितं न तामरसभासुरं विमलमालयामोदितम् ॥ १ ॥ सदानवसुराजिता असमरा जिना भीरदाः क्रियासु रुचितासु ते सकलभा रतीरा यनाः । सदानवसुराजिता अमराजिनाभीरदा क्रियासु रुचितासु ते सकलभारतीरा यताः ॥ २ ॥ सदा यतिगुरोरहो नमत मानवैराश्चितं मतं वरदमेनसा रहितमायताभावतः । सदायति गुरोरहो न मतमा-नवैरं चितं मतं वरदमेन सारहितमायता भावतः ॥ ३ ॥ प्रभाजि तनुतामलं परमचापला रोहिणी सुधावसुरभीमना मयि सभाक्षमाले-हितम् । प्रभाजितनुतामलं परमचापलारोहिणी सुधावसुरभीमनामयि-सभा क्षमाले हितम् ॥ ४ ॥

॥ इति विमलजिनस्तुतिः ॥

अथ अनन्तजिनस्तुतिः

॥ सकलधौतसहासमेरवस्तत्र दिशन्त्वभिषेकजलप्लवाः । मतमनन्तजिनः स्नापितोल्लसत्सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥ मम रतामरसेवित ते क्षणपद निहन्तु जिनेन्द्रकदम्बक । वरद पादयुगं गतमज्ञतामममरतामरसे वितते क्षण ॥२ ॥ परमतापदमानसजन्मनः प्रियपदं भवतो भवतोऽवतात्। जिनपतेमेतमस्तजगत्रयीपरमतापदमानसजन्मनः ॥ ३ ॥ रसितमुच्चतुरङ्गमनायकं, दिशतु काञ्चनकान्तिरितच्युता । घृतधनुः फलकासिशरा करै रसितमुच्चतुरं गमनाय कम् ॥ ४ ॥

॥ इत्यनन्तजिनस्तुतिः ॥

अथ श्रीधर्मजिनस्तुतिः

नमः श्रीधर्म निष्कर्मोदयाय महितायते । मर्त्यामरेन्द्रनागेन्द्रैर्दयायमहिताय ने ॥ १ ॥ जीयाज्जिनौघो ध्वान्तान्तं ततान लसमानया । भामण्डलत्विषायः सततानलसमानया ॥ २ ॥ भारति द्राग्जिनेन्द्राणां नवनौरक्षतारिके । संसाराम्भोनिधावस्मानवनौ रक्ष तारिके ॥ ३ ॥ केकिस्था वः क्रियाच्छक्तिकरा लाभानयाचिता । प्रज्ञप्तिर्नूतनाम्भोजकरालाभा नयाचिता ॥ ४ ॥

इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः ।

अथ शान्तिनाथजिनस्तुतिः ।

राजन्त्या नवपद्मरागरुचिरैः पादैर्जिताऽष्टापदाद्रेऽक्कोपद्रुत

जातरूपविभया तन्वार्य धीर क्षमाम् । बिभ्रत्यामरसेव्यया जिनपते श्रीशान्तिनाथास्मरोद्रेकोपद्रुत जातरूप विभयातन्वार्यधी रक्ष माम् ॥१॥ ते जीयासुरविद्विषो जिनवृषा मालां दधाना रजोराज्या मेदुरपारिजातसुमनः संतानकान्तां चिताः ॥ कीर्त्या कुन्दसमात्विषेषदपि ये न माप्तलोकत्रयीराज्या मेदुरपारिजातसुमनः संतानकान्ताश्रिताः ॥२॥ जैनेन्द्रं मतमातनोतु सततं सम्यग्दृशां सद्गुणालीलाभं गमहारि भिन्नमदनं तापापहृद्ग्रामरम् । दुर्निर्भेद निरन्तरान्तरतमोनिर्नाशि पर्युल्लसल्लीभङ्गमहारिभिन्नमदन्तापापहृद्ग्रामरम् ॥ ३ ॥ दण्डच्छत्रकमण्डलूनि कलयन्स ब्रह्मशान्तिः क्रियात्संत्यज्यानिशमीक्षणेनशमिनोमुक्ताक्षमालिहितम् । तप्ताष्टापदपिण्डपिङ्गलरुचिर्योऽधारमन्मृढतां संत्यज्यानिशमीक्षणेन शमिना मुक्ताक्षमालीहितम् ॥ ४ ॥

इति शान्तिनाथजिनस्तुतिः ।

अथ कुन्थुनाथजिनस्तुतिः

भवतु मम मनः श्रीकुन्थुनाथाय तस्मायमितशमितमोहाया-मितापायहृद्यः सकलभरतभर्ताभूज्जिनोऽप्यक्षपाशायमितशमितमोहाया-मितापायहृद्यः ॥ १ ॥ सकलजिनपतिभ्यः पावनेभ्यो नमः सन्नयनरवरदेभ्यः सारवादस्तुतेभ्यः । समधिगतनुतिभ्यो देववृन्दाद्गरीयोनयनरवरदेभ्यः सारवादस्तु तेभ्यः ॥ २ ॥ स्मरत विगतमुद्रं जैनचन्द्रं चकासत्कविपदगमभङ्ग हेतुदन्तं कृतान्तम् । द्विरदमिव समुद्यद्दानमार्गं धुताघैकविपदगमभङ्ग हेतुदन्तं कृतान्तम् ॥ ३ ॥ प्रचलदचि-

ररोचिश्चारुगात्रे समुद्यत्सदसिफलकरामेऽ भीमहासेऽरिभीते । सपदि पुरुषदत्ते ते भवन्तु प्रसादाः सदसि फलकरा मेऽभीगहासेरिभीते ॥४॥

इति कुन्थुनाथजिनस्तुतिः ।

अथ श्रीअरनाथजिनस्तुतिः ।

व्यमुचश्चक्रवर्तिलक्ष्मीमिह तृणमिव यः क्षणेन तं सन्नमदमरमानसंसारमनेकपराजितामरम् । द्रुतकलधौतकान्तमानमतानन्दितभूरिभक्तिभाक्संदनमरमानसंसारमनेकपराजितामरम् ॥ १ ॥ स्तौति समन्ततः स्म समवसण भूमौ यं सुरापलिः सकलकलाकलापकलितापमदारुणकरमपापदम् । तं जिनराजविसरमूर्ज्जासितजन्मजरं नमाम्यहं सकलकला कलापकलितापमदारुणकरमपापदम् ॥ २ ॥ भीममहाभवाब्धिभवभीतिविभेदि परास्तविस्फुरत्परमतमोहमानमतनूनमलंघनमघवनेऽहितम् । जिनपतिमतमपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्मकारणं परमतमोहमानमतनूनमलङ्घनमघवते हितम् ॥ ३ ॥ यात्र विचित्रवर्णाविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिता हुतारसमतनुभागविकृतधीरसमदवैरिव धामहारिभिः । तडिदिव भाति सांध्यघनमूर्धनि चक्रधरास्तुसामुदेऽसमतनुभागवि कृतधीरसमदवैरिवधा महारिभिः ॥ ४ ॥

इत्यरनाथजिनस्तुतिः ।

अथ मल्लिनाथजिनस्तुतिः ।

नुदंस्तनुं प्रवितर मल्लिनाथ मे प्रियङ्गुरोचिररुचिरोचितां वरम् । विडम्बयन्वररुचिमण्डलोज्ज्वलः प्रिये गुरोऽचिररुचिरोचिताम्बरम् १

जवादृतं जगदवतो वपुर्य्यथाकदम्बकैरवशतपत्रसंपदम् । जिनोत्तमा-न्स्तुत दधतः स्रजं, स्फुरत्कदम्बकैरवशतपत्रसंपदम् ॥ २ ॥ स सपदं दिशतु जिनोत्तमागमः, शमावहन्नतनुमोहरोऽदिते । स चित्तभूः क्षत इह येन यस्तपः-, शमा वहन्नतनुतमोहरोऽदिते ॥ ३ ॥द्विपं गतो हृदि रमतां दमाश्रिया, प्रभाति मे चाकितहरिद्विपं नगे । वटाह्वये कृतवरसतिश्च यक्षराट्, प्रभाति मेचाकितहरिद्विपन्नगे ॥ ४ ॥

॥ इति मल्लिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ मुनिसुव्रतजिनस्तुतिः ॥

॥ जिनमुनिसुव्रतः समवताज्जनतावनतः, समुदितमानवा धन-मलोभमतो भवतः । अवनिविकीर्णमःदिपत यस्य निरस्तमनः-समुदितमानबाधनमलो भवतो भवतः ॥ १ ॥ प्रणमततं जिनव्रजमपार-त्रिसारिरजो, दलकमलानना महिमधाम भयासमरुक् । यमतितरां सुरेन्द्रवरयोषिदिला–मिलनोदलकमला ननाम हिमधामभया समरुक् ॥ ॥ २ ॥ त्वमवनताज्जिनोत्तमकृतान्त भवाद्रिदुपोऽव सदनानुमासंगमन याततमोदयितः । शिवसुखसाधकं स्वभिदधत्सुधियां चरणं, वसदनु मानसं गमनयातत मोदयितः ॥ ३ ॥ अधिगतगोधिका कनकरुक्तव गौर्युचिताङ्कमलकराजिमतामरसभास्यतुलोपकृतम् । मृगमदपत्रभङ्ग तिलकैर्वदनं दधती, कमलकरा जितामरसभास्यतु लोपकृतम्॥४॥

॥ इति मुनिसुव्रताजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ नमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ स्फुरद्विद्युत्कान्ते प्रविकिर वितन्वन्ति सततं, ममायासं चारो दितमद नमेऽघानि लपितः । नमद्व्यश्रेणीभवभयाभिदां हृद्यवचसा—ममायासंचारोदितमदनमेघानिल पितः ॥१॥ नखांशुश्रेणीभिः कपिशितनमन्नाकिमुकुटः, सदा नोदी नानामयमलमदारोरित नमः । प्रचक्रे विश्वं यः स जयति जिनाधीशनिवहः, सदा नो दीनानामयमलमदारेरिततमः ॥ २ ॥ जलव्यालव्याघ्रज्वलनगजरुग्बन्धनयुधो, गुरुर्वाहोऽपातापदघनगरीयानसुमतः । कृतान्तस्त्रासीष्ट स्फुटविकटहेतुप्रमितिभा—गुरुर्वाहो पाता पदघनगरीयानसुमतः ॥ ३ ॥ विपक्षव्यूहं वो दलयतु गदाक्षावलिधरासमा नालीकालीविशदचलना नालिकवरम् । समध्यासीनाम्भोभृतघननिभाम्भोधितनया—समानाली काली विशदचलनानालिकवरम् ॥ ४ ॥

॥ इति नमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ चिक्षेपोर्जितराजकं रणमुखे यो लक्षसंख्यं क्षणाशदक्षामंजन भासमानमहसं राजीमतीतापदम् । तं नेमि नम नम्रनिर्वृतिकरं चक्रे यदूनां च यो, दक्षामञ्जनभासमानमहसं राजीमतीतापदम् ॥१॥ प्राव्राजीज्जितराजका रज इव ज्यायोऽपि राज्यं जवा—द्या संसारमहोदधावपिहिता शास्त्रीविहायोदितम् । यस्याः सर्वत एव सा हरतु नो

राजी जिनानां भवा—यासं सारमहोदधावपिहिता शास्त्रीविहायोदितम् ॥ २ ॥ कुर्वाणाणुपदार्थदर्शनवशाद्भास्वत्प्रभायास्तपामानत्या जनकृत्तमोहरत मे शस्तादरिद्रोहिका । अक्षोभ्या तव भारती जिनपते प्रोन्मादिनां वादिनां मानत्याजनकृत्तमोहरतमेश स्तादरिद्रोहिका ॥३॥ हस्तालम्बितचूतलुतकाऽस्याजनोऽभ्यागमम्बिलतिद्विश्वासे विततात्र-पादपरतांवाचा रिपुत्रासकृत्। सा भूतिं वितनोतु नोऽर्जुनरुचिः सिंहेऽधिरूढोल्लसद्विश्वासे विततात्रपादपरताम्बा चारिपुत्रासकृत् ॥ ४ ॥

॥ इति नेमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ मालामालानबाहुर्दधददधदरं यामुदारा मुदाराल्लीनालीनामिहालीमधुरमधुरमांसूचितोमाचितो मा । पातात्पातात्स पार्श्वोरुचिररुचिरदोदेवराजीवराजी, पत्रापत्रा यदीया तनुरतनुरवो नन्दकोनोदको नो ॥ १ ॥ राजी राजीववक्त्रा तरलतरलसत्केतुरङ्गत्तुरङ्ग्व्यालव्यालग्रयोधाचितरचितरणेर्भीतिहृद्भातिहृद्या । सारा साराज्जिनानामलममलमेतबोधिका माधिकामा, दव्यादव्याधिकालाननजननजरात्रासमानासमाना ॥ २ ॥ सद्यो सद्योगभिद्यागमलगमलयाजैनराजीनराजी नूता नूतार्थधात्रीह ततहततमः पातकापातकामा । शास्त्री शास्त्री नराणां हृदयहृदयशोरोधिकाबाधिका वादेया, देयान्मुदं ते मनुजमनुजरां त्याजयन्ती जयन्ती ॥ ३ ॥ याता या तारतेजाः सदसि सदसिभृत्कालकान्तालकान्ता, पारिं पारिन्द्रराजं सुरवसुरवधूपूजितारं जितारम् ।

सात्रासात्रायतांत्वामविषमविभृद्भूषणाभीषणा, भीहीनाहीनांग्यपत्नी कुवलयवलयश्यामदेहामदेहा ॥ ४ ॥

॥ इति पार्श्वनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुतिः ॥

नमदमरशिरोरुहस्रस्तसामोदनिर्निद्रमन्दारमालारजोरञ्जितांह्रे ध-रित्रीकृतावन वरतम संगमोदारतारोदितानङ्गनार्यावलीलापदेहेक्षिता-मोहिताक्षोभवान् । मम वितरतु वीर निर्वाणशर्माणि जातावतारो ध-राधीशसिद्धार्थधाम्नि, क्षमालंकृतावनवरतमसङ्गमोदारतारोदितानङ्गना-र्याव लीलापदे हे क्षितामो हिताक्षोभवान ॥ १ ॥ समवसरणमत्र य-स्याः स्फुरत्केतुचक्रानकानेकपद्मेन्दुरुक्चामरोत्सर्पिसालत्रयीसदवनम-दशोकपृथ्वीक्षणप्रायशोभा—तपत्रप्रभाःगुर्वराराट् परेताहितारोचितम् । प्रवितरतु समीहितं साहतां संहतिर्भक्तिभाजां भवाम्भोधिसम्भ्रान्तभ-व्यावलीसेविता सदवनमदशोकपृथ्वीक्षणप्रा यशोभातपत्रप्रभागुर्वरा-राट् परताहितारोचितम् ॥२॥ परमततिमिरोग्रभानुप्रभाभूरिभङ्गैर्गभीरा भृशं विश्ववर्ये निकाय्ये वितीर्यात्तरामहति मतिमते हि ते शस्यमानस्य वासं सदा तन्वतीतापदानन्दधानस्य सामानिनः । जननमृतितरङ्गनि-ष्पारसंसारनीराकरान्तर्निमज्जज्जनोत्तारनौर्भारतीतीर्थकृत् महति मतिम-तेहितेशस्य मानस्य वा संसदातन्वती तापदानं दधानस्य सा मानि नः ॥ ३ ॥ सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मि-सारक्रमाम्भोत्रहे परमवस्तुतराङ्गजा रावसन्नाशितारातिभाराजिते

भासिनी हारताराबलक्षेमदा । क्षणरुचिरुचिरोरुचञ्चत्सटासंकटोत्कृष्ट-कण्ठोद्धटे संस्थिते भव्यलोकं त्वमम्बाम्बिके परमव सुतरां गजारावसन्ना शिनारातिभा राजिते भासिनी हारताराबलक्षेऽमदा ॥ ४ ॥

॥ इति महावीरस्तुतिः ॥

इति चतुर्विंशातिजिनस्तुतयः सम्पूर्णाः

॥ अथ त्रैलोक्यप्रकाशाख्यं जिनचैत्यवन्दनम् ॥

॥ अथवा चैत्यवन्दनचतुर्विंशतिका ॥

(शार्दूलविक्रीडितं छन्दः ।)

॥ अथ श्रीऋषभदेवचैत्यवन्दन प्रारंभः ॥

सद्भक्त्या नतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभासंमिश्रारुण-दीप्तिशोभिचरणाम्भोजद्वयः सर्वदा । सर्वज्ञः पुरुषोत्तमः सुचरितो धर्मार्थिनां प्राणिनाम्, भूयाद्भूरिविभूतये मुनिपतिः श्रीनाभिसूनुर्जिनः १ सद्बोधोपचिताः सदैव दधता प्रौढमतापश्रियो, येनाज्ञानतमोवितानमखिलं विक्षिप्तमन्तः क्षणम् । श्रीशत्रुञ्जयपूर्वशैलशिखरं भास्वानिवोद्भासयन्, भव्याम्भोजहितः स एष जयतु श्रीमारुदेवः प्रभुः ॥ २ ॥ यो विज्ञानमयो जगत्त्रयगुरुर्यं सर्वलोकाः श्रिताः, सिद्धिर्येन वृता समस्तजनता यस्मै नतिं तन्वते । यस्मान्मोहमतिर्गता मतिभृतां यस्यैव सेव्यं वचो, यस्मिन् विश्वगुणास्तमेव सुतरां वन्दे युगादीश्वरम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअजितप्रभुचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(मालिनी छन्दः ।)

सकलसुखसमृद्धिर्यस्य पादारविन्दे, विलसति गुणरक्ता भक्तराजीव नित्यम्। त्रिभुवनजनमान्यः शान्तमुद्राभिरामः, स जयति जिनराजस्तुङ्गतारङ्गतीर्थे ॥ १ ॥ प्रभवति किल भव्यो यस्य निर्वर्णनेन, व्यपगतदुरितौघः प्राप्तमोदप्रपञ्चः। निजबलजितरागद्वेषविद्वेषिवर्गं, तमजितवरगोत्रं तीर्थनाथं नमामि ॥ २ ॥ नरपतिजितशत्रोर्वंशरत्नाकरेन्दुः, सुरपतियतिमुख्यैर्भक्तिदक्षैः समर्च्यः। दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहान्धकारो, जिनपतिरजितेशः पातु मां पुण्यमूर्तिः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसंभवजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(स्रग्धरा छन्दः ॥)

॥ यद्भक्त्यासक्तचित्ताः प्रचुरतरभवभ्रान्तिमुक्ता मनुष्याः, संजाताः साधुभावोल्लसितनिजगुणान्वेषिणः सद्य एव। स श्रीमान् संभवेशः प्रशमरसमयो विश्वविश्वोपकर्ता, सद्भर्ता दिव्यदीप्ति परमपदकृते सेव्यतां भव्यलोकैः ॥ १ ॥ शुक्लध्यानोदकेनोज्ज्वलमतिशयतस्वच्छभावाद्भुतेन. स्वस्मादावृत्य वृत्तं शिवपदनिगमं कर्मपङ्कप्रपञ्चम्। नीरन्ध्रं दूरयित्वा प्रकृतिमुपगतो निर्विकल्पस्वरूपः, सेव्यस्तार्क्ष्यध्वजोऽसौ जगति जिनपतिर्वीतरागः सदैव ॥ २ ॥ वार्धौ विद्योतिरत्नप्रकर इव परिभ्राजते सर्वकाले, यस्मान्निःशेषदोषव्यपगमविशदे श्री

जितारेस्तनूजे । दुष्प्रापो दुष्टसत्त्वैः स्फुटगुणनिकरः शुद्धबुद्धिक्षमादिः कल्याणश्रीनिवासः स भवति वदताभ्यर्चनीयो न केषाम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअभिनन्दनजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(द्रुतविलम्बितं छन्दः ॥)

॥ विशदशारदसोमसमाननः, कमलकोमलचारुविलोचनः । शुचिगुणः सुतरामभिनन्दनो, जयतु निर्मलताश्रितभूघनः ॥ १ ॥ ॥ जगति कान्तहरीश्वरलाञ्छितक्रमसरोरुह भूरिकृपानिधे । मम समीहितसिद्धिविधायकं, त्वदपरं कमपीह न तर्कये ॥ २ ॥ प्रवरसंवर संवरभूपतेस्तनय नीतिविचक्षण ते पदम् । शरणमस्तु जिनेश निरन्तरं, रुचिरभक्तिसुयुक्तिभृतो मम ॥ ३ ॥

॥ अथ सुमतिजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(उपेन्द्रवज्रा छन्दः ॥)

॥ सुवर्णवर्णो हरिणा सवर्णो, मनोवनं मे सुमतिर्बलीयान् । गतस्ततो दुष्टकुदृष्टिरागद्विपेन्द्र नैव स्थितिरत्र कार्या ॥ १ ॥ जिनेश्वरो मेघनरेन्द्रसूनुर्घनोपमो गर्जति मानसे मे । अहो गुरुद्वेषहुताशनत्वामसौ शमं नेष्यति सद्य एव ॥ २ ॥ इतः सुदूरं व्रज दुष्टबुद्धे, समं दुरात्मीयपरिच्छदेन । सुबुद्धिभर्ता सुमतिर्जिनेशो, मनोरमः स्वान्तमितोमदीयम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रभजिनचैत्यवन्दनप्रारम्भः ॥

॥ (भुजङ्गप्रयातं छन्दः ॥)

॥ उदारप्रभामण्डलैर्भासमानः, कृतात्यन्तदुर्दान्तदोषापमानः। सुसीमाङ्गजः श्रीपतिर्देवदेवः, सदा मे मुदाभ्यर्चनीयस्त्वमेव ॥ १ ॥ यदीयं मनः पङ्कजं नित्यमेव त्वयालंकृतं ध्येयरूपेण देव । प्रधानस्वरूपं तमेवातिपुण्यं, जगन्नाथ जानामि लोके सुधन्यम् ॥ २ ॥ अतोऽधीश पद्मप्रभानन्दधाम, स्मरामि प्रकामं तवैवाङ्ग नाम । मनोवाञ्छितार्थप्रदं योगिगम्यं, यथा चक्रवाको रवेर्धाम रम्यम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसुपार्श्वजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(तोटकछन्दः ॥)

॥ जयवन्तमनन्तगुणैर्निभृतं, पृथिवीसुतमद्भुतरूपभृतम् । निजवीर्यविनिर्जितकर्मबलं, सुरकोटिसमाश्रितपत्कमलम् ॥ १ ॥ निरुपाधिकनिर्मलसौख्यनिधिं, परिवर्जितविश्वदुरन्तविधिम् । भववारिनिधेः परपारमितं, परमोज्ज्वलचेतनयोन्मिलितम् ॥ २ ॥ कलधौतसुवर्णशरीरधरं, शुभपार्श्वसुपार्श्वजिनप्रवरम् । विनयावनतः प्रणमामि सदा, हृदयोद्भवभूरितरप्रमुदा ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचन्द्रप्रभजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(वंशस्थछन्दः ।)

अनन्तकान्तिप्रकरेण चारुणा, कलाधिपेनाश्रितमात्मसाम्यतः।

जिनेन्द्र चन्द्रप्रभदेवमुत्तमं, भवन्तमेवात्महितं विभावये ॥ १ ॥ उदारचारित्रनिधे जगत्प्रभो, तवाननाम्भोजविलोकनेन मे । व्यथा समस्तास्तमितोदितं सुखं, यथा तमिस्रा दिनमर्कतेजसा ॥ २ ॥ सदैव संसेवनतत्परे जने, भवन्ति सर्वेऽपि सुराः सुदृष्टयः । समग्रलोके समचित्तवृत्तिना, त्वयैव संजातमतो नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(वसन्ततिलका छन्दः ।)

विश्वाभिवन्द्य मकराङ्कितपादपद्म, सुग्रीवजात जिनपुङ्गव शान्तिसद्म । भव्यात्मतारणपरोत्तमयानपात्र, मां तारयस्व भववारिनिधेर्निरूपात् ॥ १ ॥ निःशेषदोषविगमोद्भवमोक्षमार्गं भव्याः श्रयन्ति भवदाश्रयतो मुनीन्द्र । संसेवितः सुरमणिर्बहुधा जनानां, किं नाम नो भवति कामितसिद्धिकारी ॥२॥ विज्ञं कृपारसनिधिं सुविधे स्वयंभूर्मत्वा भवन्तमिति विज्ञपयामि तावत् । देवाधिदेव तव दर्शनवल्लभोऽहं, शश्वद्भवामि भुवनेश तथा विधेहि ॥ ३ ॥

॥अथ श्रीशीतलजिनचैत्यवन्दनप्रारम्भः ॥

(शार्दूलविक्रीडितं छन्दः ।)

कल्याणाङ्कुरवर्धने जलधरं सर्वाङ्गिसंपत्करं, विश्वव्यापियशःकलापकलितं कैवल्यलीलाश्रितम् । नन्दाकुक्षिसमुद्भवं दृढरथक्षो-

णीपतेर्नन्दनं, श्रीमत्सूरतबन्दिरे जिनवरं वन्दे प्रभुं शीतलम् ॥ १ ॥ विश्वज्ञानविशुद्धसिद्धिपदवीहेतुप्रबोधं दधद्भव्यानां वरभाक्तिरक्तमनसां चेतः समुल्लासयन् । नित्यानन्दमयः प्रसिद्धसमयः सद्भूतसौख्याश्रयो, दुष्टानिष्टतमःप्रणाशतरणिर्जीयाज्जिनःशीतलः ॥२॥ सद्भक्त्या त्रिदशेश्वरैः कृतनुतिर्भास्वद्गुणालंकृतिः, सत्कल्याणसमद्युतिः शुभमतिः कल्याणकृत्संगतिः । श्री वत्साङ्कसमन्वितस्त्रिभुवनत्राणे गृहीतव्रतो, भूयाद्भक्तिमतां सदैष वरदः श्रीशीतलस्तीर्थकृत् ॥३॥

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(हरिणी छन्दः ।)

चिरपरिचिता गाढव्याप्ता सुबुद्धिपराङ्मुखी, निजबलपरिस्फूर्त्योदग्रा समग्रतया मम । व्यपगतवती दूरं दुष्टा स्वनिष्टकुदृष्टिता, अपचितसहाः सद्यो भूत्वा यदीयसुदृष्टितः ॥ १ ॥ निरुपमसुखश्रेणीहेतुर्निराकृतदुर्दशा, शुचितरगुणग्रामावासा निसर्गमहोज्ज्वला ॥ हृदयकमले प्रादुर्भूता सुतत्त्वरुचिर्मम, विदलितभवभ्रान्तिर्यस्याप्यजस्रमनुस्मृतेः ॥२॥ उपकृतिमतिर्दाने दक्षो निरस्तजगव्द्यथः, समुचितकृतिर्विज्ञानांशुप्रकाशितसत्पथः। नृपगणगुरोर्विष्णोर्वंशे प्रभाकरसंनिभः, स भवतु मम श्रेयांसो नः प्रबोधसमृद्धये॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(रथोद्धता छन्दः ।)

पूर्णचन्द्रकमनीयदीधितिभ्राजमानमुखमद्भुतश्रियम् । शान्तदृ-

ष्टिमभिरामचेष्टितं, शिष्टजन्तुपरिवेष्टितं परम् ॥ १ ॥ नष्टदुष्टमतितिमिर्य- मीश्वरं, संस्मरद्भिरिह भूरिभिर्नृभिः । क्षीणमोहसमयादनन्तरा, प्रापि सत्यपरमात्मरूपता ॥ २ ॥ पार्थिवेशवसुपूज्यवेश्मनि, प्राप्तपुण्यजनुषं जगत्प्रभुम् । वासुपूज्यपरमेष्ठिनं सदा, के स्मरन्ति न हितं विपश्चितः ॥ ३ ॥

(त्रिभिः सेटङ्कः ।)

॥ अथ श्रीविमलजिनचैत्यवन्दनप्रारम्भः ॥

(मन्दाक्रान्ता छन्दः ।)

संसारेऽस्मिन्महति महिमामेयमानन्दिरूपं, त्वां सर्वज्ञं सकलसुकृतिश्रेणिसंसेव्यमानम् । दृष्ट्वा सम्यग्विमलसदसज्ज्ञानधाम प्रधानं संप्राप्तोऽहं प्रशमसुखदां संभृतानन्दवीचिम् ॥१॥ ये तु स्वामिन् कुमतिपिहितस्फारसद्बोधमूढाः सौम्याकारां प्रतिकृतिमपि प्रेक्ष्य ते विश्वपूज्याम् । द्वेषोद्भूतैः कलुषितमनोवृत्तयः स्युः प्रकामं मन्ये तेषां गतशुभदृशां का गतिर्भाविनीति॥२॥ श्यामासूनो प्रतिदिनमनुस्मृत्य विज्ञानिवाक्यं हित्वानार्यं कुमतिवचने ये भुवि प्राणभाजः । पूर्णानन्दोल्लासितहृदयास्त्वां समाराधयन्ति, श्लाघ्याचाराःप्रकृतिसुभगाःसन्तिधन्यास्त एव ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअनन्तजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(स्त्रग्विणी छन्दः)

॥ यस्य भव्यात्मनो दिव्यचेतोगृहे, सर्वदानन्ताचिन्तामणि-

द्योतते । यान्ति दूरे स्वतस्तस्य दुष्टापदो, विश्वविज्ञानवित्तं भवेदक्षयम् ॥ १ ॥ यस्तु सर्वज्ञरूपं स्वरूपस्थितं, वीक्ष्य सद्भावतः सिंहसेनात्मजम् । अद्भुतामोदसंदोहसंपूरितो, मन्यते धन्यमात्मीयनेत्रद्वयम् ॥ २ ॥ सोऽपवर्गानुगामिस्वभावोज्ज्वलां, व्यूढमिथ्यात्वविद्रावणे तत्पराम् । बन्धुरात्मानुभूतिप्रकाशोद्यतां, शुद्धसम्यक्त्वसंपत्तिमालम्बते ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीधर्मनाथजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(कामक्रीडा छन्दः ॥)

॥ भास्वज्ज्ञानं शुद्धात्मानं धर्मेशानं सद्ध्यानं, शक्त्या युक्तं दोषोन्मुक्तं तत्त्वासक्तं सद्भक्तम् । शश्वच्छान्तं कीर्त्या कान्तं ध्वस्तध्वान्तं विश्रामं, क्षिप्तावेशं सत्यादेशं श्रीधर्मेशं वन्दध्वम् ॥ १ ॥ निःशेषार्थप्रादुष्कर्ता सिद्धेर्भर्ता संधर्ता, दुर्भावानां दूरे हर्ता दीनोद्धर्ता संस्मर्ता । सद्भक्तेभ्यो मुक्तेर्दाता विश्वत्राता निर्माता, स्तुत्यो भक्त्या वाचोयुक्त्या चेतोवृत्त्या ध्येयात्मा॥२॥सम्यग्दृग्भिःसाक्षाद्दृष्टो मोहास्पृष्टो नाकृष्टः, स्रोतोग्रामैः संपज्ज्येष्ठः साधुश्रेष्ठः सत्प्रेष्ठः । श्रद्धायुक्तस्वान्तैर्जुष्टो नित्यं तुष्टो निर्दुष्टस्त्याज्यो नैव श्रीवज्राङ्को नष्टातङ्को निःशङ्कः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीशान्तिनाथजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(द्रुतविलम्बित छन्दः ॥)

॥ विपुलनिर्मलकीर्तिभरान्वितो, जयति निर्जरनाथनमस्कृतः । लघुविनिर्जितमोहधराधिपो जगति यः प्रभुशान्तिजिनाधिपः ॥ १ ॥

विहितशान्तसुधारसमज्जनं, निखिलदुर्जयदोषविवर्जितम् । परमपुण्यवतां भजनीयतां, गतमनन्तगुणैः सहितं सताम् ॥ २ ॥ तमचिरात्मजमीशमधीश्वरं, भविकपद्मविबोधदिनेश्वरम् । महिमधाम भजामि जगत्त्रये, वरमनुत्तरसिद्धिसमृद्धये ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीकुन्थुनाथजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

॥ गीतपद्धाति श्छदः ॥

॥ जय जय कुन्थुजिनोत्तम सत्तमतत्त्वनिधान, धर्मिजनोज्ज्वलमानसमानसहंसमान । ज्ञानाच्छादकमुख्यमहोद्धतकर्मविमुक्त, विषमविषयपरिभोगविरक्त शुभाशययुक्त ॥ १ ॥ जय जय विश्वजनीन मुनिव्रजमान्य विशुद्ध, चेतन चारुचरित्रपवित्रित लोकविबुद्ध । निरुपममेरुमहीधरधीर निरन्तरमेव, गर्वविवर्जितसर्वसुपर्वविनिर्मितसर्व ॥ २ ॥ जय जय सुरनरेश्वरचन्दनकल्प, जिनेशविश्वविभावविनाशक वीतविकल्प । निर्मलकेवलबोधविलोकितलोकालोक, प्रादुर्भूतमहोदयनिर्वृति नित्यविशोक ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअरनाथजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(रामगिरिरागेण गीयते)

दिव्यगुणधारकं भव्यजनतारकं, दुरितमतिवारकं सुकृतिकान्तम् । जितविषमसायकं सर्वसुखदायकं, जगति जिननायकं परमशान्तम् ॥ १ ॥ स्वगुणपर्यायसंमीलितं नौमि तं, विगतपरभावपरिणतिमखण्डम् । सर्वसंयोगविस्तारपारंगतं, प्राप्तपरमात्मरूपं प्रचण्डम्

॥ दि० ॥ २ ॥ साधुदर्शनवृतं भाविकं प्रस्तुतं प्रातिहार्याष्टकोल्लास-मानम् । सततमुक्तिप्रदं सर्वदा पूजितं शिवमहीसार्वभौमप्रधानम् ॥ दि० ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकम् ।

॥ अथ श्रीमल्लिजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(गेयपद्धतिरागः)

॥ कुम्भसमुद्भव संमदाकर । गुणवर हे मल्लिजिनोत्तम देव जय जय विश्वपते ॥ १ ॥ कृत्याकृत्यविवेकिता जिन समुचिता । हे त्वयि जागर्ति जिनेश जय जय विश्वपते ॥ २ ॥ नित्यानन्दप्रकाशिका भ्रमनाशिका । हे तव शुभदृष्टि रतीश जय जय विश्वपते ॥ ३॥ शुद्धिनिबन्धनसन्निधे सद्गुणनिधे हे वर्जितसर्वविकार जय जय विश्वपते ॥ ४ ॥ निजनिरुपाधिकसंपदा शोभित सदा । हे निर्मलधुरीण जय जय विश्वपते ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रतजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(अन्यगेयपद्धतिरागः)

॥ उत्तमचेतन धर्मसमृद्ध जगत्पते नित्याऽनित्यपदार्थनिचयविलसन्मते । निजविक्रमजितमोहमहोद्भटभूपते श्रीपद्मातनुजात सुजातहरिद्द्युते ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत सुव्रतदेशक सज्जनाः कृतसद्गुरुशुभवाक्यसुधारसमज्जनाः ये प्रणमन्ति भवन्तमनन्तसुखाश्रितं केवलमुज्ज्वलभावमखण्डमनिन्दितम् ॥ २ ॥ ते निःसंशयमेव जगत्त्रयवन्दिताः सद्भावेन भवन्ति सुदृष्ट्या नन्दिताः । कृत्यं स्वोचितमेव

यतः किल कारणं जनयति नात्मविरुद्धमिहासाधारणम् ॥ ३ ॥
त्रिभिर्विशेषकम् ।

॥ अथ श्रीनमिनाथजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(पञ्चचामरं छन्दः)

नमीश निर्मलात्मरूप सत्यरूप शाश्वतं परोर्ध्वसिद्धिसौधमूर्ध्नि मत्स्वभावतः स्थितम् । विधाय मानसाब्जकोशदेशमध्यवर्तिनं स्मरामि सर्वदा भवन्तमेव सर्वदर्शिनम् ॥ १ ॥ प्रफुल्लक्रौञ्चलाञ्छनप्रभूततेजसोऽद्य ते दिवाकरस्य वा महेश्वराभिदर्शनेन मे । प्रमादवर्धिनी सुदुर्मतिर्निशेव दुर्भगा गता प्रणाशमाशु हृत्कजे विनिद्रताऽभवत् ॥ २ ॥ निरस्तदोषदुष्टकष्टकार्यमर्त्यसंस्तवो भवे भवे भवत्पदाम्बुजैकसेवकः प्रभो । भवेयमीदृशं भृशं मदीयचित्तचिन्तितं तव प्रसादतो भवत्ववन्ध्यमेव सत्वरम् ॥ ३ ॥

अथ श्रीनेमिजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ।

(उपजातिश्छन्दः)

विशुद्धविज्ञानभृतां वरेण शिवात्मजेन प्रशमाकरेण । येन प्रयासेन विनैव कामं विजित्य विक्रान्तनरं प्रकामम् ॥ १ ॥ विहाय राज्यं चपलस्वभावं राजीमतिं राजकुमारिकां च । गत्वा सलीलं गिरिनारशैलं भेजे व्रतं केवलमुक्तियुक्तम् ॥ २ ॥ निःशेषयोगीश्वरमौलिरत्नं जितेन्द्रियत्वे विहितप्रयत्नम् । तमुत्तमानन्दनिधानमेकं नमामि नेमिं विलसद्विवेकम् ॥ ३ ॥

अथ श्रीपार्श्वजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः

(पञ्चचामरं छन्दः)

श्रयामि तं जिनं सदा मुदा प्रमादवर्जितं स्वकीयवाग्विलासतो जितोरुमेघगार्जितम्। जगत्प्रकामिकामितप्रदानदक्षमक्षतं पदं दधानमुच्चकैरकैतवोपलक्षितम् ॥ १ ॥ सतामवद्यभेदकं प्रभूतसंपदां पदं वलक्षपक्षसंगतं जनेक्षणक्षणप्रदम् । सदैव यस्य दर्शनं विशां विमर्दितैनसां निहन्त्यशातजातमात्मभक्तिरक्तचेतसाम् ॥२॥ अवाप्य यत्प्रसादमादितः पुरुश्रियो नरा भवन्ति मुक्तिगामिनस्ततः प्रभाप्रभास्वराः। भजेयमाश्वसेनिदेवदेवमेव सत्पदं चमानसेन शुद्धबोधवृद्धिलाभदम् ॥३॥

अथ श्रीवीरजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ।

(पृथ्वीछन्दः)

वरेण्यगुणवारिधिः परमनिर्वृतः सर्वदा समस्तकमलानिधिः सुरनरेन्द्रकोटिश्रितः । जनातिसुखदायको विगतकर्मवारो जिनः सुमुक्तजनसंगमस्त्वमसि वर्धमानप्रभो ॥ १ ॥ जिनेन्द्र भवतोऽद्भुतं मुखमुदारबिम्बस्थितं विकारपरिवर्जितं परमशान्तमुद्राङ्कितम् । निरीक्ष्य मुदितेक्षणः क्षणमितोऽस्मि यद्भावनां जिनेश जगदीश्वरोद्भवतु सैव मे सर्वदा ॥२॥ विवेकिजनवल्लभं भुवि दुरात्मनां दुर्लभं दुरन्तदुरितव्यथाभरनिवारणेतत्परम्। तवाङ्घ्र पदपद्मयोयुगमनिन्द्य वीरप्रभो प्रभूतसुखसिद्धये मम चिराय संपद्यताम् ॥ ३ ॥

हीनपुण्या न पश्यन्ति, रागान्धास्तत्त्वसंस्थितिम्ः ।
लाभेऽलाभफलं चैव, लभन्ते ते नराधमाः ॥

इति चैत्यवन्दनचतुर्विंशतिका समाप्ता ।